सामाजिक अध्ययन

कक्षा - छः

मध्य प्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम

मध्यप्रदेश शासन के स्कूल शिक्षा विभाग की अधिसूचना क्रमांक एफ 46-9/99/सी-3/20 भोपाल दिनांक 14 जून 1999 के अनुसार चुनी हुई शासकीय माध्यमिक शालाओं में प्रयोगात्मक रूप से प्रचलन हेतु अनुमोदित एवं निर्धारित।

मानचित्र के आंतरिक विवरणों को सही दर्शाने का दायित्व प्रकाशक का है।

द्वितीय संस्करण (संशोधित)
प्रथम मुद्रण 1993
द्वितीय मुद्रण 1995
तृतीय मद्रण 1996
चतुर्थ मुद्रण 1999
पुनः मुद्रण 2001

द्वितीय संस्करण (संशोधित)
प्रथम मुद्रण 1993
द्वितीय मुद्रण 1995
तृतीय मद्रण 1996
चतुर्थ मुद्रण 1999
पुनः मुद्रण 2001

आवरण चित्र 'देश का पर्यावरण' से साभार

मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम की ओर से एवं उनके लिए आदर्श प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित।

सामाजिक अध्ययन

कक्षा छः

(प्रायोगिक संस्करण)

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल
2001

आपस की बात

मध्य प्रदेश की माध्यमिक शालाओं में विज्ञान शिक्षण में नवाचार करने का एक प्रयास 1972 में दो स्वयं-सेवी संस्थाओं (किशोर भारती, बनखेड़ी व मित्र मंडल केंद्र, रसूलिया) द्वारा शुरू हुआ था। यह था 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम'। शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के इन्हीं प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए 1982 में एकलव्य संस्था बनी। शालाओं में नए परिप्रेक्ष्य से सामाजिक अध्ययन, भाषा व गणित सीखने-सिखाने की तैयारी एकलव्य ने शुरू की।

वर्ष 1986-87 में, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान व प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से माध्यमिक शालाओं के लिए सामाजिक अध्ययन विषय में एक नवाचार कार्यक्रम शुरू किया गया। इसके अन्तर्गत प्रति वर्ष कक्षा 6,7 व कक्षा 8 की प्रायोगिक पाठ्य सामग्री एकलव्य द्वारा विकसित की गई व 3 ज़िलों की 9 माध्यमिक शालाओं में लागू की गई। छात्रों व शिक्षकों की भागीदारी से प्रायोगिक पाठों की कमियां व खूबियां उभरकर आईं। विषय के विशेषज्ञों व शिक्षा में रुचि रखनेवाले कई लोगों ने भी इन पाठों की समीक्षा की। इन विवेचनाओं के आधार पर प्रायोगिक पाठ्य सामग्री का संशोधन किया गया व प्रति वर्ष एक-एक कक्षा की पाठ्यपुस्तक का संशोधित संस्करण प्रकाशित किया गया।

पाठ्य सामग्री के अलावा परीक्षा प्रणाली में भी संशोधन किए गए। इसमें सबसे महत्वूपर्ण है "खुली पुस्तक परीक्षा" जिसमें परीक्षा में पुस्तक ले जाने की अनुमति है। सामाजिक अध्ययन में ऐसा प्रयोग स्कूली स्तर पर पहली बार किया गया है। अतः ऐसी परीक्षा के उद्देश्य और स्वरूप के बारे में भी कुछ कहना ज़रूरी है।

सामाजिक अध्ययन के संदर्भ में खुली पुस्तक परीक्षा के मुख्य उद्देश्य हैं - पुस्तक से जानकारियां ढूंढने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता व सोच समझ के आधार पर अपने विचार अभिव्यक्त करने की क्षमता का मूल्यांकन करना। आशा है कि ऐसी परीक्षा से बहुत सारी जानकारी याद करने का बोझ बच्चों पर से हट जाएगा।

वर्ष 1989 से प्रायोगिक पाठ्यक्रम से पढ़े हुए छात्र माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा देते आ रहे हैं। उनके मूल्यांकन के दौरान बहुत सी ऐसी बातें समझ में आईं जिनसे पाठों को और सुधारने में मदद मिली है। इन्हीं प्रक्रियाओं से सुधारा हुआ कक्षा छः का यह नवीन संस्करण

प्रस्तुत है। इस बात में कोई शक नहीं है कि इस में भी आगे और सुधार व संशोधन की संभावनाएं हैं। हमारा मानना है कि पाठ्यसामग्री में नए अनुभवों व विचारों के आधार पर निरन्तर बदलाव होते रहना चाहिए।

शिक्षा में नवाचार केवल पुस्तक छापने तक ही सीमित नहीं है। इसके लिए शिक्षक प्रशिक्षण, अनुवर्तन, फीडबैक, मूल्यांकन, परीक्षा तथा प्रशासन, इन सबका इकट्ठा बदलना ज़रूरी है। यह प्रायोगिक पुस्तक तो इस पूरी प्रक्रिया का अंशमात्र है। सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम का यह पूरा विषम काम अब ज़ोर पकड़ने लगा है। निस्संदेह यह काम आप सब के सहयोग से आगे बढ़ पाएगा।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा एवं एकलव्य के सहयोग से यह कार्यक्रम प्रयोग के रूप में मध्य प्रदेश की 8 शालाओं में चलाया जा रहा है। पुस्तक के प्रकाशन का दायित्व मध्य-प्रदेश पाठ्य-पुस्तक निगम ने उठाया है।

आज सारे देश में शिक्षा को एक नया मोड़ देने की गहन चर्चा हो रही है। हमें आशा है कि सामाजिक अध्ययन की शिक्षा में नवाचार का प्रयास करने की ये पहल उस दिशा में एक ठोस कदम साबित होगी।

पाठ्य सामग्री तैयार करने में इन संस्थाओं में कार्यरत अनेक विशेषज्ञों ने मदद की है - डा. अम्बेडकर शोध संस्थान, महु, सागर विश्वविद्यालय, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय; जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, इंस्टिट्यूट ऑफ पब्लिक एंटरप्राईज़, हैदराबाद, इंस्टिट्यूट ऑफ रूरल मेनेजमेंट, आणंद, क्षेत्रिय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल; स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खंडवा।

चित्रांकन में सहयोग दिया है राजेश यादव (इटारसी), कैरन हेडाक (चंडीगढ़), सतीश चौहान, आशा शर्मा, चीनू पटेल (भोपाल), ए.आर. शेख (देवास)। मानचित्र बनाने में यमुना सन्नी ने मदद की। फोटोग्राफ हमने कई पुस्तकों और स्रोतों से लिए हैं। इनमें से हर एक का उल्लेख करना संभव नहीं है। इन सभी के हम आभारी हैं।

एकलव्य ग्रुप

जनवरी 1993.

शिक्षक ध्यान दें . . .

किताब की कुछ खास बातें

शुरुआत की हलचल - जब तक छात्रों के मन में पाठ के विषय में कोई हलचल न हो, उत्सुक्ता न जगे, तब तक बस पठन चालू कर देना अच्छा नहीं है। इसलिए लगभग सभी पाठों के शुरू में बच्चों से प्रश्न पूछे गये हैं। शायद पाठ के विषय के बारे में वे पहले से ही कुछ जानते हों? शायद उनके मन में उस विषय के बारे में कुछ बातें हों या, पाठ के चित्रों आदि को देख कर ही वे कुछ अनुमान लगा पा रहे हों? अपने मन की बात कहने के बाद जब वे पाठ पढ़ के देखेंगे कि वे कहां तक सही थे तो शायद ज़्यादा रूचि लेंगे और ज़्यादा सक्रिय रहेंगे। इन शुरुआती हलचल के सवालों को पाठ के शीर्षक के तुरंत बाद इस तरह छापा गया है।

कठिन शब्द - कई बार हमें अंदाज़ा नहीं होता कि कितने सारे शब्द बच्चों की समझ में नहीं आते हैं। ऐसे में कुछ सीखना उनके लिए कितना मुश्किल हो जाता है! इस किताब में कठिन शब्द काफी कम हैं। फिर भी, जो हैं, उन्हें मोटे अक्षरों में छापा जा रहा है। जिससे शिक्षक इन शब्दों के प्रति सचेत रहें और इनके अर्थों पर छात्रों के साथ चर्चा व पूछताछ करते हुए ही आगे पाठ पढ़ाएं।
विषय वस्तु से जुड़े विशेष शब्दों को भी मोटे अक्षरों में छापा गया है।

2. खेती की शुरुआत

कहानी – मुंगा झुंड

13

सवालीराम - सवालीराम एक काल्पनिक व्यक्ति है। उसके पास बच्चों के सवाल आते हैं और वह उन्हें जवाब लिख भेजता है। इस किताब के कई पाठों में बच्चों को आमंत्रण है कि वे सवालीराम से प्रश्न करें। बच्चों को प्रश्न करना तो अच्छा लगता ही है पर अपने नाम से आई चिट्ठी में अपने प्रश्नों का जवाब पढ़ना और भी अच्छा लगता है। उनके मन में और प्रश्न पूछने का उत्साह बढ़ता है। हर पाठ के बाद आप बच्चों से पूछ सकते हैं कि क्या उनके मन में सवालीराम के लिए कोई प्रश्न है?

बीच के प्रश्न - आमतौर पर पाठ खत्म होने के बाद ही बच्चों से प्रश्न पूछे जाते हैं। इस किताब के पाठों के बीच-बीच में भी बच्चों से प्रश्न पूछे गये हैं। इनसे बच्चों में सजगता बनी रहती है। शिक्षकों को भी मालूम होता रहता है कि बच्चे पाठ की बातें समझ पा रहे हैं या नहीं। इन प्रश्नों को सिर्फ पढ़ के पाठ आगे बढ़ाते मत जाइए। बिना चूके इन प्रश्नों के जवाबों पर छात्रों के साथ चर्चा करिए। कुछ प्रश्नों के उत्तर कापियों में लिखने को कहिए। इन प्रश्नों को अलग ढंग से छापा जा रहा है - पहचान कर लें।

सवालीराम का पता-
सवालीराम,
द्वारा एकलव्य,
कोठी बाज़ार,
होशंगाबाद, 461 001.

कहानियां - बच्चे कहानियां पसंद करते हैं। कहानियों के ज़रिए खुशी से सीखते-समझते हैं। इस किताब के कई पाठों में कहानियों का उपयोग है। कहानियां काल्पनिक हैं पर झूठ या गलत नहीं हैं। सच्चाइयों के अनुसार कुछ समझाने के लिए लिखी गई हैं। पाठ में कहानी के अंशों को अलग स्पष्ट करने के लिए उनकी बगल में दोहरी रेखा खींची है जैसे –

उपशीर्षक - बड़ा कठिन शब्द है यह पर बच्चों को इससे परिचित कराना ही होगा। क्योंकि इस किताब में बच्चों के सीखने के लिए कुछ नए उद्देश्य रखे गये हैं। बच्चों को ज्ञान या जानकारी देना मात्र किताब का मकसद नहीं है। इससे ज़्यादा महत्वपूर्ण उद्देश्य है ज्ञान हासिल करने के तरीके सिखाना। किताबों से जानकारी मिलती है। किताबों में जानकारी अलग-अलग हिस्सों में संजोकर प्रस्तुत की जाती है। इन हिस्सों को उनके शीर्षकों से पहचाना जा सकता है। ये पाठ के उपशीर्षक होते हैं। पाठ के उपशीर्षकों की तरफ बच्चों को ध्यान ज़रूर केंद्रित करना चाहिए। ताकि, जब उनसे कोई प्रश्न पूछा जाए तो वे उत्तर खोजने के लिए पाठ के पन्ने बेतरतीब ढंग से पलटने में समय खराब न करें। किस उपशीर्षक के नीचे किसी प्रश्न की जानकारी मिलेगी यह समझें और उत्तर ढूंढें।

चित्र - इस किताब में चित्रों की बहुलता है। क्योंकि विषय वस्तु की छवि और समझ बनाने में बच्चों को इनसे बहुत सहूलियत होती है। कई चित्रों पर प्रश्न पूछे गए हैं। चित्रों का वर्णन करने में बच्चे अपने शब्दों का उपयोग सहजता से करते हैं। उनकी अपनी अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए भी चित्रों पर चर्चा करनी ही चाहिए।

'जंगली अनाज काफी है'

बोमा-गोमा ने जब अपने पौधों पर दाने लगे देखे तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "अरे सचमुच यहां तो दाने बन गए!" वे दाने इकट्ठे कर के घर भागे। वे खुशी से चिल्लाते जाते, "देखो हमने अनाज बना लिया, हमने अनाज बना लिया!"

झुंड के लोग बोमा और गोमा की बातें सुन कर हंसने लगे। बोले, "यहां इतना अनाज घासों पर लगा है। काटो और खाओ! अनाज का क्या बनाना?"

पर बोमा-गोमा के मन से अनाज की धुन नहीं उतरी। जब भी मौका मिलता, तरह तरह के दाने बचा कर रख लेते। इसी तरह बहुत दिन और बीते।

क्या अजीब बात है। खेती कैसे कर सकते हैं- इसका पता भी चल गया, फिर भी सुंगा झुंड के लोगों को खेती करने में रुचि क्यों नहीं हुई? क्या तुम कारण समझ सके?

चलो आगे देखें क्या हुआ।

नई जगह की कठिनाईयां

एक दिन अचानक शिकारियों का दूसरा कोई झुंड वहां आया जहां सुंगा झुण्ड रहता था और सुंगा झुंड से लड़ने लगा। सुंगा लोग दूसरे झुंड के सामने टिक नहीं पाये और भाग खड़े हुये। वे भागते-भागते दूर निकल गए।

फिर वे जहां रहने लगे वहां बहुत कठिनाइयां थीं। जरा-सी एक नदी बहती थी। वहां न जानवर आते थे, न ही फलों के घने पेड़ थे। नदी किनारे जो घास उगती थी, उसके दाने खाने लायक नहीं थे। सुंगा झुंड के लोग अब क्या करते? वे ज़्यादातर मछली और केकड़े खा कर गुजारा करने की कोशिश करने लगे।

वाक्य पूरा करो-
1. सुंगा झुण्ड के लोगों को अपनी पुरानी जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा क्योंकि ....
2. नई जगह पर खाने के लिये .... नहीं मिलते थे, केवल .... मिलते थे।

बोमा-गोमा की कोशिश

एक दिन बोमा-गोमा अपनी मां से बोले, "सब लोग परेशान क्यों हो रहे हैं? हमें तो अनाज बनाना आता है। एक दाना बोने से कई सारे दाने

16

मानचित्र - इस किताब के मानचित्र बहुत कोशिशों के साथ आकार में बड़े और स्पष्ट बनाए गए हैं। ये महज़ देखते हुए (या अनदेखा करते हुए) आगे बढ़ जाने के लिए नहीं छापे गये हैं। इनमें जो जानकारी दी है उसे बच्चों को स्वयं देख-समझ कर पता करनी है। इसीलिए पाठ के बीच-बीच में मानचित्रों पर प्रश्न हैं और उनके उत्तर पाठ में आमतौर पर लिखे नहीं गये हैं। मानचित्र से उत्तर ढूंढने की गतिविधि बच्चों को खुद करनी है।

बच्चे मानचित्रों की बहुत सरल बातें कई बार नहीं समझ पाते हैं। वे ज़मीन और समुद्र में फर्क नहीं कर पाते - इसलिए अधिकांश नक्शों में समुद्र में लहरें बनाई गई हैं। बच्चे नदियों की रेखाओं और देश की तटीय रेखा में भी फर्क नहीं कर पाते। यह देखते हुए हमने भारत व मध्य प्रदेश के नक्शों में नदी की रेखा उसके शुरू के भाग में पतली बनाई है और आखिरी भाग में मोटी बनाई है क्योंकि नदी जब निकलती है तो पतली रहती है। फिर जैसे-जैसे उसमें और सहायक नदियों का पानी मिलता जाता है वह चौड़ी होती जाती है। इस तरह की कई बातों का ध्यान आपको भी रखना है ताकि बच्चे नक्शा पढ़ना सीख सकें।

अभ्यास के प्रश्न - इनमें अलग अलग प्रश्न रखे गए हैं जिनका मुख्य उद्देश्य यह जांच करना है कि छात्र जानकारी हासिल करना और उसे समझकर व्यक्त करना सीखे हैं कि नहीं। याद रहे, परीक्षा में बच्चों के पास पुस्तक रहेगी। उन्हें यदि कोई बात ठीक से याद नहीं तो वे पुस्तक खोल कर देख सकते हैं। इसलिए उन्हें यह तो आना चाहिए कि कहां देखना है, कितना लिखना है, कैसे लिखना है। जानकारी ढूंढने का अभ्यास देने के लिए इस प्रकार के प्रश्न हैं -

"राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी पाठ के किस हिस्से में मिलेगी?
राजन्यों और जन के साधारण लोगों के बीच क्या फर्क था और वे एक दूसरे के लिए क्या-क्या करते थे? इस प्रश्न की जानकारी पृष्ठ 44, 45, 46 में से पढ़कर जानो और उत्तर लिखो।"

जानकारी ढूंढने के बाद भी बच्चे सटीक उत्तर न लिख कर आगे पीछे के बहुत से असंबद्ध वाक्य भी उतार कर लिखते हैं। उसका मतलब हुआ कि उन्हें 'क्या लिखना है' कि समझ नहीं है। सटीक उत्तर लिखने का अभ्यास देने के लिए इस तरह के प्रश्न हैं -

"बलि क्या थी सिर्फ दो वाक्यों में बताओ।"

किताब के अंशों की मदद लिए बिना अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर पाने का अभ्यास देने के लिए ऐसे प्रश्न रखे हैं जिनका उत्तर पाठ में कई जगह बिखरा है, या पाठ में सीधे ढंग से नहीं दिया गया है। जैसे -

"महाजन पद के राजाओं के पास क्या-क्या था जो छोटे जनपद के राजाओं के पास नहीं था? कोई भी तीन बातें समझा कर लिखो।" (इसमें दो पाठों में दी बातों की तुलना करनी है।)
"शिकारी मानव के बारे में 10-12 मुख्य बातें लिखो।"
"खेती की शुरूआत के बारे में यहां दिए अधूरे अंश को पढ़ो और पूरा करो।"
"अगर सिंधु घाटी के शहरों में उपयोग होने वाली लिखाई हम पढ़ सकते तो उन लोगों के बारे में क्या बातें जान सकते हैं?"

चित्रों, नक्शों व तालिकाओं के उपयोग की कुशलता सिखाने के लिए भी विशेष प्रश्न रखे हैं, जैसे,

"मानचित्र 2 और मानचित्र 3 की तुलना करो और बताओ कि क्या सही है - दोनों मानचित्र भारत के बारे में है / दोनों मानचित्र एक ही समय के बारे में है / दोना मानचित्रों में बताई गई बातों में कोई फर्क नहीं है।"
"महाजनपद के समय का एक चित्र पृष्ठ 70 पर है। इस चित्र का वर्णन करते हुए 6-7 वाक्य लिखो। इस चित्र और पृष्ठ 31 के चित्र में क्या समानता और क्या अंतर है?"

आप इन उदाहरणों को ध्यान में रख कर नए प्रश्न बना कर परीक्षा आदि में उपयोग कर सकते हैं। बोर्ड परीक्षा के प्रश्न-पत्र में किताब में दिये प्रश्न बहुत कम रखे जाएंगे। इसलिए छात्रों के लिए नए-नए प्रश्नों को हल करने का अभ्यास ज़रूरी है। निश्चित प्रश्नों के उत्तर याद करने या रटने का कोई अर्थ नहीं है।

मिट्टी के खिलौने व झांकियां - पाठ में पढ़ी समझी बातों के बारे में मिट्टी से खिलौने और झांकियां बनाना बच्चों को बहुत मज़ेदार लगता है। इस गतिविधि में कोई खास झंझट भी नहीं है। बच्चे आनन-फानन में मिट्टी और पानी ले आते हैं। और बड़े उत्साह के साथ झांकियां बनाते हैं - चाहे सीढ़ीनुमा खेत हो, या खदान, या शिकारी मानव की गुफा का दृश्य।
जो बच्चे पाठ पढ़कर उत्तर देने में झिझकते हैं, क्योंकि उन्हें शब्दों की भाषा में अपने को अभिव्यक्त करने का हौसला नहीं होता वे भी मिट्टी के खिलौनों के ज़रिए अपनी सोच-समझ बड़े हौंसले के साथ अभिव्यक्त कर देते हैं। इस गतिविधि को करते हुए विषय वस्तु की समझ और जानकारी उनके मन में गहराई तक बैठती जाती है।
हर शनिवार की बाल सभा में यह गतिविधि ज़रूर करवाई जा सकती है।
लगभग सभी पाठों में विषय वस्तु का वर्णन सरल और ठोस है अतः उसके आधार पर झांकियां बनाना बहुत आसान हो जाता है।

विषय सूची

इतिहास

नागरिक शास्त्र

भूगोल

इतिहास

1. शिकारी मानव

एक समय था जब दुनिया भर में कहीं भी खेती नहीं होती थी। न कहीं गांव थे, न शहर। उन दिनों लोग कैसे रहते थे ? इन चित्रों को देखो-

लोग खाना कैसे इकट्ठा कर रहे हैं?

चौथे चित्र को देखो। लोग जंगल से क्या-क्या चीज़ें लेकर लौटे हैं?

तुम्हें इन चित्रों में छः – सात औज़ार व हथियार दिखाई देंगे। उन्हें ढूंढो। वे किस काम आ रहे हैं? उनके चित्र तुम कापी में बनाओ।

चित्र-1 के लोगों के पास सामान बटोरकर लाने के लिए क्या चीज़ें हैं?

चौथे चित्र में गुफा में दिखाई दे रहा हर व्यक्ति क्या काम कर रहा है?

आज से हज़ारों साल पहले हमारे **पूर्वज** कुछ इसी तरह रहते थे। जैसा कि चित्रों में दिख रहा है, उन्होंने बहुत सी चीज़ें बनाना सीख लिया था और बहुत से काम भी सीख लिये थे।

भोजन, पहनावा और घर

दुनिया में जगह-जगह, जंगलों के बीच, बीस-तीस लोगों के छोटे-छोटे झुण्ड हुआ करते थे। वे लोग जंगल में हिरण, भैंसा, हाथी, शेर और खरगोश जैसे जानवरों का शिकार करके खाते थे। वे नदियों व तालाबों में मछली पकड़ते थे। मधुमक्खी के छत्तों से शहद भी इकट्ठा करते थे। वे जंगली पेड़ों के फल तोड़ लाते, पौधों की मीठी जड़ें और कंद (आलू व शकरकन्द जैसे) खोद लाते और जंगलों में अपने आप उगे जंगली अनाज को काट लाते। वे ज़्यादातर कन्द, फल, सब्ज़ी आदि खाते थे और थोड़ा बहुत मांस भी खाते थे। यही सब उनका भोजन था।

उन लोगों को पहनने की चीज़ें भी जानवरों और पेड़ों से ही मिलती थीं। वे जानवर की खाल साफ करके पहनते थे, या, पेड़ की पत्तियों और छाल से शरीर ढक लेते थे।

वे लोग ऊनी और सूती कपड़े क्यों नहीं पहन सकते थे- ज़रा सोचकर बताओ।

वे लोग क्या-क्या खाते थे, एक सूची बनाओ।

उनका अधिकांश भोजन किससे मिलता था - जानवरों से या पेड़-पौधों से?

मनुष्य जब इस तरह रहता था - वे बहुत पहले के दिन थे। लोग तब घरों में भी नहीं रहते थे। जहां कहीं **गुफा** या चट्टानों के नीचे सिर छुपाने की जगह मिल जाती थी, वे वहीं रह लेते थे। कहीं चट्टान या गुफा न मिले तो झटपट पेड़ों की डालियों और पत्तों से छोटी-छोटी झोपड़ियां खड़ी कर लेते थे।

आओ कल्पना करें

इतने साल पहले जो लोग रहते थे, उनके बारे में हम ठीक-ठीक तो पता नहीं कर सकते हैं। मगर हां! उस समय की बची हुयी चीज़ों को देखकर और अपनी सूझ-बूझ से कुछ कल्पना ज़रूर कर सकते हैं। चलो सोचें, जो लोग शिकार करके और जंगलों से भोजन बटोरकर जीते थे और जो खेती नहीं करते थे - उनका जीवन कैसा रहा होगा।

एक कहानी - घुमक्कड़ लोग

तो कल्पना करो कि हज़ारों-हज़ारों साल पहले कुछ लोगों का एक झुंड एक जंगल में रहता था। झुंड में चौदह साल की एक लड़की थी। उसका नाम था करमी। वह एक दिन जब फल और कंद बटोरने गई थी तो एक भेड़िये ने उसे धर दबोचा था। वह बड़ी मुश्किल से जान बचाकर लौटी थीं। वह बहुत दिलेर लड़की जो थी।

इस बात को कई दिन हो गए थे, पर करमी के पैर का घाव ठीक नहीं हुआ था। उसका शरीर तप रहा था। वह हिल-डुल नहीं पा रही थी। झुंड के आधे लोग कह रहे थे, "करमी अब ठीक नहीं होगी। इसे यहीं छोड़ दो। आगे जाना है। जंगल में अब शिकार नहीं मिलता। पानी के गड्ढे सब सूख चुके हैं। जानवर जंगल छोड़कर पानी की तलाश में आगे निकल गए हैं। फल भी खत्म होने को आए। ऐसे में गुज़ारा नहीं होता। करमी के लिए हम यहां रुके तो हम सब भूखे मर जायेंगे। चलो आगे चलें।"

करमी जैसी बहादुर और चतुर लड़की को यों मरने छोड़ देने की बात पर झुंड के कई लोग दुखी थे। वे बोले, "कुछ दिन और रुकते हैं। कुछ दिनों का काम तो चला ही लेंगे।" करमी की मां बोली, "चार-पांच दिन रुको। चार-पांच दिन तक खाने की कमी नहीं होगी। आज सुबह मैं जहां गई थी वहां मीठी जड़ों के खूब सारे पौधे हैं।" पर, कई लोग नहीं माने। बोले, "जिनको रहना है रहें। हम आगे जाएंगे। इस जंगल में अब आठ-दस लोगों का गुज़ारा तो हो भी जाए, पर सबका नहीं होगा।"

झुंड में सलाह मशविरा "करमी के साथ क्या करें?"

झुंड के बड़े-बूढ़ों को लगा कि यह तो बहुत गंभीर बात हो रही है। तब उन्होंने पूरे झुंड की महिलाओं और पुरुषों को एक साथ बैठाकर सलाह- मशविरा किया। बहुत सोच विचार के बाद यह तय हुआ कि झुंड के कुछ लोग करमी और उसकी मां के साथ रहेंगे। बाकी दूसरे जंगल में जाकर इंतज़ार करेंगे। यह तय होने पर झुंड के कुछ लोग दूसरे जंगल को चल दिये।

करमी की मां सोचती रही, अगर करमी तीन-चार रोज़ में ठीक नहीं हुई तो क्या होगा? फिर तो यहां कोई नहीं टिकेगा।

बड़े संकट के दिन थे। जो लोग रुक गए उन्हें यही डर रहता कि कभी कोई जंगली जानवर हमला कर दे तो करमी को लेकर कैसे भागेंगे और कैसे अपनी जान बचाएंगे।

रात होने को आई। करमी ने दर्द के मारे आंखें मींच लीं और पास खड़े पेड़ की छाल को मुट्ठी में भींच लिया। करमी ने छाल को तोड़कर अपने घाव पर लपेट लिया। फिर उसकी नींद लग गई। सुबह उठी तो पाया कि दर्द बहुत कम हो गया है। पैर कुछ उठा पा रही है। फिर क्या था! करमी को अपना इलाज मिल गया था। क्या छाल थी! घाव बिल्कुल ठीक कर दिया!

दो-तीन दिन बाद करमी मां का सहारा ले-लेकर आगे को चल पड़ी। दूसरे जंगल में पहुंचकर वे अपने झुंड के बाकी लोगों के साथ मिल गये।

झुंड के कई लोग करमी को छोड़कर दूसरे जंगल क्यों जाना चाहते थे?

करमी की मां ने उन्हें रोकने के लिए क्या-क्या कहा? अंत में क्या तय हुआ?

तुमने अभी एक काल्पनिक कहानी पढ़ी।

कुछ ऐसा ही होता होगा उन दिनों। सही तो है, शिकार या फल हमेशा एक ही जगह नहीं मिलते रह सकते थे। इसलिए जब एक जंगल में शिकार, फल आदि मिलने बंद हो जाते, तो झुंड के लोग भोजन की तलाश में दूसरी जगह को चल पड़ते थे। जब उस जंगल में फिर से फल लगने का मौसम आता तब वे वहां लौट आते। जैसे आजकल हम एक जगह बस कर रहते हैं वैसे वे लोग नहीं रह सकते थे।

चित्रों को एक बार फिर देखो। इन चित्रों में तुम्हें शिकारी मानव के पास कुछ ख़ास सामान भी नहीं दिख रहा है - न खाट-पलंग, न ही बर्तन-भांडे।

क्या तुम बता सकते हो कि शिकारी मानव के पास ज़्यादा सामान क्यों नहीं रहता था?

क्या तुम यह भी कल्पना कर सकते हो कि जब एक झुंड एक जगह से दूसरी जगह जाता होगा, तो क्या-क्या चीज़ें साथ लेकर चलता होगा?

आज बहुत से लोगों को भोजन की तलाश में घूमना क्यों नहीं पड़ता है?

क्या कुछ लोग आज भी भोजन के लिए घूमते हैं? तुम उनके बारे में क्या जानते हो?

पत्थर के औज़ार

शिकारी मानव के पास कैसे-कैसे हथियार व औज़ार थे, तुमने चित्र में देखा।

उस समय लोहा, तांबा जैसी धातुओं के बारे में लोगों को नहीं पता था। फिर वे किस चीज़ के औज़ार बनाते थे? आस-पास जो मिलता था वह था पत्थर, लकड़ी, जानवरों के सींग और हड्डियां। इन्हीं को नुकीला बनाकर औज़ार बनाए जाते थे।

पृष्ठ 2 के चित्र 4 में दो आदमी बैठकर ऐसे औज़ार बना रहे हैं। वे पत्थर के टुकड़े को मार-मार कर इस तरह उसकी छीलन या चिप्पियां निकाल रहे हैं कि उसमें अच्छी धार बन जाये या बढ़िया नोक निकल आए। साथ ही पत्थर का आकार भी ऐसा हो जाए कि उसे हाथ में कस के पकड़ना आसान हो।

ये थे पत्थर के बड़े औज़ार। यह हुनर सीखते-सीखते मनुष्य ने पत्थर के बहुत बारीक टुकड़े बनाना भी सीख लिया था। ये पत्थर के छोटे और बारीक टुकड़े किसी लकड़ी के हत्थे में लग कर तेज़ औज़ार का काम देते थे।
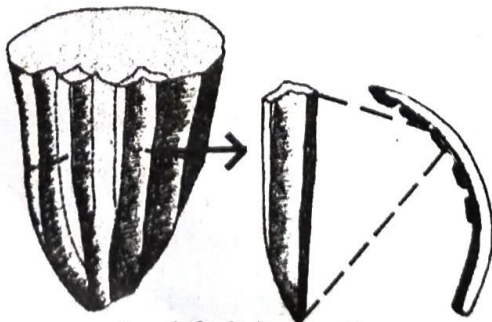
बारीक चिप्पियों से बना हंसिया

नीचे पत्थर के औज़ारों के कुछ चित्र दिये गये हैं। क्या तुम इन चित्रों में पत्थर पर से निकाली गई चिप्पियों के निशान पहचान पा रहे हो? उन पर × का निशान लगाओ।

किन औज़ारों में लकड़ी के हत्थे लगे हैं? पहचानो, और लकड़ी के हत्थों में गहरा रंग भरो।

पत्थर के नुकीले टुकड़े हत्थे से दो तरह से जोड़े गए हैं। बताओ कैसे?

कौन से औज़ार हैं जो हत्थों मे नहीं फंसाए गए हैं?

पत्थर के औज़ारों से क्या-क्या किया जाता होगा?
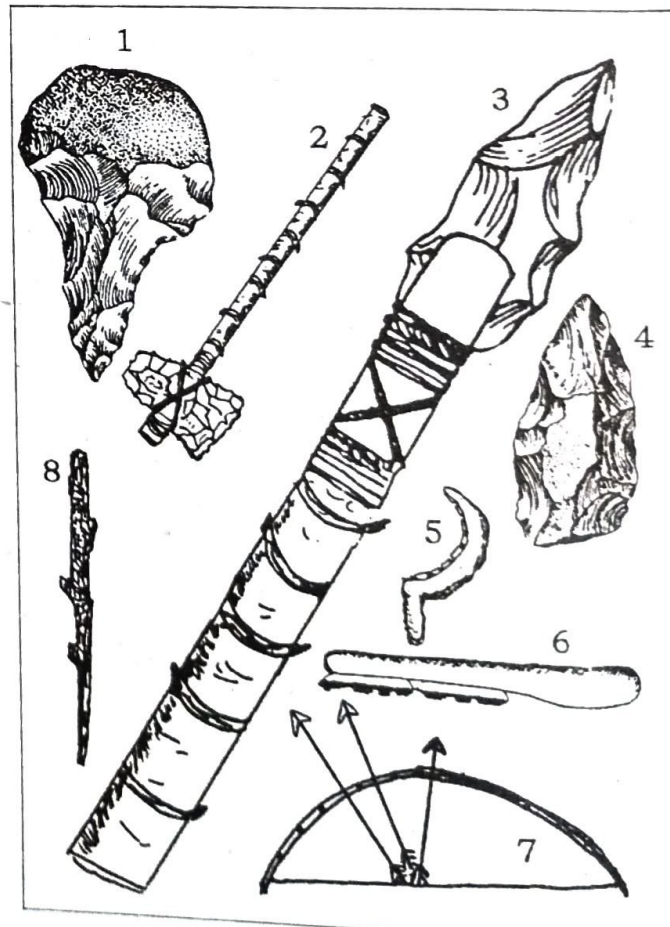
तरह-तरह के औज़ार

उस समय औज़ार बनाने के लिए अलग से कोई कारीगर नहीं था। झुंड के सब लोग औज़ार बनाया करते थे। हां यह ज़रूर हो सकता है कि कुछ लोग औरों से ज़्यादा अच्छे औज़ार बनाते हों।

पत्थर और लकड़ी के औज़ारों का उपयोग करते हुये उस समय के लोग तरह-तरह की चीज़ें बना लेते थे। महिलायें और पुरुष मिलकर इन औज़ारों से लकड़ी या बांस काटते, चीरते और उससे दूसरे औज़ार, टोकरियां, मछली के जाल आदि बना लेते। इन्हीं औज़ारों से पेड़ों की छालें छील के और जानवरों की खालें साफ कर के पहनने के लायक बनाते। वे लकड़ी, सीप, हड्डी, हाथी-दांत आदि की मालायें भी बनाते। इन चीज़ों को बनाने के लिए भी उन दिनों अलग से कारीगर नहीं थे। सब लोग अपने उपयोग की चीज़ें खुद बना लेते थे।

मालाएं
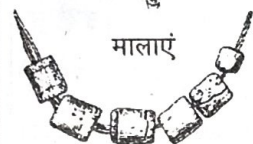
रिक्त स्थान भरो :

1. शिकारी मानव .... और .... के औज़ार बनाते थे।

2. झुंड के .... लोग औज़ार बनाते थे।

क्या आज लोग अपने उपयोग की सब चीज़ें खुद बना लेते हैं?

आज औज़ार किस चीज़ से बनते हैं?

आज-कल पत्थर का उपयोग कहां-कहां होता है?

चित्र और नाच

शिकारी लोग गुफा के अंदर दीवारों पर रंगीन चित्र भी बनाया करते थे। क्या तुम जानते हो कि उन्हें रंग और ब्रुश कैसे मिलता था? वे रंगीन पत्थरों को घिस कर रंग तैयार करते थे, और बांस के ब्रुश से चट्टानों पर चित्र बनाते थे। इन लोगों द्वारा बनाए गए चित्र आज भी कई गुफाओं की दीवारों पर या चट्टानों पर देखे जा सकते हैं।
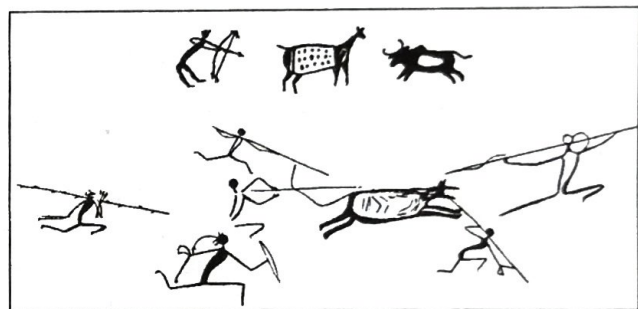
ये लोग क्या-क्या चित्र बनाते थे? तुम खुद देख कर बताओ।

चित्र बनाने के अलावा शिकारी मानव के जीवन में एक और चीज़ बहुत महत्व रखती थी। वे सब मिल कर देर-देर तक नाचते थे। आओ करमी की कहानी आगे पढ़ें और उनके नाच-गान के बारे में जानें।

करमी और उसके झुंड के बाकी लोग नए जंगल में पहुंच गए थे। वहां कुछ दिन खूब शिकार मिला। मगर फिर कई दिनों तक झुंड के लोग जंगल से खाली हाथ लौटने लगे। पूरे झुंड का गुज़ारा कन्द-मूल और फलों से चल रहा था। अब ये भी कम पड़ने लगे।

करमी की मां ने एक दिन झुंड के सारे लोगों

को बुला कर कहा, "यह हमारे लिए बहुत कठिन समय है। हमें कुछ करना होगा।" एक महिला बोली, "हां अब फल और कन्द भी खत्म होने को आये हैं।" एक आदमी बोला, "यहां जंगल में जानवर तो बहुत हैं। मगर न जाने क्यों वे न तो हमारे जाल में फंसते हैं और न ही हमारे तीरों का निशाना बनते हैं।"

करमी की मां बोली, "हम लोगों को नाच की **रस्म** करनी चाहिये। शायद जानवरों के देवता नाराज़ हैं।"

तो एक दिन नाच की रस्म शुरू हुई और सब लोग नाच में भाग लेने लगे। कुछ लोगों के सिर पर हिरण की खाल थी या उसका सींगदार **मुखौटा** था। बाकी लोगों के पास धनुष-बाण या भाला था। हिरण का मुखौटा पहनने वाला आदमी हिरण की चाल से नाचने लगा। बाकी लोग उसे घेर कर नाचने लगे। वे उसे हिरण मान कर उस पर झूठमूठ का **भोंथरा** बाण छोड़ने लगे। 'हिरण' घायल हो गया। दूसरे लोग उसे घेरे के बाहर घसीट कर ले गए और उस पर अपने चाकू चलाने का नाटक करने लगे। फिर सब घेरे में लौट आए और कोई दूसरा आदमी 'हिरण' का **स्वांग** करने लगा।

भीमबैठका की गुफा में बना नाच का चित्र

इस तरह यह नाच बहुत देर तक चलता रहा। उन लोगों के मन में कहीं यह विश्वास था कि नाच की यह पूरी रस्म करने से वे हिरणों प[र] टोना कर सकते हैं। वे मानते थे कि नाच के द्वार[ा] शिकारियों को जादू की शक्ति मिलेगी और [वे] जानवरों को जादू की इस शक्ति से गहरे जंगल[ों] से बाहर निकाल कर उनका शिकार कर लें[गे]।

इस झुंड का एक सयाना आदमी था- **ओझ[ा]** जैसा एक आदमी। उसकी देखा-देखी ही स[ब] लोग नाच करते थे। उसने गुफा की दीवार प[र] कुछ चित्र बनाये। जानवरों के चित्र, जानवर क[ा] मुखौटा व खाल ओढ़े लोगों के चित्र और ना[च] करते लोगों के चित्र। फिर उसने जानवर क[े] शिकार करने का चित्र भ[ी] बनाया। सब लोगों [ने] जानवर के उस चित्र प[र] तीर मारे। वे मानते थे [कि] अब जब वे वास्तव [में] शिकार करेंगे तब उनक[ा] तीर इसी तरह निशाने प[र] लगेगा।

नाच व चित्रों की रस[्म] जब समाप्त हुई तब लोग फिर से टोलियां ब[ना] कर शिकार पर निकले।

जब करमी की मां ने सुना कि जंगल में जानवर होते हुये भी शिकार नहीं मिल रहा तो उसने क्या सुझाव रखा? सही विकल्प चुनो:

1. दूसरे जंगल चले जायें। 2. कन्द-मूल से ही गुज़ारा करें। 3. नाच की रस्म करें।

रिक्त स्थान भरो :

1. नाचने वालों में से कुछ लोग हिरण का ——

पह
2.
3.
पर
जा
मा
शिक

पहने हुये थे।

2. वे ——— जैसे नाच रहे थे।

3. बाकी लोग उसे ——— के नाचते और उस पर झूठमूठ का ——— चलाते।

जानवरों के चित्र पर शिकारियों ने तीर क्यों मारा?

शिकार

कई दिनों की कोशिश के बाद, एक दिन माको और उसकी टोली के लोग जब गुफा पर लौटे तो दो बड़े हिरणों को घसीटते हुए ला रहे थे।

कोरा अपनी टोली के साथ जब लौटा तो खाली हाथ ही था। उसके साथी बहुत परेशान थे क्योंकि उन्हें शिकार नहीं मिला था। पर गुफा के बाहर दो हिरणों को देखकर उनका भी चेहरा खिल उठा और उन्होंने खूब हंस-हंस कर माको और उसके साथियों की पीठ थपथपाई।

फिर क्या था! लोगों ने हिरणों को एक जगह रख दिया। सब शिकारी बारी-बारी से हिरणों के पास गए। उन्होंने अपने दाहिने हाथ से सिर से दुम तक हिरणों को सहलाया और झुंड को भोजन देने के लिए धन्यवाद दिया।

एक आदमी ने मरे हिरणों से कहा, "आराम करो, दादा। तुमने हमें अपना मांस दिया, इसके लिए धन्यवाद।"

दूसरे ने कहा, "तुमने हमें अपने सींग दिए हैं, हम तुम्हें इसके लिए धन्यवाद देते हैं।"

करमी की मां बोली, "हिरण भैया, हमारे कारण तुम्हें चोट लगी और तकलीफ हुई। हमें माफ करना।"

फिर झुंड के सब लोगों ने हिरण का मांस आग पर भून कर खाया। पत्थरों को टकरा कर आग बनाना तो वे जानते ही थे।

दो-तीन दिन बाद जब मांस सड़ने लगा तो लोगों ने उसे छोड़ दिया। फिर टोली बना कर शिकार पर निकले। औरतें भी बच्चों को ले कर फल व जड़ ढूंढने निकलीं।

कैसी अजीब बात है! शिकारी लोग अपने द्वारा मारे गये जानवरों को धन्यवाद दे रहे हैं! मगर वे लोग मानते थे कि जानवर मनुष्यों के भाई-बंधु हैं। जानवरों को मारना अपने भाईयों को मारने के समान है। इसलिए जानवरों को केवल ज़रूरत पड़ने पर, अपनी भूख मिटाने के लिए ही मारना चाहिए। जानवरों को मारने के बाद उन्हें धन्यवाद देना चाहिये और उनसे माफी भी मांगनी चाहिये।

मरे हिरण को धन्यवाद दे रहे हैं

इसीलिए वे मरे जानवर से ऐसी बातें कर रहे थे।

तुम भी अपने गांव में देखते होगे कि फसल कटने के बाद खलिहान में काटे गये अनाज की पूजा होती है।

> ***किसान फसल की पूजा क्यों करते हैं? कक्षा में चर्चा करो।***
>
> ***फसल की पूजा करना और मारे गये जानवर को धन्यवाद देना - क्या इन दोनों बातों में तुम्हें कोई समानता दिखती है?***
>
> ***सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरो-***
>
> ***1. कोरा ने जब देखा कि माको दो हिरण मार कर लाया है तो वह -------- हुआ। (खुश/दुखी)***
>
> ***2. जब शिकारी लोग जानवर मार कर लाते थे तो वे उसे ------- थे। (तुरन्त खा जाते/धन्यवाद देते)***
>
> ***3. शिकारी लोग मानते थे कि जानवर मनुष्यों के ------ (खाने के लिए/रिश्तेदार) हैं और जानवरों को --------- (जब चाहे तब/केवल अपनी भूख मिटाने के लिए) मार सकते हैं।***

मिल-बांट कर खाना

कुछ इसी तरह की होती होगी उन लोगों की ज़िन्दगी। वे साथ शिकार करते थे क्योंकि अकेले व्यक्ति का जानवरों को मारना मुश्किल था। अकेला व्यक्ति जंगल में अपनी रक्षा भी नहीं कर सकता था। लोग टोलियों में भोजन इकट्ठा करने के लिए निकलते थे ।

जितना भोजन झुंड में आये सब मिल-बांट कर खाते थे। यह भी बहुत ज़रूरी था। जंगल से क्या मिलेगा, इसका कुछ भरोसा तो होता नहीं था। अगर मिल कर न खाते तो किसी दिन कोई भूखा रहता, और अगले दिन कोई और। किसी दिन कुछ लोगों के पास इतना खाना रहता कि खत्म न हो व सड़ने लगे और अगली बार उन्हीं के हाथ खाली होते। इकट्ठे खाने से ये दिक्कतें कम हो जातीं। सबको खाना मिलने का भरोसा रहता।

फिर, उन दिनों कोई ज़्यादा शिकार कर लाए तो उसे जमा करके भी नहीं रखा जा सकता था। मांस-फल जैसी चीज़ें जोड़-जोड़ कर रखी नहीं जा सकती थीं, क्योंकि वे सड़ कर खत्म हो जातीं थीं।

यही नहीं, शिकारी लोग तो घूमते रहते थे । अगर वे फलों को या बीजों को सुखा कर रख भी लेते तो लगातार एक जगह से दूसरी जगह कैसे ले जाते? इस कारण मांस व फल जैसी चीज़ों को जोड़-जोड़ कर कोई धनवान नहीं बन सकता था। शिकारियों के झुंड में कोई अमीर या ग़रीब नहीं होता था। खाना खा कर खत्म कर देते और फिर ढूंढने चल पड़ते।

जैसे करमी का झुंड था, वैसे बहुत सारे अलग-अलग झुंड थे। इन झुंडों के बीच कभी-कभी लड़ाई भी होती थी। कौन से झुंड के लोग किस जंगल में शिकार करेंगे, इसको लेकर उनमें छोटी-मोटी झड़पें भी हो जाती थीं।

> ***इस अंश के दो सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों को चुनकर अपनी कापी में उतारो ।***
>
> ***तुमने पढ़ा कि कोरा की टोली को शिकार नहीं मिला था। फिर उनको भोजन कैसे मिला?***

ऐसे लोग थे हमारे पूर्वज। आज हमारा जीवन उनके जैसा नहीं है। बहुत अलग है। फिर भी ऐसी बहुत सी बातें हैं जो हमें इन पूर्वजों से ही पता चली हैं। शिकारी मानव ने ही पेड़-पौधों, फलों, कन्दों और जड़ी-बूटियों की जानकारी खोजी। उन्होंने जानवरों, मछलियों, कीड़े-मकोड़ों के बारे में कई बातें पता लगाईं। तरह-तरह के पत्थरों का पता लगाया। एक जगह से दूसरी जगह जाने के रास्ते बनाये। यही नहीं, वे जैसे नाचते थे, वैसा नाच आज भी कई अवसरों पर किया जाता है। क्या तुमने ऐसा नाच देखा है?

शिकारी मानव के निशान

हज़ारों वर्षों पहले रहने वाले शिकारी मानव के बारे में हमें इतनी बातें पता कैसे चलती हैं? क्या उनकी कुछ चीज़ें बची हुई हैं? असल में शिकारी मानव के कई निशान आज भी मिलते हैं - जैसे पत्थर के औज़ार, गुफाओं पर बने चित्र, और जानवरों और लोगों की हड्डियां। गुफा चित्रों और पत्थर के औज़ारों के जैसे **उदाहरण** तुमने पाठ में देखे, वैसे और बहुत से उदाहरण मिलते हैं।

भोपाल से होशंगाबाद के रास्ते में तुम्हें भीमबैठका की गुफाएं मिलेंगी। इनमें जा कर तुम खुद ये चीज़ें देख सकते हो। हज़ारों सालों पहले ऐसी गुफाएं शिकारी मानव का बसेरा थीं।

मध्य प्रदेश में भीमबैठका के अलावा भोपाल, रायसेन, होशंगाबाद, बुदनी, पचमढ़ी, बघई खोर, भेड़ाघाट और महेश्वर में शिकारी मानव के निशान विशेष रूप से मिलते हैं।

आज भी शिकारी लोग रहते हैं

शिकारी मानव के रीति-रिवाज़, तौर-तरीके और व्यवहार के बारे में पाठ में कई बातें लिखी हैं। ये सब हमें कैसे पता चलती हैं? हमने हज़ारों साल पुराने इन लोगों को देखा तो नहीं है! हम आज के शिकारियों को देख कर शिकारी मानव के बारे में इन सब बातों का अनुमान लगाते हैं। आज भी दुनिया की कई जगहों में शिकारी लोग रहते हैं। भारत में अंडमान द्वीप समूह में, केरला, आंध्र प्रदेश और अपने मध्यप्रदेश में भी ऐसे लोग रहते हैं।

कई लोग इन शिकारी लोगों के बीच में जा कर रहते हैं और उनके बारे में, उनके रहन-सहन, रीति-रिवाज़, आपसी व्यवहार आदि बातों का पता लगाते हैं।

इस चित्र में आंध्र प्रदश के चेंचू शिकारी कबीले के लोग दिख रहे हैं। ये लोग आज भी शिकार करके और फल-मूल बटोर कर गुज़ारा करते हैं। ये लोग या तो घस-फूस की झोपड़ियों में रहते हैं या फिर गुफाओं में रहते हैं।
इस चित्र को देखकर क्या तुम बता सकते हो कि पुराने शिकारी मानव और चेंचू लोगों में क्या-क्या फर्क है?

अभ्यास के प्रश्न

(सभी प्रश्नों के उत्तर अपने ही शब्दों में लिखो।)

1. इस पाठ का शीर्षक है शिकारी मानव। पाठ के अलग-अलग हिस्सों में शिकारी मानव के बारे में तरह-तरह की जानकारी दी गई है। जैसे, शिकारी मानव के खाने, रहने, पहनने की जानकारी पहले हिस्से में दी गई है। इस हिस्से का उपशीर्षक है - **'भोजन, पहनावा और घर'**
   इस पाठ के और कितने हिस्से हैं, गिनो। पाठ के हरेक हिस्से से एक-दो बातें चुनकर शिकारी मानव के बारे में 10-12 महत्वपूर्ण (मुख्य-मुख्य) बातें लिखो।
2. शिकारी मानव के भोजन और तुम्हारे भोजन में दो मुख्य समानताएं और दो मुख्य अंतर बताओ।
3. शिकारी मानव के समय महिलायें क्या-क्या काम करतीं थीं?
4. तुमने पाठ में शिकारियों के बारे में एक दो कहानियां पढ़ीं। तुम भी उनके बारे में एक कहानी लिखने की कोशिश करो। नीचे दी गई कहानी को पूरा करो—
   बहुत समय पहले एक शिकारी झुंड में सामा नाम की औरत थी। वह झुंड की दूसरी औरतों के साथ जंगल से फल, कन्द-मूल आदि बटोर कर लाती थी। उसके पास जो भी खाने की चीज़ होती थी वह किसी के भी मांगने पर दे देती थी। उसने एक दिन सोचा, मैं जितने फल और बीज लाती हूं उन्हें सुखा कर रखूंगी। इस तरह मेरे पास खाने की बहुत सारी चीज़ें इकट्ठी हो जायेंगी। फिर मैं आराम से रहूंगी। वह फलों को सुखा कर रखने लगी। लेकिन.....
5. बहुत समय बाद का यह चित्र है। लोग शिकार कर रहे हैं।
   ये लोग किसकी सहायता से शिकार कर रहे हैं?
   चित्र में जंगली जानवर कौन से हैं? शिकारियों के पास क्या हथियार हैं? वे किन चीज़ों के बने हैं? ये लोग किसके बने कपड़े पहने हैं? इनके रहने की जगह क्या होगी? इन लोगों का भोजन क्या शिकार से ही आता होगा? क्या ये शिकारी मानव हैं?

इस पाठ की कहानी में हमने लोगों को हिन्दी में बोलते हुए बताया है। लेकिन उन दिनों आज बोली जाने वाली भाषाओं में बात नहीं की जाती थी। लोग बोला करते थे, पर कैसे- यह हम पूरी तरह नहीं जान सकते।

2. खेती की शुरुआत

आज हम खेती करते हैं और खेती से हमें भोजन मिलता है। पर तुम जानते हो कि शुरू में मनुष्य सिर्फ शिकार कर के, व जंगली फल और जंगली अनाज बटोर कर जीता था। दुनिया में कहीं खेती नहीं होती थी।

कैसे किसी झुंड ने सोचा होगा कि वह शिकार व जंगली फल बटोरना छोड़ कर खेती करने लगे! कैसे झुंड के सब लोग माने होंगे? क्या हुआ होगा? क्यों हुआ होगा? कक्षा में चर्चा करो।

शिकारी मानव के समय लोग कुछ भी नहीं उगाते थे और सब कुछ जंगलों से बटोर लाते थे। वे जो अनाज, फल, सब्ज़ी या कन्द खाते थे, सब जंगली ही उगते थे। उन्हें कोई बोता नहीं था। न ही उनकी कोई देखभाल करता था। बस जब अनाज या फल पक जाते, तो लोग उन्हें काट कर खा लेते थे। ऐसा लाखों सालों तक चलता रहा।

आज भी हम कई ऐसी चीज़ों को खाते हैं, जो जंगली उगती हैं।

हम जंगलों से इस तरह के कई अनाज, फल, सब्ज़ी, पत्ते और कन्द बटोर कर लाते हैं। क्या तुम ऐसी चीज़ों की सूची बना सकते हो?

जो शिकारी लोग लाखों सालों से जंगली फल व अनाज बटोरते थे, उन्हें मालूम तो होगा कि कैसे बीज से पौधा उगता है। उन्होंने आसपास ऐसे खूब सारे पौधों को उगते देखा होगा। मगर फिर भी उन्होंने खेती शुरू नहीं की। इस का क्या कारण रहा होगा? और जिन लोगों ने खेती शुरू की उनको क्या ज़रूरत पड़ी होगी कि वे खेती करने लगे?

यह सब हम पता नहीं कर सकते, फिर भी उन दिनों के जो निशान और सबूत मिलते हैं उनसे हम कुछ अंदाज़ा लगा सकते हैं। इन्हीं **सबूतों के आधार** पर हम यहां एक कहानी तुम्हें सुना रहे हैं। चलो कल्पना करके देखें कैसे हुई होगी खेती की शुरुआत।

कहानी – सुंगा झुंड

तो कल्पना करो कि बहुत समय पहले एक शिकारी झुंड था। झुंड का नाम रखते हैं सुंगा झुंड। एक समय की बात है। सुंगा झुंड के लोग जहां रहते थे वो जगह ऐसी दिखती थी जैसी अगले पृष्ठ के चित्र में दिख रही है।

इस जगह पर खाने को क्या-क्या मिलेगा?

यहां जंगली बीज और दाने कहां मिलेंगे?

क्या नदी से भी कुछ खाने की चीज़ें मिल सकती हैं ?
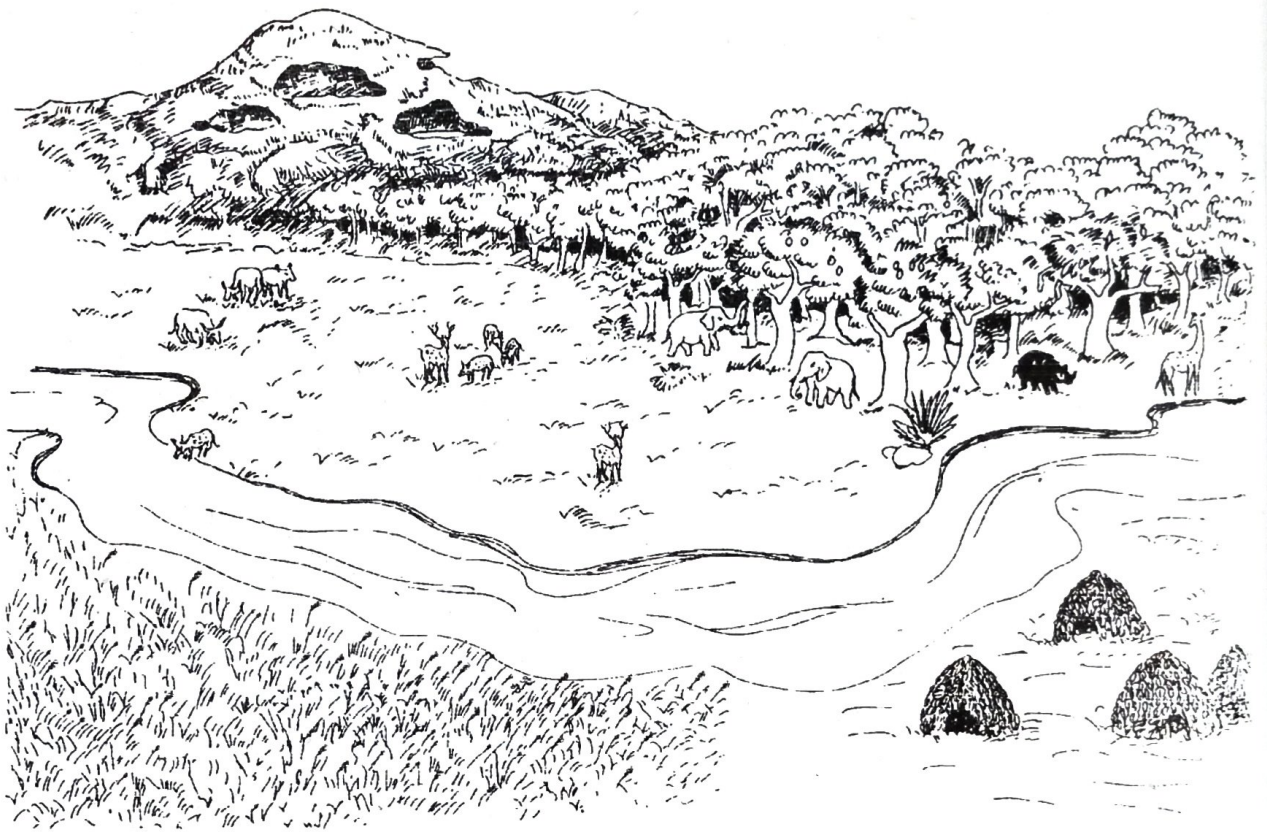
जंगली फल कहां मिलेंगे?

शिकार के लिये जानवरों का इन्तज़ार कहां किया जाएगा?

सुंगा झुंड के लोग इस इलाके के कोने-कोने को जानते थे। किस पेड़ से कब फल मिलेंगे, किस पौधे से कब जड़ मिलेंगी, किस घास के बीज कब लगेंगे, किस बिल में खरगोश रहता है, हिरण और बारासिंगा चरने कहां आते हैं, नदी में मछली और केंकड़े कब आएंगे - यह सब उन्हें पता था। यहां साल भर वे कहीं न कहीं से अपना भोजन जुटा लेते थे। अब उन्होंने भोजन की तलाश में नई-नई जगह घूमना छोड़ दिया था। बस, जब नदी में बाढ़ आ जाती तो वे पहाड़ पर चढ़ जाते। कुछ समय बाद फिर नीचे उतर आते। सुंगा झुंड के पूर्वजों को जंगल का इतना बारीक ज्ञान न था। वे भोजन के लिए बड़े-बड़े जानवरों का पीछा करते हुए जगह-जगह भटकते थे। पर सुंगा झुंड को अब इस जंगल की इतनी जानकारी हो गई थी कि साल भर का भोजन यहीं से जुटा लेते थे। इसलिए वे यहां कच्ची झोपड़ियां डाल कर रहने लगे थे। क्या तुम्हें चित्र में उनकी झोपड़ियां दिख रही हैं?

सही विकल्प चुनो-

सुंगा झुंड के लोग एक जगह रहते थे क्योंकि -

1. वे खेती करते थे। 2. वे सिर्फ बड़े जानवरों का शिकार करते थे। 3. वे जंगल में कई चीज़ों से भोजन जुटा लेते थे। 4. वे घर बनाने लगे थे।

करमी के झुंड ओर सुंगा झुंड के जीवन में क्या समानताएं थीं और क्या अंतर थे?

बोमा गोमा की खोज

सुंगा झुंड में दो बच्चे थे। बोमा और उसकी बहन गोमा। दोनों को अनाज के दाने भिगो कर खाना बहुत पसंद था।

एक दिन वे नदी किनारे बैठ कर दाने खा

रहे थे कि अचानक जंगली कुत्ता आ गया। मारे डर के दोनों भाग पड़े।

कुछ दिन बाद जब नदी किनारे गए तो देखा वहां नए-नए अनाज के पौधे उगे हैं।

गोमा बोली, "यहां हमसे दाने छूट गए थे। क्या उनको चिड़िया ले गई?"

बोमा बोला, "नहीं, मुझे लगता है कि उन्हीं में से ये पौधे निकले हैं - जैसे बरसात के मौसम

में आम की गुठली से पेड़ निकलता है।"

गोमा बोली, "फिर से फेंक कर देखें?"

तो दोनों मां के पास गए और दाने मांगे। पर मां ने दाने देने से मना कर दिया। वह बोली, "इतनी मुश्किल से दाने इकट्ठे किए हैं। इनसे कई दिनों तक काम चलाना है।" फिर भी, अगले दिन बोमा गोमा ने चुपके से कुछ दाने उठाए और घर के पीछे फेंक दिए।

वे रोज़ देखने जाते कि पौधे उगे कि नहीं। पर गर्मी का मौसम था। सूखी मिट्टी में दाने पड़े रहे। पक्षी और कीड़े उन्हें खा गए। बोमा और गोमा सोचते रहे। फिर उन्हें एक उपाय सूझा। गोमा बोली, "दानों को मिट्टी से ढक देते हैं। फिर पक्षी उन्हें नहीं खाएंगे।"

बोमा बोला, "हां, और उन पर पानी डालते हैं। शायद पानी मिलने पर ही पौधे उगते हों।"

उन्होंने फिर से बीज बोए और नदी से पानी ला कर बीजों पर डाला। कुछ दिनों में पौधे उग निकले। बोमा गोमा की खुशी का ठिकाना न था। वे हर दिन पौधों को बड़ा होते देखते रहे।

खेती-बाड़ी की ये बातें आज हमें बड़ी सीधी-सादी भले ही लगें, पर एक समय मनुष्य ने बहुत धीरे-धीरे उन्हें खोजा और समझा था।

कुछ महीनों में बोमा गोमा के पौधों पर दाने लगे। अगर सुंगा झुंड अपने पूर्वजों की तरह घूमता रहता तो शायद बोमा गोमा अपने पौधों पर दानों का लगना न देख पाते। पर अब तो सुंगा झुंड एक ही जगह रहता था।

'जंगली अनाज काफी है'

बोमा-गोमा ने जब अपने पौधों पर दाने लगे देखे तो उन्होंने एक-दूसरे से कहा, "अरे सचमुच यहां तो दाने बन गए!" वे दाने इकट्ठा कर के घर भागे। वे खुशी से चिल्लाते जाते, "देखो हमने अनाज बना लिया, हमने अनाज बना लिया।"

झुंड के लोग बोमा और गोमा की बातें सुन कर हंसने लगे। बोले, "यहां इतना अनाज घासों पर लगा है। काटो और खाओ! अनाज का क्या बनाना?"

पर बोमा-गोमा के मन से अनाज की धुन नहीं उतरी। जब भी मौका मिलता, तरह-तरह के दाने बचा कर रख लेते। इसी तरह बहुत दिन और बीते।

क्या अजीब बात है। खेती कैसे कर सकते हैं- इसका पता भी चल गया, फिर भी सुंगा झुंड के लोगों को खेती करने में रुचि क्यों नहीं हुई? क्या तुम कारण समझ सके?

चलो आगे देखें क्या हुआ।

नई जगह की कठिनाइयां

एक दिन अचानक शिकारियों का दूस
कोई झुंड वहां आया जहां सुंगा झुण्ड रहता थ
और सुंगा झुंड से लड़ने लगा। सुंगा लोग दूस
झुंड के सामने टिक नहीं पाये और भाग ख
हुये। वे भागते-भागते दूर निकल गए।

फिर वे जहां रहने लगे वहां बहुत कठिनाइय
थीं। ज़रा-सी एक नदी बहती थी। वहां न जानव
आते थे, न ही फलों के घने पेड़ थे। नदी किना
जो घास उगती थी, उसके दाने खाने लायक नह
थे। सुंगा झुंड के लोग अब क्या करते?
ज़्यादातर मछली और केकड़े खा कर गुज़ा
करने की कोशिश करने लगे।

वाक्य पूरा करो-

1. सुंगा झुण्ड के लोगों को अपनी पुरानी जगह से दूसरी जगह जाना पड़ा क्योंकि ....

2. नई जगह पर खाने के लिये .... नही मिलते थे, केवल ...... मिलते थे।

बोमा-गोमा की कोशिश

एक दिन बोमा-गोमा अपनी मां से बोले, 'स
लोग परेशान क्यों हो रहे हैं? हमें तो अना
बनाना आता है। एक दाना बोने से कई सारे दा

मिलते हैं। चलो न मां, कुछ दाने मिट्टी में डालें, उन्हें उगाएं।"

मां बोली, "पहले ही अनाज के दाने बहुत कम बचे हैं। उन्हें मिट्टी में फेक दें? नहीं नहीं।"

बोमा-गोमा ने हार नहीं मानी। उन्होंने भी कुछ दाने बचा कर रखे थे। उन्हें ही मिट्टी में डाल दिया और नदी से पानी ला ला कर सींचा। कुछ दिनों में पौधे निकलने लगे। पर यह क्या? पौधे उगे ही थे कि मुरझाने लगे। बोमा-गोमा बहुत दुखी हुए।

उनकी बूढ़ी अम्मा कुछ दिनों से उनकी करतूतें देख रही थी और शायद समझ भी रही थी। बोमा गोमा को परेशान खड़ा देख कर, वह अपनी झोंपड़ी से निकल आई। उनके पास आकर कुछ देर पौधों को देख, सोचती रही। फिर बोली, "कहीं ऐसा तो नहीं कि आस-पास उगी घास पौधों को बढ़ने नहीं दे रही? चलो इसे खोद कर हटा दें।"

तीनों ने मिल कर ऐसा ही किया। नुकीली लकड़ी से एक जगह की घास खोद कर हटा दी। साफ मिट्टी पर फिर से अनाज के दाने बोए और पानी दिया।

नुकीली लकड़ी से उन दिनों और क्या-क्या किया जाता था?

सुंगा झुंड ने खेती अपनाई

इस बार जब पौधे उगे तो आसानी से बढ़ने लगे। झुंड के सारे लोग देखने आए। सब बहुत खुश हुए। खूब नाचे गाए। फिर रोज़ देखने आते कि पौधे कैसे बढ़ते हैं।

दो-तीन महीने बाद पौधों पर बीज लगे। फिर बीज पके। सब लोग मिल कर उन्हें काटने चले।

बूढ़ी अम्मा ने कहा, "देखो ध्यान रहे - जिन पौधों में खूब सारे बीज लगे हैं और अच्छे दाने लगे हैं, उन्हें अलग से काटो। उनके बीज को हम अगली बार बोयेंगे। तब अगली बार और ज़्यादा अनाज हमें मिलेगा।"

जब सब अनाज कटा तो लोगों ने पाया कि एक टोकरी भर अनाज हो गया है। एक मुट्ठी भर कर अनाज बोया था। एक टोकरी भर कर निकला।

सबने बोमा-गोमा को शाबाशी दी। अब सबने कहा, "अगली बार दस

मुट्ठी अनाज बोएंगे। देखें, कितना निकलता है। इस जगह पर अनाज की घास नहीं थी। पर अब हम बो कर उगा लेंगे।" इस तरह सुंगा झुंड ने खेती करनी शुरू की।

सुंगा झुंड के लोगों ने अनाज किस चीज़ से काटा होगा?

यह औज़ार पहले उनके किस काम आता था?

वाक्य पूरा करो :

नई जगह पर सुंगा झुंड ने खेती शुरू की क्योंकि ______________।

किसने शुरू की, कहां की और कब की

सबसे पहले खेती किसने शुरू की और कहां शुरू की? बोमा गोमा की बात तो एक कहानी है। वास्तव में सबसे पहले खेती की शुरुआत ईरान और ईराक देश की पहाड़ियों की **तलहटी** में हुई। आज से 8000-10000 साल पहले वहां रहने वाले लोगों ने सबसे पहले खेती करना शुरू किया। बाद में जगह-जगह कई शिकारी लोगों ने अपने यहां खेती करनी शुरू की। अपने देश में खेती की शुरुआत आज से 5-6 हज़ार साल पहले हुई।

जैसे सुंगा झुंड था वैसे शिकारियों के और भी कई झुंड थे। धीरे-धीरे उन्हें पौधों को उगाने के बारे में कई बातें पता भी चल गईं थीं। ख़ासकर, झुंड की औरतों को पेड़-पौधों के बारे में काफी ज्ञान रहता था। यह इसलिए क्योंकि आमतौर पर जंगली फल, दानें, जड़ें, आदि इकट्ठा करने का काम वे ही किया करती थीं। पेड़-पौधों को करीब से देखते-देखते वे उनके बारे में काफी कुछ समझने लगीं थीं। जब ज़रूरत पड़ी तो उन्होंने इस जानकारी का उपयोग किया और खुद पौधे उगाना शुरू किया।

क्या सभी झुंडों ने खेती अपनाई?

कई झुंडों ने खेती शुरू कर दी। फिर भी कई और झुंड शिकार कर के, व जंगली फल आदि बटोर के ही रहते रहे। उन्हें खेती अपनाने की ज़रूरत ही नहीं लगी।

सुंगा झुंड को भगा कर उनकी पुरानी जगह पर दूसरा झुंड रहने लगा था। क्या उस झुंड ने भी खेती शुरू की होगी? सोच कर बताओ।

यह तो तुमने भी देखा होगा कि जब कोई नई चीज़ आती है तो सब लोग उसे एक साथ नहीं अपनाते।

जंगली गेहूं आज का गेहूं

जंगली मक्का आज का मक्का

दूसरे जंगली अनाज
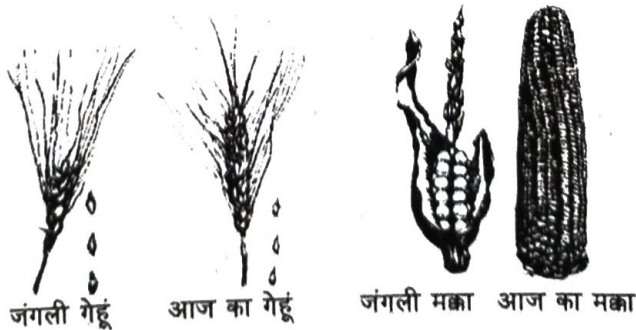
जब ट्रेक्टर आया तो क्या सब किसानों ने ट्रेक्टर खरीद लिया?

जब मोटर-सायकिल आई तो बैलगाड़ी और सायकिल का उपयोग क्या बन्द हो गया?

इन बातों के क्या कारण हैं?

आज भी दुनिया में कहीं-कहीं ऐसे झुंड हैं जो शुरू से लेकर आज तक शिकार व बटोरने का काम ही करते आ रहे हैं। उनके चारों तरफ खेती, व्यापार, कारखाने शुरू हो गए हैं। पर वे अभी भी जंगलों में शिकार करके जीते हैं।

अपनी-अपनी परिस्थिति और ज़रूरत के अनुसार अलग-अलग झुंडों ने काम किया। दुनिया भर के झुंड एक साथ खेती करने लगे हों, ऐसा नहीं था। किसी झुंड ने पहले खेती शुरू की तो किसी झुंड ने बाद में और किसी झुंड ने आज तक नहीं की।

किसी झुंड ने जौ के पौधे उगाने शुरू किए क्योंकि उसके इलाके में जंगली जौ ही उगती थी। किसी झुंड ने मक्के की खेती शुरू की क्योंकि उसके इलाके में जंगली मक्का ही मिलता था। कहीं शकरकंद उगाया जाने लगा, कहीं गेहूं। इस तरह धीरे-धीरे दुनिया में खेती फैलने लगी।

अभ्यास के प्रश्न

1. शिकार करते हुए भी किसी झुंड के लोग एक जगह बस के कैसे रह सकते थे? समझाओ।
2. बोमा-गोमा ने अनाज उगाने के बारे में क्या-क्या बातें सीखीं थीं?
3. पुरानी जगह पर झुंड के लोगों ने अनाज बोने से मना क्यों किया था? नई जगह पर वे अनाज बोने को तैयार क्यों हो गये थे?
4. क) खुदाई करने से मिली जानकारी के अनुसार खेती की शुरुआत सबसे पहले कहां हुयी थी?

   ख) पाठ पढ़ने से पहले तुम खेती की शुरुआत के बारे में क्या सोचते थे? पाठ पढ़ के तुम्हें क्या बातें पता चलीं? अगर तुम्हारे मन में इसके बारे में कुछ और प्रश्न हों तो **सवालीराम**को लिख के पूछो।

   ग) खेती की शरुआत के बारे में यहां दिये अंश को पढ़ो और उसे पूरा करो।

   खेती की शुरुआत कैसे हुई होगी?

   पहले सभी झुंड जंगल से शिकार और फल लाते थे। वे जंगल में उगने वाला अनाज भी बटोर कर खाते थे। जब तक किसी झुंड को ये चीज़ें ठीक से मिलती रही होंगी तब तक वह झुंड इसी तरह रहता रहा होगा। पर अगर ....
5. सही गलत बताओ -

   (क) सुंगा झुंड से सीख कर ही दुनिया के सब झुंडों ने खेती करना शुरू कर दिया।

   (ख) सब झुंडों में बोमा गोमा जैसे बच्चों ने खेती की खोज की।

   (ग) खेती शुरू करने के काम में आम-तौर पर झुंड की औरतें आगे रही होंगी।

   (घ) अलग-अलग झुंडों ने अलग-अलग समय पर खेती अपनाई।

   (ड) शुरू-शुरू में सब झुंड गेहूं की खेती किया करते थे।

तब से अब तक .... जोतना, बोना, काटना...

यहां खेती के पुराने और नये औज़ारों के चित्र मिले हुए हैं। तुम इन्हें छांट कर अलग-अलग करो और नीचे की तालिका में लिखो कि सबसे पुराना, फिर उससे नया और सबसे नया औज़ार कौन सा है -

दुफन

नुकीली लकड़ी

ट्रेक्टर से बोनी

	जोतने का औज़ार	बोने का औज़ार	काटने का औज़ार
सबसे पुराना			
उससे नया			
सबसे नया			

हार्वेस्टर से कटाई

हाथ से बोनी

लकड़ी की कुदाल

हल

पत्थर के दांत की हंसिया

ट्रेक्टर

लोहे की हंसिया

मनुष्य ने जानवर पालना शुरू किया

जैसे मनुष्य ने कभी खेती शुरू की, वैसे ही कभी जानवरों को पालतू बनाना भी शुरू किया। जिस समय खेती की शुरुआत हुई लगभग उसी समय **पशुपालन** भी शुरू हुआ। किसी झुंड ने जंगली गाय को पालतू बनाया तो किसी और झुंड ने भेड़ और बकरी को पालना शुरू किया। जानवर का शिकार करते-करते क्यों और कैसे मनुष्य उसे पालने लगा - इस बात का तो हम अंदाज़ा ही लगा सकते हैं।

शायद ऐसा होता था कि शिकार करते वक्त जंगली जानवरों के नन्हें बच्चे शिकारी लोगों की पकड़ में आ जाते थे। मरे हुए जानवर के साथ-साथ शिकारी लोग जानवरों के बच्चों को भी ज़िन्दा पकड़ के अपने डेरे में ले आते थे। वे यह सोचते थे कि जब शिकार हाथ नहीं आएगा तब इन ज़िन्दा जानवरों को मार कर खा लेंगे। इस तरह शिकारी लोग भेड़ों व बकरियों के नन्हें मेमनों को, नन्हें

बछड़ों व बछियाओं और दूसरे जानवरों के बच्चों को अपने पास बांध के रखने लगे। उन्हें खिलाने पिलाने लगे। फिर धीरे-धीरे उन्होंने समझा कि इन जानवरों को मार कर खा लेने की बजाए यदि ज़िन्दा पाला जाए तो बहुत से नए-नए फायदे मिल सकते हैं। इस तरह लोग पशुओं को पालने लगे।

पशुपालन अपनाने के कारण लोगों को कई नई चीज़ें मिलीं। पशुओं से कई कामों में मदद मिली। पशुओं की देख-रेख के लिए मनुष्य को कई नए काम भी करने पड़े।

पशुपालन के काम

नीचे दी गई सूची में से पहचानो कि इनमें से कौन से काम तब शुरू हुए जब मनुष्य पशुपालन करने लगा? उन कामों को अलग करके लिखो।

जानवर के चारे का इंतज़ाम, जानवर को मारने के लिए घेरना, जानवर के पीने के पानी का इंतज़ाम करना, मरे जानवर को कंधे पर ढो कर लाना, बीमार जानवर का इलाज़ कराना, जानवर को नहलाना, मरे जानवर की खाल उतारना, जानवर के रहने की जगह बनाना, थके जानवर को सुस्ताने देना, थके जानवर पर वार करना, जानवरों की दूसरे जानवरों से रक्षा करना, जानवरों को चोरी-डकैती से बचाना, मरे जानवर के सींग निकालना, जानवर का मांस काटना, दूध दुहना, जानवर के बच्चों के जन्म में मदद करना।

पशुपालन से लाभ

पशु पालना शुरू करने के बाद मनुष्य को कई तरह के लाभ भी मिलने लगे। पालतू पशुओं से हमें किस तरह के लाभ मिलते हैं, यह तो तुम जानते ही हो।

नीचे बताई बातों में से वे कौन से लाभ हैं जो मनुष्य को पशुपालन करने के बाद ही मिलने लगे?

दूध, मांस, घी, चरबी, दही, खाल, ऊन, हड्डी की चीज़ें, सींग की चीज़ें, गाड़ी खींचने की सहायता, सामान ढोने की सहायता, हल खींचने की सहायता।

पशुओं से मनुष्य को तरह-तरह की चीज़ें मिलने लगीं। पर यही नहीं। कई पशुओं की ताकत भी मनुष्य के काम आने लगी। जैसे– बैल, भैंस, ऊंट, घोड़ा, खच्चर आदि।

क्या तुम्हें लगता है कि इन पशुओं में मनुष्य से ज़्यादा ताकत होती है?

इन पशुओं की सहायता के बिना मनुष्य को एक जगह से दूसरी जगह जाने में और एक जगह से दूसरी जगह माल लाने-ले जाने में बहुत कठिनाई होती थी। पशुओं की सहायता से यात्रा करना सरल हो गया। आगे जा कर खेती करने में भी बड़ी सहायता मिली।

क्या तुम बता सकते हो कि पशुओं से खेती में क्या-क्या लाभ मिलता है?

इन सब बातों से मनुष्य का जीवन बहुत बदलने लगा। यह तुम आगे के पाठ में देखोगे।

3. गांवों का बसना

अब हम उस समय पर आ गए हैं, जब लोग खेती करके जीने लगे थे। ऐसी कोई तीन-चार बातों पर चर्चा करो जो खेती करने के बाद लोगों के जीवन में ज़रूर बदली होंगी।

किसानों का गांव

यहां खेती करने वाले एक झुंड के गांव का चित्र दिया है। खेती करने वाले झुंड का यह चित्र शिकारी मानव के चित्रों से कितना अलग दिखता है! पर, शिकारी मानव के दिनों की तुलना में क्या सब कुछ बदल गया है?

चित्र की हर चीज़ को ध्यान से देखो। देखो कि वो शिकारी मानव के समय में भी थी या नई है? इस तालिका में लिख कर बताओ :

चित्र में शिकारी मानव के समय की बातें	***चित्र में खेती के बाद की नई बातें***
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.

तुम्हारे ध्यान में यह बात आ गई होगी कि झुंड के लोग खेती करने के बाद भी शिकार करके लाते हैं। पर इसमें आश्चर्य की क्या बात है? खेती के वे शुरू-शुरू के दिन थे। तब लोग खेती-बाड़ी के तौर-तरीके सीख ही रहे थे। इतनी खेती नहीं हो पाती थी कि साल का पूरा भोजन उसी से मिल जाए। लोगों को भोजन में मांस की ज़रूरत भी थी। इसलिए खेती के साथ आसपास के जंगलों से शिकार मार के लाना और फल-जड़ बटोर के लाना भी चलता रहा। पर, पहले की तरह नहीं। पहले मनुष्य अपने भोजन के लिए पूरी तरह जंगल पर **निर्भर** था। अब वह खेती पर निर्भर रहने लगा था।

इस झुंड ने हर साल धीरे-धीरे जंगल काट के साफ किए थे। पर, इस काम को करने के लिए उनके पास कौन से औज़ार थे ? उनके पास पत्थर की कुल्हाड़ियां थीं जो लकड़ी के हत्थों में फंसा कर काम में लाई जाती थीं। पत्थर की कुल्हाड़ियों से घने जंगल काटने में बहुत समय लगता था और बहुत कठिनाई होती थी। उन दिनों लोहा, तांबा जैसी धातुओं का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था। इसलिए ज़्यादा अच्छे औज़ार इस झुंड के पास नहीं थे।
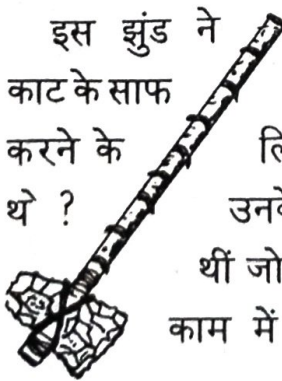
झुंड के सब लोगों ने बहुत मेहनत से काम किया। उन्होंने जंगल काट कर जलाए। मिट्टी के बीच पड़े कंकड़-पत्थर भी साफ किए। तब जा कर ज़मीन खेती के लायक बनती गई। झुंड के सब लोगों की मेहनत से खेती का इलाका फैलता गया। तुमने चित्र में देखा कि गांव के आसपास खेत हैं और जंगल दूर तक नहीं दिख रहे हैं।

खेती करने वाले लोग शिकार क्यों करते थे?

झुंड के लोगों को खेती फैलाने में समय क्यों लगा?

एक जगह बसना

नदी किनारे गांव था। हर साल बरसात के दिनों में नदी में बाढ़ आती थी । बाढ़ का पानी खेतों में भर जाता था । कुछ दिनों में बाढ़ का पानी तो उतर जाता था, पर खेतों में नई मिट्टी बिछी रह जाती थी। हर साल इस नई मिट्टी पर अच्छी फसल उग आती थी। साल-दर-साल इन्हीं खेतों से बारहों महीनों का अनाज, दाल मिलने लग गया था। अब भोजन की तलाश में जगह-जगह घूमने की ज़रूरत नहीं रही थी।

लोग अब घूम भी नहीं सकते थे क्योंकि खेती की देखभाल करनी पड़ती थी।

बोनी से लेकर कटाई तक खेती की देखरेख में क्या-क्या करना होता है, बताओ।

नदियों, तालाबों और नालों के आसपास गांव बसते गए। कई-कई सालों तक लोग उनमें रहने लगे। लोग अब लंबे समय तक एक ही जगह बसकर रहने लगे।

शुरू के इन गांवों में 100 से 150 लोगों की आबादी रहा करती थी। यह आज के गांवों की तुलना में तो कम है। पर शिकारी मानव के झुंड की तुलना में ज़्यादा लोग एक साथ एक जगह रहने लगे थे।

शुरू-शुरू के घर

खुदाई करने पर हमें शुरू-शुरू के घरों के **अवशेष** (यानी बचे हुए निशान) मिलते हैं। इन्हें देखकर ऐसा लगता है कि अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग तरह के घर बने। कहीं लोग मिट्टी को खोद कर गड्ढे में घर बनाते थे। कहीं घास-फूस के भी घर बनाते थे। नर्मदा किनारे घर कैसे बनते थे – इस बात का अन्दाज़ा तुम यहां दिए गए चित्रों को देख कर लगा सकते हो।

शुरू-शुरू में घर बनाने का एक तरीका

लोग जंगल से ये चीज़ें काट के ले आते और मिट्टी इकट्ठी करके पानी में घोल लेते।

सबसे पहले वे ज़मीन साफ कर के कंकड़-पत्थर हटा देते और फर्श एक सा कर देते। फिर ज़मीन में गड्ढे खोद कर लकड़ी के खम्भों को गाड़ देते–
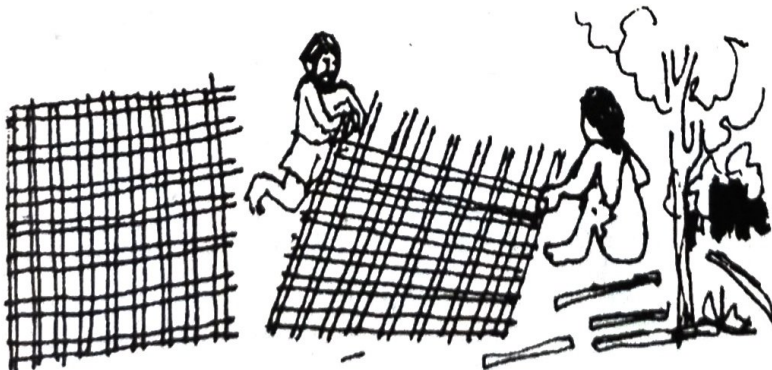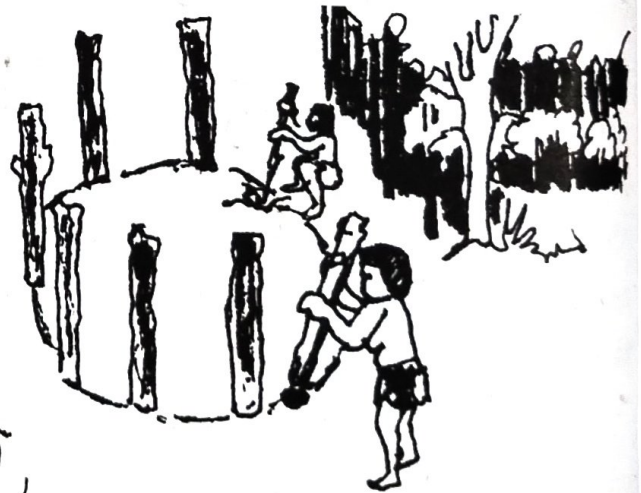
फिर बांस की खपच्चियां बनाते। खपच्चियों को बुन कर टट्टे तैयार करते।
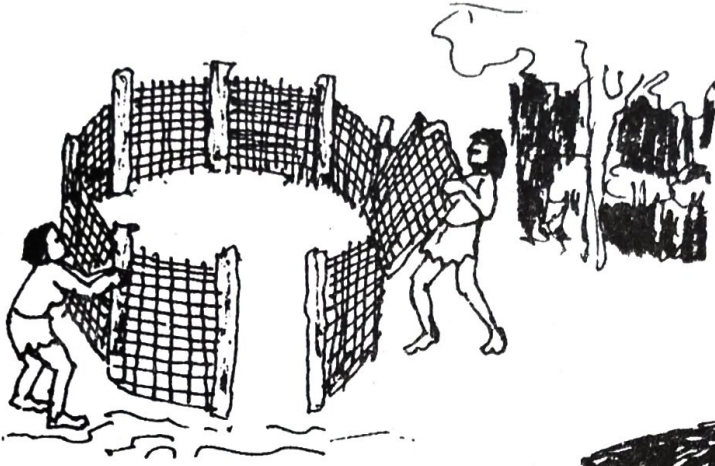
टट्टों को खंभों के साथ बांध देते।

फिर बांस की खपच्चियों से छत बनाते।
उसके ऊपर घास बिछा कर बांध देते।

फिर छत को खम्भों पर चढ़ा कर कस के बांध देते।
टट्टों पर अन्दर और बाहर से मिट्टी का लेप कर देते। फर्श भी मिट्टी से लीप देते।

क्या तुम्हारे गांव में भी कुछ घर इस तरह बनाए जाते हैं?

याद करो शिकारी मानव कैसे रहता था?

शिकारी मानव अपने रहने का इतना पक्का इंतज़ाम नहीं करता था, जितना खेती करने वाले लोग करने लगे।

तुम्हें क्या लगता है – शिकारी मानव को ऐसे मज़बूत घर बनाने की ज़रूरत क्यों नहीं पड़ती थी?

खेती करने वाले लोगों को मज़बूत घरों की ज़रूरत क्यों थी?

अनाज जोड़ के रखना

खेती करने वालों को कई नई बातों का सामना करना पड़ा। हर साल फसल की कटाई के बाद एकदम अनाज का ढेर लग जाता था। पानी से, कीड़ों से और चूहों से अनाज बचाना था। इस अनाज को कई महीनों तक खाने के लिए **सुरक्षित** रखना ज़रूरी था।

अनाज, दाल, तिल जैसी चीज़ें बिना सड़े कितने दिन रह सकती हैं?

शिकारी मनुष्य का भोजन कितने दिन तक बिना सड़े रह सकता था?

सामान भर के रखने की ज़रूरत किसे ज़्यादा थी– शिकारी मानव को या खेती करने वालों को?

शिकारी मानव का काम तो पतली टहनियों की टोकरियों से, खाल की पोटलियों से या पत्तों के दोनों से चल जाता था। पर खेती की शुरुआत के बाद अनाज भर के रखने के लिए मनुष्य को बड़ी और मज़बूत चीज़ें बनानी पड़ीं।

लोगों को बांस या टहनियों की छोटी टोकरियां

बुनना तो आता ही था। अब उन्होंने बड़ी टोकरियां बुनीं। टोकरियों पर चिकनी मिट्टी का लेप किया। फिर उन्हें धूप में सुखाया या आग में पकाया। आग में टोकरी तो जल जाती थी पर मिट्टी का खाका पक्का बन जाता था।

अनाज भरने के बर्तन बनाने के लिए एक और तरीका भी अपनाया गया। इसके लिए मिट्टी को अच्छी तरह गूंथ लिया जाता था। फिर मिट्टी को हाथों के बीच मल कर लम्बा सा रस्सा जैसा कर लिया जाता था। मिट्टी के लम्बे रस्से से एक गोल घेरा बनाया जाता था। फिर उस पर एक-एक कर के घेरा चढ़ाते जाते थे। इस तरह यह घेरा एक बड़े घड़े जैसा बन जाता था। इसमें अनाज भर कर रख देते थे।

क्या तुम समझा सकते हो कि शिकारी मानव के झुंड ने बड़ी और पक्की टोकरियां क्यों नहीं बनाई थीं?

आज-कल अनाज किन चीज़ों में भर कर रखा जाता है?

भोजन पकाने की नई चीज़ें

खेती करने के बाद लोग अनाज ज़्यादा खाने लगे। जिन लोगों ने पशुपालन भी शुरू कर दिया था, उनके भोजन में दूध भी जुड़ गया था। दूध, अनाज, दाल पकाने के लिए मनुष्य को नई चीज़ें बनानी पड़ीं।

शिकारी मानव मांस को आग पर लटका के भून लेता था। वह फल, कन्द-मूल कच्चे खा लेता था। जंगली अनाज के थोड़े बहुत दाने आग में भुन जाते थे या पानी में भिगो कर खाए जाते थे। शिकारी मानव ने खाना पकाने के लिए बर्तन नहीं बनाए थे।

खेती करने वाले लोगों ने अनाज, दाल, दूध पकाने के लिए कई तरह के बर्तन बनाए। लोग हाथ से मिट्टी के बर्तन बनाने लगे। इन बर्तनों को वे धूप में सुखा लेते थे या आग में पका लेते थे। उन दिनों चके की खोज नहीं हुई थी। इसलिए आज जिस तरह चके पर मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं उस समय नहीं बनाए जा सकते थे। जब चके की खोज हुई तो गांव के लोग चके पर सुन्दर बर्तन भी बनाने लगे।

अनाज को कूटने और पीसने के लिए भी कुछ इन्तज़ाम करना ज़रूरी था। इस काम के लिए सिल-बट्टे का इस्तेमाल होने लगा।

आज-कल अनाज कैसे पीसा जाता है?

सिलबट्टा आज किस काम में आता है?

एक और समस्या भी थी। बर्तन को आग पर रखने से आग बुझ जाती थी। लोगों ने आग के दोनों तरफ जगह ऊँची करनी शुरू की जिससे उस पर ठीक से बर्तन टिकाए जा सकें। इस तरह चूल्हे बनने लगे।

सोच कर बताओ कि अगर आज चूल्हा और सिलबट्टा न हों तो हमारे खाने की चीज़ों में क्या-क्या कमी आ जाएगी?

शुरू के गांवों के निशान

जैसे शिकारी मानव के निशान मिलते हैं वैसे ही शुरू के गांवों की बची-खुची चीज़ें भी मिलती हैं।

क्या तुम्हें याद है कि शिकारी मानव के क्या निशान मिलते हैं?

शुरू के गांव जहां-जहां थे, वहां खोदने पर लीपे हुए फर्श मिलते हैं, तरह-तरह के मिट्टी के बर्तन मिलते हैं, चूल्हे के हिस्से मिलते हैं, पत्थर के सिलबट्टे मिलते हैं, बारीक पत्थरों के औज़ार मिलते हैं, घिस कर चमकाई हुई पत्थर की कुल्हाड़ियां मिलती हैं। यही नहीं, अनाज के जले हुए कुछ दाने भी अब तक बचे रहे हैं। पालतू जानवरों की हड्डियां भी वहां पाई जाती हैं। कहीं-कहीं मिट्टी की छोटी मूर्तियां भी निकल

आती हैं। ये शायद उन लोगों की देवियों की मूर्तियां थीं।

इतनी चीज़ें आज भी बची हुई मिल जाती हैं। इन्ही चीज़ों से हमें उन लोगों के बारे में पता चलता है। फिर भी शुरू के गांवों की बहुत सी चीज़ें समय के साथ **नष्ट** हो गई हैं।

क्या तुम बता सकते हो कि शुरू के गांवों की किन चीज़ों के निशान आज नहीं मिल सकते हैं?

अभ्यास के प्रश्न

1. खेती करने वाले लोग घर क्यों बनाने लगे?
2. खेती करने वाले लोगों को भोजन की तलाश में घूमने की ज़रूरत क्यों नहीं रही?
3. (क) खेती करने वाले लोगों को इन चीज़ों की ज़रूरत क्यों थी –
    1. खाना पकाने के बर्तन
    2. अनाज रखने के बड़े बर्तन
    3. चूल्हा
    4. सिलबट्टा

   (ख) इन चीज़ों के बगैर कैसे काम चलाया जा सकता है? समझाओ।
4. बोमा-गोमा का झुंड भी एक जगह रहता था और खेती करने वालों का झुंड भी एक जगह बस कर रहता था। फिर भी दोनों झुंडों में कई फर्क हैं। कोई तीन फर्क सोच कर लिखो।
5. इस चित्र में बहुत सी चीज़ें दिख रहीं हैं। कौन सी चीज़ें हैं जो शिकारी मानव की नहीं हो सकतीं? कौन सी चीज़ें शिकारी मानव और खेती करने वाले लोग- दोनों की हो सकती हैं? अलग-अलग पहचान कर निशान लगाओ।
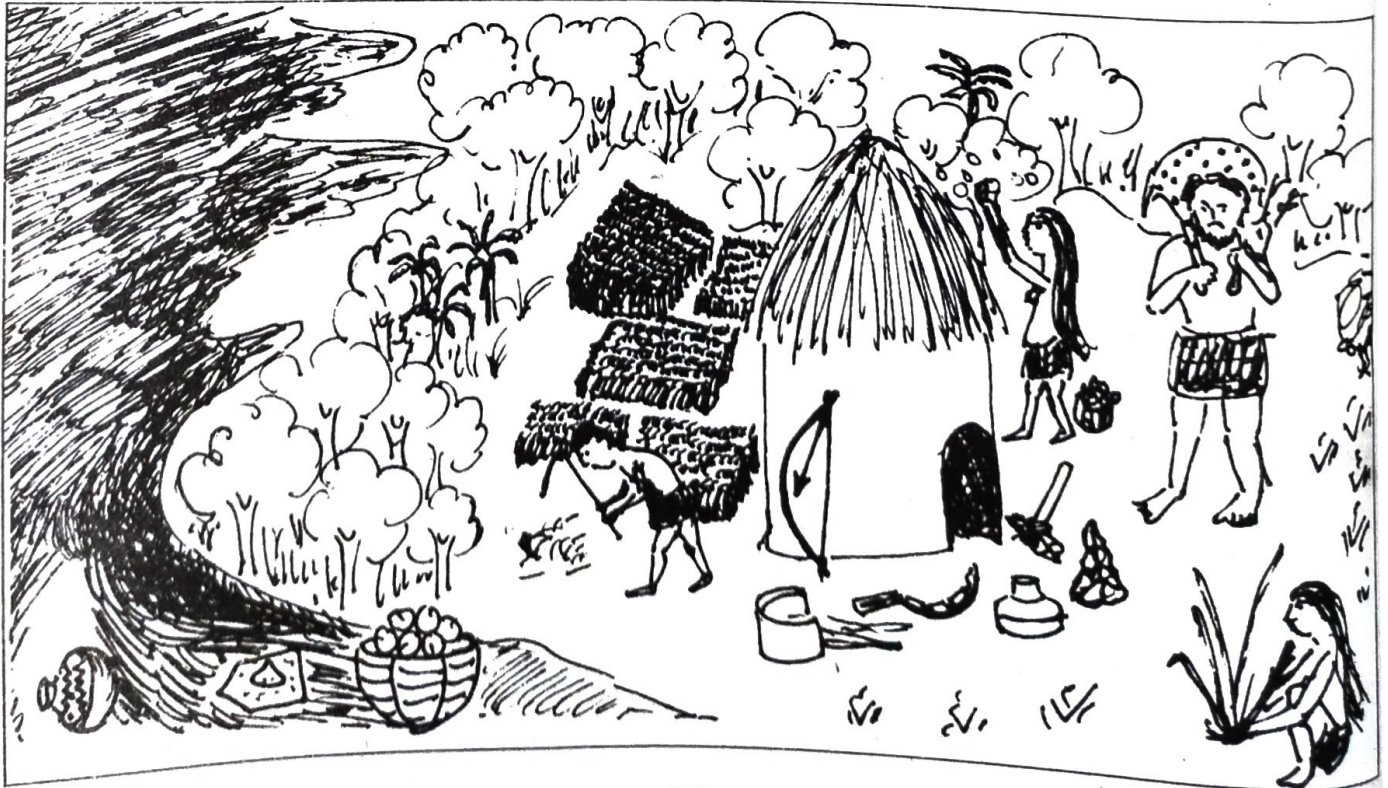
6. बहुत समय बीता। शुरू का गांव कैसा होता था, तुम जानते हो। सैकड़ों सालों बाद वह गांव ऐसा दिखने लगा-

क. इन सैकड़ों सालों में गांव में क्या-क्या बदला, ढूंढो ।

ख. अगर तुम इसे आज के गांव का चित्र बनाना चाहो तो इसमें और क्या-क्या जोड़ोगे? चित्र में जोड़ कर दिखाओ ।

7. ज़मीन खोदने पर शुरू के गांवों के निशान मिलते हैं। एक बार ये निशान मिले –

क. क्या तुम पहचान सकते हो कि यहां पहले क्या रहा होगा?

ख. अगर आज से कई हज़ार साल बाद तुम्हारे स्कूल के भवन के निशान ज़मीन में दबे मिलें, तो कैसे दिखेंगे? चित्र बना कर बताओ ।
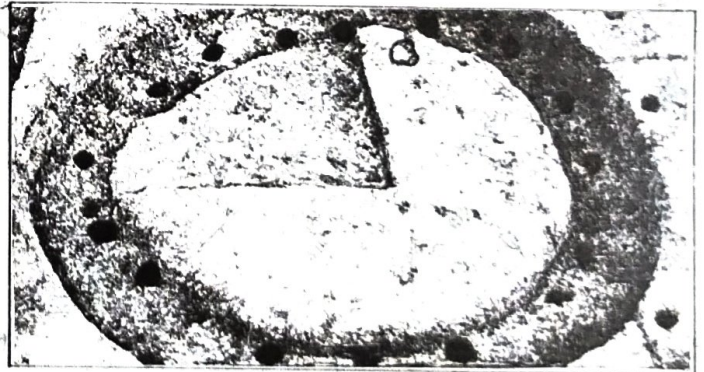
8. क्या इस पाठ से शुरू के गांवों के बारे में सारी बातें पता लग जाती हैं ?
क्या तुम्हारे मन में ऐसे कुछ सवाल हैं जिनका उत्तर पाठ में नहीं है ?
तुम अपने सवाल **सवालीराम** को चिट्ठी लिख कर पूछ सकते हो ।

4. सबसे पुराने शहर - सिन्धु-घाटी के शहर

ज़रा अन्दाज़ा लगाओ भारत में सबसे पहले शहर कब बने होंगे-
100 साल पहले, या 5 हज़ार साल पहले, या 50 हज़ार साल पहले?
सबसे पुराने शहरों में आज के शहरों जैसा क्या रहा होगा? और आज के शहरों से फर्क क्या रहा होगा?
तुम उन सबसे पुराने शहरों के बारे में क्या जानना चाहते हो ?
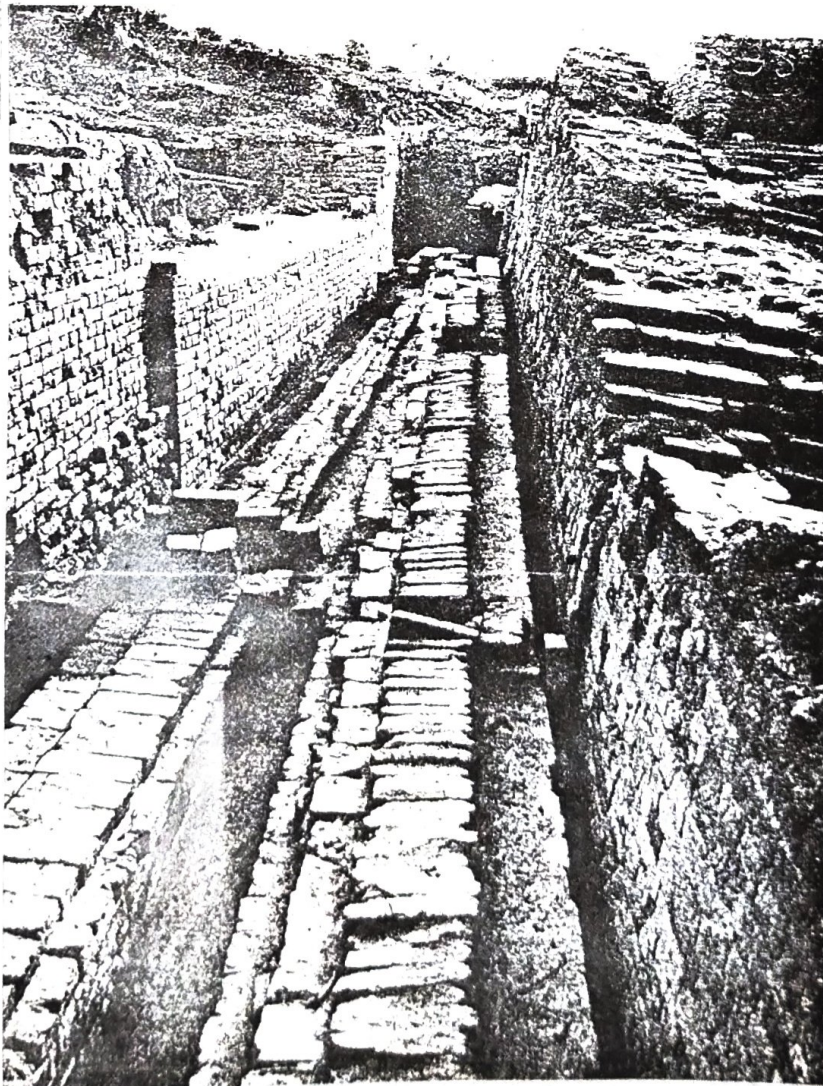
मोहनजोदड़ो शहर की सड़कें और नालियां

छह-सात हज़ार साल पहले भारत में भी कई जगहों पर खेती शुरू हुई थी। गांव बसे थे। इनके बारे में तुम पिछले पाठ में पढ़ चुके हो।

पुराने शहरों की खोज

सन् 1922 की बात है। तब भारत में अंग्रेज़ों का राज्य था। सिन्ध प्रान्त में एक गांव था मोहनजोदड़ो। एक बार इस गांव के लोग ज़मीन खोद कर मिट्टी निकाल रहे थे।

पर यह क्या? उन्होंने पाया कि नीचे तो ईंट की एक बड़ी दीवार दबी हुई थी। लोगों को बहुत **अचम्भा** हुआ। वे सोचने लगे- यहां कोई रहता था क्या? आखिर कितना पुराना है यह सब ?

मोहनजोदड़ो की सड़क व घर

चार-पांच हज़ार साल पहले लोग खेती करके, पशु पाल के या शिकार आदि कर के जीते थे। क्या इतने पुराने समय में शहर भी बन गये थे?

गांवों के बीच शहर

धीरे-धीरे और खोज हुई। कई जगहों पर खुदाई की गई तो पता चला कि उस समय एक नहीं, दो नहीं, कई शहर थे। ये शहर भारत के सभी इलाकों में नहीं बसे थे। वे ख़ास कर एक बड़ी नदी और उसमें मिलने वाली दूसरी छोटी नदियों की **घाटी** में बसे हुए थे।
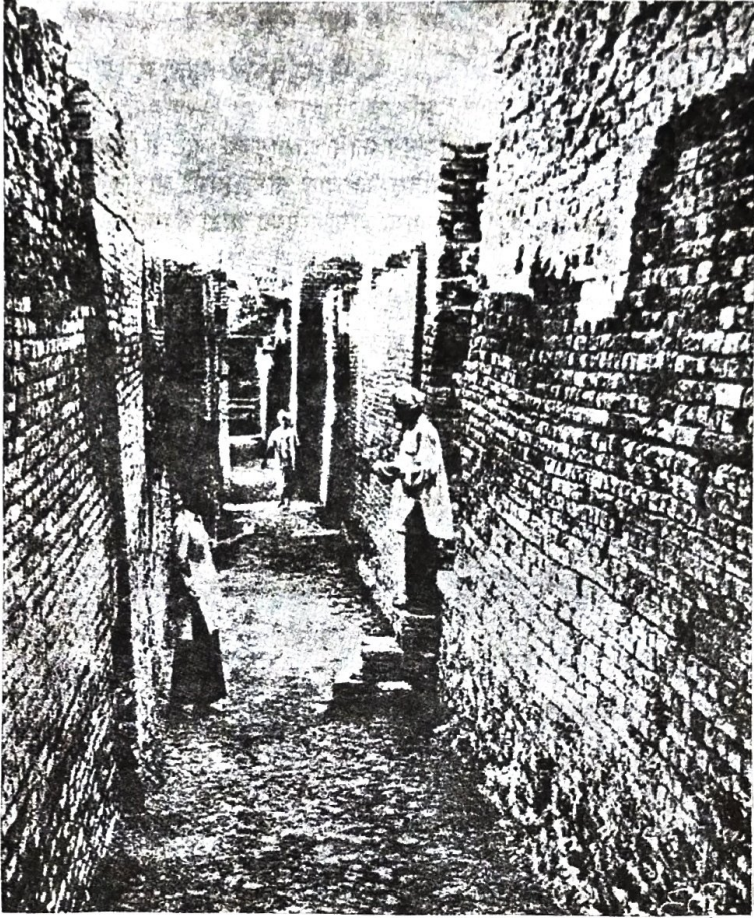
पुरानी चीज़ों की खोज करने वाले लोगों ने और गहरी खुदाई की तो नीचे दबा हुआ पूरा का पूरा शहर निकल आया। लोग नीचे उतर कर उसकी गलियों में घूमने लगे।

उन्होंने देखा कि घरों से उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हैं। मानो आज के घर हों! और घरों के बीच यह सड़क! जैसे आज शहरों में बनती है। इतना बड़ा शहर! यहां कितने लोग रहते होंगे?

जब खोजबीन की गई तो पता चला कि यह दबा हुआ शहर बहुत ही पुराना है। **आश्चर्य** तो तब हुआ जब पता लगा कि यह शहर चार-पांच हज़ार साल पुराना है। उस समय यह माना जाता था कि

तुम मानचित्र -1 में देख कर बताओ कि उन सबसे पुराने शहरों के निशान जिन जगहों पर मिलते हैं उनके नाम क्या हैं ?

ये जगहें किस बड़ी नदी की घाटी में हैं?

किन नदियों के मैदानों में सबसे पुराने गांवों के निशान मिलते हैं?

क्या उन पुराने शहरों के चारों तरफ गांव बसे थे?

आज जो शहर बसे हैं, उनमें से किन शहरों को तुमने देखा है?

क्या आज के शहरों के चारों तरफ भी गांव हैं?

अगर गांव न हों तो क्या शहर बन सकते हैं?

सिन्धु नदी की घाटी और उसके आसपास के मैदान में गांवों को बसे हज़ार-दो-हज़ार साल हो गए थे। उसके बाद जाकर उन गांवों के बीच कई शहर बने।

बहुत से शहर जहां बसे थे वह इलाका आज पाकिस्तान देश में आता है। लेकिन रोपड़ नाम की जगह भारत के हरियाणा राज्य में है, कालीबंगां भारत के राजस्थान राज्य में और लोथल भारत के गुजरात राज्य में है।

भारत के सबसे पुराने शहर ---------- नदी की घाटी में बने।

इन शहरों की खोज सन् -------- में हुई।

शहरों के निशान -------, ---------- आदि जगहों पर मिलते हैं।

सिन्धु-घाटी के शहरों की इमारतें

खोदने पर शहरों में कई तरह की बड़ी-छोटी **इमारतें** मिलीं। कई दो मंजिला घर थे, अमीरों की कोठियां थीं, ग़रीब कारीगरों के छोटे-छोटे घर भी थे।

चित्र में उन इमारतों की दीवारें देखो। कितनी ऊंची दीवारें हैं। इन्हें किसी मिस्त्री ने बनाया होगा! दीवारें पक्की ईंटों की बनी हुई हैं। उस समय ईंट बनाने की भट्टियां रही होंगी! क्या पता भट्टियों पर कौन लोग काम करते थे! शायद तब ग़रीब मज़दूर हुआ करते थे!

शहर की सड़कें गांव की गलियों की तरह टेढ़ी-मेढ़ी नहीं थीं। बिल्कुल सीधी-सीधी थीं। सड़कों के किनारे पक्की नालियां बनी थीं। हर घर की नाली बड़ी नालियों से मिल जाती थी। यह सब देख कर लगता है कि ये शहर कितनी **सूझबूझ** के साथ बनाए गए थे।

ये शहर किसने बनाए, क्यों बनाए - यह कहानी तो शायद हमें कभी पता नहीं चलेगी। पर उनकी बची-खुची निशानियां देख कर हमें यह ज़रूर पता लग जाता है कि शिकारी मानव और शुरू के गांवों की तुलना में शहर के लोगों का जीवन कितना बदल गया था।

सिन्धु-घाटी के शहरों की खुदाई में पक्के घरों के अलावा बड़े-बड़े गोदाम मिलते हैं। आसपास के गांवों से अनाज इकट्ठा कर के इन्हीं गोदामों में रखा जाता होगा।

घरों और गोदामों के अलावा मोहनजोदड़ो में एक बड़ा सा तालाब मिला है। इसके चारों तरफ कमरे बने हुए थे। हर कमरे से तालाब तक आने के लिए अलग-अलग सीढ़ियां बनी थीं। क्या पता इस तालाब में कौन लोग नहाते थे और उनके नहाने के लिए इतने सारे इन्तज़ाम क्या सोच के किए गए थे!

खुदाई करने पर शहरों की कैसी इमारतें मिलती हैं?

ऐसा क्यों लगता है कि सिन्धु घाटी के शहर बहुत सोच-विचार कर बनाए गए थे?

शहरों को बड़े गोदामों में अनाज भर के रखने की ज़रूरत क्यों पड़ी होगी?

बड़ी बड़ी इमारतों के अलावा सिन्धु-घाटी के शहरों से कई छोटी मोटी चीज़ें भी मिलती हैं। इनके चित्र देखो।
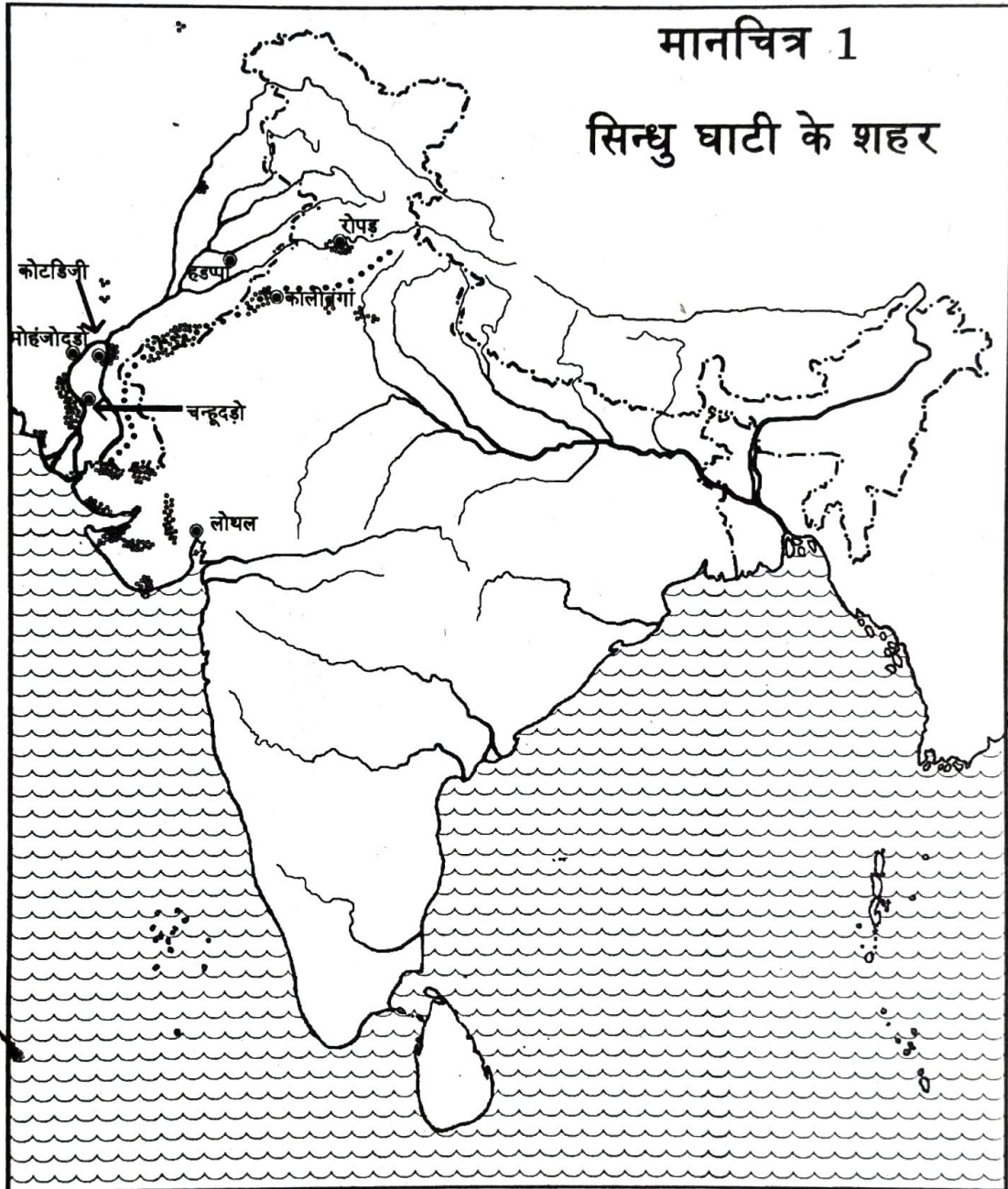
Based upon Survey of India map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—·—
सागर	⌒⌒⌒
शहर	●
गांव व बस्ती	⁝
सरस्वती नदी	······

धातु की चीज़ें

कांसे की लंबी-पतली तलवार देखो – कितनी पैनी है।

क्या इस तरह की तलवार पत्थर से बनाई जा सकती थी?

धातु की और कौन सी चीज़ें चित्र में दिख रही हैं?

ये चीज़ें तांबे और कांसे की बनी हुई हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सिन्धु घाटी के शहरों के समय तक लोग ज़मीन में से धातु निकालने और उसे साफ करने और गला कर चीज़ें बनाने के तरीके सीख गए थे।

पर आश्चर्य की बात तो यह है कि धातु की चीज़ें बनाने के साथ-साथ लोग पत्थर के औज़ार भी बनाया करते थे। इसका कारण शायद यह था कि तांबा व कांसा जैसी धातुएं, पत्थर की तुलना में बहुत ज़्यादा मज़बूत नहीं होतीं। ये धातुएं हर जगह आसानी से मिलती भी नहीं हैं। इसीलिए लोग कई औज़ार पहले की तरह पत्थर से ही बनाते रहे।

पहिया

खिलौने की बैल-गाड़ी देखो – लगता है जैसे अपने समय की बैलगाड़ी हो !

पर, एक फर्क है – ढूंढ सकते हो?

जो भी हो, इस बैल-गाड़ी में एक बहुत बड़ी खोज छिपी है – वो है पहिया। पहिए से कितने काम आसान हो जाते हैं!

तुम अपने आसपास किस-किस काम में पहिए या चक्के का इस्तेमाल होता देखते हो?

आज हम यह नहीं बता सकते कि कैसे किसी ने पहिए की बात सोची होगी और पहला पहिया बनाया होगा। पर, सिन्धु घाटी के शहरों के समय

3. मिट्टी की मूर्ती

4. पत्थर के पट्टे पर खुदे चित्र

5. कांसे का फरसा

6. कांसे का भाला

7. तांबे के बर्तन

8. मिट्टी के बर्तन

9. कांसे की मूर्ती

10. पत्थर के औज़ार

तक पहिए की खोज हो चुकी थी - तभी तो बैल-गाड़ी बनी।

उस समय चके का इस्तेमाल मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए भी होने लगा था। इसलिए, पहले की तुलना में बहुत अच्छे किस्म के बर्तन बनाए जाने लगे थे।

तुम सोच कर बताओ कि सिन्धु घाटी के शहरों के लिए बैल-गाड़ी एक ज़रूरी चीज़ क्यों रही होगी?

जब लोग पत्थर से औज़ार व हथियार बना लेते थे तो उन्होंने धातु की चीज़ें बनाना क्यों शुरू किया होगा? धातु के क्या फायदे हैं? चर्चा करो।

काम-धन्धे

चित्रों में दिख रही चीज़ों से तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि सिन्धु घाटी के शहरों में बहुत से कारीगर रहते थे। शहर के लोग अपनी ज़रूरत की सब चीज़ें घर पर नहीं बनाते थे। अलग-अलग चीज़ों को बनाने वाले अलग-अलग कारीगर थे जो अपनी चीज़ें बना कर दूसरों को बेचते थे।

क्या तुम उस समय रहने वाले कारीगरों की सूची बना सकते हो?

लिखाई

सिन्धु-घाटी के शहरों से एक ख़ास तरह की चीज़ें मिलती हैं। ये हैं पत्थर या मिट्टी के बने चौकोर पट्टे। पट्टों के चित्र देखो। तुम्हें पट्टों पर आदमी की **आकृति** और कुछ जानवरों, पौधों और बर्तनों की आकृति बनी दिख रही होगी।

पट्टों पर इस तरह की आकृतियां भी बनी हैं–

11. पत्थर की मूर्ति

12. मिट्टी के पट्टे पर खुदा चित्र

13. मिट्टी के खिलौने

14. सोने चांदी के गहने

15. खिलौने की बैल गाड़ी
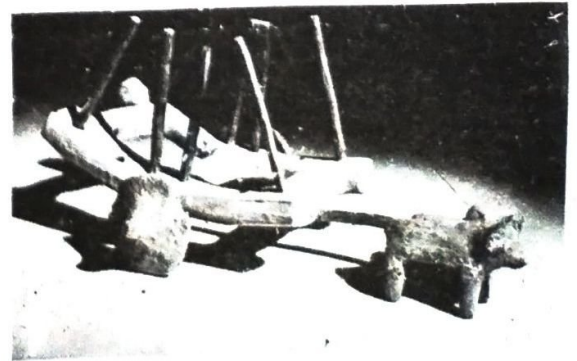
पट्टों पर ऐसा जो बना है उसे अपनी कापी में उतारो।

कुछ लोग मानते हैं कि यह उस समय की लिखाई है। अगर यह सच है तो यह कैसी लिखाई? लगता है जब शुरू में मनुष्य ने लिखना शुरू किया तो आज के अक्षरों जैसे अक्षर नहीं बनाए। उनके अक्षर चित्रों जैसे लगते हैं।

क्या तुम इस लिखाई को समझ पा रहे हो?

दरअसल विद्वान लोग भी सिन्धु-घाटी के शहरों की लिखाई को नहीं पढ़ पाए हैं। इसीलिए उन शहरों के बारे में बहुत सी बातें हम जान नहीं पा रहे हैं।

व्यापार

कुछ विद्वान सोचते हैं कि ये पट्टे वास्तव में व्यापारियों की मुहरें थे और व्यापारी जब एक जगह से दूसरी जगह सामान भेजते होंगे तो सामान बांध कर उस पर गीली मिट्टी थोपते होंगे और गीली मिट्टी पर अपनी **मुहर** से छाप बना देते होंगे ताकि उनके सामान की पहचान बनी रह सके।

लोथल से मिला नांव का नमूना

ऐसे पट्टे दूसरे देशों में भी पाए गए हैं - ख़ासकर ईराक देश में।

एशिया के नक्शे में ईराक देश पहचानो। देखो कि यह जगह सिन्धु-घाटी से कितनी दूर है?

ईराक में सिन्धु-घाटी के पट्टे कैसे और क्यों पहुंचे होंगे? लगता है कि उन दिनों ईराक और सिन्धु-घाटी के शहरों के बीच व्यापार होता था।

शहरों की खुदाई से मिली किन चीज़ों से पता चलता है कि वे लोग नदी या समुद्र पार करते थे?

सिन्धु-घाटी के शहरों में कई ऐसी चीज़ें मिलती हैं जो आसपास नहीं पाई जाती थीं। जैसे, नीले रंग का एक बड़ा सुन्दर पत्थर जिससे गहने बनाए जाते थे, शहरों की बची हुई चीज़ों में मिलता है। चांदी, सोने, सीसे व तांबे की बनी कई चीज़ें भी मिलती हैं, पर ये धातुएं सिन्धु-घाटी में नहीं पाई जातीं। इन्हें दूसरी जगहों से ही मंगाया जाता होगा।

दूर की जगहों से ये चीज़ें मंगवाना तो बहुत महंगा पड़ता होगा!

क्या तुम्हें लगता है कि सिन्धु-घाटी के शहरों में ऐसे अमीर लोग थे जो कीमती चीज़ें मंगवा के इस्तेमाल करते थे?

तुम्हारे मन में यह सवाल उठ रहा होगा कि अगर व्यापार होता था तो क्या सिन्धु-घाटी के शहरों से सिक्के भी मिलते हैं? नहीं, सिक्के तो नहीं मिलते। फिर किसी और ढंग से व्यापार होता होगा! एक तरह के सामान के बदले में दूसरी तरह का सामान दिया जाता होगा, पैसे नहीं!

देवी-देवता

क्या हम सिन्धु-घाटी के शहरों की चीज़ों को देख कर यह भी सोच सकते हैं कि वे लोग किसको पूजते थे?

तुम्हारे अनुमान से इन चित्रों में से कौन सी चीज़ों को सिन्धु-घाटी के शहरों के लोगों द्वारा पूजा जाता होगा?

शायद यह मिट्टी की मूर्ति उन लोगों की देवी की मूर्ति थी। पत्थर के पट्टे पर एक आकृति के सिर पर भैंसे का सींग है। उसके चारों तरफ कई जानवर बने हैं। यह कोई देवता रहा होगा! शायद उसे लोग पशुओं का देवता मान कर पूजते थे।

एक पट्टे पर क्या तुम्हें एक अजीब सा जानवर खुदा दिख रहा है? दूसरे पट्टे पर पीपल की पत्तियां और सांप भी बना हुआ है! शायद इनकी भी पूजा होती थी। इन बातों का तो हम अन्दाज़ा ही लगा सकते हैं, पक्की तरह से नहीं कह सकते।

ऊपर बताई किन चीज़ों को आजकल भी पूजते हैं?

शहरों का खत्म होना

आज से चार-पांच हज़ार साल पहले सिन्धु-घाटी में शहर बने थे। ये शहर नौ सौ सालों तक बने रहे। फिर किसी कारण से उजड़ गए और मिट्टी में दब के रह गए। उन शहरों के आसपास जो गांव थे, वे बाद में भी बने रहे।

सिन्धु-घाटी के शहरों के खत्म होने के बाद कई सौ सालों तक भारत में कोई शहर नहीं बना।

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां मनुष्य के इतिहास की कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से कौन सी पहले हुईं और कौन सी बाद में – सही क्रम में जमा कर लिखो –

   1. लिखना-पढ़ना 2. जंगल काट के खेत बनाना 3. जंगल से फल बटोर कर लाना 4. पशुओं को पालना 5. जंगली जानवरों का शिकार करना 6. शहरों का बनना 7. गाँव बसाना 8. दूर-दूर तक व्यापार करना

   सबसे पहले —

   उसके बाद —

   उसके बाद —

2. सिन्धु-घाटी के शहरों से मिलने वाले पट्टों के बारे में 4 मुख्य बातें बताओ।
3. अगर सिन्धु-घाटी के शहरों में उपयोग होने वाली लिखाई को हम पढ़ सकें तो उन लोगों के बारे में क्या-क्या जान सकते हैं? कोई तीन बातें सोचो।
4. सिन्धु-घाटी के शहरों के बारे में लोगों को पता कैसे चला? इस प्रश्न का उत्तर पाठ के **किस हिस्से** में मिलेगा – सही विकल्प चुनो। (1) शहरों की इमारतें (2) गांवों के बीच शहर (3) पुराने शहरों की खोज।
5. तुम्हें सिन्धु घाटी के शहरों में ऐसी क्या नई बातें दिखाई दीं जो शुरू के गांवों में नहीं पाई जाती थीं? सूची बनाओ।
6. मानचित्र क्र. 1 किस के बारे में है? इसमें क्या-क्या बताया गया है – चार-पांच वाक्यों में लिखो।
7. क्या तुम्हें पाठ पढ़ के सबसे पुराने शहरों के बारे में अपने सब प्रश्नों के जवाब मिल गये ? क्या तुम **सवालीराम** से भी कुछ सवाल पूछना चाहते हो ?

मानचित्र में नदियां

तुम जानते तो होगे कि नदियां आमतौर पर पहाड़ों से निकलती हैं, फिर मैदानों से बहती हुई सागर में जा कर मिल जाती हैं।

मानचित्रों में नदियों को काली या नीली लकीर से दिखाया जाता है। नदियां शुरुआत में पतली होती हैं और सागर तक पहुंचते-पहुंचते चौड़ी हो जाती है।

चित्र 1 में तुम नदी, ज़मीन और सागर को पहचानो। यह नदी कहां से शुरू हुई है? यह किस दिशा की ओर बह रही है? यह कहां जा कर खत्म हुई?
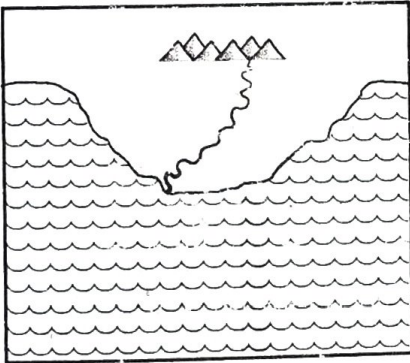
क्या नदी सागर से पहाड़ की ओर बह सकती है?

चित्र 2 में एक बड़ी नदी में कई छोटी नदियां मिल रही हैं और बड़ी नदी सागर में जा कर मिल रही है।

1. बड़ी नदी पर शुरू से आखिर तक पेंसिल फेरो।
2. उसमें कितनी छोटी नदियां मिल रही हैं?
3. जहां नदी सागर से मिल रही है वहां एक गोला बनाओ।

इस पुस्तक के अंत में भारत की नदियों का मानचित्र है। तुम उस मानचित्र को अपनी कापी में उतार लो।

चित्र 1
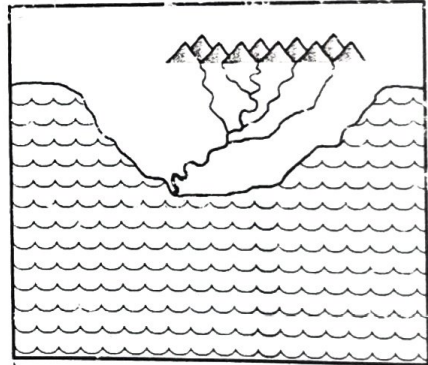
चित्र 2

मनुष्य के इतिहास में गुजरता समय
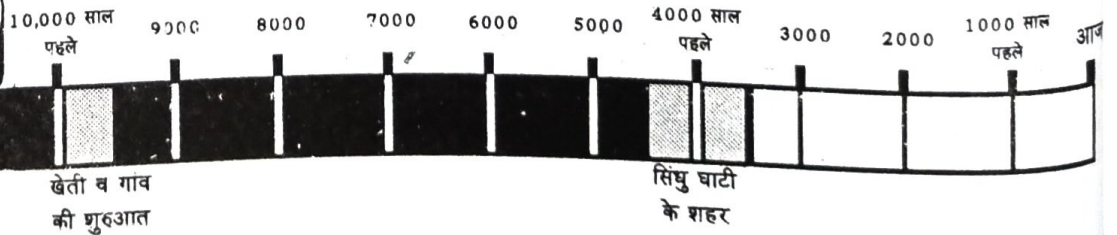
शहरों की शुरुआत और भी नयी बात है। आज से 4500 साल पहले ही सिंधु नदी की घाटी में शहर बसने लगे। ये शहर आज से 3500 साल पहले खतम हो गये।

जो कुछ देखें जिससे खेलें
हाथों में मिट्टी लेके
हम झटपट गढ़ लें

बहुत पुराने
और अंजाने
दिनों की बातें
देखीं हमने

चलो बनाएं
मिट्टी लाएं
गुफा और भाला
घर और चूल्हा

जो मन भाए
गढ़ते जाएं
बीती सारी
बात बताएं॥
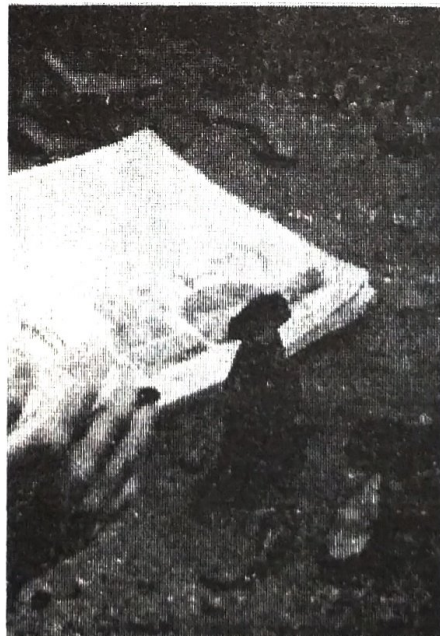
हर शनिवार को बाल
सभा में हफ्ते भर पढ़े गए
पाठों की बातों को लेकर
मिट्टी के खिलौने बनाओ।

5. पशुपालक आर्य

इस पाठ के सभी चित्रों को देख कर चर्चा करो कि उनमें क्या हो रहा है? चित्रों से तुम पशुपालक आर्य लोगों के बारे में क्या-क्या जान पाए?
इस पाठ से तुम उनके बारे में और क्या-क्या जानना चाहोगे? मन में उठ रहे सवालों की सूची बना लो। फिर पाठ पढ़ कर देखो।
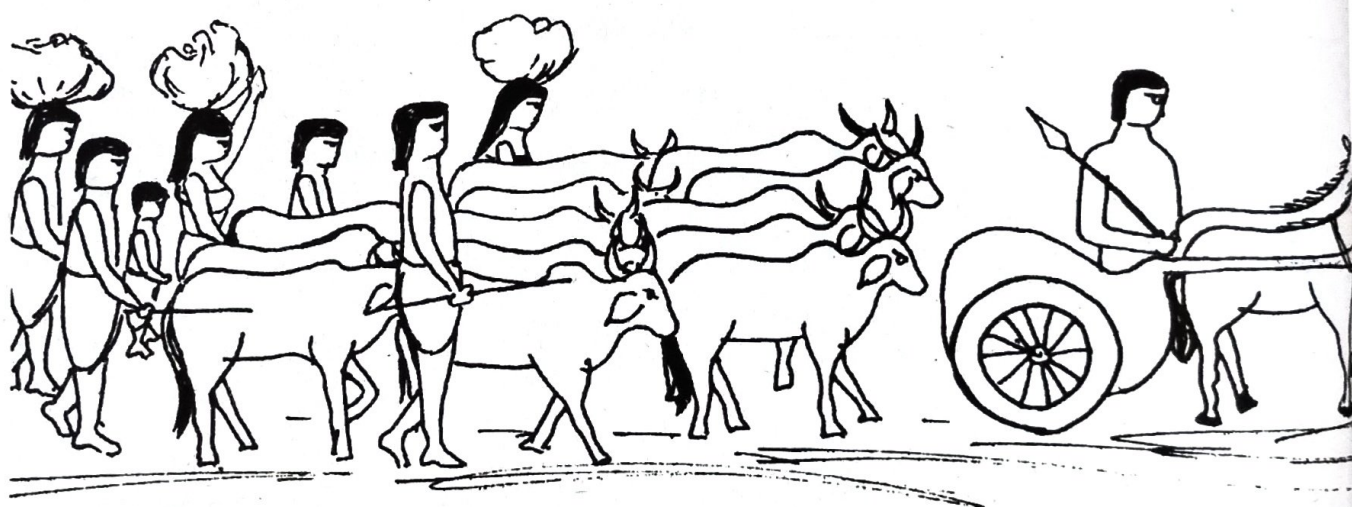
शहर नष्ट होने के बाद

सिन्धु-घाटी के शहर जब नष्ट हो गए, तब की बात है। उन शहरों के घर ढह चुके थे और मिट्टी के नीचे दब चुके थे। पर उन लोगों के गांव बचे रहे। उन गांवों में किसान खेती करते रहे, कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाते रहे और दूसरे कारीगर तांबे और कांसे की चीज़ें बनाते रहे। तब, इन्हीं गांवों के आसपास कुछ और लोग भी आकर बसे जो अपने आपको 'आर्य' कहते थे।

आर्य लोग गाय, बैल, भेड़, बकरी जैसे पशुओं को पालते थे। उनके पास हज़ारों की संख्या में पशु थे। इतने सारे पशुओं के लिए चारे-पानी का इन्तज़ाम करना आर्यों का सबसे बड़ा काम था। वे लोग खेती बहुत कम करते थे। इस तरह उनका जीवन गांव के किसानों के जीवन से बहुत फर्क था।

आर्यों की भाषा भी अलग थी। वे संस्कृत भाषा बोलते थे। उनके देवी-देवता और रीति-रिवाज़ भी गांव के लोगों से अलग थे। वे एक अनोखा जानवर

भी लाए थे। यह था तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा। वे घोड़ों को रथों में जोत कर सवारी करते थे।

चारे-पानी की खोज में

आर्यों के पास हज़ारों पालतू पशु होते थे। इतने सारे जानवरों के लिए जहां चारा-पानी मिल जाता वहां आर्य लोग बसा करते थे। मगर हज़ारों गाय-घोड़ों के लिए एक ही इलाके से हमेशा तो चारा-पानी नहीं मिल सकता। कभी चारा-पानी कम हो जाता था या खत्म होने लगता था। कभी जानवर इतने ज़्यादा हो जाते कि चारा-पानी कम पड़ने लगता था।

चारा-पानी कम पड़ने पर आर्यों के **कबीले** में से कुछ लोग अपने जानवरों को लेकर निकल पड़ते थे और जहां चारा मिलता वहां जाकर फिर से बस जाते थे। कई सालों बाद जब चारे पानी की फिर कमी होने लगती तो कुछ लोग और आगे निकल जाते थे। इस तरह आर्य लोग अपने पशुओं के साथ नई-नई जगहों पर बसते चले गए।

हज़ारों साल पहले आर्य लोग काले सागर और कैस्पियन सागर के पास के मैदानों में रहते थे। वहां से वे फैलते गए और नई-नई जगह बसते गए। ऐसे कई सौ साल बीते। आर्य लोग फैलते-फैलते सिन्धु, सतलज, झेलम, व्यास और सरस्वती नदियों के किनारे आ बसे।

एशिया के मानचित्र में देखो काला सागर और कैस्पियन सागर कहां है?

इन सागरों से किस दिशा में जाने पर सिन्धु नदी आएगी?

मानचित्र 2 में आर्यों के बसने का इलाका देखो।

उस इलाके का कुछ हिस्सा आज भारत के पंजाब राज्य में आता है और बहुत सा हिस्सा आज पाकिस्तान देश का भाग है ।

क्या तुमने आज भी ऐसे लोगों को देखा है जो बहुत बड़ी संख्या में पशु पालते हैं? वे लोग कहां के हैं? वे तुम्हारे यहां क्यों आते हैं? उनसे तुम्हें पशुपालकों के जीवन के बारे में क्या पता चलता है?

खाली स्थान भरो -- 1. आर्य लोग पशु पालते थे और ------- कम करते थे। 2. वे ------ की खोज में घूमते रहते थे। 3. वे ------ भाषा बोलते थे। 4. वे रथ में ------ जोतते थे।

सही विकल्प चुनो - आर्य सिन्धु नदी के किनारे जब बसे तब वहाँ --शहर थे/शहर बने ही नहीं थे/शहर बन के खत्म हो गए थे।

आर्यों का जीवन गांव के लोगों के जीवन से किन बातों में अलग था?

चलो उन लोगों के जीवन को देखें। कल्पना करें कि हम आर्यों की एक बस्ती में पहुँचे हैं।

कहानी

पशुपालक आर्यों की बस्ती

सरस्वती नदी के किनारे छोटे बड़े घरों की एक बस्ती थी। बस्ती में घास-फूस, लकड़ी और मिट्टी के बने घरों के अलावा कई **गोशालाएं** भी थीं। इस बस्ती में पुरु वंश के लोग रहते थे। आसपास के इलाके में पुरु वंश के लोगों की कुछ और बस्तियाँ भी थीं। आर्यों के कई वंश थे।

उनमें से पुरु वंश एक था।

बस्ती में सरमा नाम की एक लड़की थी। उस दिन सरमा रोज़ की तरह सूरज उगने से पहले ही उठ गई थी। उसने अपनी मां, पिता व भाई-बहनों के साथ गोशाला की सफाई की। गायों का दूध दुहा और नदी से पानी भी भर कर लाई।

आर्य और पणि

सरमा अपने भाई और पिता के साथ गाय चराने के लिए जंगल जाना चाहती थी। इसलिए दौड़ के नदी गई और जल्दी-जल्दी नहा के खाना खाने आ बैठी।

सरमा की मां ने खाना परोसा। **जौ** की रोटी, मक्खन, मांस और छाछ।

सरमा खाते-खाते बोली,"मां मुझे गेहूं की रोटी खाने का मन कर रहा है। तुम गेहूं की रोटी कब बनाओगी?"

मां ने कहा, "बेटी, अपने पास तो गेहूं नहीं है। गेहूं पणि लोगों के गांव में उगाया जाता है। पणि लोग जब हमसे घी या दूध लेने आते हैं तब बदले में गेहूं दे जाते हैं। पता नहीं क्या बात है, वे बहुत दिनों से यहां आए ही नहीं हैं।"

सरमा का भाई तभी खाना खाने आया था। मां की बात सुन कर बोला, "तुम्हें मालूम नहीं मां? कुछ दिन पहले अनु जन के लोगों ने पणियों के गांवों पर हमला किया। पणियों के किले तोड़ दिये। नदी पर बने बंधान तोड़ दिए और उनके गांव से गेहूं और सोने के ज़ेवर लेकर चले गए।"

सरमा बोल पड़ी, 'अच्छा। तभी शायद पणि लोग हमारे यहां गेहूं लेकर नहीं आए।"

तुम यह समझ गए होगे कि गांवों में रहने वाले किसानों को आर्य **पणि** नाम से पुकारते थे। आर्यों और पणियों के बीच अक्सर लड़ाई हुआ करती थी। पर धीरे-धीरे उनके बीच चीज़ों का लेन-देन भी शुरू हो रहा था। वे एक-दूसरे की बातें सीखने लगे थे। ऊपर की कहानी में दिखाया है कि आर्यों के पुरु वंश और पणियों के बीच लेन-देन हो रहा था। पर, आर्यों का एक और वंश था। यह था अनु वंश। ऊपर की कहानी में अनु वंश और पणियों के बीच लड़ाई की बात बताई है।

कहानी में सरमा की मां उसे जौ की रोटी देती है। आर्य लोग खुद जौ नाम का अनाज उगा लेते थे। यह अनाज बहुत कम समय में और बहुत आसानी से उग जाता है। इसलिए हज़ारों पशुओं की देखभाल के साथ आर्यों के द्वारा जौ की थोड़ी बहुत खेती कर ली जाती थी।

वाक्य पूरे करो- *1.आर्य लोग ------ को पणि कहते थे। 2.पणि लोगों से आर्य ------------ के लिए लड़ते थे। 3.इस कहानी में तुमने आर्यों के ------ और -------- वंशों का नाम पढ़ा। 4.पणि लोगों से आर्य ------ लेते थे और बदले में--------देते थे। 5.आर्य अनाज कम उगाते थे क्योंकि ---------- । 6.आर्यों के भोजन में ---------- चीज़ें थीं। 7.आर्यों के घर ------------- से बने थे।*
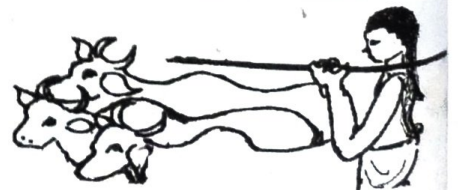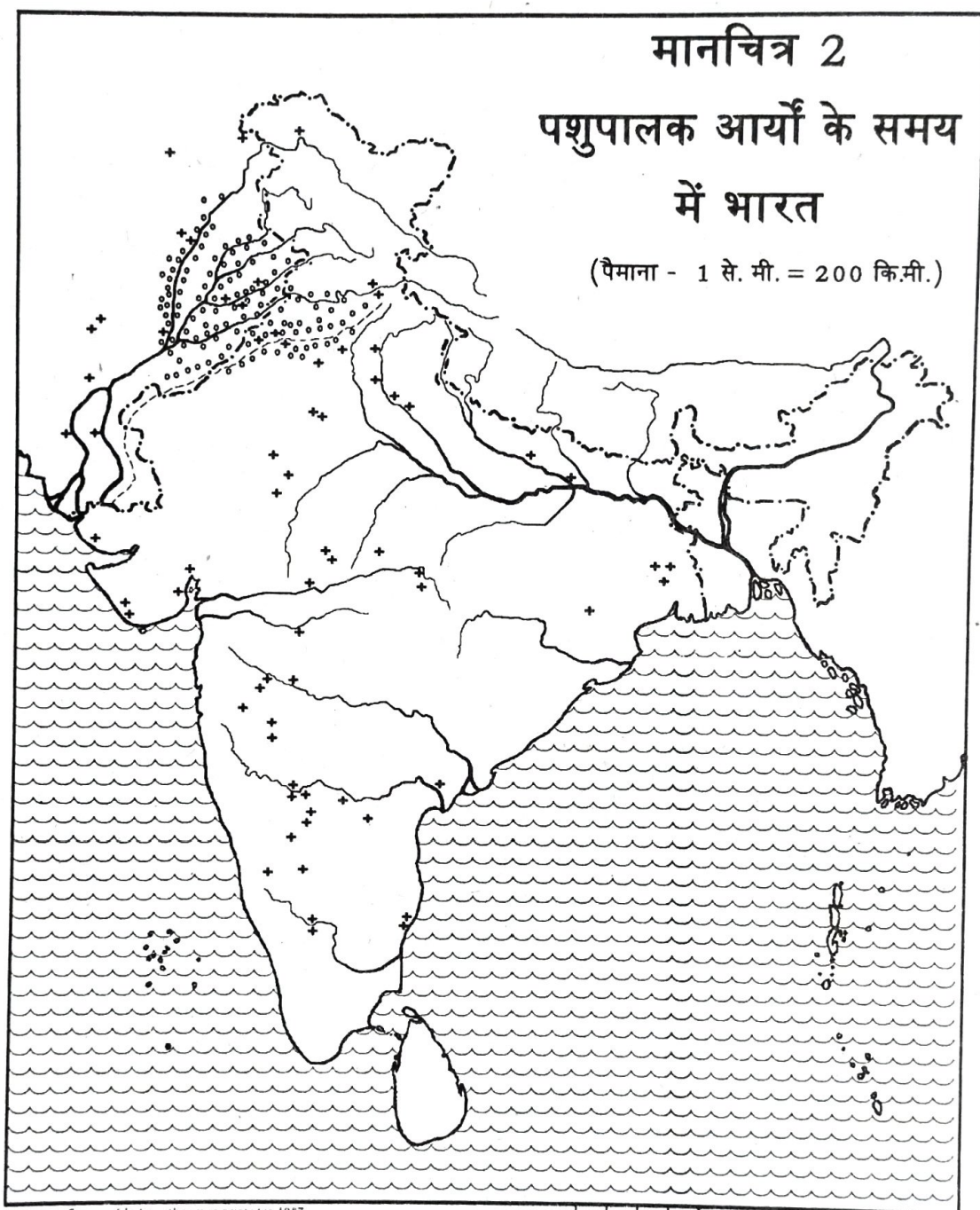
संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—.—.—.—
सागर	
सरस्वती नदी	
पशुपालक आर्यों का इलाका	
अन्य खेती करने वालों का इलाका	

गायें बह गयीं

सरमा अपने भाइयों और पिता के साथ गायें चराने गई। बस्ती के सभी परिवारों के पास दर्जनों गाएं और भेड़ें थीं। नदी किनारे के मैदान में बस्ती के सभी लोग गाय-भेड़ चराने आते थे। उस दिन एक बहुत बुरी घटना घटी। सरमा के पिता और भैया नदी में गायें नहला रहे थे। अचानक नदी में बाढ़ आई। वे दोनों किसी तरह तैर कर बाहर निकले।

बस्ती के सभी लोगों ने मदद की, फिर भी उनकी तीस-चालीस गायें पानी में बह गईं। गायों के सहारे ही तो उनका जीवन चलता था। आधी से अधिक गायें खत्म हो जाने से सरमा के परिवार को बड़ी दिक्कत हुई।

ऐसी दिक्कत में वे क्या कर सकते थे? सोच कर बताओ।

जब तुम्हारे गांव या शहर में किसी को पैसे आदि की ज़रूरत पड़ती है तो वह क्या-क्या उपाय करता है?

आर्यों के जन

सरमा के पिता ने अपनी समस्या बस्ती की सभा में रखी। बस्ती के सब लोग एक ही वंश के थे। इसलिए सब एक-दूसरे के रिश्तेदार थे। आर्य लोग अपने वंश के सब लोगों को मिला कर **'जन'** कहते थे। यानी पुरु वंश के सब लोग मिलकर पुरु जन कहलाते थे।

पुरु जन की सभा ने सरमा के पिता की समस्या सुनी। सभा में 70-80 लोग बैठे थे। उनमें से पांच-छः लोग विशेष आसन पर बैठे थे। बाकी लोग ज़मीन पर घास की बुनी चटाइयों पर बैठे थे। आसन पर बैठे लोग पुरु जन के **प्रमुख** लोग थे। उनके पास और लोगों से ज़्यादा गाय, घोड़े होते थे। उन्हीं के पास लकड़ी के बने रथ भी होते थे। वे वंश के महत्वपूर्ण लोग थे। इसलिए उनको विशेष आदर मिलता था। आर्य लोग अपने वंश के प्रमुख लोगों को **"राजन्य"** कहते थे। जन के बाकी लोग **"विश"** कहलाते थे।

सरमा के पिता जब बोल कर चटाई पर

अपनी जगह जा बैठे तो एक राजन्य ने कहा, "इसके साथ बहुत बुरा हुआ। जो-जो लोग दे सकते हैं वे अपनी-अपनी कुछ गायें इसे दे कर इसकी ज़रूरत पूरी करें। मैं अपनी पांच गायें दूंगा। अब और लोग बताएं।" इसके बाद जन के कई लोगों ने अपनी कुछ गाएं दे कर सरमा के परिवार की मदद की।

सरमा की गाएं कैसे खत्म हुईं?

सरमा के परिवार की किसने मदद की और कैसे?

सरमा के गांव में जो लोग थे वे एक-दूसरे के क्या लगते थे?

खाली स्थान भरो--1. जन के -------- लोगों को राजन्य कहा जाता था। (प्रमुख/बूढ़े/बहादुर) 2. केवल राजन्यों के पास ---------थे। (रथ, गाय, भेड़) 3. एक जन में --------- राजन्य होते थे। (एक, कुछ, सब) 4.आर्यों के साधारण लोग-------- कहलाते थे। (राजन्य, विश, पणि)

क्या तुम्हारे गांव/शहर में सब लोग एक ही वंश के हैं या एक दूसरे के रिश्तेदार हैं?

युद्ध और राजा

उन दिनों आर्यों का जीवन गायों के सहारे चलता था। इसलिए वे हमेशा कोशिश करते थे कि उनके जन के पास ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में अच्छी गायें हों। यही आर्य जनों के बीच होने वाले युद्धों का मुख्य कारण था। एक जन के लोग हमला कर के दूसरे जन की गायें भगा के ले जाते थे।

कभी एक जन के इलाके में चारा खत्म होने लगता था। तब अगर किसी अच्छे हरे-भरे मैदान में दूसरे जन के लोग रह रहे हों तो उस मैदान पर अपने पशु चराने के लिए भी दो जनों में लड़ाई हो जाती थी।

एक दिन पुरु जन की बस्ती के राजन्य लोग इसी समस्या पर विचार करने बैठे।

एक राजन्य ने कहा, "हमारे जन के लोगों के पास गाएं कम पड़ रही हैं। हमें जल्दी ही कोई उपाय करना होगा।"

दूसरे राजन्य ने कहा, "अनु जन के पास बहुत सारी गाएं हैं और अच्छे घोड़े भी हैं। आजकल अनु जन बहुत ताकतवर हो रहा है। कुछ दिन पहले उन लोगों ने पणियों के गांव पर हमला भी किया था। क्यों न हम सब मिल कर अनु जन से युद्ध करें? युद्ध करके हम उनकी गाएं व घोड़े भी जीत लाएंगे और उन्हें हराकर कमज़ोर भी कर पाएंगे।"

सभी राजन्यों को यह विचार ठीक लगा। उन्होंने बैठ कर युद्ध की सारी **योजना** बना

डाली। योजना बनाने में बड़ी उम्र के राजन्यों से भी सलाह ली। फिर राजन्यों ने पूरे जन की एक सभा बुलाई और बाकी लोगों को (यानी विश को) बताया, "परसों रात हम सब मिल कर अनु जन पर धावा बोलेंगे। आप सब अपने हथियारों के साथ तैयार रहें। हम आसपास की बस्तियों में भी खबर कर सभी पुरुजनों को युद्ध के लिए बुला रहे हैं। अनु जन ताकतवर हैं। उन्हें हराना आसान नहीं होगा। पर हमने ऐसी योजना बनाई है कि हम ज़रूर जीतेंगे।"

सरमा के पिता ने भी युद्ध पर जाने की तैयारी की। उन्होंने अपनी कमान कसी और तीर ठीक किए। उनके पास घोड़े और रथ तो थे नहीं। जन के और साधारण लोगों की तरह वे पैदल ही लड़ने जाते थे।

असल में, पशुपालक आर्यों के पास अलग से **सेना** नहीं थी। जन के सब लोग मिल कर लड़ने जाते थे।

अगले दिन राजन्यों की बैठक हुई। बैठक में सवाल उठा कि युद्ध में पुरु जन का नेता कौन बनेगा? चर्चा होने लगी कि कौन सा राजन्य सबसे वीर है? युद्ध में सबसे कुशल कौन है? चर्चा के बाद राजन्यों ने अपने में से एक **युवक** को चुना। सबने मिल कर उसको **राजा** कहा।

इस तरह युद्ध में **अगुआई** करने के लिए आर्य जन का राजा चुना जाता था। जन को युद्ध में विजय दिलाना उसका काम था।

आर्य जनों के बीच लड़ाई किन कारणों से होती थी?

आर्य लोग राजा क्यों चुनते थे?

इन वाक्यों में से गलत वाक्यों पर गलत का निशान लगाओ और उन्हें सुधार कर लिखो -

1. युद्ध की योजना बनाने के लिए जन के साधारण लोग और राजन्य दोनों बैठते थे।

2. राजन्य सेना की मदद से युद्ध करते थे।

3. साधारण लोगों के पास रथ नहीं थे और वे पैदल लड़ाई करते थे।

4. राजन्य अपने में से एक को राजा चुनते थे।

यज्ञ और वेद

अगले दिन पुरु जन के सभी लोग- आदमी, औरतें, बच्चे - सब **यज्ञ** करने के लिए इकट्ठा हुए। आर्य लोग समय-समय पर अपने देवताओं के लिए यज्ञ करते थे।

यज्ञ के लिए आग जलाई गई। उस आग में दूध, घी, दही, जौ और मांस का चढ़ावा दिया गया। आर्य मानते थे कि अग्नि भी एक देवता है। अग्नि में जो भी भेंट चढ़ाई जाती है वो दूसरे देवताओं तक पहुंच जाती है और इन भेटों से खुश होकर देवता यज्ञ करने वालों

की इच्छा पूरी करते हैं।

जन के जो लोग यज्ञ करवाते थे, उनमें से कुछ को **ब्राह्मण** कहा जाता था। यज्ञ में भेंट चढ़ाने के साथ-साथ ब्राह्मण देवताओं की प्रशंसा में कई गीत गाने लगे। ये गीत पुरु जन के कुछ कवियों ने इन्द्र देवता के लिए बनाए थे।

"हे इन्द्र, तू हमारे इस यज्ञ में आ कर हमारी भेंट **स्वीकार** कर,

जिस प्रकार शिकारी शिकार ढूंढने निकलता है,

उसी प्रकार हम धन की **तलाश** में युद्ध करने निकले हैं।

हे इन्द्र तू हमारी सहायता कर ताकि हम युद्ध जीतें।

हे इन्द्र, हमें अपार धन दौलत दे।

सैकड़ों गायें और घोड़े दे कर हमारी यह कामना पूरी कर।

गायों के मालिक, हे इन्द्र, शत्रुओं की गोशालाओं के दरवाज़े खोल दो,

ताकि हम गायें जीत लायें।"

इस तरह ब्राम्हण गीत गाते जाते और आग में घी डालते जाते। ऐसा करने से पुरु जन के लोगों में विश्वास बना कि वे ज़रूर युद्ध जीतेंगे।

आर्यों के ये गीत संस्कृत भाषा में थे। इन गीतों को **ऋग्वेद** कहा जाता है। बहुत समय तक ये गीत लिखे नहीं गए। इन्हें बोल-बोल कर याद रखा जाता था और दूसरों को सिखाया जाता था। बाद में इन्हें लिख दिया गया। हम आज ऋग्वेद के गीतों को पढ़ कर आर्यों के जीवन की कई बातों को जान सकते हैं।

आर्य अपने देवता इन्द्र को क्या बुलाते थे?

आर्य लोग इन्द्र देवता से क्या मांगते थे और उसे खुश करने के लिए क्या करते थे?

आजकल लोग भगवान से किन चीज़ों के लिए प्रार्थना करते हैं और कैसे करते हैं?

राजा को बलि

यज्ञ के बाद पुरु जन की एक सभा हुई। सभा में सब लोगों ने चुने गए राजा को बधाई दी। जन के लोग नए राजा के बनने से खुश थे। वे अपने घर से उसके लिए कुछ-कुछ **उपहार** ले आए। कोई एक घड़ा घी ले आया। कोई दो गायें दे रहा था। किसी ने कुछ सुन्दर सोने के जेवर दिये। इस तरह राजा के पास काफी सारी भेंट जमा हो गई। ऐसी भेंट या उपहार को आर्य लोग **बलि** कहते थे। बलि में मिली चीज़ों को राजा

ने ब्राम्हणों, कवियों और दूसरे राजन्यों के बीच बांट दिया।

युद्ध

शाम को पुरु जन के सारे पुरुष युद्ध के लिए निकले। आधी रात को उन्होंने अनु जन की बस्ती पर हमला किया। तीन-चार लोग चुपके से गए। उन्होंने अनु जन की गोशाला और घुड़साल के दरवाज़े खोल दिए और जानवरों को हांक कर अपनी बस्ती की ओर दौड़ाने लगे। इस आवाज़ को सुन कर अनु जन के लोग उठ गए। पर उनकी लड़ने की तैयारी नहीं थी। उनके घोड़े भी चले गए थे। उनका सामना करने के लिए पुरु जन के राजन्य अपने रथों पर खड़े थे।

अनु जन के लोगों ने कुछ देर लड़ाई की पर वे बुरी तरह हार गए। पुरु जन के लोगों ने अनु जन की कीमती चीज़ें उठा लीं और कई लोगों को भी बन्दी बना कर ले गए।

अगले दिन पुरु जन की बस्ती में जीत और खुशी का शोर था। कोई कहता – "हम पांच हज़ार गाएं जीत कर लाए हैं।" और कोई बोलता – "सौ घोड़े भी मिले, सोने के बहुत से जेवर भी मिले।"

सभा

शाम को फिर एक सभा हुई। सभा में पुरु जन के राजा ने जीत में मिली गाएं, घोड़े, रथ, हथियार, सोना, दास-दासियों को जन के कई लोगों के बीच बांटा। सबसे बड़ा हिस्सा राजा ने अपने लिए रखा। फिर राजन्यों और ब्राह्मणों को हिस्सा मिला। कुछ गायें, भेड़, बकरी, अनाज आदि जन के साधारण लोगों को भी दिया गया। सरमा के पिता को 20 गायें मिलीं। इस तरह उनके परिवार की कठिनाई दूर हुई।

राजन्यों के पास गाएं, घोड़े, रथ, हथियार, सोना, दास-दासियों की संख्या और ज़्यादा हो गई और वे पहले से ज़्यादा ताकतवर बन गए।

राजा को बलि किसने दी और क्यों?

राजा ने बलि में मिली चीज़ों का क्या किया?

पुरु जन को युद्ध में क्या-क्या मिला?

चर्चा करो कि राजा ने युद्ध में मिली चीज़ें

– ब्राह्मणों को क्यों दीं?

– राजन्यों को क्यों दीं?

– जन के साधारण लोगों को क्यों दीं?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पशुपालक आर्य और शिकारी मानव कई बातों में एक दूसरे से अलग थे। यहां दी गई तालिका में लिखा है कि उनके बीच क्या फर्क थे। तालिका में कुछ बातें ग़लत खानों में लिखी हैं। इन्हें सही खानों में डालो।

	शिकारी मानव	पशुपालक आर्य
खान-पान	जंगल से मिले फल-शिकार	गाय, भेड़, बकरी आदि से दूध व मांस और जौ का अनाज
रहने की जगह में	शिकार करना	लकड़ी, मिट्टी, घास-फूस की झोपड़ियां
काम	पशु पालना गुफा	जब कुछ सालों में चारे की कमी होती थी तो कुछ लोग दूसरी जगह चले जाते
घूमने फिरने में	जब भी जंगल में फल व शिकार मिलना बंद हो जाए तब दूसरी जगह चले जाते	

2. राजन्यों और जन के साधारण लोगों के बीच क्या फ़र्क था और वे एक दूसरे के लिए क्या करते थे? इस प्रश्न की जानकारी पृष्ठ 45, 46 और 47 में से पढ़ कर जानो और उत्तर लिखो।
3. आर्यों का राजा क्या-क्या काम करता था?
4. आर्य जन एक दूसरे से कैसे लड़ते थे, और आज दो देशों के बीच लड़ाई कैसे होती है? तुलना करके लिखो।
5. बलि क्या थी - सिर्फ दो वाक्यों में बताओ।
6. इस पाठ की कुछ बातें यहां लिखी हैं। पर, वे सही क्रम में नहीं हैं । इन्हें सही क्रम में जमाओ।
   क. आर्य लोग राजा को भेंट या बलि देते थे।
   ख.जन के सब लोग मिल कर दूसरे जन से युद्ध करते थे ।
   ग.आर्य जन के प्रमुख लोग अपने में से एक को राजा चुनते थे ।
   घ. राजा युद्ध में जीती गई चीज़ें जन के लोगों के बीच बांटता था ।
   च. आर्य जन युद्ध में जीत के लिए यज्ञ करते थे ।
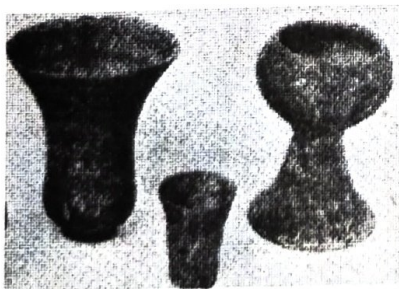
ये बहुत पुराने मिट्टी के बर्तन हैं। शायद आर्यों के समय के हैं।
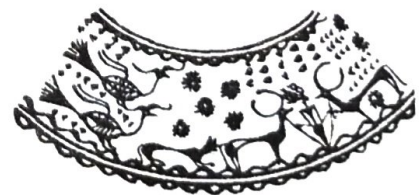
ये पुराने समय के बर्तनों पर बने चित्र हैं।

6. छोटे जनपद बने

इस पाठ में जिस समय की कहानी है उस समय कई नई बातों की शुरुआत हुई थी। पाठ के उपशीर्षकों को पढ़ कर कम से कम तीन ऐसे शब्द ढूंढो जिन्हें तुम पुस्तक में पहली बार पढ़ रहे हो। इन नए शब्दों के क्या मतलब हो सकते हैं, चर्चा करो।

सूखती नदी

पशुपालक आर्य लोग सिन्धु और सरस्वती नदियों के किनारे रहते थे। धीरे-धीरे समय बीता। लगभग पांच सौ साल बीत गए। किसी कारण से उन दिनों सरस्वती नदी सूखने लगी। धीरे-धीरे नदी पूरी तरह सूख गई और नदी की जगह रेत ही रेत रह गई। सरस्वती नदी के किनारे रहने वाले लो दूसरी जगह जाने लगे। आर्यों के जन भी अप पशुओं के लिए चारा-पानी खोजते हुए निकल पड़े

लोग किन नदियों के किनारे जा कर बसे, मानचित्र 3 देख कर बताओ।

इन नदियों के किनारे पहले से कई छोटी

बस्तियां थीं। इन बस्तियों में रहने वाले लोग खेती-बाड़ी करते थे। इन्हीं लोगों के बीच सरस्वती नदी के किनारे से आए लोग बसते गए।

समय गुज़रता गया। आर्यों के जन और दूसरे खेती करने वालों के बीच मेल-जोल, लेन-देन बढ़ता गया। वे आपस में घुल मिल गए।

पशुपालन की तुलना में खेती का महत्व बढ़ा

हम जानते हैं कि पहले पशुपालक आर्य सिर्फ जौ नाम का अनाज उगाते थे। पर, गंगा-यमुना नदियों के किनारे वे गेंहू, धान, दाल और तिलहन भी उगाने लगे। उनका जीवन अब खेती के सहारे चलने लगा। वे पशु अब भी पालते थे पर पहले से कम। पहले पूरा जीवन पशुओं के सहारे चलता था। पर अब उनके लिए खेती प्रमुख हो गई।

ऐसी दो-तीन बातें सोचो जो खेती अपनाने के बाद आर्यों के जीवन में बदलीं होंगी?

इस समय संस्कृत भाषा में तीन और वेद रचे गए। इनके नाम थे - **यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद** इन वेदों में यज्ञों, मंत्रों आदि की बातों के साथ खेती की बातें भी पढ़ने को मिल जाती हैं। कहीं ईश्वर से प्रार्थना की गई है कि अच्छी वर्षा हो और अच्छी धूप खिले ताकि फसल अच्छी हो। कहीं तरह-तरह की फसलों का नाम आता है, जैसे धान, गेहूं, तिल, दालें। इन्हीं बातों से पता चलता है कि आर्यों के लिए खेती महत्वपूर्ण हो गई थी।

सरस्वती नदी के किनारे से लोग क्यों जाने लगे थे?

गंगा-यमुना नदियों के किनारे पहले से रहने वाले लोग क्या करते थे?

गंगा-यमुना के मैदान में रहते हुए आर्यों के जीवन में क्या बदलाव आए?

इस समय कौन से वेद रचे गए?

जनपद बने

उस समय गंगा-यमुना नदियों के मैदान में बहुत से जन खेती करने लगे थे। आमतौर पर एक जन के लोग एक साथ आ कर बसते थे। एक इलाके में एक जन के परिवार खेती करने लगते और वहीं गांव बसाकर रहने लगते। इस तरह एक इलाका एक जन का **जनपद** कहलाने लगता था। जनपद का मतलब था जन के बसने का इलाका।

जनपद के गांवों में रहने वाले आर्य लोगों और दूसरे लोगों ने एक दूसरे की भाषा भी सीखी और एक दूसरे के देवी-देवताओं को भी मानना शुरू किया।

कई बार जनपदों के बीच युद्ध छिड़ जाया करते थे। पहले की तरह ही जन के लोग राजन्यों और राजा के नेतृत्व में लड़ने जाते थे।

एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की ज़मीन पर खेती करने की कोशिश करते और वहां अपना गांव बसाना चाहते। इस कारण युद्ध हो जाता।

कई बार एक जनपद के लोग दूसरे जनपद की फसल ही लूट कर ले जाते और युद्ध छिड़ जाता।

पशुपालन के दिनों में भी क्या इन्हीं कारणों से लड़ाई हुआ करती थी? क्या तुम्हें कोई फर्क नज़र आता है?

नक्शे में उस समय के प्रमुख जनों के जनपद दिखाए गये हैं। नक्शा देख कर खाली स्थान भरो-

यमुना नदी के दोनों तरफ .... जनपद बसा था।

पांचाल जनपद .... नदी के दोनों तरफ बसा था।

सूरसेन जनपद की पश्चिम दिशा में .... जनपद था। सब से उत्तर में .... जनपद था।

इन जनपदों के बारे में एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ में पढ़ा जा सकता है। वह कौन सा ग्रंथ है, पता करो।

कहानी - जनपद का जीवन

जनपद में आम लोग, राजा-राजन्य और ब्राह्मणों का जीवन कैसे बदल रहा था - यह जानने के लिए एक कहानी पढ़ो।

कल्पना करो कि हम कुरु जनपद के एक गांव में पहुंचे।

गृहपति और राजन्य

गंगा नदी के किनारे बसे एक गांव में खेती करने वालों के बीस घर थे। खेती करने वालों को वे लोग **गृहपति**कहते थे। इन लोगों ने कई वर्षों पहले यहां ज़मीन तोड़ कर खेती शुरू की थी।
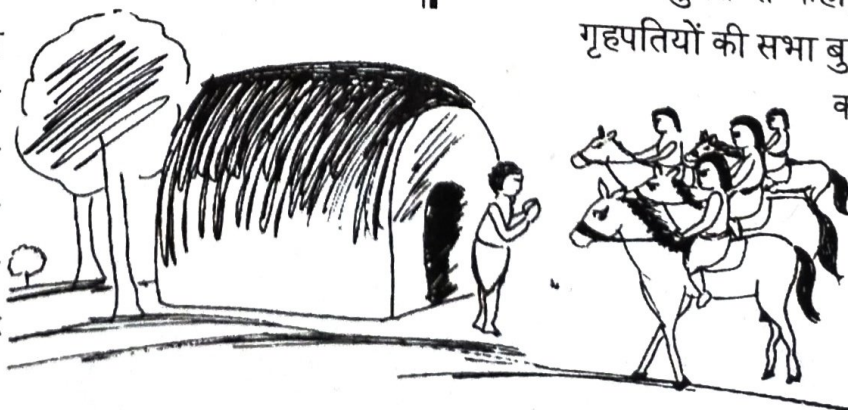
इन बीस घरों में से एक घर सुमंत गृहप[ति] का था। सुमंत इस गांव का मुखिया था। उस[के] भी अपने खेत थे जहां उसके परिवार के लो[ग] काम करते थे।

एक दिन सुमंत के घर चार मेहमान आ[ये]। ये लोग कुरु जनपद के राजा के रिश्तेदार या[नी] राजन्य थे। राजा हस्तिनापुर में रहता था। उस[ने] एक ख़ास काम से राजन्यों को गांव-गांव भेज[ा] था।

सुमंत के घर में राजन्यों का स्वागत हुआ। उन्हें आदर से खिलाया-पिलाया गया।

कुछ महीने पहले भी राजन्य गांव आये थे। तब वे राजा के लिए बलि मांगने आये थे। पिछली बार जब राजन्य बलि मांगने आये थे तो गांव के गृहपतियों ने मना कर दिया था। सुमंत सोचने लगा कि अब इस बार ये राजन्य क्यों आये हैं?

पशुपालक आर्यों के समय में जन के लोग अपनी खुशी से राजा को भेंट या बलि दिया करते थे। मगर अब यह बात बदलने लगी थी। छोटे जनपदों में राजा और राजन्य खेती करने वालों से समय-समय पर बलि मांगने लगे थे।

एक राजन्य ने सुमंत से कहा, "शाम को सब गृहपतियों की सभा बुलाइए। हमें राजा का एक **संदेश** आप सब को देना है।"

गृहपति सुमंत ने राजन्यों का स्वागत किया
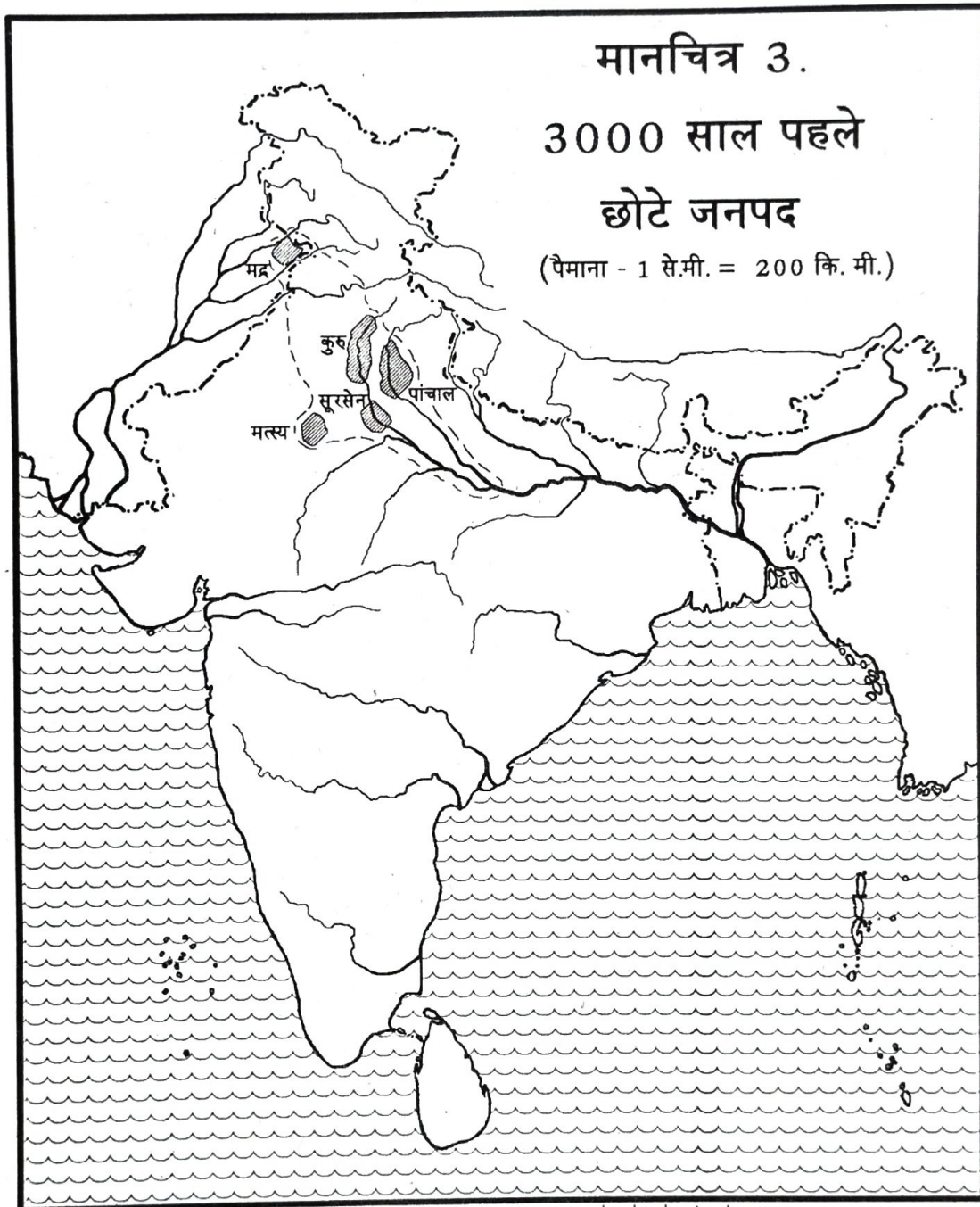
संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	
आर्यों के बसने का इलाका	
जनपदों का इलाका	

राजसूय यज्ञ का न्यौता और बलि की मांग

शाम को सभा शुरू हुई जिसमें गांव के सारे गृहपति आये। एक राजन्य बोला, "हे कुरू जन के गृहपतियों! हम आप लोगों को निमंत्रण देने आये हैं। अगली पूर्णमासी को अपने नए राजा हस्तिनापुर में **राजसूय यज्ञ** करेंगे। उसमें आप सब आयें। राजसूय यज्ञ बहुत बड़ा यज्ञ है। इसे करने से देवता बहुत खुश होंगे और राजा को बहुत **शक्तिशाली** बनाएंगे। राजा का बहुत नाम होगा।"

सुमंत ने कहा, "राजसूय यज्ञ में तो बहुत धन खर्च होगा! सैकड़ों गायें बलि में चढ़ाई जायेंगी! ब्राह्मण इतना बड़ा यज्ञ करवाएंगे इसलिए उन्हें **दक्षिणा** में हज़ारों गायें, घोड़े और बहुत सा सोना देना पड़ेगा। यज्ञ में जन के सब लोग आएंगे, तो इतने सारे लोगों की रसोई करनी होगी। इस सब के लिए क्या हमारे राजा के पास **साधन** हैं?"

राजन्य बोला, "राजा और राजन्यों को साधन कहां से मिलता है? आप खेती करने वाले गृहपति जो हमें देते हैं, वही हमारा साधन है। आप लोग बलि में जो धन देते हैं उसी से यह खर्च होगा।"

एक गृहपति बोला, "तो आप राजसूय यज्ञ के लिए हमसे बलि (भेंट) मांगने आये हैं।"

राजन्य, "हां, हम चाहते हैं कि इस गांव से सौ गायें, पचास बोरे धान और पचास बोरे दाल बलि में दी जाये।"

सब गृहपति एक आवाज़ में बोले, "नहीं हम इतनी अधिक बलि नहीं दे सकते हैं। दो माह पहले ही तो मत्स्य जनपद के लोग हमारी फ[...] और गायें लूटकर ले गये थे। पर आप [...] हमारी रक्षा करने नहीं आए। अब हमारे [...] बलि देने के लिए कुछ नहीं बचा है।"

राजन्य कहते रहे कि गृहपतियों को ब[...] कुछ तो देना ही पड़ेगा। तब तय हुआ कि गांव के लोग 50 गायें, 30 बोरे धान और [...] बोरे दाल देंगे।

राजन्यों को किसने गांव भेजा था और क्यों?

राजसूय यज्ञ के लिए क्या-क्या चाहिए था?

गृहपतियों ने राजसूय यज्ञ में क्या सामान देने [...] बात मानी?

राजा ने जितना सामान मांगा था, उत[...] गृहपतियों ने क्यों नहीं दिया?

याद करके बताओ पशुपालक आर्यों के दिनों [...] बलि कब और कैसे दी जाती थी?

जोड़ी बनाओ —

राजसूय, गृहपति, जन, राजन्य, जनपद, ब[...] कुरु-

- *जिसके परिवार में खेती होती हो*
- *एक वंश के लोगों का कबीला*
- *जन का नाम*
- *एक वंश के लोग जिस इलाके में बसे थ[...]*
- *लोगों द्वारा राजा को दी गई भेंट*
- *राजा के रिश्तेदार*
- *एक बड़े यज्ञ का नाम*

गृहपतियों के नौकर-चाकर

राजन्यों के जाने के कुछ दिनों बाद राजसूय यज्ञ में जाने की तैयारियां शुरू हुईं। गृहपतियों के नौकर-नौकरानियों ने अनाज-दाल साफ करके बोरियों में बांध कर रखा। नौकरों ने गायों को नहला कर उनके सींगों को रंगों से सजाया। ये नौकर-नौकरानी कुरु जन के लोग नहीं थे। वे आसपास के जंगलों में रहने वाले लोग थे जो जंगलों में भोजन की कमी के कारण इन गांवों में आ कर रहने लगे थे। इन लोगों को गृहपतियों ने अपने घर के काम करने के लिए रखा था।

सुमन्त के घर नेल्ली और शंभू काम करते थे। राजसूय यज्ञ में जाने के कुछ दिन पहले ही सुमन्त ने नेल्ली और शंभू को गायों के साथ हस्तिनापुर भेज दिया। उनकी बेटी रंगी भी अपने मां-बाप के साथ चल दी। उसे बहुत खुशी थी कि वह हस्तिनापुर जाएगी, राजसूय यज्ञ देखेगी और खूब पकवान खाएगी।

सही विकल्प चुनकर भरो :-

(1) गृहपतियों के नौकर उनके जन के लोग —————— (होते थे/नहीं होते थे।)

(2) नौकर गृहपतियों के. .... में काम करते थे। (घर/खेत)

राजा, बलि और यज्ञ

जैसा कि हमें दिख रहा है जनपद के लोगों से राजा व राजन्य पहले से ज़्यादा बलि लेने लगे थे और वह भी मांग कर लेने लगे थे। वे पहले से ज़्यादा बड़े यज्ञ भी करने लगे थे। आखिर ऐसा क्यों होने लगा था?

उन दिनों राजा और राजन्यों को अपनी शक्ति बढ़ाने के मौके दिखने लगे थे। बलि में मिला अनाज इकट्ठा करके वे और अधिक धनवान बन सकते थे। ज़्यादा से ज़्यादा घोड़े, हथियार, जेवर आदि **प्राप्त** कर सकते थे। शान और ठाठ-बाठ से रह सकते थे। कई नौकरों और दास-दासियों को अपनी सेवा के लिए रख सकते थे।

अपना बड़प्पन दिखाने के लिए ही राजा बड़े-बड़े यज्ञ करवाना चाहते थे।

राजा की चिंता

ऐसा ही यज्ञ कुरू जनपद का राजा कर रहा था। हस्तिनापुर में त्यौहार का सा माहौल था।

सब यज्ञ की तैयारी में लगे थे। फिर भी राजा को चिन्ता थी। वह अपने **पुरोहित** को अपनी परेशानियां बता रहा था। पुरोहित वह ब्राह्मण था जो राजा के लिए राजसूय यज्ञ करवा रहा था।

राजा ने पुरोहित से कहा, "पुरोहित जी, गृहपति ठीक से बलि नहीं देते। वे मेरे आदेश नहीं मानते। मैं जितनी बलि मांगता हूं

उतनी न देकर वे अपनी **सुविधानुसार** देते हैं। मुझे बलि में जो मिलता है उसमें से राजन्यों को भी बांटना होता है। अगर राजन्यों को बलि का हिस्सा देकर खुश नहीं रखूं तो वे मुझे हटाकर किसी और को राजा बना देंगे। इस तरह मैं एक शक्तिशाली राजा कैसे बन पाऊंगा?"

तुमने ऊपर देखा था कि कैसे राजा के मांगने पर भी गृहपति बलि देने में आनाकानी कर रहे थे। उन दिनों राजा के आदेशों को लोग आसानी से नहीं मानते थे। लोगों को मनाना पड़ता था और इसीलिए राजा को अपनी शक्ति जताने की ज़रूरत महसूस होती थी।

राजा को जवाब देते हुए पुरोहित बोला, "राजन, इस राजसूय यज्ञ से हम पुरोहित तुम्हें अपार शक्ति दिलवायेंगे। इस यज्ञ से देवता खुश होंगे और वे तुम्हारी मदद करेंगे। तब कोई भी तुम्हारी **आज्ञा** को नहीं टाल सकेगा।"

वाक्य पूरे करो –

राजा राजसूय यज्ञ करवा रहा था क्योंकि ________________________।

पशुपालक आर्यों के दिनों में________________ ________________के लिए यज्ञ किया जाता था।

राजसूय यज्ञ

पशुपालक आर्यों के समय युद्ध में जन की जीत के लिए और जन की भलाई के लिए छोटे-छोटे यज्ञ किए जाते थे। मगर छोटे जनपदों में राजा बहुत बड़े और खर्चीले यज्ञ करने लगे थे। वे चाहते थे कि इन यज्ञों से राजा और राजन्यों को शक्ति मिले।

कुरु जनपद का राजसूय यज्ञ लगातार पांच महीने चला। अग्नि में हज़ारों गायों व बकरियों का चढ़ावा दिया गया। अनगिनत बोरे अनाज, घी, और सोना-चांदी भी यज्ञ में डाले गये। राजा का बहुत नाम हुआ।

यज्ञ के **समापन** पर कुरु जनपद के सभी गांवों से गृहपति और राजन्य आए थे। राजन्य राजा के पास बैठे और सुमंत जैसे गृहपतियों को यज्ञ मण्डप से थोड़ा हटाकर बिठाया गया। मगर रंगी की इच्छा पूरी न हो सकी। उसे व अन्य नौकर-चाकरों को शहर के बाहर रहना पड़ा। मण्डप के पास भी वे नहीं आ सकते थे।

'बलि क्यों दें?'

यज्ञ समाप्त होने पर राजा को बलि देने का समय आया। गृहपतियों ने अपनी गायें और अनाज व दाल के बोरे राजा के सामने पेश किए।

बलि में मिली चीज़ों को देख कर राजा खुश हुआ। बलि में जो चीज़ें मिल रही थीं उन्हें राजा ब्राह्मणों और राजन्यों में बांटता गया। सैकड़ों गायें, सोना, अनाज, दास, दासियां, ब्राह्मणों को दक्षिणा में दी गयीं।

पर, राजा के ध्यान में आया कि पांच गांव के गृहपति बलि नहीं लाए हैं। जब राजा ने कारण पूछा तो वे बोले, "राजन, कुछ दिन पहले दूसरे जनपद के लोगों ने हमारे गांवों पर हमला किया और फसल व जानवर लूट के ले गए। हम सब गांव वालों ने उनसे लड़ाई की पर हार गए। आप या राजन्यों में से कोई हमारी मदद के लिए नहीं आया। हम आपको बलि में क्या दें? और क्यों दें?"

वर्ण और उनके कर्त्तव्य

लोगों का जवाब सुन कर राजा को बहुत गुस्सा आया। गुस्से में राजा कुछ करने ही वाला था कि पुरोहित ने उसे रोक कर कहा, "राजन, सभी को अपना **कर्त्तव्य निभाना** चाहिये। राजा और राजन्य समाज के एक **विशेष** हिस्से हैं। ये **'क्षत्रिय वर्ण'** के हैं। इनका काम है राज करना और शत्रुओं से लोगों की रक्षा करना।"
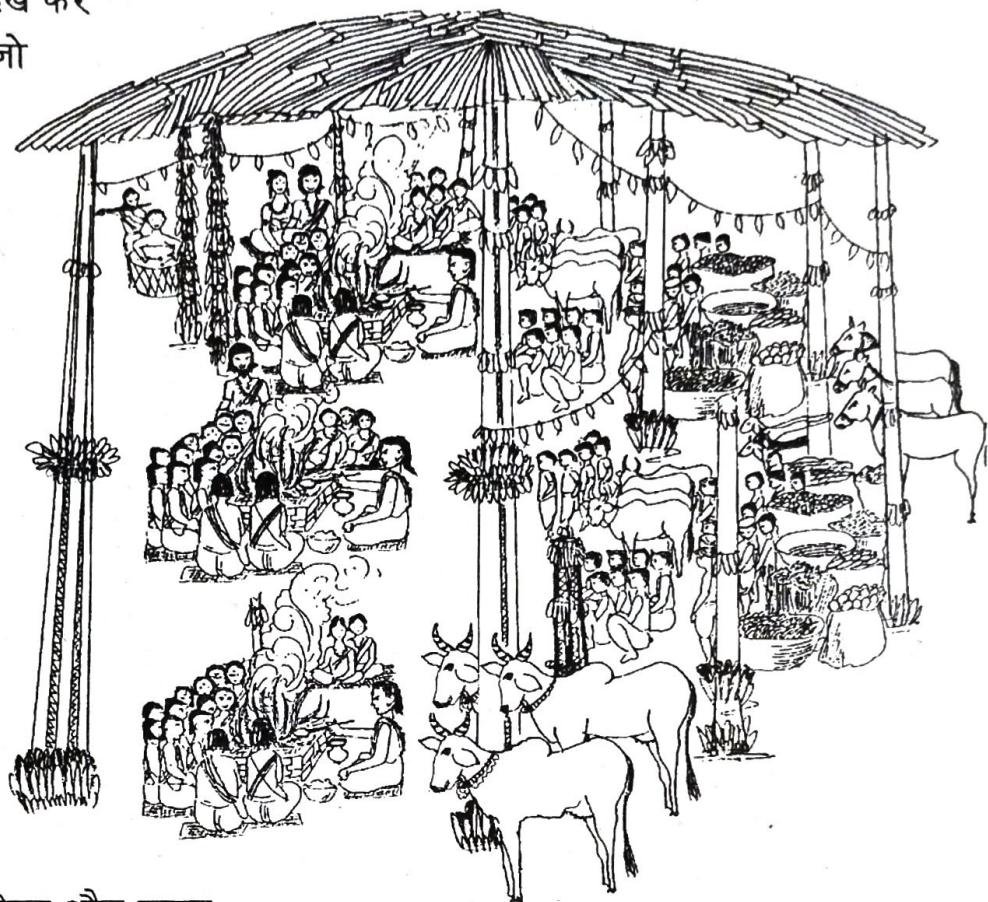
फिर पुरोहित गृहपतियों की तरफ देख कर बोला, "मगर राजा और राजन्यों को बलि देना आप खेती करने वालों का कर्त्तव्य है। खेती करने वाले **'वैश्य वर्ण'** के हैं। समाज के इस हिस्से के लोगों को अनाज उगाना चाहिये और अपनी उपज का कुछ भाग राजन्यों को बलि में और ब्राह्मणों को दक्षिणा में देना चाहिये। जिन पांच गांवों के गृहपतियों ने बलि नहीं दी है, उन्होंने ग़लत किया है।"

जिन गांवों के लोगों ने बलि नहीं दी थी, वे कहने लग, "जब हमारे पास देने को कुछ नहीं है, फिर भी हमसे कह रहे हैं कि बलि देना हमारा

धर्म है। ऐसा तो पहले नहीं होता था। हम इस जनपद में नहीं रहना चाहते। हम कहीं और जा के खेती कर लेंगें।" ऐसा कहते हुए वे सभा से चले गए। कुछ लोगों ने उन्हें मनाने की कोशिश की पर वे नहीं माने।

उन लोगों के चले जाने से सभा के लोग परेशान हो गए और हल्ला होने लगा। सब बात कर रहे थे कि क्या राजा का बलि मांगना ठीक था? क्या गृहपतियों का बलि देने से मना करना ठीक था?

1. राजसूय यज्ञ में ऐसी क्या बातें थीं जिनके कारण वह तुम्हें बहुत बड़ा यज्ञ लगा?

2. क्या तुम यज्ञ के चित्र में ब्राह्मणों, राजन्यों और गृहपतियों को पहचान पा रहे हो? इसमें नौकर-चाकर क्यों नहीं दिख रहे हैं?

3. पांच गांव के गृहपतियों ने बलि क्यों नहीं दी- जो सही विकल्प हैं उन पर सही का निशान लगाओ।

क. उनके पास देने के लिए कुछ नहीं था। ख. उन्होंने पहले ही बलि दे दी थी। ग. वे राजा और राजन्यों से नाराज़ थे। घ. उनके खेतों में फसल नहीं हुई थी।

4. रिक्त स्थान भरो -

पुरोहित ने कहा कि ________ का काम रक्षा करना है और ________ का काम ________ को बलि देना है।

(क्षत्रिय/वैश्य/ब्राह्मण)

5. पांच गांव के गृहपतियों ने अंत में क्या किया?

वर्ण व्यवस्था और ऊंच नीच का भेदभाव

छोटे जनपदों के समय ब्राह्मण यह कहने लगे थे कि बड़े-बड़े यज्ञ करने से ही राजा को शक्ति मिलती है और खेतों में अनाज उगता है। यज्ञ केवल ब्राह्मण करवा सकते थे। इसलिए समाज में ब्राह्मण बहुत महत्वपूर्ण होने लगे थे।

अब ब्राह्मण लोगों को यह भी बताने लगे कि समाज में कौन ऊंचा है, कौन नीचा है, और हरेक के क्या-क्या काम हैं।

ब्राह्मण यह कहने लगे कि समाज में चार **वर्ण** के लोग हैं - **ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य** और **शूद्र**।

चार वर्णों में सबसे ऊंचे और श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं। इनका काम यज्ञ करना और करवाना है, ताकि देवता खुश रहें।

ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों(यानी राजा और राजन्य)का दर्ज़ा था। इनका क्या काम था तुमने ऊपर पढ़ा।

क्षत्रियों के बाद वैश्यों का दर्ज़ा था। ये लोग थे खेती करने वाले गृहपति। इनका भी काम तुम पढ़ चुके हो। ब्राह्मण और क्षत्रिय अपने आपको वैश्यों से ऊंचा मानते थे। इसलिए वे वैश्यों से बराबरी से नहीं मिलते थे। उन्हें यज्ञों में भी अलग रखा जाने लगा था।

इन सबके बाद **शूद्रों** का दर्ज़ा था। इस वर्ण के लोग थे नेल्ली और शंभू जैसे नौकर-चाकर। इन्हें सबसे नीचे वर्ण का माना गया। इनका काम था दूसरों की सेवा करना। इन्हें यज्ञ में भाग लेने नहीं देते थे और न ही वे खुद की खेती बाड़ी कर सकते थे।

चार वर्णों की **व्यवस्था** उन दिनों बनाई गई पर इसका असर बहुत समय तक रहा। चार वर्णों के बीच ऊंच-नीच की भावना आज तक समाज में है।

पाठ के इस अंश में किन बातों का वर्णन है -- क. युद्ध कैसे हो? ख. यज्ञ कैसे हो? ग. लोगों के काम क्या हों? घ. लोगों का एक-दूसरे से रिश्ता क्या हो? च. राजा क्या चाहता था ?

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां दो श्लोक दिये गये हैं। तुम यह पहचानो कि इनमें से कौन सा श्लोक पशुपालक आर्यों के समय का है और कौन सा छोटे जनपदों का समय का। साथ में कारण भी लिखना -

क) हे इन्द्र हमे अपार धन दौलत दो।
सैकड़ों गायें और घोड़े देकर,
हमारी यह कामना पूरी करो।

ख) दाल, तिल, गेहूं,
धान और फल,
सब कुछ यज्ञों से
होते हैं उत्पन्न।

2. इस पाठ के कितने हिस्से हैं? उनके उपशीर्षक क्या हैं?
3. क) राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी पाठ के किस-किस हिस्से में मिलेगी?
   ख) राजसूय यज्ञ क्यों किया जाता था, कैसे किया जाता था और राजा इसके लिए धन कैसे जुटाता था- 6-7 वाक्यों में लिखो।
4. सही विकल्प चुनो-
   राजा गृहपतियों से बलि लेने के लिए - क) उन्हें आदेश देता था। ख) गृहपतियों को मनाने के लिए राजन्यों को भेजता था। ग) वह गृहपतियों के घर से अनाज ज़बरदस्ती ले आता था।
5. यहां दिए लोगों के बारे में 4-5 वाक्य लिखो और समझाओ कि वे क्या काम करते थे और उनकी क्या इच्छाएं व परेशानियां रही होंगी।
   क) राजा ख) राजन्य ग) गृहपति घ) ब्राह्मण च) नौकर-चाकर, दास-दासी।
6. क) चार वर्णों के नियम क्या थे?
   ख) राजा व ब्राह्मण लोगों पर नए नियम कैसे लागू कर रहे थे ? जो-जो विकल्प सही लगें उन पर सही का निशान लगाओ —
   दंड दे रहे थे/लोगों को समझा रहे थे/कह रहे थे कि नियम का पालन करना ही धर्म है।

6. क) छोटे जनपद जिस इलाके में बने थे, वो आज भारत के किन राज्यों में आता है – क. महाराष्ट्र ख.पंजाब ग. बंगाल घ. उत्तर-प्रदेश च. राजस्थान छ. मध्य-प्रदेश ।

ख. मानचित्र 2 और के मानचित्र 3 की तुलना करो और बताओ कि क्या सही है-

- दोनों मानचित्र भारत के बारे में हैं।
- दोनों मानचित्र एक ही समय के बारे में हैं।
- दोनों मानचित्रों में बताई गई बातों में कोई फ़र्क नहीं है।

8. पशुपालक आर्यों और छोटे जनपदों के समय में क्या अंतर आये? तालिका में लिखो।

	पशुपालक आर्यों का समय	छोटे जनपदों का समय
अ) लोगों का मुख्य काम क्या था-		
ब) बलि कौन देता था -		
स) बलि में क्या देते थे-		
द) बलि कब देते थे-		
य) बलि का क्या उपयोग होता था-		
र) युद्ध क्यों होता था -		
ल) यज्ञ क्यों किया जाता था -		

9. एक मज़ेदार तुलना

तुमने अलग-अलग लोगों के बारे में पढ़ा। उनके भोजन के बारे में जाना। भोजन मनुष्य के लिए बहुत ज़रूरी चीज़ है। हमारे भोजन में कई ऐसी चीज़ें होती हैं जो जल्दी सड़ जाती हैं। और कई चीज़ें काफी दिनों तक बची रहती हैं। जोड़-जोड़ कर उनका भंडार बनाया जा सकता है। ऐसी चीज़ों को काफी मात्रा में इकट्ठा किया जा सकता है।

इस दृष्टि से तुम शिकारी मानव, पशुपालक आर्य और छोटे जनपद के लोगों को देखो तो किसके भोजन में जोड़ कर रखने लायक चीज़ें ज़्यादा थीं? हरेक के भोजन की सूची बनाकर तुलना करो।

इतिहास के पाठों में जो चित्र बने हैं वे हमने बनाए हैं। जितने पुराने समय की हम बात कर रहे हैं तब के लोग अपने कोई चित्र छोड़ कर नहीं गए। उन्होंने चित्र छोड़े भी हों तो वे हमें नहीं मिलते।

उन लोगों के बारे में जो भी बातें हम पता कर सके उन पर सोच कर और कुछ कल्पना करके ये चित्र तुम्हारे लिए बनाए हैं। जैसे हमें यह पता है कि वे रथ की सवारी करते थे। पर क्या उनके रथ वैसे दिखते थे जैसा हमने चित्र में दिखाया है? ये हम नहीं कह सकते। इन चित्रों को तुम सचमुच के मत समझना।

7. महाजनपद के राजा

तुम राजा के बारे में कुछ बताओ - राजा कौन होता है, कैसा होता है? वह लोगों के लिए क्या करता है और लोग उसके लिए क्या करते हैं? वह लोगों को क्या देता है और लोग उसे क्या देते हैं?
इस पाठ के चित्रों में राजा और लोगों के बारे में क्या-क्या दिख रहा है? क्या तुमने जो बातें बताई वे चित्रों में दिख रही हैं?

तुम ने पिछले पाठ में देखा कि कई छोटे-छोटे जनपद बन चुके थे। तब से तीन-चार सौ साल बीत गए। उसके बाद का समय कैसा था – यह हम इस पाठ में देखेंगे। यह **महाजनपदों** का समय कहा जाता है।

जनपद का मतलब तुम जानते ही हो - सही मतलब को चुनो - 1. जन की गाएं जहां चरतीं हैं 2. जन के लोग जिस गांव में रहते हैं 3. जन के लोग जिस इलाके में खेती करते हैं और बस गए हैं

महाजनपद का क्या मतलब हो सकता है?

उस समय सोलह बड़े जनपद यानी महाजनपद थे। ये मानचित्र में दिखाए गए हैं। इन जनपदों में कौन से नए जनपद हैं? और कौन से जनपद पुराने हैं? तालिका में लिखो-

पुराने जनपद	***नए जनपद***

पुराने जनपदों की संख्या ज़्यादा है या नए जनपदों की ?

नए जनपद पुराने जनपदों की किस दिशा में बने थे?

मानचित्र में उस समय के 16 बड़े जनपद ही दिखाए हैं। इनके अलावा कई छोटे-छोटे जनपद भी थे। महाजनपदों में बहुत सी नई-नई बातें हो रहीं थीं। उस समय की कई कहानियों और किताबों से उन बातों के बारे में पता चलता है। इनकी मदद से हम कल्पना भी कर सकते हैं कि महाजनपद के राजा कैसे थे।

कहानी - महाजनपद का एक राजा

कल्पना करो कि एक महाजनपद का पुरुजित नाम का राजा था। उसने कई जनपदों को युद्ध में हराया था और उनका बहुत सा धन जीत लिया था। उसने अपने जनपद के लोगों से भी बलि ले-ले कर धन जमा कर लिया था। इस तरह उसके पास बहुत धन इकट्ठा होने लगा था।

राजा पुरुजित ने अपने पास जमा धन से बहुत से हथियार और घोड़े जमा किए। अब वह एक बड़ा सुन्दर महल बनवाना चाहता था।

राजा पुरुजित के मन में धन का लालच बढ़ता जा रहा था। वह बार-बार आस-पास के जनपदों पर हमला करके उनको अपने अधिकार में करने की कोशिश करता था।

सेना बनाने की योजना

जैसा कि रिवाज़ था राजा पुरुजित को अपने पास इकट्ठे हो रहे धन में से राजन्यों को भी बांटना पड़ता था। उसे बड़े-बड़े यज्ञ करने पड़ते थे। यज्ञ करके जनपद के लोगों को भोजन कराना पड़ता था। ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देनी पड़ती थी। जो राजा यज्ञों में जितना ज़्यादा धन खर्च करे उसका उतना ज़्यादा मान होता था।

पर राजा पुरुजित को इस तरह अपना धन बांटना अखरने लगा। वह बहुत सारे जनपदों से युद्ध करना चाहता था। जब वह किसी जनपद पर हमला करता तो कभी उस पर भी दूसरे जनपद का राजा हमला करता था। इसलिए राजा पुरुजित युद्ध की अच्छी तैयारी करना चाहता था। वो सोचा करता - 'अगर राज्य का धन मेरे पास ही जमा होता रहे तो मैं अच्छे से अच्छे हथियार और घोड़े व हाथी रखूंगा।'

इसके अलावा राजा पुरुजित को एक सेना बनाने की ज़रूरत भी महसूस होने लगी थी। हम जानते हैं कि उस समय तक जनपदों में सेना नहीं होती थी। जनपद के लोग अपने राजा व राजन्यों के साथ लड़ाई पर जाते थे। पर जनपद के लोगों को खेती, कारीगरी के कई काम रहते थे। जब कभी राजा चाहे तब सारे काम छोड़ कर लोग लड़ने नहीं जा सकते थे। पुरुजित इस बात से परेशान रहने लगा।

वह सोचने लगा - 'अगर मेरे पास हज़ारों ऐसे लोग हों जो बस मेरे लिए लड़ने का काम करें, और कुछ न करें - तभी काम चलेगा। मेरे पास धन जमा हो जाए तो मैं कुछ लोगों को रख लूं। मैं उनकी ज़रूरत के हिसाब से उन्हें धन दूं। वे खेती या और कोई काम-धंधा न करें। हमेशा मेरी सेवा में रहें। मैं उन्हें हथियार चलाना और युद्ध करना सिखवाऊं। फिर मैं जब कहूं, जहां कहूं - वे मेरे लिए युद्ध करने चल दें।'

संकेत
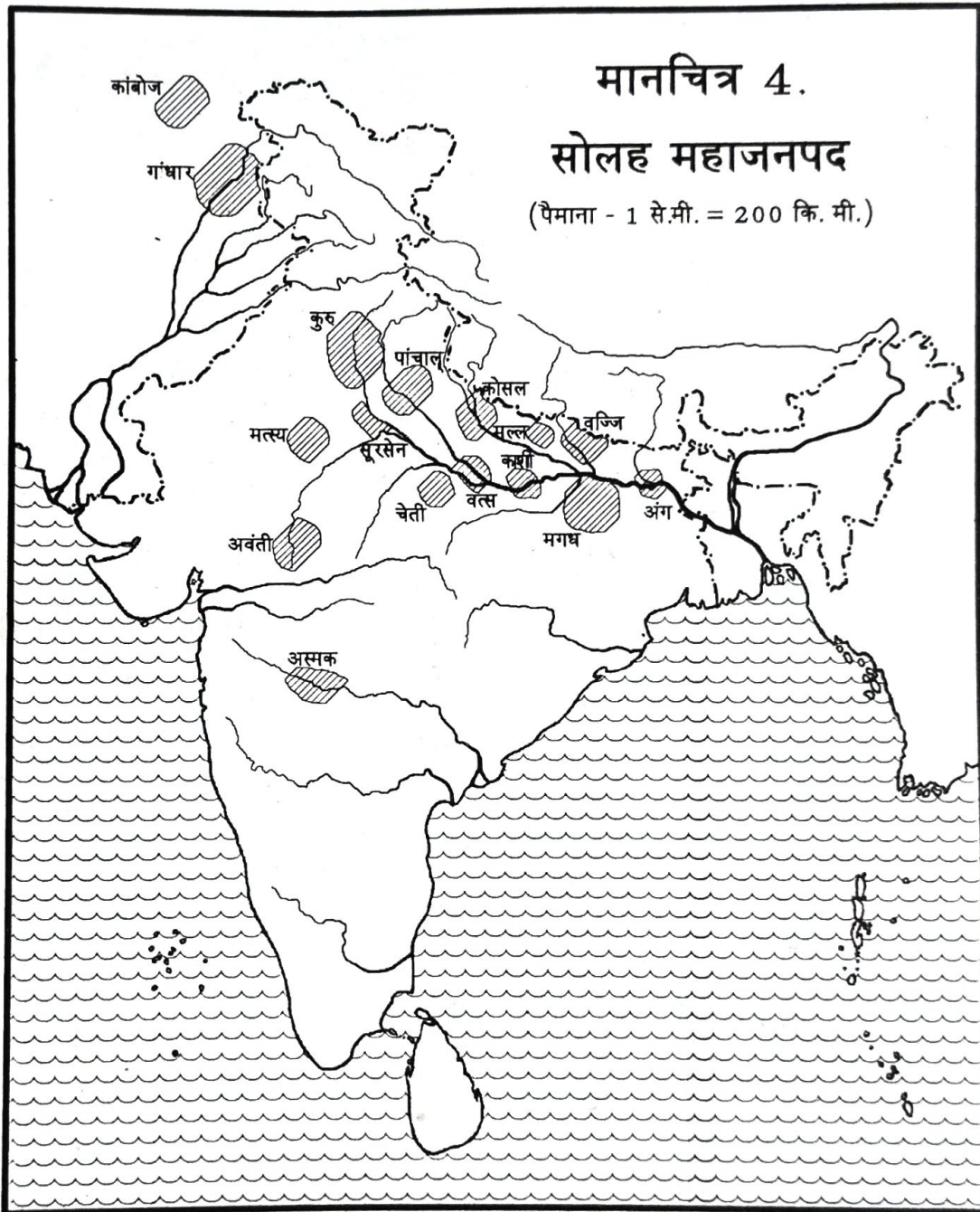
भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—.—.—
सागर	
महाजनपद	

इस तरह पुरुजित एक सेना बनाने का विचार करने लगा।

राजा ने सेना बनाने के काम में देरी नहीं की। कुछ सालों में उसने हज़ारों लोगों को अपनी सेवा में भर्ती कर लिया। अपनी सेना के बल पर पुरुजित ने आसपास के कई जनपदों को युद्ध में हराया और उनको अपने जनपद में मिला लिया। उन जनपदों के लोगों से भी वह बलि लेने लगा। उसका जनपद महाजनपद बन गया।

आसपास के क्या, दूर-दूर के राजा भी पुरुजित की सेना से डरने लगे, क्योंकि अब वह कभी भी उन पर हमला कर सकता था। पुरुजित की देखा-देखी और उसके डर से दूसरे राजाओं ने भी अपनी-अपनी सेनाएं बनाने की कोशिश शुरू कर दी।

राजा पुरुजित को धन इकट्ठा करने की चिन्ता क्यों लगी रहती थी?

छोटे जनपद सेना के बिना युद्ध कैसे करते थे?

महाजनपद का राजा सेना क्यों बनाना चाहता था? इससे उसे क्या फायदा होता?

बलि का कानून

राजा पुरुजित ताकतवर और प्रसिद्ध हो गया था। पर उसकी चिन्ताओं का अन्त नहीं था। भला अब उसे किस बात की चिन्ता थी?

राजा को अब भी धन की चिन्ता थी। उसे हज़ारों सैनिकों को साल भर का वेतन देना पड़ता था। हथियारों, हाथियों, घोड़ों का इन्तज़ाम भी करना पड़ता था।

फसल का एक हिस्सा राजा की बलि के लिए

राजा सोचा करता, 'जो भी हो, अब मेरे पास जमा धन में कभी कमी नहीं आनी चाहिए वरना ये हज़ारों सैनिक मेरी सेवा में नहीं रहेंगे क्या उपाय करूं कि नियम से मेरे पास धन जमा होता रहे?'

इस चिन्ता का उसने क्या हल निकाला होगा?

क्या बार-बार युद्ध करने से धन की समस्या हल हो सकती थी?

राजा ने एक कानून बनाया और जनपद के सब गांवों में लोगों को नगाड़े बजवा कर सुनाया।

"सभी खेती करने वाले ध्यान दें। राजा पुरुजित का आदेश है। हर फसल के बाद उसके छः हिस्सों में से एक हिस्सा राजा के लिए बलि में निकाल दें। जो खेती करने वाले बलि नहीं देंगे, उन्हें राजा कठोर दण्ड देगा।"

इस तरह लोगों से बलि लेने का कानून बना। राजा नियम से हर फसल के बाद लोगों से बलि का अनाज इकट्ठा करवाने लगा।

पाठ का यह अंश किसके बारे में है? — 1. युद्ध की ज़रूरत 2. सेना की ज़रूरत 3. सेना के लिए धन जमा करने की ज़रूरत

महाजनपद के राजा ने बलि लेने का क्या नियम बनाया - सही विकल्प चुनो -

लोग अपनी इच्छा से भेंट दें/लोग हर फसल पर एक हिस्सा दें/राजा जब मांगे तब कुछ दें

महाजनपद के दिनों में राजा को हर फसल पर बलि लेने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

राजा के अधिकारी

राजा पुरुजित को कुछ ही सालों में और इन्तज़ाम करने ज़रूरी लगे। किस गांव से कितनी बलि मिली, कितनी नहीं मिली - इसका हिसाब-किताब रखना ज़रूरी लगा। जो किसान बलि न दें, उनकी शिकायत सुनना और उन्हें दंड देना पड़ता था। इन सब कामों के लिए उसे मदद की ज़रूरत थी।

सेना की देख-रेख का काम भी बहुत बढ़ गया था।

पुराने दिनों में जन के प्रमुख लोग यानी राजन्य ही सारे काम काज संभाला करते थे। उन्हें राजा से बलि और जीत में मिले धन का हिस्सा मिलता था।

पर राजा पुरुजित ने सोचा, 'मैं सिर्फ अपने जन के राजन्यों और अपने संबंधियों की मदद से इतने सारे काम नहीं करवा सकता। जिन जनपदों को मैंने जीत लिया है उनमें भी कई वीर, योग्य और वफादार लोग मुझे मिलते हैं। तो क्या हुआ अगर वे मेरे संबंधी नहीं हैं या दूसरे जन के हैं? मुझे तो काम से मतलब है। जो भी ठीक से काम करेगा मैं उसे ठीक से वेतन दूंगा। जो मेरी पसन्द का काम नहीं करेगा उसे सेवा से निकाल दूंगा। इस तरह मैं अपनी इच्छा के अनुसार राज्य का शासन चला सकूंगा।'

यह सोच कर राजा पुरुजित ने अपनी सहायता के लिए कई अधिकारी और कर्मचारी रखे। वे उसके आदेशों के अनुसार काम करने लगे। उसने कुछ योग्य लोगों को अपना मंत्री भी बनाया जो उसे सलाह देते थे और उसकी तरफ से कई कामों की देखरेख करते थे। राजा अपने अधिकारियों, कर्मचारियों और मंत्रियों को **नियमित वेतन** देने लगा।

अब महाजनपदों में राजन्यों का महत्व कम होने लगा और राजा अपने जनपद के कई दूसरे लोगों की मदद से राज्य चलाने लगा।

इस अंश की मुख्य बातें क्या हैं? सिर्फ तीन वाक्यों में बताओ।

राजा के मन का प्रश्न

राज्य के सारे इन्तज़ाम करने में बहुत धन खप रहा था। इस कारण भी पुरुजित दूसरे जनपदों को हरा कर उन्हें अपने राज्य में मिलाने की सोचता रहता था।

कुछ सालों में राजा पुरुजित को एक और बात सूझने लगी। वह ऐसे सब खर्चे कम करना चाहता था जो उसे बहुत ज़रूरी नहीं लगते थे। जैसे पुराने रिवाज़ के अनुसार उसे बड़े-बड़े यज्ञ करने पड़ते थे। अगर वह ऐसे यज्ञ न करे तो उसके संबंधी और ब्राह्मण बुरा मानते थे। राजा के मन में प्रश्न उठता-इतने बड़े यज्ञ करना क्यों ज़रूरी है? इन यज्ञों से क्या मिलता है?

राजा पुरुजित ने बड़ी-बड़ी समस्याओं का हल निकाला, पर यज्ञ जैसे रीति-रिवाज़ों को बदलने की चिन्ता लिए ही उसका जीवन-काल खत्म हो गया।

बाद में आने वाले समय में रीति रिवाज़ों में भी बदलाव आए, जिनके बारे में हम आगे एक पाठ में पढ़ेंगे।

जो बातें राजा पुरुजित की कहानी से हमने समझीं वे उस समय के बहुत से जनपदों में हुई थीं। उस समय के महाजनपदों के राजाओं ने अपनी सेनाएं बनाईं, अधिकारी व मंत्री रखे और बलि लेने का कानून बनाया।

महाजनपदों के सभी कामों में, सभी बातों में राजा ही शक्तिशाली हो गया। राजन्यों और जन के लोगों का अब पहले जैसा महत्व नहीं रहा। अब पहले जैसी सभाएं होना भी बन्द हो गईं।

गणसंघ

उन दिनों कुछ ऐसे भी जनपद थे जिनमें कोई एक राजा शक्तिशाली नहीं बना। ऐसे जनपदों में एक वंश के सारे पुरुष मिल कर शासन करते थे। वे आपस में सभा करके एक दूसरे से बातचीत करके अपने जनपद का कामकाज चलाते थे। इन जनपदों के सब के सब पुरुष अपने आपको राजा कहते थे। है न मज़े की बात! एक जनपद में सैकड़ों राजा! इस तरह के जनपदों को **गणसंघ** कहा जाता था।

उन दिनों दो बड़े गणसंघ थे - मल्ल और वज्जि। इन्हें नक्शे में पहचानो।

इन दोनों चित्रों में से राजा का कौन सा चित्र है और गणसंघ का कौन सा चित्र है? कारण सहित बताओ।

मगध साम्राज्य

सोलह जनपदों में मगध जनपद सबसे ताकतवर निकला। इस जनपद में बिंबिसार नाम के राजा ने एक बड़ी सेना बनाई थी। उसके बेटे अजातशत्रु ने कई जनपदों को हरा कर उन्हें मगध जनपद में मिला लिया था।

मानचित्र 5 देखो। उसमें अजातशत्रु के राज्य की सीमा बताई गई है। मानचित्र 4 से तुलना करो और बताओ कि कौन-कौन से जनपद मगध जनपद में मिला लिए गए थे?

कुछ साल बाद मगध में महापद्मनंद नाम का राजा हुआ। उसने अपने पास इतना सारा धन जमा किया और इतनी बड़ी सेना तैयार की कि वह इन बातों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो गया।

मानचित्र 5 में महापद्मनंद के राज्य की सीमाएं देखो। देखो कि उसने अजातशत्रु के बाद और कौन-कौन से जनपदों पर अपना अधिकार कर लिया? कौन-कौन से जनपद उसके राज्य के बाहर थे?

महापद्मनंद ने इतने सारे राज्यों को हरा कर, मगध में मिला लिया था कि उसके राज्य को मगध **साम्राज्य** कहा जाता है।

सिकन्दर का हमला

उन दिनों यूरोप महाद्वीप के यूनान देश में मेसिडान नाम का एक राज्य था। वहां का राजा सिकन्दर अपनी बड़ी भारी सेना लेकर दुनिया जीतने के इरादे से चला था। वह बहुत से राजाओं को हराता हुआ सिन्धु नदी के किनारे पहुंचा था। वहां उसने बहुत से छोटे-छोटे राज्यों और गणसंघों को हराया। इनमें से एक का राजा था पुरु - जिसकी कहानी तुमने ज़रूर सुनी होगी। इन राज्यों के लोगों ने सिकंदर का इतना तगड़ा मुकाबला किया कि उसकी सेना थक गई। जब उन्होंने मगध के राजा महापद्मनन्द की **भीमकाय** सेना के बारे में सुना तो उन्होंने आगे जाने और मगध की सेना से लड़ने से इंकार कर दिया और वे मेसिडान लौट गए।

लौटते समय सफर में ही सिकन्दर की मृत्यु हुई। पर उसके कई सेनापति उसके जीते हुए इलाकों पर राज्य करते रहे। इस तरह सिंधु नदी के पश्चिम में सिकंदर के सेनापतियों का राज्य बना। लेकिन इसके पूर्व में मगध का राज्य ही सबसे शक्तिशाली राज्य बना रहा।
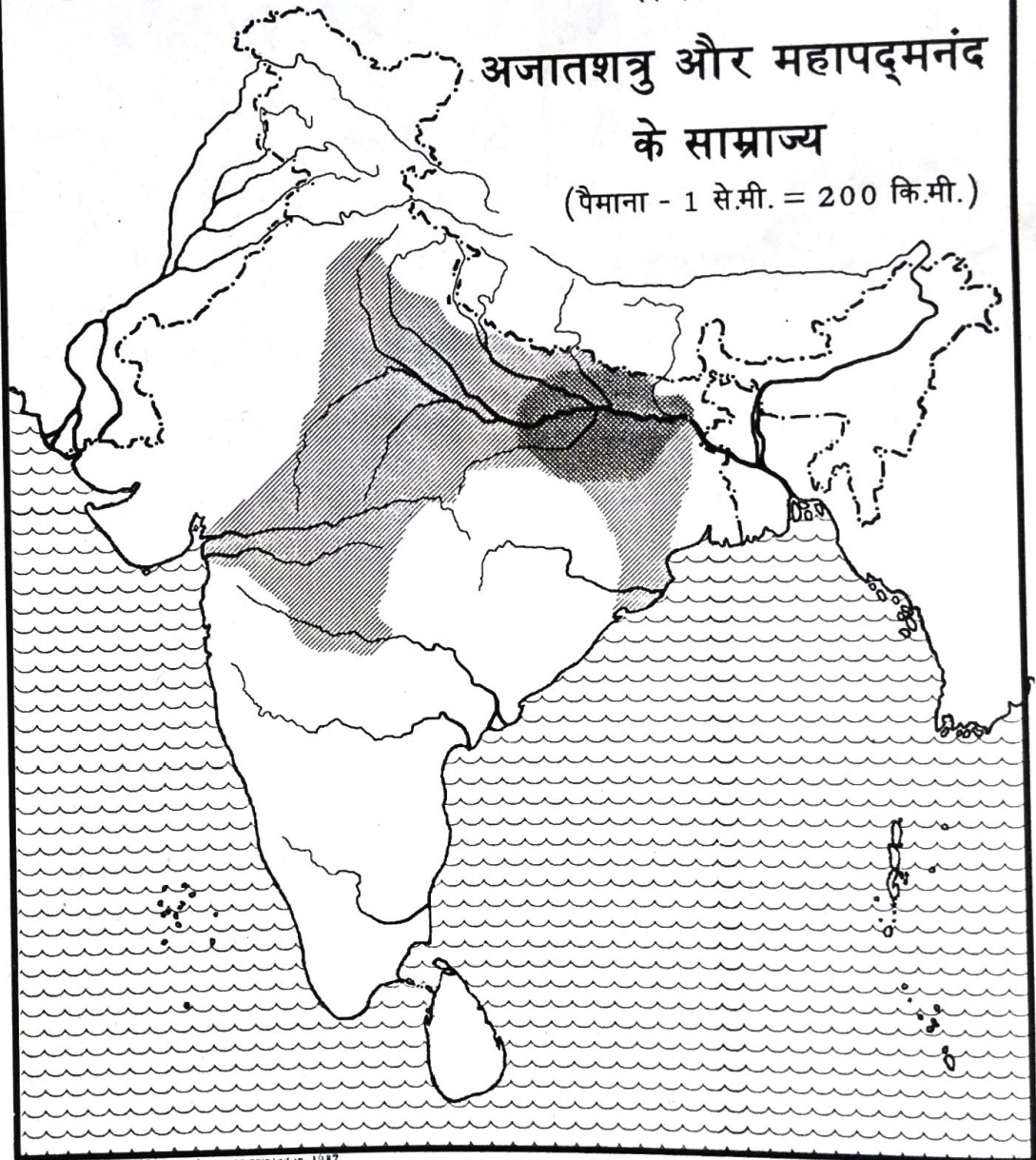
संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—
सागर	
अजातशत्रु का साम्राज्य	
महापद्मनंद का साम्राज्य	
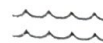
अभ्यास के प्रश्न

1. महाजनपद के राजाओं के पास क्या-क्या था जो छोटे जनपद के राजाओं के पास नहीं था? कोई भी तीन बातें समझा कर लिखो।
2. क. राजा पुरुजित ने किन-किन लोगों को अपना अधिकारी बनाया -
   सिर्फ अपने जनपद के लोगों को / सिर्फ राजन्यों को / सिर्फ दूसरे जनपद के लोगों को / जो भी योग्य और वफादार हों।
   ख. अपने अधिकारियों को राजा क्या देता था - बलि का हिस्सा / जीत में मिले धन का हिस्सा/ वेतन
3. छोटे जनपद के राजा बड़े-बड़े यज्ञ करना चाहते थे जबकि महाजनपद के कई राजा यज्ञ नहीं करना चाहते थे। इसका क्या कारण था?
4. इनके बारे में दो-दो वाक्य लिखो -
   क. अजातशत्रु
   ख. महापद्मनन्द
   ग. सिकन्दर
   च. गणसंघ
5. तुम्हारे मन में एक राजा के बारे में जो-जो बातें आई थीं वे तुमने पुरुजित में पाईं या नहीं? चर्चा करो।
6. क. तुम जहां रहते हो क्या वहां कोई महाजनपद था? नक्शा देख कर पहचानो।
   ख. महाजनपदों का इलाका भारत के कौन-कौन से राज्यों में पड़ता है ?
8. राजा पुरुजित किसानों से नियमित रूप से बलि लेने लगा था। यह बात कौन से उपशीर्षक के नीचे तुम्हें पढ़ने को मिली?
9. **साम्राज्य** शब्द का क्या अर्थ है? सही विकल्प छांटो -
   पास का राज्य / छोटा राज्य / जहां कोई राजा न हो / बहुत बड़ा राज्य
10. इन शब्दों का उपयोग करते हुये अपने वाक्य बनाओ -
    कानून, संबंधी, सलाह, नियमित

8. महाजनपद के महानगर
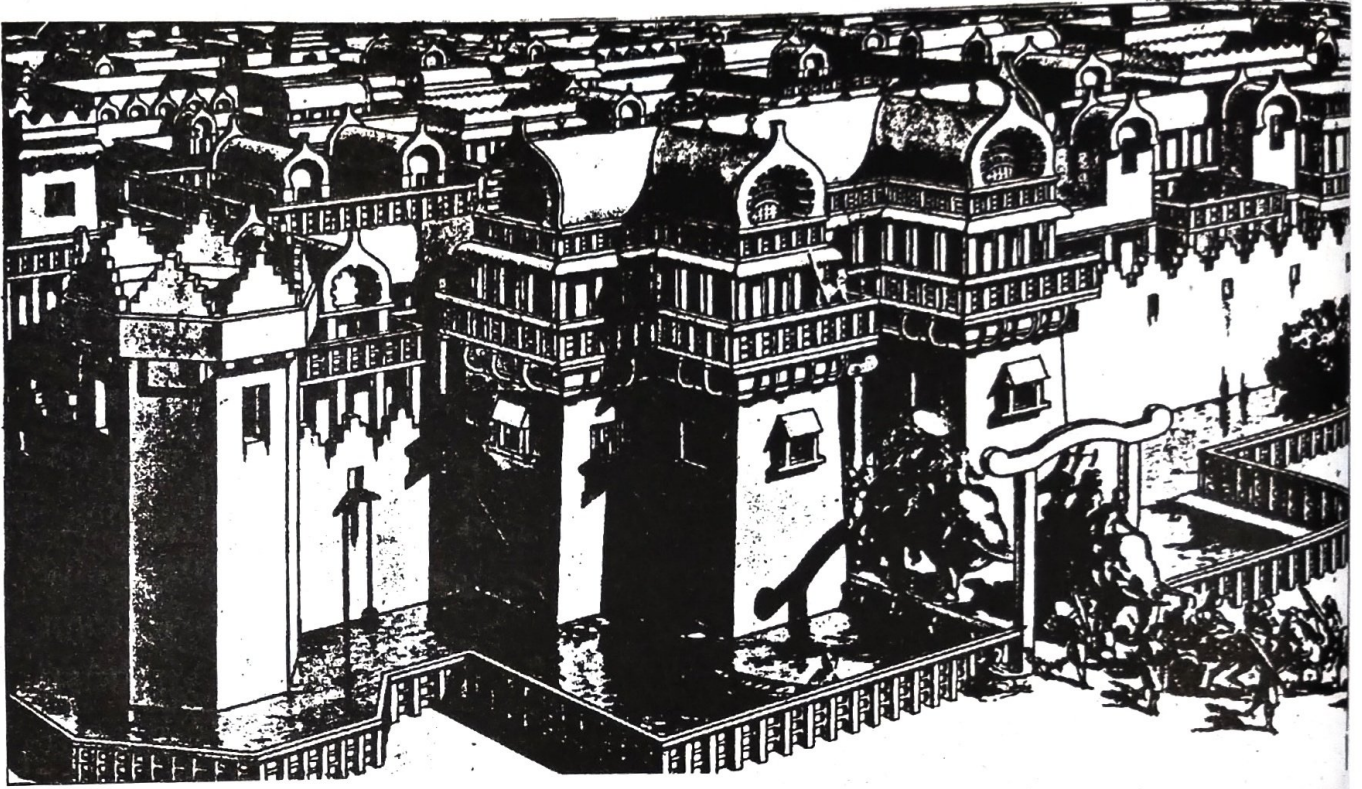
महाजनपदों के महानगरों के चित्र देखो और अंदाज़ से बताओ कि चित्रों में दिख रहे लोग कौन-कौन हैं? नगरों में रहने वाले लोगों की कुछ समस्याएं बताओ। क्या तुम्हें लगता है कि ये समस्याएं महाजनपदों के महानगरों में भी रही होंगी?

कारीगर बने, व्यापारी बने, शहर बसे

महाजनपदों का समय बड़े-बड़े बदलावों का समय था। तुमने पिछले पाठ में पढ़ा था कि राजा शक्तिशाली हो रहे थे और वे सैनिकों व अधिकारियों को रखने लगे थे। वे खेती करने वालों से नियमित रूप से बलि लेने लगे थे। इन बातों का असर और दूसरी बातों पर भी पड़ रहा था।

लोगों से नियमित बलि लेने के कारण राजाओ के पास धन इकट्ठा होता गया। उनके साथ उनके रिश्तेदार, सेनापति और अधिकारी भी धनी हो गये। वे सब इस धन से अपनी शान बढ़ाना चाहते थे। वे अच्छे हथियार, गहने, बर्तन, कपड़े और सुन्दर महल चाहते थे।

कई खेती करने वाले परिवार भी धनी हो र थे। वे भी अपने लिए अच्छी व सुन्दर चीज़ें चाह

लगे। धनी लोगों की तरह-तरह की चीज़ों की मांग को देखकर कई हुनर वाले लोगों ने खेती का काम छोड़ दिया। वे अब बर्तन, गहने, हथियार, कपड़े आदि बनाने लगे और इन चीज़ों को बेचकर अपना गुज़ारा करने लगे। इस तरह कारीगर बने। किसी बस्ती में कपड़ों की अच्छी बुनाई होने लगी, किसी बस्ती में मज़बूत हथियार बनने लगे, किसी और जगह दूर देशों से सोना, मणि आदि मंगवाकर गहने बनने लगे।

पर, जगह-जगह बनी चीज़ों को अलग-अलग जगहों में रहने वाले धनी लोगों तक पहुंचाना ज़रूरी था। कुछ लोगों ने सोचा, "क्यों न हम कारीगरों से उनके द्वारा बनाई गई चीज़ें खरीदें और दूसरी जगहों पर ले जा कर बेचें? अगर सस्ते में खरीदेंगे और महंगे में बेचेंगे तो हम अपना धन बढ़ा सकेंगे।" इस तरह व्यापारी भी बने। व्यापारियों को उन दिनों **सेट्ठी** कहते थे।

राजा और उसके अधिकारी जहां रहने लगे, वहीं कारीगर और व्यापारी भी बसने लगे। धीरे-धीरे राजा की बस्ती बढ़ती गई और बड़ा शहर बन गई। बहुत बड़े शहरों को **महानगर** कहा जाता था।

नक्शे में देख कर उस समय के महानगरों के नाम बताओ।

नक्शे में दो लम्बी सड़कें बनी हैं - एक उत्तर की ओर जाने वाली **उत्तरापथ** और दूसरी दक्षिण की ओर जाने वाली **दक्षिणापथ** व्यापारी इन मार्गों से यात्रा करते थे और एक नगर से दूसरे नगर जा कर व्यापार करते थे।

इन दोनों सड़कों पर पड़ने वाले महानगरों के नाम सूची में लिखो -

उत्तरापथ के नगर -

दक्षिणापथ के नगर -

उन दिनों होने वाली नई बातों में दो और चीज़ें थीं। व्यापार बढ़ने के कारण **सिक्कों** का इस्तेमाल शुरू होने लगा था।
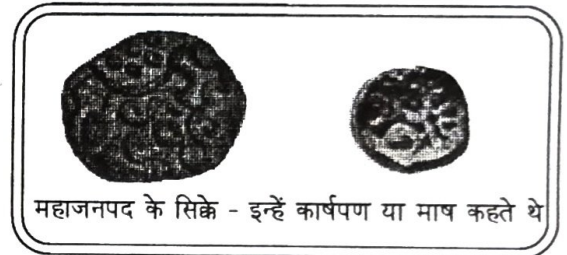
महाजनपद के सिक्के - इन्हें कार्षपण या माष कहते थे

यही नहीं व्यापारियों को हिसाब-किताब रखना पड़ता था। दूर-दूर तक संदेश व खबरें भिजवानी पड़तीं थीं। राजा और उसके अधिकारियों को भी बलि का पूरा हिसाब- किताब रखना पड़ता था। इस कारण उन दिनों **लिखाई** की शुरुआत भी हुई।
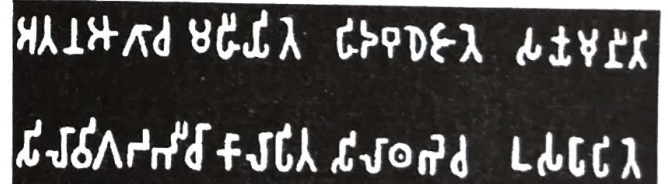
महाजनपद के समय की लिखाई

तुमने शिकारी मानव के बारे में पढ़ा था। उन दिनों शहर क्यों नहीं बस सकते थे -तीन कारण लिखो।

महानगरों में ग़रीब लोग

शहरों में राजा, मंत्री, सेनापति, व्यापारी जैसे धनी लोग रहने लगे थे। उन शहरों की चमक-दमक, चहल-पहल से आस-पास के गांवों के धनी किसान भी शहरों में बसने लगे। धनी लोगों के शहरों में
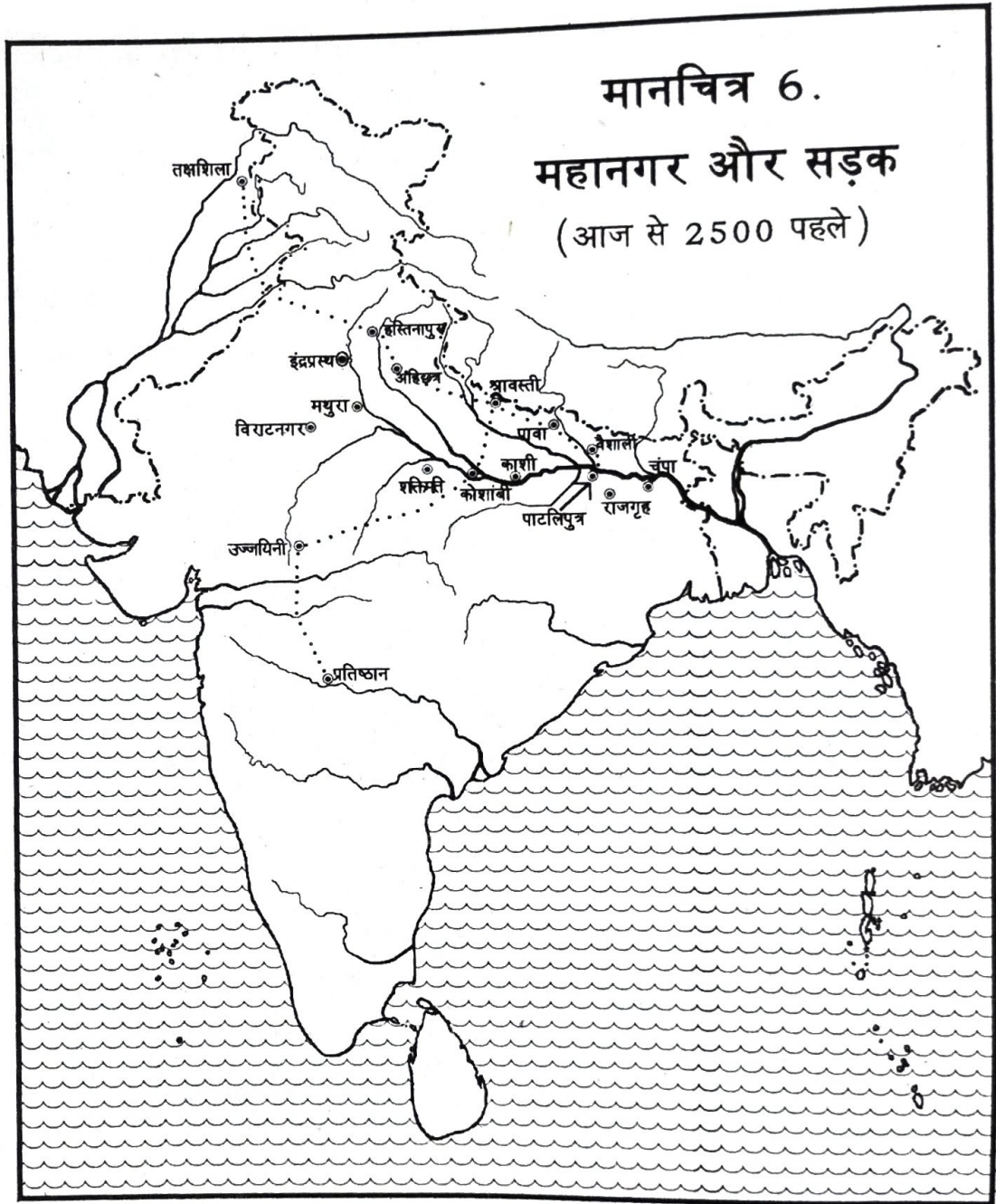
पैमाना - 1 से.मी. = 200 कि.मी.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा	—·—·—·—
सागर	﹏﹏
महानगर	◉
सड़क	• • • • •

बसने से घर-बाहर के तरह-तरह के काम निकलने लगे। जैसे साफ-सफाई करना, पानी भरना, बर्तन धोना, फूल माला बनाना, सड़कों की सफाई करना,

व्यापारियों के लिए भी हम्माली करना.... । कुछ लोग इन कामों को करने लगे। इस तरह शहरों में अमीरों के साथ-साथ ग़रीब लोग भी बसते गए। ये लोग अमीरों की सेवा करके गुज़ारा करते थे।

गांवों में गरीब लोग

गांवों में कई बातें बदल गई थीं। कुछ लोगों ने बड़ी-बड़ी ज़मीनें अपने अधिकार में ले ली थीं। ये लोग गृहपति कहलाते थे। उनके सामने अपने बड़े-बड़े खेतों में काम करवाने की समस्या थी। इसके लिए उन्होंने दूसरे लोगों को अपना नौकर बनाया और उनसे अपनी ज़मीन पर मज़दूरी करवानी शुरू की। ये मज़दूर **कर्मकार** कहलाते थे। **दासों** से भी घर व खेत पर काम कराया जाता था।

गृहपति अपने खेतों पर इतना अनाज पैदा करवा लेते थे कि शहरों में बेचने के लिए लाने लगे। शहरों में व्यापारी अनाज खरीद लेते और शहर के लोगों को बेचते।

निर्धन लोग शहरों में क्या-क्या करते थे?
गांव में गृहपतियों को मज़दूरों की ज़रूरत क्यों पड़ी?
शहर में रहने वालों को अनाज कैसे मिलता था?

पैसे का खेल

महानगरों के समय में व्यापार के बढ़ने के कारण सिक्कों-पैसों का चलन भी शुरू हो चुका था। पैसों से सब कुछ खरीदा जा सकता था। तरह-तरह की चीज़ें, नौकर-चाकर, गुलाम - सब कुछ पैसा देने पर मिलता था। जिसके पास पैसे नहीं हों उसको पूछने वाला कोई नहीं था।

ज़्यादा से ज़्यादा पैसा कमाने के लालच में लोग एक दूसरे से झूठ बोलने, एक दूसरे को ठगने व धोखा देने लगे थे और चोरी भी करने लगे थे। पुराने समय में जन के लोग एक दूसरे की मदद करते थे। एक दूसरे पर **भरोसा** करते थे और एक साथ मिल कर गुज़ारा करते थे। ऐसी बातें अब खत्म हो चलीं थीं।

उन दिनों लोगों का जीवन कैसा था, लोग क्या चाहते थे, क्या-क्या सोचते थे - ये जानने के लिये हम उन दिनों की कुछ कहानियां पढ़ेंगे।

<u>कहानी - रंगू का सिक्का</u>

कोसल महाजनपद की राजधानी श्रावस्ती के एक कोने में एक छोटी सी झोपड़ी थी। इसमें रंगू और बासंती साथ रहते थे। रंगू पानी भरने का काम करने वाला **भिश्ती** था। वह रोज कुएं से पानी भर कर बाजार की दुकानों में पानी देता था।

बाज़ार में आये प्यासे लोगों को पानी पिलाता था। बासंती फूल मालायें बना कर अमीरों के घरों में बेच आती थी। रंगू और बासंती बहुत ग़रीब थे। वे रोज़ पेट भर खा भी नहीं पाते थे।

एक बार रंगू को सड़क पर चांदी का एक सिक्का पड़ा मिला था। उसने उस सिक्के को बचा कर रखा था। बस यही उसका धन था!

अनाथपिंडिक का कारवां

एक दिन रंगू बाज़ार में दुकानों पर रखे मटकों में पानी भर रहा था। देखते-देखते दस-पंद्रह बैलगाड़ियां और पांच-छः ऊंट बाज़ार में आ कर रुके। गाड़ी और जानवर सामान से लदे हुए थे। पूरे बाज़ार में हलचल मच गई कि 'सेठ अनाथपिंडिक का कारवां आ गया है।'

अनाथपिंडिक श्रावस्ती नगर के बड़े व्यापारियों में से था। कई सारे मज़दूर और हम्माल उसकी गाड़ियों से सामान उतारने लगे। गाड़ीवान सफर का थकान दूर करने एक ओर बैठ गए।

रंगू ने गाड़ी हांकने वालों को पानी पिलाया। फिर वह उनके साथ एक पेड़ के नीचे बैठ कर बातें करने लगा। एक **गाड़ीवान** यात्रा की कहानियां सुनाने लगा। उसने बताया कि कैसे वे तक्षशिला से चले थे और कई नगरों से होते हुये श्रावस्ती आये हैं। यह भी बताया कि सेठ ने क्या-क्या खरीदा और क्या-क्या बेचा है।

रंगू ने पूछा, "क्या तुमने भी उन शहरों से कुछ खरीदा है?" गाड़ीवान की आंखें चमक उठीं। वह बोला, "हां यह ज़री का कपड़ा खरीदा है। हमारे दानी सेठ ने कुछ पैसे दिये थे। सो

हस्तिनापुर के बाज़ार में यह कपड़ा खरीदा है। कैसा लगा?" रंगू बोला, "बहुत अच्छा! तुम्हारा भाग्य अच्छा है जो अनाथपिंडिक जैसा मालिक मिला।"

गाड़ीवान ने जवाब दिया, "अभी तो सेठ का स्वभाव अच्छा ही लग रहा है। पर क्या भरोसा। कहीं काली की मालकिन जैसा न निकले।" तब गाड़ीवान ने रंगू को काली की मालकिन की कहानी सुनाई।

मालकिन की परीक्षा

श्रावस्ती शहर में ही विदेहिका नाम की एक अमीर औरत रहती थी। वह सबसे अच्छा **व्यवहार**करती थी। लोगों का कहना था कि वह कभी किसी से गुस्सा नहीं होती थी। सब दूर उसके अच्छे व्यवहार की प्रशंसा होती थी।

विदेहिका के घर में काली नाम की एक दासी काम करती थी। वह खाना बनाती थी, बर्तन मांजती थी, कपड़े धोती थी, झाड़ू-पोंछा लगाती थी और घर के अन्य काम बहुत लगन से करती थी। उसने कभी भी अपनी मालकिन को किसी शिकायत का मौका नहीं दिया।

काली एक दिन सोचने लगी, 'क्या मालकिन सचमुच इतनी अच्छी औरत है? मैं उसका सब काम कर देती हूं और खूब सेवा करती हूं। शायद इसलिए उसे गुस्सा होने की ज़रूरत नहीं पड़ती।' उसने अपनी मालकिन की परीक्षा लेने की सोची।

एक दिन वह देर से सो कर उठी। उसकी मालकिन ने नाराज़ हो कर उसे देखा और देर से उठने का कारण पूछा। अगले दिन भी काली देर से उठी। उसकी मालकिन को गुस्सा आया और उसने काली को खूब डांटा।

पर, काली उसकी और परीक्षा लेना चाहती थी। अतः वह तीसरे दिन फिर देर से उठी। उसकी मालकिन को उस दिन इतना गुस्सा आया कि एक लोहे की छड़ से काली के सिर पर मार दिया। काली के सिर से खून बहने लगा। वह समझ गई कि उसकी मालकिन वास्तव में शांत **सुशील** और सरल स्वभाव की नहीं है। जब तक काली सारे काम नियम से करती रही तो मालकिन शांत थी। जब वह देर से उठने लगी तो वह गुस्से में आ कर मारने लगी।

कहानी सुनकर रंगू ने गाड़ीवान से कहा, "सही कहते हो भैया। सेठ, गृहपति, जैसे बड़े लोग दास-कर्मकारों को कुछ समझते ही नहीं हैं।"

रंगू क्या काम करता था?

गाड़ीवान ने क्या खरीदा था? उसे पैसे कैसे मिले थे?

गाड़ीवान ने रंगू को 'मालकिन की परीक्षा' कहानी क्यों सुनाई?

अगर मालकिन के घर पर काम करने के लिए कोई दासी नहीं होती तो क्या वह सबसे अच्छा व्यवहार करती?

नक्शा देख कर बताओ कि सेठ अनाथपिंडिक का कारवां तक्षशिला से किन-किन शहरों से होते हुए श्रावस्ती पहुंचा होगा?

बाज़ार में रंगू

गाड़ीवान के पास ज़री का कपड़ा देख कर रंगू की बहुत इच्छा हुई कि वह भी बासंती के लिए कुछ खरीदे। मगर उसके पास पैसे कहां थे? फिर उसे अचानक याद आया कि उसके पास एक सिक्का रखा है। वह बहुत खुश हो गया। वह तेजी से दौड़ता हुआ गया और घर से सिक्का निकाल लाया। सिक्के को लेकर वह बाज़ार गया।

घूमते-घूमते उसे एक सुनार की दुकान नज़र आई। उसने सोचा शायद एक छोटी सी अंगूठी मिल जाएगी। सुनार के पास सुन्दर-सुन्दर गहने थे। मगर सुनार की सब चीज़ें महंगी थीं। रंगू को अपनी मूर्खता पर **झेंप** आई। सिर नीचा किए वह दुकान से निकल आया।

वह चाहता था कि बासंती के लिए ज़री का कपड़ा खरीदे। वह एक कपड़ा व्यापारी के पास गया। उसके पास बहुत सारे कीमती कप[ड़े] व्यापारी ने बताया, "यह जरी का कपड़ा [...] नगर से आया है। इसकी कीमत है - पांच सि[...] यह रंगीन सूती कपड़ा उज्जयिनी से आय[ा] इसकी कीमत है दो सिक्के।" रंगू के पास तो एक सिक्का था। वह दुखी हो कर वह[ां] निकलने लगा।

कपड़े की दुकान पर एक नौकर काम [कर] रहा था। रंगू का उतरा हुआ मुंह देख कर उससे बातें करने लगा। रंगू ने उसस कहा [...] भैया कुछ तरीका तो बताओ कि थोड़े पैसे [...] सकूं।" दुकान के नौकर ने हंस कर [...] "आजकल लोग कैसे पैसा कमा रहे हैं, लो सु[नो]" फिर उसने यह कहानी सुनाई।

कुटिल व्यापारी

काशी महाजनपद में दो व्यापारी रहते [...] एक गांव में रहता था और एक नगर में [...] था। दोनों की आपस में अच्छी दोस्ती थी।

एक बार गांव वाले व्यापारी ने हल[...] 500 लोहे के फाल नगर वाले व्यापारी के [...] रखवा दिए और वह खुद व्यापार के काम [...] दूसरी जगह चला गया।

शहर वाले व्यापारी ने हल के फालों को [...] दिया और पैसे अपने पास रख लिए। फाल [...] रखे थे वहां उसने चूहों की मेंगनें फैला [...]

समय बीतने पर गांव वाले व्यापारी [...] आकर कहा, "मेरे फाल दे दो।" कुटिल व्याप[ारी] ने चूहे की मेंगनें दिखा कर कहा, "तेरे फ[ालों] को चूहे खा गए।"

दूसरा समझ गया कि कुटिल व्यापारी उसे धोखा दे रहा है। उसने कहा, "अच्छा खा गए सो खा गए, चूहों के खा लेने पर क्या किया जा सकता है?" ऐसा कह वह नहाने को चला और कुटिल व्यापारी के बेटे को अपने साथ ले गया। वह एक दूसरे मित्र के यहां गया और लड़के को वहां बिठा कर अपने मित्र से बोला, "इसे कहीं जाने नहीं देना।" फिर, वह नदी पर नहाया और कुटिल व्यापारी के घर पहुंचा। कुटिल व्यापारी ने पूछा, "मेरा बेटा कहां है?"

वह बोला, "मैं तेरे बेटे को नदी किनारे बैठा कर डुबकी लगा रहा था। एक चिड़िया आई और तेरे पुत्र को पंजों में ले आकाश में उड़ गई। मैने हाथ पीटे, चिल्लाया, बहुत कोशिश की लेकिन तब भी उसे न छुड़ा सका।"

कुटिल व्यापारी गुस्से में बोला, "तू झूठ बोलता है। चिड़िया बच्चों को ले कर नहीं जा सकती।"

"अरे दोस्त, चिड़िया तो बच्चों को ले कर आकाश में नहीं उड़ सकती तो क्या चूहे लोहे की फाल खा सकते हैं?" व्यापारी ने कहा।

तब कुटिल व्यापारी की अक्ल ठिकाने लगी और उसने पांच सौ लोहे के फाल के पैसे दूसरे व्यापारी को लौटाए। फिर दूसरे व्यापारी ने उसका बेटा उसे लौटाया।

रंगू बासन्ती के लिए कोई अच्छी चीज़ खरीदना चाहता था, इसके लिए उसके पास पैसे कहां से आये?

रंगू ने क्या-क्या खरीदने की कोशिश की और वह खरीद क्यों नहीं पाया?

व्यापारी ने अपने दोस्त के साथ क्या चालाकी की?

दोस्त ने चालाक व्यापारी से अपने पैसे कैसे वसूल किए?

कुटिल व्यापारी की कहानी रंगू को किसने सुनाई और क्यों?

रंगू ने कटोरा खरीदा

कुटिल व्यापारी की कहानी सुन कर रंगू को हंसी आई। उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह फिर बाज़ार में घूमने लगा। उसने सोचा दूर के नगरों से आई चीजें तो महंगी होंगीं ही। चलो श्रावस्ती के कारीगरों से ही कुछ खरीदते हैं। कई जगह घूम कर आखिर में रंगू एक कसेरे के पास पहुंचा। उसकी दुकान में तांबे, पीतल व कांसे के तरह-तरह के बर्तन रखे हुए थे। उसे एक तांबे का कटोरा पसंद आया।

रंगू ने भाव पूछा तो कसेरे ने बताया, "तीन सिक्के में दो कटोरों की जोड़ी मिलेगी।" अब रंगू के पास तो एक ही सिक्का था। रंगू ने कसेरे से बहुत कहा कि वह एक कटोरा एक सिक्के में दे दे। कसेरे ने कहा, "मगर तांबा इतना कीमती है। इसे हम राजगृह से मंगवाते हैं। मैं कीमत कैसे कम करूं?"

काफी देर रंगू उसे भाव कम करने को कहता

रहा। अंत में कसेरे ने कहा, "अच्छा तुम एक काम करो। अभी कुछ देर में सेठ अनाथपिंडिक यहां बर्तन खरीदने आने वाले हैं।

"तुम इन बर्तनों को साफ करके रख दो। फिर मैं तुम्हें कटोरा एक सिक्के में ज़रूर दे दूंगा।"

रंगू ने बड़ी मेहनत से बर्तन साफ करके रखे। तभी सेठ अनाथपिंडिक घोड़े पर चढ़ कर वहां आ पहुंचा। कसेरे ने उसे माल दिखाया। फिर अनाथपिंडिक ने अपनी पोथी निकाल कर हिसाब-किताब देखा। वह कसेरे से बोला, "आपको मैं आधी रकम पहले ही दे चुका हूं। बाकी की रकम यह लीजिए।" यह कह कर सेठ ने कसेरे को चांदी के सिक्के दिए।

इतमें में बैलगाड़ी आई और रंगू ने टोकरियों में बांधकर बर्तन गाड़ी में लाद दिये। फिर रंगू ने अपना एक सिक्का कसेरे को दिया और तांबे का कटोरा लेकर खुशी-खुशी घर चला।

वाक्य पूरे करो -

कसेरे ने रंगू को एक सिक्के में कटोरा नहीं बेचा क्योंकि ———।

रंगू को कटोरा खरीदने के लिए ——— करना पड़ा।

पोथी में सेठ ने ——— रखा था।

रंगू और बासंती के सवाल

रंगू ने घर पहुंच कर बासन्ती को तांबे का कटोरा दिया। वह बहुत खुश हुई। पर, रंगू विचारों में डूबा हुआ था। बासन्ती ने उसके सोचने का कारण पूछा। रंगू ने बताया, "सबने कोई न कोई रास्ता निकाला है। मुझे क्या करना चाहिये?"

बासन्ती ने पूछा, "कैसा रास्ता?" रंगू ने कहा, "कुटिल व्यापारी ने पैसा कमाने के लिए दोस्त को धोखा दिया और झूठ बोला, क्या वैसा मैं करूं? गाड़ीवान ने अपने मालिक की दया पर भरोसा किया - पर काली ने परीक्षा लेकर दिखा दिया कि मालिक पर भरोसा नहीं कर सकते।"

बासन्ती ने कहा, "हां, और अपने पास भूले-भटके मिला एक सिक्का था, सो खर्च कर दिया। क्या हम इसी तरह भाग्य पर भरोसा करें? क्या दुख दूर करने का और भी कोई रास्ता है?"

यह कहकर बासन्ती भी सोच में डूब गई। थोड़ी देर बाद वह बोली, "आज मैं जिस वन में फूल चुनने गई थी वहां कई परिव्राजक ठहरे हुए हैं। वे इसी तरह की बातों पर चर्चा कर रहे थे। उन्हें सुनने शहर के बहुत लोग जमा थे। क्या हम भी जा कर सुनें?"

रंगू चहक कर बोला, "हां, चल चलते हैं।"

* * * * * * *

अभ्यास के प्रश्न

1. मानचित्र 6 देख कर बताओ कि महाजनपदों के समय बसे हुए कौन से महानगर आज भी हैं? आज उन शहरों में महाजनपद के समय की क्या चीज़ें बची हुई मिल सकती हैं?
2. गृहपति जो अनाज बेचते थे वह शहरों में किस-किस के काम आता था?
3. सरमा के पिता की कहानी तुमने पशुपालक आर्य पाठ में पढ़ी थी। सरमा के पिता की स्थिति और श्रावस्ती नगर के रंगू की स्थिति में क्या-क्या फर्क दिख रहे हैं? तुलना करके समझाओ।
4. यहां बहुत सी बातें लिखी हैं। और नीचे तीन खाने बने हैं। कौन सी बात किस समय में थी, छांट कर भरो -

पशुपालक आर्य	छोटे जनपद	महाजनपद

खेती, मंत्री, गाय के लिए युद्ध, सेना, गांव, शहर, राजन्य, सिक्के, बलि, व्यापारी, जनपद, लिखाई, चारे की तलाश में घूमना, बलि का कानून, कई कारीगर, गणसंघ, वेद ।

5. क) यहां कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से दो बातें छांटो जो रंगू की कहानी की मुख्य बातें हैं-

● रंगू पानी भरने का काम करता था। ● रंगू ने ग़ाड़ीवान से बातें कीं। ● रंगू गरीब था। ● बाज़ार की चीज़ें इतनी मंहगी थीं कि रंगू कुछ नहीं खरीद पाया। ● रंगू ने कसेरे के यहां बर्तन साफ किए।

ख) यहां महाजनपद के नगरों की दो मुख्य बातें लिखी हुई हैं। तुम ऐसी दो-तीन और मुख्य बातें लिखो -

- नगरों में बड़े बाज़ार थे जिनमें कई चीज़ों की दुकानें थीं।
- नगरों में सिक्कों से व्यापार होता था।
-
-
-

6. आज के नगरों की कौन सी समस्याएं तुम्हें महाजनपदों के महानगरों में मिलीं?

7. क) महाजनपद के समय का एक चित्र पृष्ठ 70 पर है। इस चित्र का वेणन पूरा करते हुए 6-7 वाक्य लिखो – *'चित्र में एक बहुत बड़ा महल और दूसरी बड़ी इमारतें दिख रही हैं। महल की दीवारें ऊंची हैं और उनमें* ....

   ख) इस चित्र और पृष्ठ 74 के चित्र में क्या समानता और क्या अंतर हैं ?

8. तुमने सिंधु घाटी के शहरों के बारे में पढ़ा था। उन शहरों और महाजनपद के महानगरों में क्या समानताएं दिखीं और क्या अंतर दिखे? इन बातों की तुलना करो -

	सिंधु घाटी के शहर	महाजनपद के महानगर
क. शहर किन नदियों के किनारे बसे थे		
ख. शहरों में किन-किन चीज़ों का व्यापार होता था		
ग. लिखाई		
घ. व्यापार में सिक्कों का उपयोग		
ङ. कारीगर		
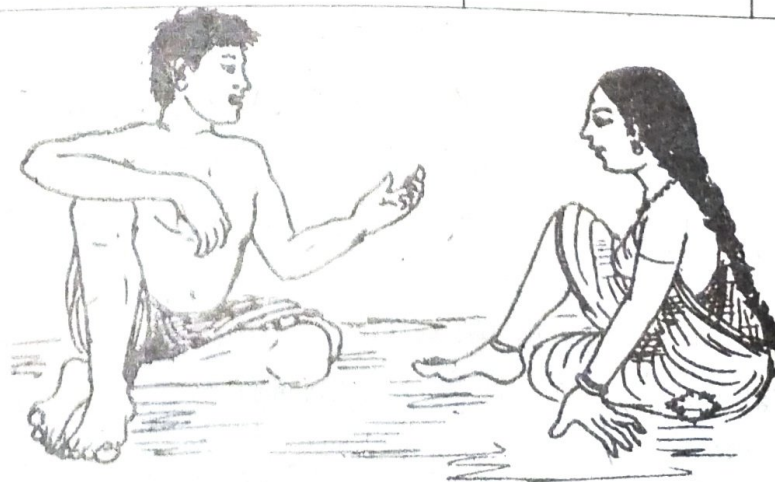
9. नए प्रश्न नए विचार

महाजनपदों का समय एक बहुत ही रोचक समय था। तब बड़े-बड़े बदलाव आ रहे थे और लोगों के मन में तरह-तरह के सवाल उठने लगे थे। इन सवालों के कुछ उदाहरण तो तुमने पिछले पाठों में पढ़े थे। राजा पुरुजित सोच रहा था, "यज्ञ क्यों करना चाहिए?" श्रावस्ती में रंगू बासंती से पूछ रहा था, "दुख कैसे दूर किया जा सकता है?" तुम इस पाठ के उपशीर्षकों को पढ़ो तो पता लगेगा कि और किस-किस तरह के सवाल उन दिनों लोग पूछते थे।
क्या तुम्हारे मन में भी ऐसे प्रश्न उठते हैं? तुम इन प्रश्नों के बारे में क्या सोचते हो – चर्चा करो।

मरने के बाद क्या होता है?

तुम्हारी ही उम्र के नचिकेत नाम के एक बालक की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। शायद तुमने भी सुनी होगी। नचिकेत के मन में सवाल उठा, 'मरने के बाद हमारा क्या होता है?' उसने सोचा कि यमराज तो मृत्यु का देवता है। उसी से पता करना चाहिए। नचिकेत सीधे यमराज के पास गया उन से प्रश्न पूछने! ज्ञान पाने की इच्छा में वह बालक उस भयानक देवता से डरना भी भूल गया! नचिकेत ने यमराज से पूछा, "मरने के बाद हमारा क्या होता है?"

यमराज इस कठिन प्रश्न का उत्तर नहीं समझाना चाहता था। यमराज ने उसके प्रश्न को टालने की लाख कोशिश की। उसे खूब लालच दिया, कि "तुझे सोना दूंगा, चांदी दूंगा, गायें दूंगा। मगर तू ये प्रश्न न पूछ। इसका उत्तर तो देवता भी नहीं जानते हैं।" मगर नचिकेत अड़ा रहा और यमराज से उत्तर जानकर ही छोड़ा। नचिकेत की यह कहानी उन दिनों रचे गये **ग्रंथ** 'कठोपनिषद' में लिखी है।

तुम्हें क्या लगता है, मरने के बाद क्या होता होगा कक्षा में चर्चा करो।

ऐसा क्या है जो कभी नहीं मरेगा?

उन दिनों कई लोग जंगलों में **आश्रम** बनाकर रहते थे। उन आश्रमों में वे तरह-तरह के प्रश्नों पर **चिंतन-मनन** करते थे। वहाँ आने वालों से वे चर्चा
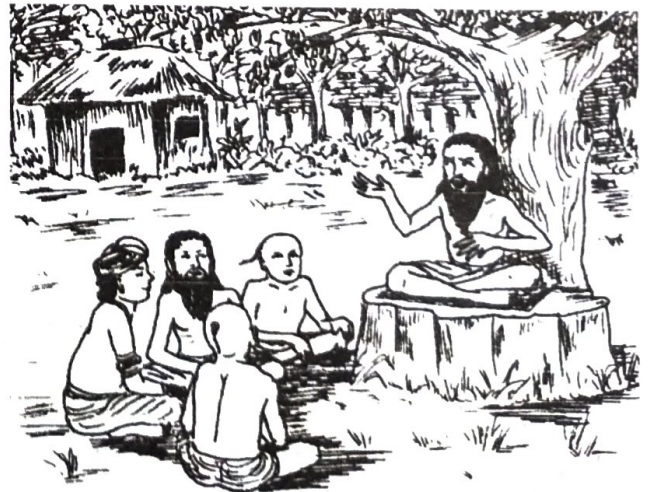
करते थे और अपने विचार दूसरों को सिखाते थे। इस तरह आश्रमों में रहने वाले **ऋषि-मुनि**कहलाते थे। कई राजा भी इस तरह के चिंतन मे आगे थे। इन राजाओं व ऋषियों के विचारों को **उपनिषद्** नाम की पुस्तकों में पढ़ा जा सकता है। याज्ञवल्क्य, आरुणि आदि बहुत जाने माने ऋषि थे।

इन ऋषियों को ऐसी चीज़ की खोज थी जो कभी नहीं मरे और कभी दुखी न हो। उन्होंने ऐसी कभी नष्ट न होने वाली चीज़ को "आत्मा" या "ब्रह्म" कहा। वे यह भी मानते थे कि आत्मा या ब्रह्म को ठीक से जानने पर ही हम अमर हो सकते हैं। आत्मा को जानने के लिए तपस्या करनी ज़रूरी है।

तुमने आत्मा और तपस्या के बारे में क्या-क्या सुना है — बताओ।

परिव्राजक

कुछ और ज्ञान खोजने वाले लोग थे जो एक जगह नहीं रहते थे। वे घर-बार **त्यागकर**गांव-गांव, जंगल-जंगल, शहर-शहर घूमते रहते थे। इन्हें **परिव्राजक**(यानी घूमने वाले) या **भिक्षु** (यानी भीख मांग कर खाने वाले) कहा जाता था। ऐसे परिव्राजकों में वर्धमान महावीर, गौतम बुद्ध, मक्खली गौशाल और अजित केशकंबलिन बहुत प्रसिद्ध हुए।

संसार के झंझट से कैसे छुटकारा पायें? (वर्धमान महावीर)

वर्धमान महावीर एक गणसंघ में जन्मे थे। तीस वर्ष की उम्र में वे अपने घर परिवार को छोड़कर परिव्राजक बन गये। उनके मन में यह प्रश्न था "संसार के जन्म और मरण के झंझट से हम कैसे बच सकते हैं?" कई वर्ष चिंतन और घोर तपस्या के बाद महावीर को अपने प्रश्नों का उत्तर सूझा।

महावीर ने लोगों को यह शिक्षा दी कि हम दूसरे जीवों को जो दुख पहुंचाते हैं, इससे हम पर **पाप** का बोझ होता है। इसलिए जहां तक संभव हो किसी प्रकार के प्राणी को चाहे वह छोटे से छोटा कीड़ा क्यों न हो, दुख नहीं पहुंचाना चाहिये, और हिंसा नहीं करनी चाहिये। अपने पुराने पापों के बोझ को उतारने के लिए हमें अपने शरीर को कष्ट देकर घोर तपस्या करनी चाहिये। इस तरह हम पाप का बोझ हटा सकते हैं और इस संसार से छुटकारा पा सकते हैं।

महावीर हमेशा घूमते रहे और लोगों को अपने विचार समझाते रहे। कई लोग उनकी बातों को मानने लगे। इस प्रकार **जैन मत** की शुरुआत हुई।

दुख क्यों होता है? दुख से छुटकारा कैसे मिलेगा? (गौतम बुद्ध)

गौतम बुद्ध भी महावीर की तरह एक गणसंघ में पैदा हुए थे। उन्होंने पाया कि चारों ओर लोग दुखी हैं और एक दूसरे से लड़ रहे हैं। वे सोचने लगे, "इस दुख से छुटकारा कैसे पा सकते हैं?"

ऐसे प्रश्नों के उत्तर खोजने गौतम भी अपना घर परिवार छोड़कर एक परिव्राजक बन गये। कई वर्ष चिंतन करने के बाद उन्हें अपने सवालों का उत्तर सूझा।

गौतम बुद्ध का कहना था कि बहुत अधिक इच्छा के कारण ही दुख होता है। अगर हम अपनी इच्छाओं को काबू में कर सकते हैं तो दुख से भी

गौतम बुद्ध

छुटकारा पा सकते हैं। इच्छाओं पर काबू पाने के लिए हमें **संयम** से रहना चाहिये और दूसरों को भी दुख नहीं पहुंचाना चाहिए। इस तरह बुद्ध ने जो विचार फैलाया वह **बौद्ध मत** कहलाया।

रिक्त स्थानों को भरो-

——— आश्रम बनाकर रहते थे जबकि ——— घूमते रहते थे।

याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों के विचार ——— नाम की पुस्तकों में लिखे हैं।

वर्धमान महावीर द्वारा चलाया गया मत ——— मत के नाम से प्रसिद्ध है, जबकि गौतम बुद्ध द्वारा चलाया गया मत ——— मत के नाम से जाना जाता है।

नचिकेत किस प्रश्न का उत्तर जानना चाहता था?

ऋषियों को किस चीज़ की खोज थी?

महावीर ने क्यों कहा कि हमें किसी जीव को कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए?

बुद्ध ने दुख से बचने का क्या उपाय बताया?

तुम ने भी कई घूमते रहने वाले साधू महात्माओं को देखा होगा। वे क्या करते हैं और क्या कहते हैं, कक्षा में चर्चा करो।

तुम्हारे घर के लोग ऐसे साधु महात्माओं से क्या पूछते हैं? पता करो।

बुद्ध और महावीर जैसे कई और परिव्राजक हुये जो अपने-अपने मतों का प्रचार करते थे। उन दिनो राजाओं से लेकर मज़दूरों तक सब तरह के लोग इन परिव्राजकों से अपने प्रश्न पूछते थे और चर्चा करते थे। वे क्या पूछते थे और क्या चर्चाएं होती थीं चलो एक कहानी में पढ़ें।

कहानी - कौतूहल शाला

श्रावस्ती नगर के बाहर घने पेड़ों से घिरा एक उपवन था। यहां पेड़ों के नीचे चबूतरे और कमरे बने थे। यह थी श्रावस्ती नगर की "कौतूहल शाला" (यानी लोगों के **कौतूहल** को शांत करने की जगह) यहां तरह-तरह के विचार के लोग - पंडित, ऋषि और भिक्षु आकर अपने विचार सुनाते थे। शहर के लोग आकर उन्हें सुनते थे और उनसे प्रश्न पूछते थे।

क्या यज्ञ करना चाहिये?

एक दिन रंगू और बासंती कौतूहल शाला गये। वहां जगह-जगह चर्चाएं चल रहीं थीं। एक पेड़ के नीचे एक राजकुमार एक ऋषि से पूछ रहा था कि क्या यज्ञ करना चाहिए? ऋषि राजकुमार को समझा रहे थे -

"यज्ञ तो करना चाहिये। उसमें सैकड़ों जानवरों की बलि भी देनी चाहिए। उससे **पुण्य** मिलेगा और तुम स्वर्ग में जाओगे। मगर जब यह पुण्य स्वर्ग में खप जायेगा तो तुम वापस यहीं

जन्म लोगे। यज्ञों से मिले पुण्य खत्म हो जाते हैं।"

राजकुमार, "तो क्या करना चाहिये?"

ऋषि, "उपनिषदों में कहा है कि वे मूर्ख हैं जो यज्ञों को ही सब कुछ मानते हैं। तुम्हें तपस्या करके अपनी आत्मा का ज्ञान पाना चाहिये।"

राजकुमार, "क्या मुझे अपना राजकाज छोड़कर तपस्या करनी चाहिये?"

तब वहां खड़े एक परिव्राजक ज़ोर से बोल उठे, "मैं इस ऋषि की बात नहीं मानता। आत्मा नाम की कोई चीज़ नहीं है। मरने पर हमारा शरीर तो मिट्टी में मिल जाता है। उसके बाद कुछ नहीं बचता है। इसलिए जब तक हम ज़िंदा हैं खूब खा-पीकर सुख से जीना चाहिए। तपस्या और पाप-पुण्य के झंझट में नहीं पड़ना चाहिए।"

रंगू को यह बात बहुत मज़ेदार लगी। बासंती भी सोचने लगी कि हम जब मर जाते हैं उसके बाद क्या सचमुच कुछ बचता है?

ऋषि के विचार में इनमें से कौन-कौन सी बातें सही होंगी।

1. यज्ञ करना चाहिए 2. यज्ञ नहीं करना चाहिए 3. यज्ञ से पुण्य मिलेगा 4. यज्ञ में पशुओं की बलि नहीं होनी चाहिए 5. यज्ञ से मिला पुण्य खत्म हो जायेगा 6. आत्मा का ज्ञान पाना ही सबसे बड़ी बात है

परिव्राजक को इनमें से क्या बातें ठीक लगती ?

1. यज्ञ करने से कोई पुण्य नहीं मिलेगा।

2. आत्मा जैसी कोई चीज़ नहीं है।

3. जब तक जीवित हो सुख से जियो।
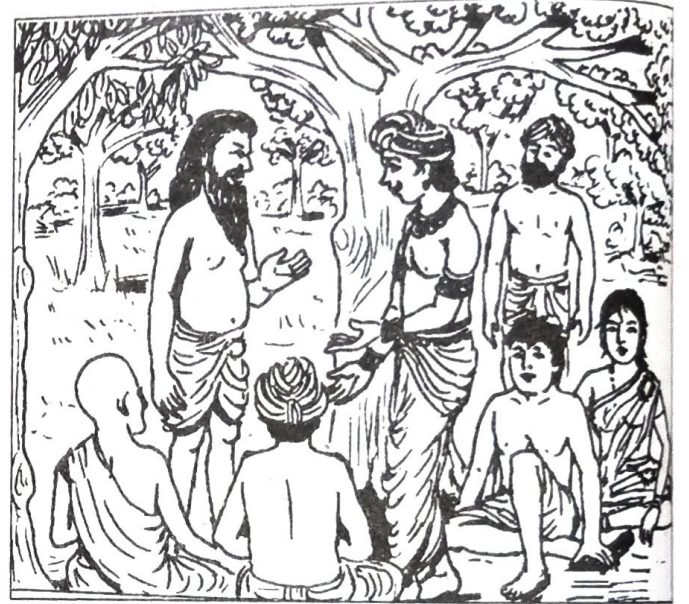
"तपस्या करो - ज्ञान प्राप्त करो"

सच्चा यज्ञ क्या है?

रंगू और बासंती कुछ देर बाद एक दूसरे पेड़ के नीचे पहुंचे। वहां सिर मुंडाये एक भिक्षु बैठे थे। वही राजकुमार उनसे पूछ रहा था–

"हे भिक्षु मैं यज्ञ करना चाहता हूं। कोई कहता है कि यज्ञ करने से पुण्य मिलेगा। कोई और कहता है, पाप पुण्य कुछ नहीं होता। आपका क्या विचार है? क्या यज्ञ करना चाहिये? सच्चा यज्ञ कैसा हो?"

भिक्षु बोले, "हे राजकुमार यज्ञ में सैकड़ों जानवरों को दुख पहुंचाकर उनकी बलि देते हो। किसानों से जानवर और अनाज लेकर उन्हें दुख पहुंचाते हो। दूसरों को दुख पहुंचाने और हिंसा करने से पुण्य कैसे मिलेगा?

"तुम्हारी प्रजा में कितने लोगों के पास काम धंधा नहीं है। कितने लोग भूखे हैं और दुखी हैं। तुम सबसे पहले उन लोगों के लिए काम धंधों

का इंतज़ाम करो। किसी से यज्ञ के लिए ज़बरदस्ती बलि मत लो। जो मिले उसे भी लोगों में बांट दो। बेकारी, ग़रीबी और दुख दूर करना ही सच्चा यज्ञ है राजकुमार! इसी से तुम्हें पुण्य मिलेगा और तुम सुखी होगे।"

रंगू और बासंती को भिक्षु की यह बात अच्छी लगी। बासंती बोली, "अगर सारे राजा ऐसे करें तो कितना अच्छा होगा।"

भिक्षु ने राजा से क्या करने को कहा? और क्या करने को मना किया?

क्या अच्छे काम के फल अच्छे होंगे?

एक और भिक्षु पेड़ के पास खड़ा था। वह राजा से बोला, "अरे तुम्हारे करने या न करने से कुछ फर्क नहीं पड़ता है। जो तुम्हारे भाग्य में है वही होगा। न तुम अच्छे कामों से अपना सुख बढ़ा सकते हो न ही बुरे कामों से तुम्हारा कुछ

बिगड़ेगा। जो होनी में है सो तो होगा ही।"

इस तरह कई अलग-अलग विचार सुनकर राजा कौतूहल शाला से लौट गया।

तुम्हें क्या लगता है – राजा ने कौन सा विचार माना होगा और क्या किया होगा? कक्षा में चर्चा करो।

क्या दूसरे भिक्षु की बात तुम्हें ठीक लगी –

क्या वास्तव में बुरे काम या अच्छे काम से कोई अंतर नहीं पड़ता है? तुम अपने आसपास के उदाहरणों को ध्यान में रखकर चर्चा करो।

क्या जन्म से कोई ऊंचा और कोई नीचा होता है?

रंगू और बासंती अब अपने घर की ओर चल पड़े। कौतूहल शाला में इतनी तरह की बातें सुनकर वे सोच में डूबे हुए थे। घर के रास्ते में उन्हें एक दोस्त मिल गया। उसने बताया कि वह गौतम बुद्ध से मिलने जा रहा है। उसने रंगू और बासंती को भी साथ आने को कहा। "बस यहीं पास में जेतवन में बुद्ध ठहरे हैं। उनकी बातों को सुनकर तुम्हें अच्छा लगेगा।"

रंगू और बासंती जेतवन पहुंचे तो वहां का शांत **वातावरण** उन्हें पसंद आया। एक जगह बुद्ध बैठे थे और उनके चारों तरफ कई लोग बैठे थे। उनमें कई ब्राह्मण भी थे। रंगू और बासंती भी एक ओर बैठ गये।

एक ब्राह्मण युवक बोलने लगा, "हे बुद्ध, मैं श्रावस्ती नगर का आश्वलायन हूं। हे बुद्ध, हमने सुना है कि आप कहते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय,

वैश्य और शूद्र सब जातियां समान हैं। मगर हमारे पूर्वजों ने कहा है कि ब्राह्मण ही सबसे ऊंचे हैं क्योंकि वे भगवान के मुंह से पैदा हुये हैं।"

बुद्ध बोले, "मगर हे आश्वलायन, बच्चे अपनी माँ के पेट से जन्म लेते हैं, चाहे जो भी जाति के हों। तो यह कहना ठीक नहीं होगा कि ब्राह्मण भगवान के मुंह से पैदा हुये हैं।"

आश्वलायन, "हे बुद्ध, हमने सुना है कि आपके **अनुसार** कोई भी जाति के मनुष्य को **मोक्ष** मिल सकता है। ब्राह्मण तो यह मानते हैं कि वे सबसे ऊंचे हैं और उनको ही मोक्ष मिल सकता है। इसके बारे में आपको क्या कहना है?"

बुद्ध, "हे आश्वलायन, अगर कोई ब्राह्मण चोरी करे या हत्या करे, क्या उसे पाप नहीं लगेगा – क्या वह नरक नहीं जायेगा?"

आश्वलायन, "हां हे बुद्ध, चोरी या हत्या करने वाला चाहे वह ब्राह्मण हो या शूद्र वह नरक में ज़रूर जायेगा।"

बुद्ध, "अगर कोई शूद्र, कोई पाप न करे और अच्छे आचरण करे तो क्या वह स्वर्ग नहीं जायेगा?"

आश्वलायन, "हां बुद्ध, अच्छे आचरण करने वाला, चाहे वह किसी भी जाति का हो - स्वर्ग जायेगा।"

बुद्ध, "हे आश्वलायन तो जन्म महत्व का नहीं है। आचरण ही महत्वपूर्ण है। सभी लोग अच्छे आचरण से मोक्ष पा सकते हैं।"

रंगू और बासंती को ये बातें बहुत अच्छी लगीं।

फिर वे जेतवन में और लोगों से भी मिले। कई लोग अपने घर बार छोड़कर बुद्ध के शिष्य बन गये थे। इन्हें बौद्ध भिक्षु कहा जाता था। बौद्ध भिक्षुओं का एक **संगठन** था जो **बौद्ध संघ** कहलाता था। संघ में कोई ऊंचा या नीचा नहीं माना जाता था। हर भिक्षु को, चाहे वह संघ में आने से पहले ब्राह्मण रहा हो या शूद्र, समान अधिकार मिला हुआ था। बौद्ध संघ में औरतें भी थीं – और सब मिलजुल कर सारे काम करते थे।

बुद्ध और आश्वलायन किस बात पर चर्चा कर रहे थे?

वाक्य पूरा करो-

- ***आश्वलायन का कहना था कि ब्राह्मण सबसे ऊंचे हैं क्योंकि -***
- ***बुद्ध का कहना था कि जिसका - —— अच्छा है उसी को - ——— मिलता है।***

अभ्यास के प्रश्न

1. छोटे जनपदों के समय तक यज्ञों को बहुत महत्व दिया जााता था। पर बाद में ऋषि-मुनियों और भिक्षुओं ने किन बातों को ज़्यादा महत्व दिया? सिर्फ पांच वाक्यों में लिखो।
2. वर्धमान महावीर के अनुसार हिंसा करने और दूसरों को दुख पहुंचाने से हम पर क्या असर पड़ता है?
3. क) गौतम बुद्ध के अनुसार हम अपना दुख कैसे कम कर सकते हैं?
   ख) क्या उस समय ऐसे परिव्राजक थे जो तपस्या करने, संयम रखने जैसी बातों को नहीं मानते थे? वे दुख-सुख के बारे में क्या सोचते थे?
4. बुद्ध ने यह बात सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिए कि ब्राह्मण जन्म से सबसे ऊंचे नहीं हैं?
5. यह किसने कहा कि इच्छाओं पर काबू रखने से हम दुख कम कर सकते हैं?
   इस प्रश्न का उत्तर पाठ के किस उपशीर्षक में मिलेगा?
6. इन शब्दों को अपने वाक्यों में उपयोग करो -
   अनुसार , त्याग, कौतूहल, आचरण।

10. राजा अशोक
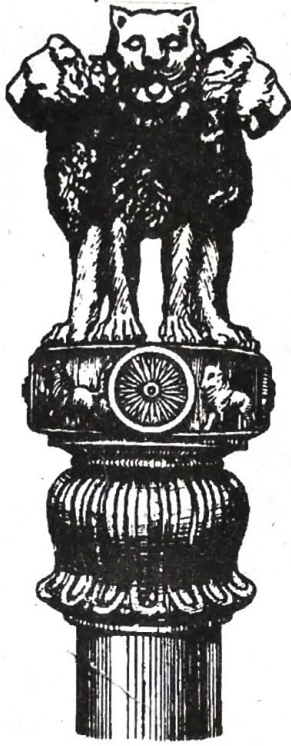
तुम्हारे विचार में एक अच्छे राजा में क्या-क्या गुण होने चाहिये? क्या तुमने किसी अच्छे राजा के बारे में सुना है?

इन दो चित्रों को तुम कई बार देखते हो। क्या तुम बता सकते हो कि ये किस के चित्र हैं, और तुम इन्हें कहां-कहां देखते हो?
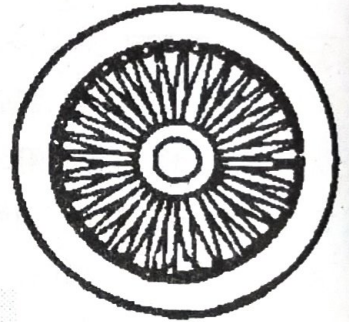
मगध का राजा अशोक

बहुत पुराने समय में, यानी गौतम बुद्ध की मृत्यु के 200 साल बाद एक राजा हुआ था। उसका नाम था अशोक। राजा अशोक मगध राज्य का राजा था और उसकी राजधानी थी पाटलिपुत्र।

राजा अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह कई लंबे, सुन्दर, चमकाये हुये पत्थरों से बने खंभे गढ़वाए। खंभों पर उसने अपने संदेश खुदवाए। खंभों के ऊपरी सिरे पर कहीं बैल, कहीं हाथी तो कहीं सिंह बने थे।

अशोक के कुछ खंभों पर चार सिंहों की मूर्ति थी। सिंहों की मूर्ति के नीचे एक चक्र बना होता था। उसी मूर्ति का चित्र तुम भारत सरकार के नोटों और कागज़ातों पर देखते हो और वही चक्र तुम भारत के **राष्ट्रीय** झंडे के बीचों बीच बना देखते हो।

राजा अशोक की निशानियां आज भी भारत की निशानियां मानी जा रही हैं।

राजा अशोक में ऐसी क्या खास बात होगी कि उसे आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है और याद किया जाता है? दो तीन कारणों का अंदाज़ा लगाकर बताओ।

बहुत बड़ा और शक्तिशाली राज्य

अशोक जब सिंहासन पर बैठा - तब उसका राज्य बहुत लंबा-चौड़ा था। उसके पिता बिन्दुसार ने दक्षिण भारत के कई हिस्सों को जीत लिया था।

उसके दादा चन्द्रगुप्त मौर्य उत्तर और पश्चिम के हिस्सों पर कब्ज़ा कर चुका था।

चंद्रगुप्त मौर्य ने सिकंदर के सेनापति सेल्यूक्स निकेटर को हरा दिया था और इस तरह यूनानी राजाओं की शक्ति को बढ़ने से रोका था।

क्या तुम्हें याद है कि यूनानी लोग भारत की तरफ क्यों आए थे?

अशोक के दादा, चंद्रगुप्त मौर्य को राज्य जीतने और बढ़ाने में चाणक्य नाम के एक चतुर पंडित ने मदद की थी। चाणक्य की मदद से चंद्रगुप्त ने अपने विशाल राज्य में शासन करने का पूरा इंतज़ाम किया था।

इस तरह अशोक को अपने पिता और दादा से बहुत विशाल और शक्तिशाली राज्य मिला था। अशोक ने भी एक बड़ा युद्ध लड़कर पूर्वी हिस्से में पड़ने वाले कलिंग नाम के एक **स्वतंत्र** जनपद को हराया और उसे अपने राज्य में मिला लिया।

तुम मानचित्र 7 में देखो कि आज के भारत के लगभग पूरे भाग पर और उसके बाहर के हिस्सों पर भी अशोक राज्य करता था।

अशोक के राज्य में आज के कौन-कौन से देशों के हिस्से आते थे? आज के भारत के जो इलाके अशोक के राज्य में नहीं थे उन्हें पेंसिल से रंगो।
क्या इससे पहले किसी राजा का राज्य इतना बड़ा था? पिछले पाठों के नक्शे देखकर बताओ।
क्या तुम सोच सकते हो कि बड़ा राज्य होने की क्या कठिनाइयां हैं और क्या-क्या फायदे हैं?

अशोक का राज्य था तो बहुत बड़ा, पर उन दिनों बहुत से इलाकों में जंगल थे। जंगलों में कहीं-कहीं शिकारी **कबीले** रहते थे। और कहीं-कहीं जंगलों में थोड़ी बहुत खेती करने वाले लोगों की बस्तियां थीं।

दूर-दराज़ के इलाकों में राजा के अधिकारी

जहां-जहां गांव व शहरों की घनी बस्तियां थीं वहां-वहां राजा ने अपने अधिकारी और कर्मचारी **नियुक्त** किए थे। वे अपने-अपने इलाके के किसानों, कारीगरों, व्यापारियों से लगान वसूल करते थे। राजा की आज्ञा न मानने वालों को दण्ड देते थे। राजा के खिलाफ **विद्रोह** की बात सोचने वालों की ख़बर राजा तक पहुंचाते थे जो दूर पाटलिपुत्र में रहता था। राज्य के दूर-दूर के हिस्सों में **तैनात** अधिकारियों पर भी राजा नज़र रखता था।

उसके चार राजकुमार राज्य के चार भागों में रहते थे। उत्तर में तक्षशिला, पश्चिम में उज्जयिनी, दक्षिण में सुवर्णगिरी और पूर्व में तोसली नाम के नगरों में राजकुमार रहते थे। इन नगरों को नक्शे में देखो। इन नगरों से राजकुमार आस-पास के इलाकों की देख-रेख करते थे।

अशोक के कुछ बड़े अधिकारी राज्य भर में दौरा करते रहते थे और शासन का काम देखते थे। इन्हें **महामात्र** कहा जाता था।

दौरे पर अधिकारी
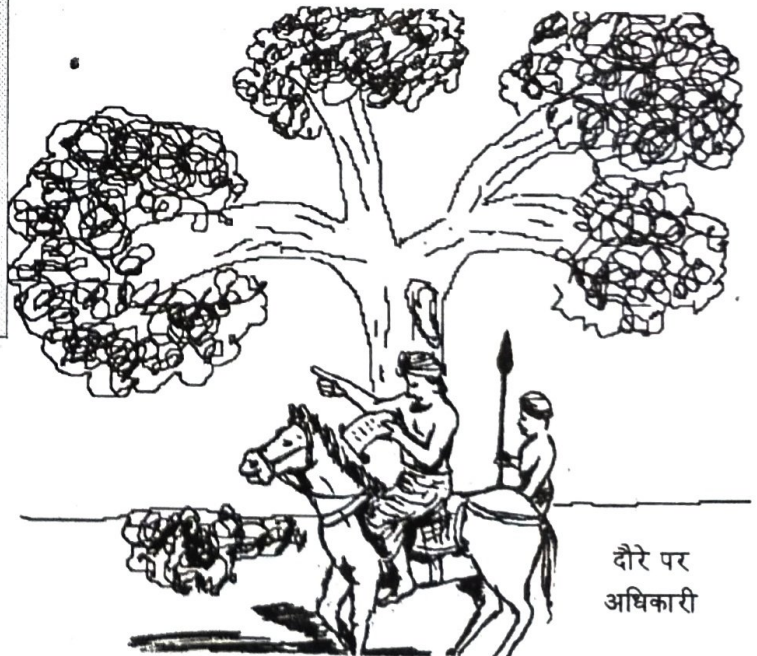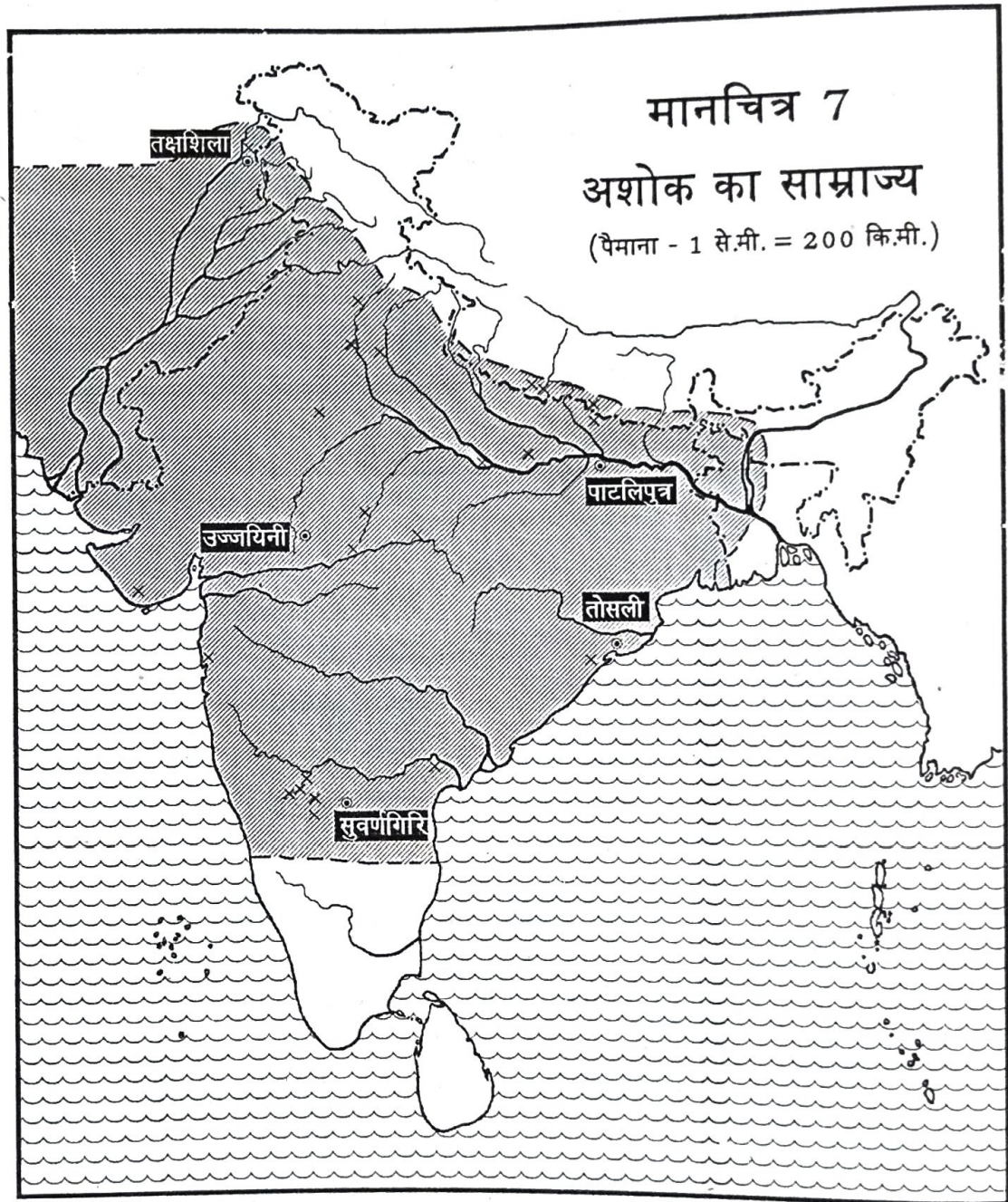
Based upon Survey of India outline map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.

संकेत

भारत की वर्तमान बाह्य सीमा

सागर

शहर

अशोक के शिलालेख मिलने वाली जगह

अशोक का साम्राज्य

> ***एक लंबे चौड़े राज्य को अपने वश में रखने के लिए, अशोक ने क्या क्या किया था? इनमें से कौन सी बातें आज भी की जाती हैं?***

अशोक खुद अक्सर राज्य में दूर-दूर की जगहों का दौरा करता था। अशोक ने अपने राज्य में जगह-जगह चट्टानों पर या खंभों पर वहां के अधिकारियों व लोगों के लिए अपने संदेश भी खुदवाए ताकि लोग उसकी बातों पर ध्यान दे सकें। वह लोगों की बोलचाल की भाषा यानी **प्राकृत** भाषा में ये संदेश खुदवाता था। चट्टानों व खंभों पर खुदे उसके संदेशों से हम आज अशोक के समय की कई बातें जान सकते हैं।

अशोक का राज्य शक्तिशाली था। एक लंबे-चौड़े राज्य के लाखों लोगों से लगान वसूल की जाती थी। सैकड़ों छोटे-बड़े अधिकारियों, कर्मचारियों, सैनिकों और सेनापतियों को वेतन देकर सेवा में रखा जाता था। राजा का हुकुम सबसे ऊपर था।

कर्णाटका राज्य में मिला अशोक का शिलालेख

पर, ये वो बातें नहीं हैं जिनके लिए मगध का राजा अशोक आज भी याद किया जाता है।

वह याद किया जाता है क्योंकि उसने राज्य की शक्ति के अलावा लोगों की भलाई की बात सोची, शान्ति और दया की बात सोची।

एक आखिरी लड़ाई

अशोक ने एक ऐसा फैसला किया जो आमतौर पर कोई राजा नहीं करता। उसने कलिंग जनपद को युद्ध में हराने के बाद तय किया कि वह भविष्य में जहां तक हो सके और कोई युद्ध नहीं लड़ेगा।

कलिंग जनपद के युद्ध में अशोक ने जो खून खराबा और तकलीफ़ देखी थी उससे वह बहुत दुखी हुआ था।

अशोक ने युद्ध की तबाही पर बहुत विचार किया। शत्रु को खत्म करके उसका राज्य जीतने पर राजा खुश होते हैं और गर्व करते हैं। पर अशोक का मन दुख और शर्म से भर उठा था। उसने सोचा कि युद्ध से लोगों को दुख पहुंचता है इसलिए वह युद्ध छोड़कर

ऐसे काम करेगा जिससे लोगों की भलाई हो। उसने अपने विचार एक संदेश के रूप में चट्टानों पर खुदवाए -

"राजा बनने के आठ साल बाद मैंने कलिंग को जीता।

"1,50,000 लोगों को देश-निकाला दिया गया और 1,00,000 से भी ज़्यादा लोग मारे गये।

"इससे मुझे बहुत दुख हुआ। यह क्यों? जब एक आज़ाद जनपद हराया जाता है वहां लाखों लोग मारे जाते हैं: और बंदी बनाकर अपने जनपद से बाहर निकाल दिए जाते हैं। वहां रहने वाले ब्राह्मण-भिक्षु मारे जाते हैं।

*"ऐसे किसान जो अपने बंधु-मित्रों, दास और मज़दूरों से **नम्रतापूर्ण** बर्ताव करते हैं – ऐसे लोग युद्ध में मारे जाते हैं और अपने **प्रियजनों** से बिछुड़ जाते हैं।*

"इस तरह हर किस्म के लोगों पर युद्ध का बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मैं बहुत दुखी हूं। इस युद्ध के बाद मैंने मन लगाकर धर्म का पालन किया है और दूसरों को यही सिखाया है।

"मैं मानता हूं कि धर्म से जीतना युद्ध से जीतने से बेहतर है। मैं यह बातें खुदवा रहा हूं ताकि मेरे पुत्र और पोते भी युद्ध करने की बात न सोचें और धर्म फैलाने की बात सोचें।

कलिंग विजय के बाद अशोक के मन में क्या भाव उठे?

उन दिनों और कौन लोग अहिंसा और दया के विचारों को फैला रहे थे?

अगर अशोक का राज्य ताकतवर दुश्मनों से घिरा होता – तब भी क्या अशोक युद्ध न करने का फैसला करता?

तुम्हारे विचार में अशोक की नीति की क्या अच्छाइयां हैं?

अशोक का धम्म

आओ जानें की युद्ध छोड़कर अशोक कौन सा धर्म फैलाने की बात कर रहा था? अशोक जो धर्म फैलाना चाहता था उसमें किसी भगवान या महात्मा या पूजा पाठ या यज्ञ आदि की बातें नहीं थीं।

अशोक सोचने लगा था कि उसकी प्रजा उसके बच्चों के समान है। पिता अपने बच्चों को अच्छी बातें सिखाता है और उनकी भलाई की कोशिश करता है। वैसे ही राजा को भी अपनी प्रजा को सही व्यवहार की बातें सिखानी चाहिए और उनकी भलाई की कोशिश करनी चाहिए।

अशोक देखता था कि लोग यज्ञों में पशुओं की बलि से दुखी हैं, मज़दूरों और दासों को भूख और तंगी के अलावा मालिकों की मारपीट, डांट भी सहनी पड़ती है। उसने देखा कि धर्म के बारे में अलग-अलग विचार हैं और इनको लेकर बहुत झगड़े, बहस और मनमुटाव होते हैं। समाज में लोग एक दूसरे से झूठ बोलते हैं, धोखा देते हैं, और धन

की छीना-झपटी में लगे हैं।

अशोक ने जब इन बातों पर विचार किया तो उसे लगा कि एक राजा का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी प्रजा को जीवन के बारे में सही राह दिखाए। उसने इस काम के लिए अलग से अधिकारी रखे जिन्हें **धम्म-महामात्र** कहा गया। उनका काम था कि वे गांव-गांव नगर-नगर जाकर लोगों को सही **व्यवहार** की बातें बताएं। उसने कई खंभों और चट्टानों पर अपने संदेश खुदवाए।

आओ अशोक के कुछ संदेश पढ़ें–

बिहार राज्य में बना अशोक का एक स्तंभ

1. "यहां किसी जीव को मारा नहीं जाएगा। और उसकी बलि नहीं चढ़ाई जाएगी। पहले राजा की रसोई में सैकड़ों हज़ारों जानवर रोज़ मांस के लिए मारे जाते थे। पर अब सिर्फ तीन जानवर मारे जाते हैं, दो मोर और एक हिरण। ये तीन जानवर भी भविष्य में नहीं मारे जाएंगें।

*2. "लोग तरह-तरह के **अवसरों** पर तरह-तरह के **संस्कार** करते हैं। जब बीमार पड़ते हैं, जब लड़के-लड़कियों की शादी होती है, जब बच्चे पैदा होते हैं, जब यात्रा पर निकलते हैं आदि। महिलाएं खासकर बहुत से ऐसे बेमतलब के संस्कार करती हैं।*

*ऐसे धार्मिक संस्कारों को करना तो चाहिए पर इनसे मिलने वाला लाभ कम ही है। कुछ संस्कार ऐसे होते हैं जिनसे ज्यादा फल मिलता है। वे क्या हैं? वे हैं, गुलामों और मज़दूरों से नम्रता से व्यवहार करना, बड़ों का आदर करना, जीव-जंतुओं से **संयम** से व्यवहार करना, ब्राह्मणों और भिक्षुओं को दान देना आदि।*
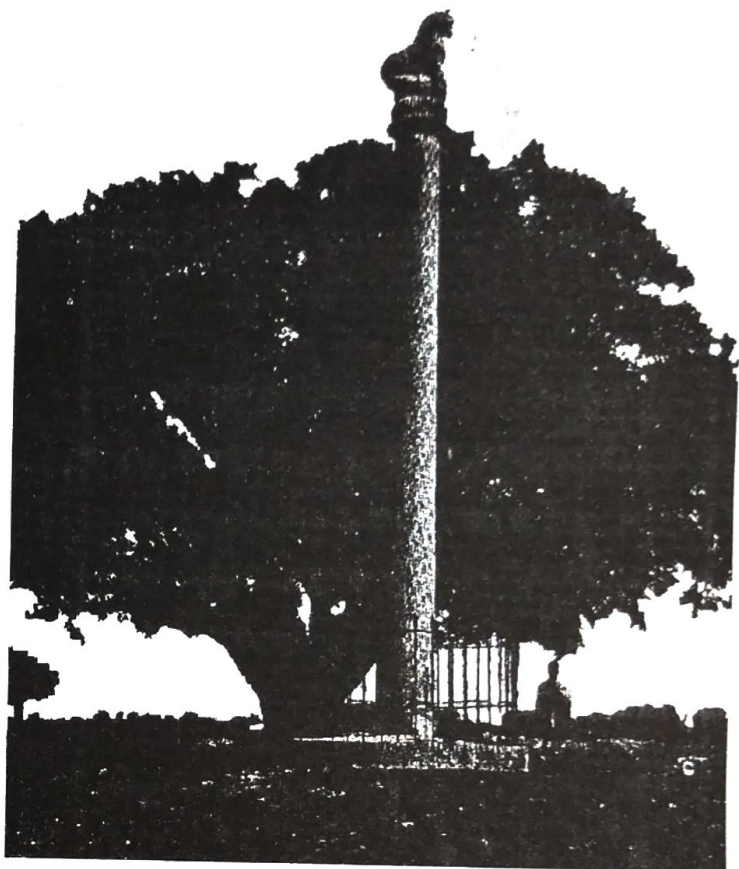
*3. "अपने धर्म के **प्रचार** में संयम से बोलना चाहिए। अपने धर्म के गुणों को बढ़ा-चढ़ा कर कहना या दूसरे धर्मों की बुराई करना दोनों ग़लत हैं। हर तरह से, हर वक्त दूसरे धर्मों का आदर करना चाहिए।*

"अगर कोई अपने धर्म की बढ़ाई करता है और दूसरे धर्मों की बुराई करता है तो असल में वह अपने धर्म को नुकसान पहुंचाता है। इसीलिए एक दूसरे के धर्म की मुख्य बातों को समझना और उनका सम्मान करना चाहिए।

अशोक अपनी प्रजा को क्या-क्या बातें सिखाना चाहता था? चर्चा करो।

अशोक ने अपने संदेशों को अपने अधिकारियों के हाथ दूसरे राजाओं के दरबार में भी पहुंचाया और उनसे दोस्ती की। उसके अधिकारी मिस्र, यूनान और श्रीलंका के राज्यों तक उसके संदेश लेकर गए।

अशोक खुद बौद्ध धर्म को मानने लगा था। उसने बौद्ध संघ और बौद्ध भिक्षुओं के **मठों** की सहायता की। वह बुद्ध के जन्म स्थान भी गया। (लुंबिनी वन नाम की यह जगह आज नेपाल देश में है।) वहां उसने लुंबिनी गांव के लोगों पर से बलि नाम का कर हटा दिया।

बौद्ध धर्म को मानते हुये भी अशोक ने राज्य के सभी धर्मों को दान दिया और सहायता दी। उसने अपनी प्रजा से भी बार-बार यही कहा कि वे सभी धर्मों की बातें सुनें और किसी धर्म का अपमान न करें। उसने लोगों से ब्राह्मणों और भिक्षुओं दोनों को दान देने के लिए कहा।

अशोक लोगों को अच्छी बातें सिखाने के साथ-साथ उनकी भलाई के लिए कई काम करना चाहता था। उसने लोगों की भलाई के लिए कई जगह सड़कें बनवाईं, उनके दोनों तरफ छायादार व फलदार पेड़ लगवाए, हर आधे कोस पर कुंएं बनवाए और यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालाएं बनवाईं। वह अपने राज्य का धन इस तरह लोगों की मदद करने के लिए खर्च करना चाहता था।

अशोक अपने से पहले आने वाले राजाओं से किन बातों में अलग लगता है?

तुम्हें अशोक में ऐसी क्या बातें नज़र आईं जिनके कारण आज भी उसे याद रखा जाना चाहिए?

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. राजा अशोक के ऐसे दो फैसले बताओ जो हिंसा को कम या खत्म करने के लिए किए गए थे।
2. अशोक ने युद्ध छोड़ने के बाद लोगों पर अपना प्रभाव बनाने की किस तरह कोशिश की?
3. क्या युद्ध छोड़ने के बाद अशोक एक कमज़ोर राजा बन गया? अपने विचार समझा कर लिखो।
4. पृष्ठ 68 और पृष्ठ 90 के मानचित्रों की तुलना करते हुए बताओ कि दोनों में बताई बातों में क्या अंतर हैं?
5. शिकारी मानव के समय से लेकर अशोक के समय तक बहुत समय बीता।

   क) इस बीच क्या-क्या हुआ, सही क्रम में जमाओ-

   सिन्धु घाटी के शहर, बुद्ध, खेती की शुरुआत, महाजनपद, अशोक, शिकारी मानव, छोटे जनपद, पशुपालक आर्य।

   ख) इनमें से कौन सा समय सबसे ज़्यादा आज जैसा लगता है और क्यों?

मध्य प्रदेश में अशोक के शिलालेख और खंभे पर लेख

सीहोर जिले में बुदनी से रेहटी जाने की सड़क पर एक गांव है **नपटी तलाई**। इस गांव के पीछे जो पहाड़ और जंगल है उनके बीच एक गुफा है। गुफा की दीवार पर शिकारी मानव के चित्र बने हैं। उसी दीवार पर एक तरफ राजा अशोक का एक संदेश लिखा हुआ है। यह आज भी साफ दिखाई देता है।

इस जंगल भरे इलाके में राजा अशोक का संदेश क्यों और कैसे आया होगा? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि पहाड़ी पर बौद्ध भिक्षुओं के रहने की जगह बनी हुई थी। **स्तूप** भी बने थे। कमरों और स्तूपों के टूटे-फूटे पत्थर और फर्श अभी भी बचे हुए हैं। शायद राजा अशोक का कोई राजकुमार या महामात्र नर्मदा किनारे रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के पास आया था और राजा का संदेश लाया था।
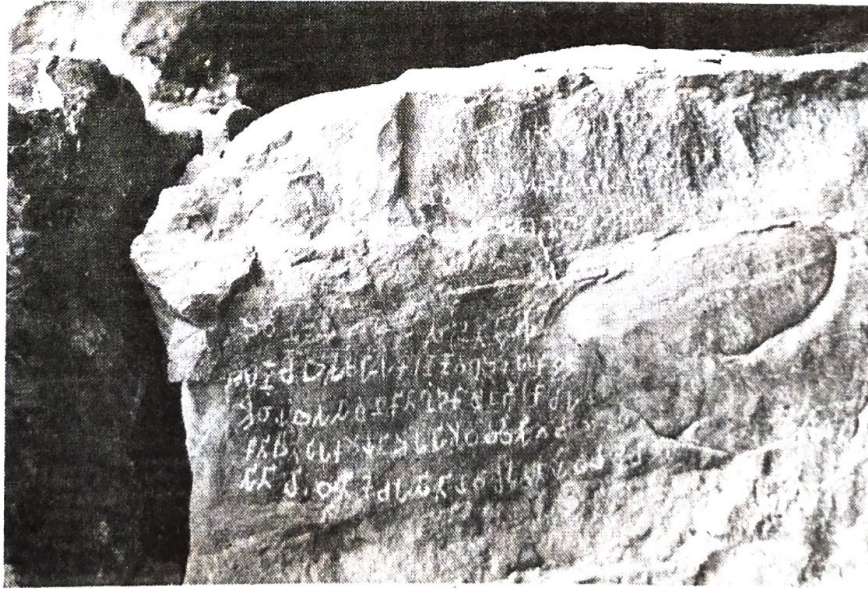
नपटी तलाई का शिलालेख

ऐसा ही एक और शिलालेख जबलपुर के पास **रूपनाथ** नाम के गांव में मिला है। तुमने **सांची** के बारे में ज़रूर सुना होगा। तुम्हें से कईयों ने सांची के प्रसिद्ध स्तूप देखे भी होंगे। इस स्तूप की शुरुआत अशोक के समय में ही हुई थी। यहां पर एक बहुत ही ऊंचे चमकीले खंभे पर अशोक का संदेश खुदा है। इस खंभे पर चार शेरों वाला अशोक चिन्ह रखा हुआ था। यह चिन्ह अब एक संग्रहालय में रखा हुआ है।

12. विदेशों से व्यापार और सम्पर्क

राजा अशोक की मृत्यु के लगभग 50 साल बाद यूनानी राजाओं ने उत्तर-पश्चिम में अपना शास जमाया। ये वो लोग थे जो **यूनान** से सिकन्दर और सेल्युकस के साथ आए थे और **मिस्र, ईरान** औ **अफगानिस्तान** में आकर बस गए थे।

इस बीच दक्षिण भारत में सातवाहन वंश के राजाओं ने अपना अधिकार जमाया। कुछ समय बा पश्चिम भारत पर शक वंश के लोग और उत्तर पश्चिम पर कुषाण वंश के लोगों ने अपना अधिक जमा लिया। कुषाण और शक **मध्य एशिया** और **चीन** से संबंध रखते थे।

इस तरह के राज्य बनने से भारत, यूनान, रोम, मिस्र, ईरान, मध्य-एशिया और चीन के बीच ह लेन-देन चलने लगा। भारत से माल लेकर व्यापारी उन देशों में जाते, वहां की बनी चीज़ें यहां लाते। उ देशों के व्यापारी भी यहां आते थे।

संसार के मानचित्र में इन सब जगहों को ढूंढ लो। ध्यान रखना यूनान के लिए ग्रीस शब्द का प्रयोग होगा और रोम आज इटली नाम के देश की राजधानी है।

सिक्के

यूनानी सिक्के

इस व्यापार के कारण यहां की कई चीज़ों पर विदेशों का भी असर पड़ा। उदाहरण के लिए सिक्के बनाने का नया तरीका।

ये देखो यूनानी और कुषाण राजाओं के सिक्के - किसी पर राजा का चेहरा बना है तो किसी पर राजा की पूरी आकृति बनी है और साथ ही कुछ लिखा भी है। ये सिक्के सोने या चांदी को पिघलाकर और सांचों में ढालकर बनाए जाते थे। इन राजाओं के सिक्कों को देखकर दूसरे राजाओं ने भी सांचे में ढालकर सिक्के बनाने शुरू किए। इससे पहले सिक्के बनाने का तरीका दूसरा था। तुमने महाजनपदों के समय के सिक्कों के चित्र पृष्ठ 71पर देखे हैं।

क्या वे इन सिक्कों से अलग दिखते हैं? वर्णन करो।

महाजनपद के सिक्के चांदी के बनते थे। चांदी की चादर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता था। फिर उन टुकड़ों पर राजा अपना ठप्पा लगवाता था।

कुषाण सिक्का

मूर्तिकला

भारत में मूर्तियां बनाने के ढंग पर भी विदेशी कलाकारों का असर पड़ा। यह देखो मथुरा क्षेत्र में बनी बुद्ध की मूर्ति।

इस समय गन्धार के कलाकार भी बुद्ध की मूर्तियां बनाते थे। यह उनके द्वारा बनाई गई एक मूर्ति देखो।

मथुरा शैली की मूर्ती

गन्धार शैली की मूर्ती

कोई फर्क दिखाई दिया?

मूर्ति के कपड़ों की चुन्नटें कहां के कलाकार ज़्यादा दिखाते थे?

बालों के घुंघरालेपन को कहां के कलाकार ज़्यादा उभारकर बनाते थे?

क्या तुम्हें और भी कोई फर्क दिख रहा है?

यह फर्क कैसे आया? भारत के उत्तर पश्चिम में गन्धार के पास यूनान, रोम और मिस्र के कलाकार आकर बसे थे। इन लोगों ने भारत के लोगों को अपनी मूर्तिकला सिखाई और भारतीय मूर्तिकारों से उनकी कला सीखी। गन्धार के कलाकार वैसी मूर्तियां बनाने लगे जैसी यूनान व रोम के कलाकार बनाते थे।

हफ्ते

आजकल हम महीनों को सप्ताह में बांटते हैं, और सप्ताह को सात दिनों में। हर दिन को सूर्य, चन्द्रमा और ग्रहों के नाम से बुलाते हैं। जैसे-रविवार, सोमवार, मंगलवार, बुधवार ...... पर ऐसा हम हमेशा से नहीं करते आये हैं। यह प्रथा हमने यूनानियों से सीखी। इससे पहले दिन गिनने के और तरीके थे। क्या तुम्हें इन तरीकों के बारे में पता है?

धर्मों का आदान-प्रदान

यह वो समय भी था जब भारत से बौद्ध श्रमण और ब्राह्मण मध्य एशिया और चीन गए और उन्होंने

विचार वहां के लोगों के बीच फैलाये। इसी समय ईसा मसीह का एक शिष्य इसाई धर्म का प्रचार करने रोम के व्यापारियों के साथ दक्षिण भारत आया। उसका नाम संत थॉमस था।

कुल मिलाकर यह ऐसा समय था जब दूर-दूर के देश के लोगों ने एक दूसरे से संपर्क स्थापित किया, व्यापार किया, चीज़ों, विचारों और रीति रिवाज़ों का आदान प्रदान किया।

आयुर्वेद

इन्हीं दिनों बीमारी और **चिकित्सा** का व्यवस्थित अध्ययन किया जाने लगा। लोगों को क्या-क्या बीमारियां होती हैं, अलग-अलग बीमारियों के क्या-क्या लक्षण हैं, उनका क्या इलाज हो सकता है - आदि बातों का अध्ययन करके पुस्तकें लिखी जाने लगीं। चरक नाम के एक महान वैध्य ने 'चरक संहिता' नामक पुस्तक इसी विषय पर लिखा। इस तरह के प्रयासों से **आयुर्वेद** नाम की चिकित्सा का तरीका बना। इसमे बीमारियों से कैसे बचें और स्वस्थ जीवन कैसे बिताएं - इस विषय पर लिखा है।

व्याकरण

भारत के सबसे महान चिंतकों में से पाणिनि एक हैं। पाणिनि ने भाषाओं का बहुत गहराई से अध्ययन किया और एक बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी जिसका नाम है, 'अष्ठाध्यायी'। यह पुस्तक संस्कृत भाषा के व्याकरण पर है - इसमें शब्द कैसे बनते हैं, वाक्य कैसे बनते हैं आदि विषयों पर लिखा है।

अभ्यास के प्रश्न

1. मौर्य वंश के बाद शासन करने वाले वंशों के नाम बताओ।
3. भारत से किस दिशा में जाने पर यूनान व रोम मिलेंगे?
7. विदेशों के असर से भारत में
   क) सिक्के बनाने में क्या फर्क आया? ख) मूर्ति बनाने में क्या फर्क आया? ग) दिन गिनने में क्या फर्क आया?
8. भारत से कौन-कौन लोग दूसरे देशों को जाते थे और क्यों?
9. अलग-अलग समय के सिक्कों की अपनी पहचान होती है। क्या नीचे दिए चित्रों में से जनपदों के सिक्के व कुषाण वंश के सिक्के अलग छाट सकते हो?

10. कौन सी मूर्ति मथुरा के मूर्तिकारों ने बनाई है और कौन सी गन्धार के मूर्तिकारों ने? पहचानो!

नागरिक शास्त्र

1. एक दूसरे पर निर्भर

किशन का अकेलापन

क्या तुम कभी अपने घर पर बिल्कुल अकेले रहे हो? याद करो कैसा लगा था। एक दिन की बात अलग है, पर सोचो क्या कोई कई दिनों तक बिल्कुल अकेला रह सकता है?

चलो एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ते हैं, जो बिल्कुल ही अकेला रहता था। नाम था उसका किशन। वह मिट्टी के बर्तन बनाता था। वह किशनपुर गांव का रहने वाला था। न तो उसके मां-बाप
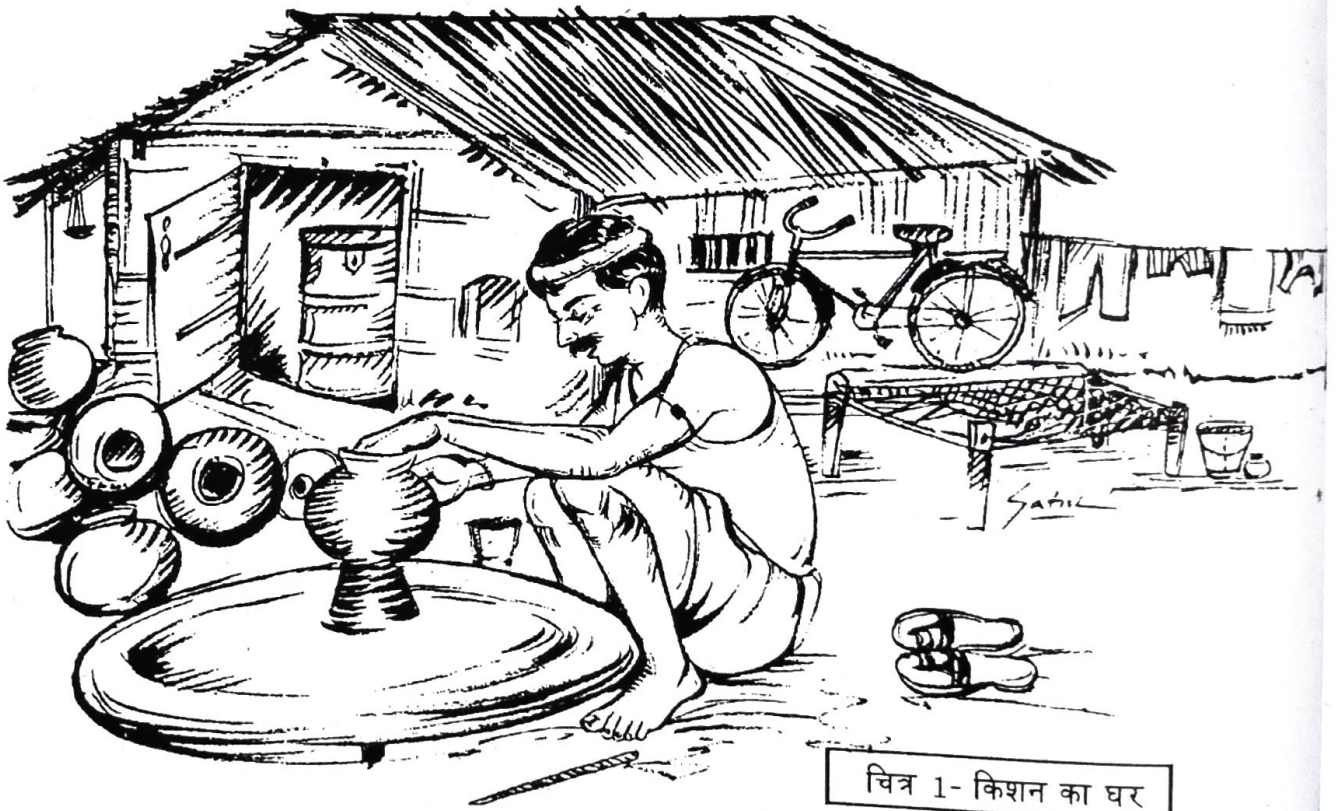
चित्र 1- किशन का घर

थे, न भाई-बहन और न पत्नी-बच्चे। बस, बिल्कुल ही अकेला रहता था और अपना सब काम खुद ही करता था।

सुबह-सुबह उठकर किशन लकड़ी काटने जंगल जाता। लकड़ी लाकर नदी चला जाता। कपड़े धोता, नहाता और पानी भरकर घर ले आता। घर पर चूल्हा जलाकर अपना खाना बनाता। खा-पीकर वह दिन भर अपने काम में लग जाता और मटके बनाता रहता।

बुधवार के दिन वह हाट-बाज़ार में बर्तन बेचने जाता। जो पैसे मिलते, उससे अपनी ज़रूरत की चीज़ें, जैसे अनाज, कपड़ा, मिर्च-मसाला, जूते आदि खरीदकर घर लौटता। भोजन करने के बाद खाट बिछाकर सो जाता। खाट पर पड़े हुए कभी-कभी सोचता, "मैं कितना सुखी हूं, अकेले ही अपना सब काम कर लेता हूं। अपनी ज़रूरतें पूरी कर लेता हूं। मुझे किसी पर **निर्भर** (यानी किसी के सहारे) नहीं रहना पड़ता।"

किशन को क्यों लगता था कि वह दूसरों पर निर्भर नहीं है?

तुम खाना बनाने और पढ़ाई के लिए किस पर निर्भर हो?

एक दिन किशन बीमार पड़ गया। उसे बहुत तेज़ बुखार चढ़ा। अब वह एकदम अकेला महसूस करने लगा। वह सोचने लगा, "कोई साथ होता तो कम से कम मेरी देखभाल करता।" आखिर उसे वैद्य के पास जाना ही पड़ा। वैद्य ने उसे दवा दी। किशन ने वैद्य से कहा "मैं तो सोचा करता था कि मैं कितना सुखी हूं, मुझे किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। पर आज मैं अपने अकेलेपन से परेशान हो गया।"

वैद्य ने जवाब दिया, "तुम अकेले रहते हो, फिर भी तुम कई लोगों पर निर्भर हो।" किशन ने चौंककर पूछा, "यह कैसे हो सकता है? मैं तो अपने सब काम खुद कर लेता हूं।" वैद्य ने पूछा, "तुम जो चीज़ें उपयोग करते हो क्या वे सभी चीज़ें तुम खुद बनाते हो?"

किशन सोच में पड़ गया। वह सोचने लगा, "ऐसी तो कई चीज़ें हैं जो मैं दूसरों से खरीदता हूं। मैं अपनी ज़रूरत की सारी चीज़ें खुद नहीं बनाता हूं।"

पृष्ठ 100 पर किशन के घर का चित्र दिया हुआ है। इस चित्र को ध्यान से देखकर बताओ कि किशन क्या-क्या चीज़ें इस्तेमाल करता है?

चर्चा करो कि ऐसी कौन सी चीज़ें हैं जो किशन खुद नहीं बनाता है? ये चीज़ें किसके द्वारा बनाई या उगाई जाती हैं?

इनमें से दो ऐसे शब्द चुनों जिनका अर्थ निर्भर से मिलता-जुलता है :

मिलकर, सहारा, मेहनत, स्वतंत्र, आसरा।

किशन अकेला रहता है, फिर भी बहुत लोगों पर निर्भर है। ये लोग उसकी ज़रूरत की चीज़ें उगाते या बनाते हैं, जैसे खाने के लिए अनाज, सब्ज़ी, पहनने को कपड़ा आदि। वह वैद्य पर भी निर्भर है जो उसका इलाज करता है।

आपस में चर्चा करके श्यामपट पर सूची बनाओ।

क. ऐसे कामों के उदाहरण दो जिन के लिए तुम दूसरों पर निर्भर हो।

ख. ऐसी चीज़ों के उदाहरण दो जिनके लिए तुम दूसरों पर निर्भर हो।

ग. ऐसे कौन से काम हैं जो तुम खुद करते हो?

घ. क्या ऐसी कोई भी वस्तु है जिसके लिए तुम या तुम्हारा परिवार दूसरों पर निर्भर नहीं है?

गांव-शहर एक दूसरे पर निर्भर

अभी तक तुमने पढ़ा है कि कैसे किशन दूसरे लोगों पर निर्भर है। ठीक इसी तरह हर व्यक्ति दूसरों पर निर्भर रहता है।

लोग गांवों या शहरों में रहते हैं। गांव में रहने वाले लोग शहरों पर निर्भर हैं। उसी तरह शहर में रहने वाले लोग गांवों पर निर्भर हैं।

नीचे के चित्र में दिखाया गया है कि वस्तुएं कहां से कहां जा रही हैं। एक जगह का नाम है कोलीखेड़ा और दूसरी जगह का नाम है खैरतगढ़। चित्र में दिखाया गया है कि कुछ चीज़ें कोलीखेड़ा से खैरतगढ़ पहुंचाई जा रही हैं। उसी तरह खैरतगढ़ से भी कुछ चीज़ें कोलीखेड़ा पहुंचाई जा रही हैं।

चित्र देख कर इन प्रश्नों के उत्तर दो–

(क) ऐसी दो चीज़ों के नाम बताओ जो कोलीखेड़ा से खैरतगढ़ ले जाई जाती हैं?

(ख) ऐसी दो चीज़ों के नाम बताओ जो खैरतगढ़ से कोलीखेड़ा ले जाई जाती हैं?
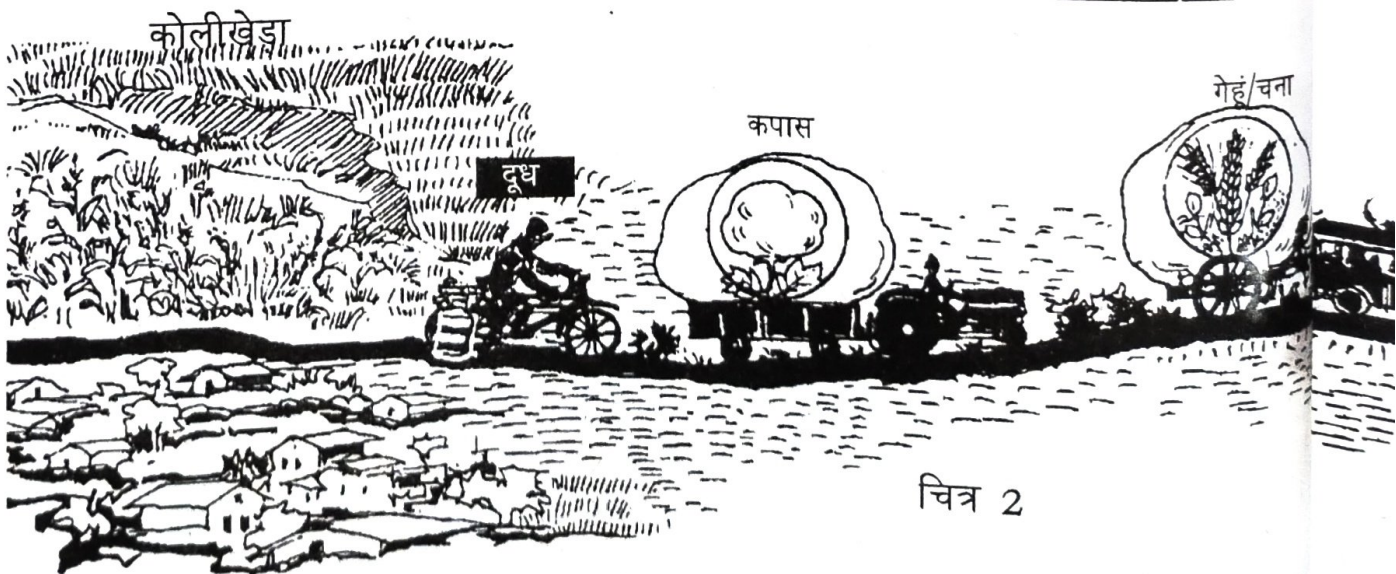
चित्र 2

(ग) सही/गलत बताओः–

1. खैरतगढ़ से गेहूं कोलीखेड़ा जाता है।

2. कोलीखेड़ा से साइकिल खैरतगढ़ ले जाई जाती है।

3. कोलीखेड़ा में कपड़ा खैरतगढ़ से आता है।

4. कोलीखेड़ा से कपास खैरतगढ़ जाता है।

5. खैरतगढ़ चने के लिए कोलीखेड़ा पर निर्भर है।

6. कोलीखेड़ा हल्दी के लिए खैरतगढ़ पर निर्भर है।

7. खैरतगढ़ साइकिल के लिए कोलीखेड़ा पर निर्भर है।

8. कोलीखेड़ा गेहूं के लिए खैरतगढ़ पर निर्भर है।

9. खैरतगढ़ बर्तन के लिए कोलीखेड़ा पर निर्भर है।

तुम कोलीखेड़ा से खैरतगढ़ जाने वाली चीज़ों की सूची देखकर समझ गए होंगे कि कोलीखेड़ा किसी गांव का नाम है। यहां से बाहर जाने वाली चीज़ें खेतों में उगाई जाती हैं। अनाज, कपास, सब्ज़ी जैसी चीज़ें खेतों में होती हैं। उसी तरह खैरतगढ़ से कोलीखेड़ा जाने वाली अधिकतर चीज़ें कारखाने में बनाई गई हैं। इससे अन्दाज़ होता है कि खैरतगढ़ एक शहर है क्योंकि कारखाने ज़्यादातर शहरों में या उनके आसपास लगाए जाते हैं।

खैरतगढ़ और कोलीखेड़ा के बीच संबंध
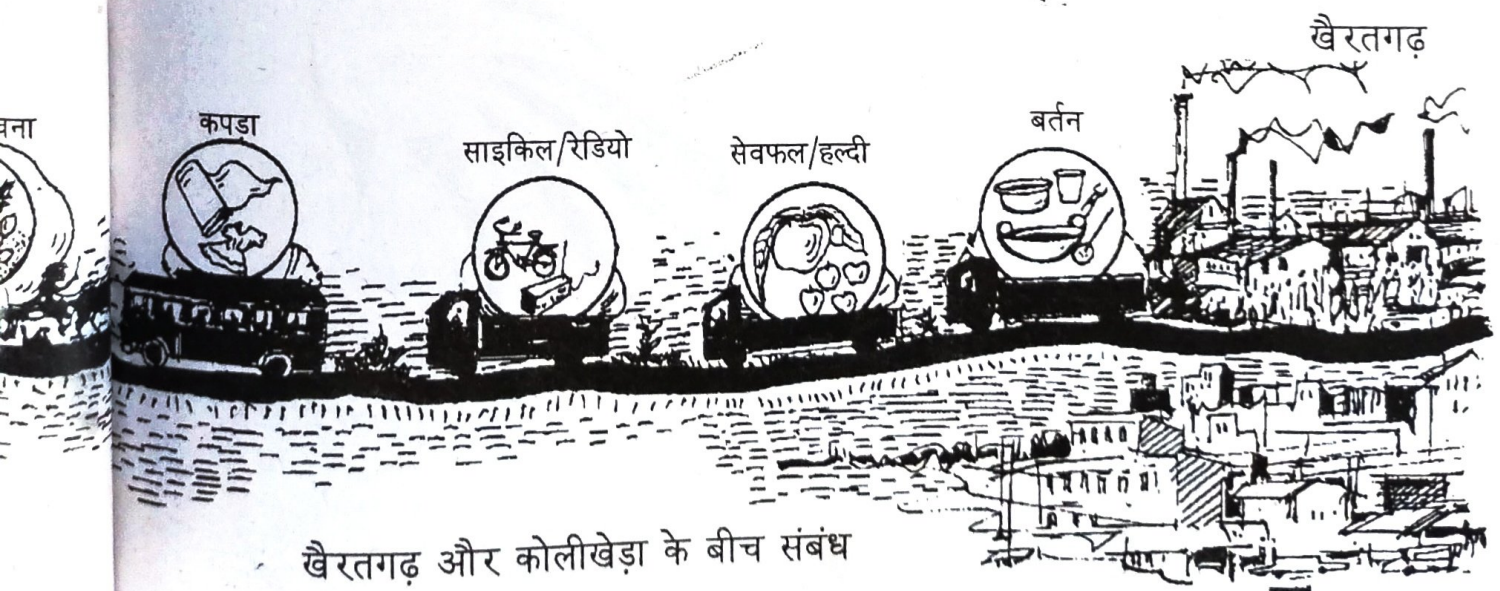
तुम्हारे शहर में गांवों से क्या-क्या बिकने आता है?

तुम्हारे गांव में शहर से क्या-क्या चीज़ें लाई जाती हैं।

एक इलाका अन्य इलाकों पर निर्भर

कोलीखेड़ा और खैरतगढ़ के उदाहरण में तुमने गांव और शहर के बीच संबंध देखा। परन्तु कोलीखेड़ा और खैरतगढ़ में केवल एक गांव और एक शहर का संबंध नहीं है।

तुमने देखा कि कोलीखेड़ा गांव के लोगों के लिए बहुत सी चीज़ें खैरतगढ़ शहर से आती हैं। पर क्या वे सब चीज़ें खैरतगढ़ में बनती हैं?

खैरतगढ़ से जो सामान कोलीखेड़ा जाता है वह सब खैरतगढ़ में नहीं बनाया जाता है। जैसा कि तुम इस चित्र में देख सकते हो, खैरतगढ़ में साइकिल और बर्तन बनाए जाते हैं। इनके अलावा कई दूसरी चीज़ें बाहर से आती हैं।

ये सब चीज़ें अलग-अलग **इलाकों** से खैरतगढ़ पहुंचती हैं। फिर वहां से कोलीखेड़ा व दूसरे गांवों तक ले जाई जाती हैं। इस तरह एक जगह बहुत दूर-दूर के इलाकों से जुड़ जाती है।

चित्र 3. खैरतगढ़ का अन्य इलाकों के साथ संबंध
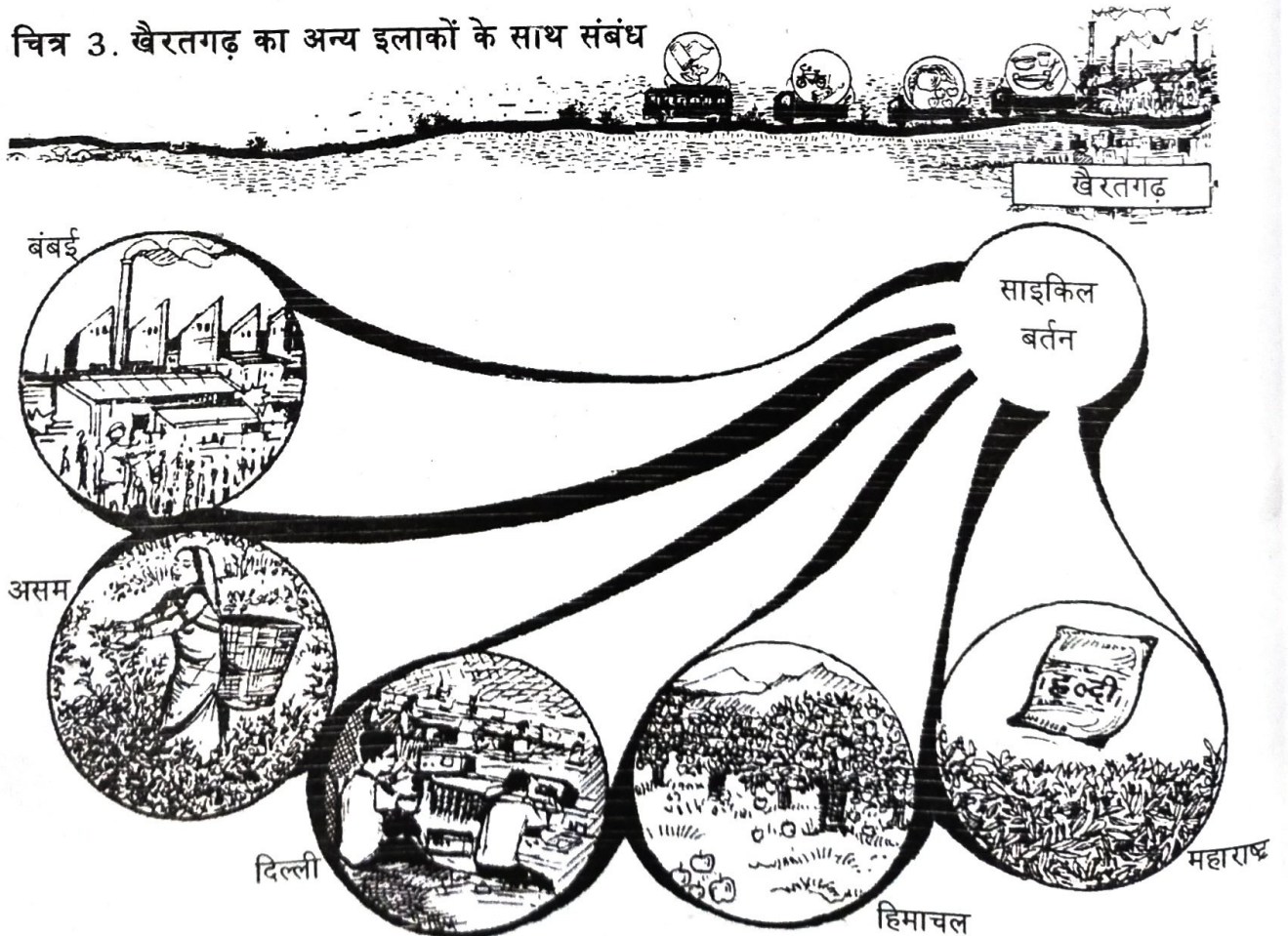
चित्र 3 में देखकर बताओ कि खैरतगढ़ में असम से क्या आता है?

खैरतगढ़ में सेबफल कहां से आता है?

खैरतगढ़ से जो सामान कोलीखेड़ा ले जाया जाता है, वह कहां-कहां से आता है?

एक इलाका दूसरे इलाकों पर निर्भर है, इस बात को तुम अपने गांव या शहर के अनुभव से भी समझ सकते हो।

नीचे कुछ वस्तुओं की सूची दी है। अपने शिक्षक की सहायता से इन प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखो:–

सूची - नारियल, माचिस, मटका, सुपारी, नमक, आलू, थ्रेशर, साइकिल, बीड़ी, तुअर, सीमेन्ट, नींबू, खाद, बिजली, हल्दी, चूना, कपड़ा, डीज़ल, गेहूं, गुड़, शक्कर, मिर्ची, पान का पत्ता।

(क) सूची से छांटकर उन चीज़ों के नाम लिखो जो तुम्हारे गांव/शहर या उसके आसपास बनती या उगाई जाती हैं।

(ख) नीचे दी गई तालिका में केवल उन चीज़ों के नाम भरो जो तुम्हारे इलाके के बाहर से आती हैं। हर वस्तु के आगे किसी एक इलाके का नाम लिखो जहां वह बनती या उगाई जाती है।

तुम्हारे इलाके का दूसरे इलाकों के साथ संबंध

वस्तुएं जो तुम्हारे इलाके के बाहर से आती हैं।	कहां बनती या ऊगाई जाती है।

एक इलाका अन्य इलाकों पर निर्भर होता है क्योंकि किसी एक इलाके में सभी प्रकार की चीज़ें नहीं होतीं। जैसे किसी एक इलाके में सभी प्रकार की फसलें नहीं उगाई जाती हैं। कुछ इलाकों की मुख्य फसल चावल है तो कहीं और मुख्य फसल गेहूं है। कहीं पर आम होते हैं तो कहीं पर सेवफल ।

इसी तरह सभी प्रकार की चीज़ें एक ही जगह नहीं बनाई जाती हैं। कहीं कपड़ा बनाने के कारखाने हैं, कहीं साबुन बनाने के और कहीं खाद बनता है। अलग-अलग इलाकों या क्षेत्रों में अलग-अलग वस्तुएं बनाई जाती हैं। इसलिए दूसरे इलाकों से चीज़ें मंगवाने की ज़रूरत होती है। इस तरह से एक इलाका दूसरे इलाके पर निर्भर हो जाता है।

एक दूसरे पर निर्भर

तुमने देखा कि हम कई प्रकार से एक दूसरे पर निर्भर हैं। जो व्यक्ति गांव में रहता है वह कुछ चीज़ों के लिए शहर पर निर्भर हो जाता है। इसी तरह जो व्यक्ति शहर में रहता है वह कुछ चीज़ों के लिए गांव पर निर्भर हो जाता है। गांव से कई चीज़ें शहर पहुंचती हैं और शहर से कई चीज़ें गांव पहुंचती हैं।

इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति किसी इलाके या क्षेत्र में रहता है तो वह दूसरे इलाकों पर निर्भर रहता है। किसी भी इलाके में सभी प्रकार की वस्तुएं नहीं बनाई या उगाई जाती हैं। इसलिए कई चीज़ें दूसरे इलाकों से मंगवानी पड़ती हैं। इस कारण एक इलाका दूसरे पर निर्भर हो जाता है।

इतनी तरह से निर्भर होने के कारण हम एक दूसरे से कई प्रकार से जुड़े हुए हैं। एक दूसरे पर निर्भर होने की बात तुम कई पाठों में पढ़ोगे। भूगोल के पाठों में पढ़ोगे किसी क्षेत्र या इलाके की क्या **विशेष** बात है जिस के कारण कुछ चीज़ें वहां उगाई जाती हैं और इनका दूसरे इलाकों के साथ क्या लेन-देन होता है। इतिहास में पढ़ोगे कि गांव व शहर पहले कैसे बने और उनके साथ चीज़ों का लेन-देन कैसे बढ़ता गया।

नागरिक शास्त्र के पाठों में पढ़ोगे कि आजकल व्यापारी कैसे एक जगह से दूसरी जगह सामान पहुंचाते हैं। हाट-बाज़ार और मण्डी में कैसे लेन-देन होता है। व्यापारियों द्वारा हम दूसरे लोगों से कैसे जुड़ जाते हैं और इसका क्या प्रभाव होता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. किशन की तरह हम दूसरों पर कैसे निर्भर हैं?
2. क. गांव शहर एक दूसरे पर कैसे निर्भर हैं?
   ख. एक इलाका दूसरे इलाके पर कैसे निर्भर है?
3. चित्र देखकर बताओ कि कोलीखेड़ा जैसी जगह कई इलाकों से कैसे जुड़ी हुई है।
4. मानो एक दिन तुमने जो कपड़े पहने हैं वे बोल पड़े, "तुम्हें मालूम है कि हम तुम तक कैसे और किन लोगों की मेहनत से पहुंचे हैं? एक समय पर एक किसान ने अपने खेत में कपास बोया। फिर ——" इस कहानी को पूरा करो।
5. चित्र-2 देखो। सेवफल और हल्दी जैसी चीज़ें तो गांव में होती हैं। फिर वे कोलीखेड़ा गांव में क्यों नहीं होतीं?

6. नीचे दो जगहों की जानकारी दी गई है। उनके आधार पर चित्र-2 की तरह एक चित्र बनाओ।

<u>नेरल और पाली के बीच संबंध</u>

नेरल से पाली जाने वाली चीज़ें	पाली से नेरल जाने वाली चीज़ें
खाद	धान
बिजली-मोटर	केला
जूते	मसूर

7. क) क्या तुम्हारे यहां नीचे दी गई चीज़ें बाहर से बनकर आती हैं? तालिका भरो।

चीज़ें	कहां से बनकर आती हैं
अंग्रेजी कवेलू	
टाटपट्टी	
चाक	
आटा चक्की	
तुम्हारी पुस्तक	

ख) पता करो कि तुम्हारे इलायची, व लौंग कहां से आते है? जिन इलाकों में ये उगते हैं, क्या उन इलाकों की कोई विशेषता है?

8. प्रभातगढ़ शहर के बारे में यह जानकारी मिली है कि वहां बीड़ी बनाने के कई कारखाने हैं। प्लास्टिक के जूते भी वहां बनाए जाते हैं। वहां पर भवर तहसील के गांवों से रोज़ कई गाड़ियां सब्ज़ी भर के आती हैं। प्रभातगढ़ के बाज़ार में बिकने वाला खाद कोटा शहर के कारखानों से आता है। दूध के बड़े डिब्बे इंदौर से बन कर आते हैं। जिस प्रकार चित्र 3 में खैरतगढ़ के बारे में बताया है, उसी प्रकार इस जानकारी को चित्र द्वारा बताओ।

9. क्या तुम्हारे यहां ऐसी कोई उपज है या वस्तु बनती है जो दूर-दूर तक भेजी जाती है? तुम्हारे इलाके में क्या खास बात है जिस कारण यह चीज़ वहां होती है।

2. हाट-बाज़ार और मण्डी

तुम हाट-बाज़ार तो गए ही होगे, मण्डी भी गए होगे या उसके बारे में सुना होगा। अपने शिक्षक के साथ चर्चा करो, हाट और मण्डी में क्या फर्क है।

हमने पिछले पाठ में पढ़ा कि हम एक-दूसरे पर निर्भर हैं। हम जो चीज़ें उपयोग में लाते हैं, वे कई इलाकों से और कई लोगों से होती हुई हम तक पहुंचती हैं। चीज़ें पहुंचाने का काम व्यापारी करते हैं। व्यापारी अलग-अलग तरह की वस्तुएं लेकर हाट-बाज़ार में आते हैं। हाट-बाज़ार में चीज़ें खरीदी ओर बेची जाती हैं। आओ इस पाठ में देखें कि हाट-बाज़ार और मण्डी में कैसे काम होता है।

स्थायी दुकानों के बाज़ार

तुमने शहर का बाज़ार तो देखा होगा। वहां **स्थायी** दुकानें होती हैं जो लगभग रोज़ खुली रहती हैं। इनमें तरह-तरह की चीज़ें बिकती हैं। शहर में रहने वाले लोगों की संख्या अधिक होने के कारण दुकानों का सामान रोज़ ही थोड़ा बहुत बिकता रहता है। सब खरीददार अलग अलग दुकानों में जाकर चीज़ों के भाव पता करते हैं और यह भी देखते हैं कि सामान कैसा है। फिर भाव-ताव करके सामान खरीदते हैं।

बाज़ार में अगर किसी चीज़ की एक ही दुकान हो तो दुकानदार मनमाने भाव पर उसे बेच सकता है। पर बाज़ार में एक ही चीज़ कई दुकानों में मिल जाती है। सभी दुकानदार अपना-अपना माल बेचने की कोशिश करते हैं। किसी एक दुकानदार की मनमानी नहीं चलती।

क्या गांवों में भी बहुत सारी स्थायी दुकानें होती हैं? कुछ बड़े गांवों को छोड़कर, इस तरह के बाज़ार अधिकतर गांवों में नहीं होते। इसका क्या कारण है?

शहर का बाजार

किसी शहर की तुलना में एक गांव में कम लोग रहते हैं अगर गांव में बहुत सारी दुकानें हों तो उनका माल नहीं बिकेगा। इसलिए गांवों
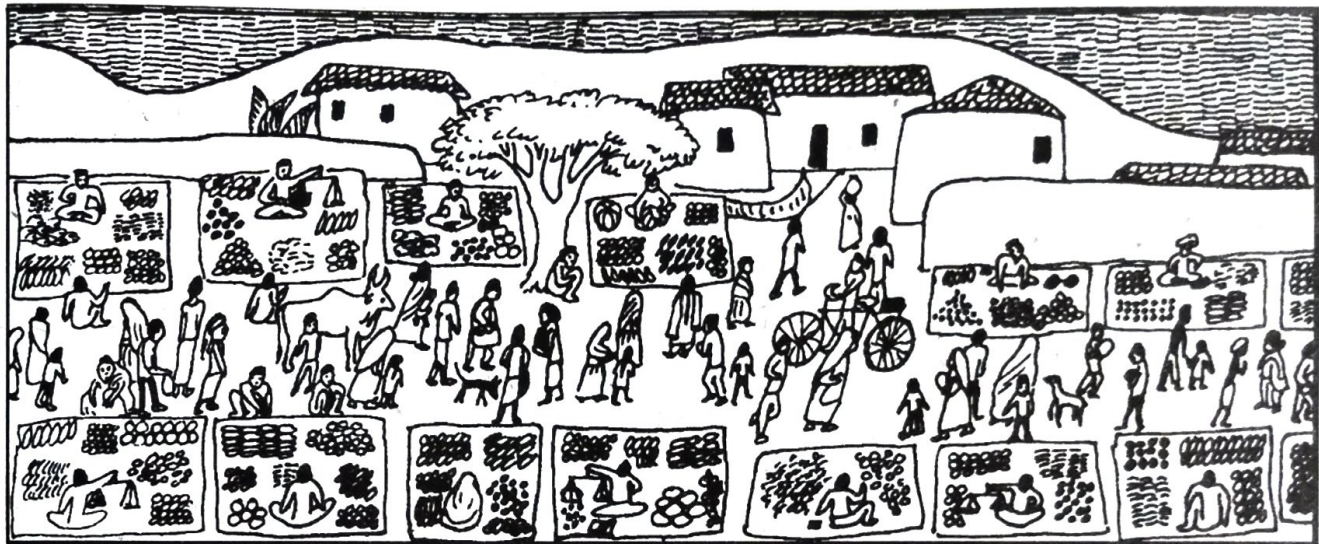
हाट

में शहरों की तरह बाज़ार नज़र नहीं आते। फिर गांव वालों के लिए बाज़ार कहां हैं? सभी गांवों के लोग सामान खरीदने के लिए शहर नहीं जा सकते। इसलिए गांव के लोग खरीदने-बेचने का काम **हाट-बाज़ार** में करते हैं।

सही विकल्प चुनो - "स्थायी" शब्द का अर्थ क्या है—
स्थान, एक जगह पर टिका रहना,
बदलते रहना।
शहर के बाज़ार और हाट-बाज़ार में दो फर्क बताओ।

गांव में हाट-बाज़ार

ऊपर हाट का यह चित्र शहर के बाज़ार के चित्र से कितना अलग दिखता है! ज़मीन पर चादर बिछाकर बैठे लोग ढेर सारी चीज़ें बेच रहे हैं। कहीं जूते बिक रहे हैं तो कहीं सब्ज़ी। कहीं कुम्हारों की दुकानें लगी हैं तो कहीं सब्ज़ी वालों की दुकानें।

हाट की दुकानें बाज़ार की दुकानों की तरह स्थायी नहीं हैं – यानी एक ही जगह पर टिकी नहीं रहतीं। हाट में दुकान लगाने वाला व्यापारी रात को दुकान समेट लेता है। अगले दिन वह अपनी दुकान किसी दूसरी जगह के हाट में लगाता है।

तो क्या हर गांव में हाट लगता है? नहीं हर गांव में हाट नहीं लगता। जिस गांव में हाट लगता है, वहां आसपास के कई गांवों के लोग आते हैं। हाट का एक दिन निश्चित होता है। अधिकांश जगहों पर हफ्ते में एक बार हाट लगता है।

गांव के लोगों के लिए हाट बहुत ज़रूरी है। अपने परिवार के लिए कपड़ा, जूता, चप्पल, सब्ज़ी, गुड़, मिर्ची आदि खरीदने के लिए ये लोग हाट पहुंचते हैं।

तुम्हारे आस-पास स्थायी बाज़ार कहां-कहां हैं, उन जगहों के नाम लिखो।
तुम्हारे आसपास हाट कहां-कहां लगता है, उन जगहों के नाम लिखो।

हाट-बाज़ार का एक व्यापारी

इटारसी शहर में एक व्यापारी रहता है – आफताब। चलो उससे मिलने चलते हैं। वह हाट में ताले और तरह-तरह के औज़ार बेचता है। वह

आफताब की दुकान। तुम्हें इस चित्र में क्या-क्या नज़र आ रहा है?

अपनी दुकान कई हाट-बाज़ारों में लगाता है।

हाट-बाज़ार में दुकान लगाने वाले बहुत से व्यापारी कई हाटों में घूमते रहते हैं। एक दिन यहां दुकान लगाई दूसरे दिन और कहीं। आफताब भी इसी प्रकार का एक व्यापारी है। क्या इन व्यापारियों का घूमने का कोई **क्रम** है या जहां मन करे वहां चले जाते हैं? अक्सर ये व्यापारी अपने **अनुभव** के अनुसार और अपनी सुविधा के हिसाब से घूमने का क्रम बना लेते हैं।

आफताब इटारसी में रहता है। वह सोमवार को सिवनी-मालवा के हाट-बाज़ार में बैठता है और मंगलवार को बाबई में। बुधवार को वह छुट्टी रखता है। गुरुवार को इटारसी के हाट-बाज़ार में दुकान लगाता है। फिर शुक्रवार को भौंरा, शनिवार को पाथाखेड़ा और रविवार को सारणी के बाज़ारों में जाता है। इस तरह आफताब हफ्ते भर घूमता रहता है। सात दिन में उसका एक चक्र पूरा होता है। हफ्ते भर घूमते-घूमते आफताब थक जाता है। हफ्ते में छह दिन दुकान लगाना और सिर्फ एक दिन का आराम — थकेगा तो!

नीचे आफताब के सप्ताह का चक्र नक्शे में बताया गया है। तुम देख सकते हो कि किस तरह वह अपने घर के स्थान यानी इटारसी के आसपास घूमता है। वह कैसे जाता होगा, इसका भी अंदाज़ा लगा सकते हो, क्योंकि नक्शे में सड़क और रेल के मार्ग भी बने हैं।

आफताब को रोज़ नई जगह दुकान लगानी होती है। जब दुकान जमानी हो तब वह चादर बिछाकर उस पर सामान रखता है। शाम को हाट-बाज़ार बंद होने के बाद हिसाब करके वापस पेटी में सामान रखता है। फिर घर लौट जाता है।

परन्तु शुक्रवार और शनिवार वह रात को घर
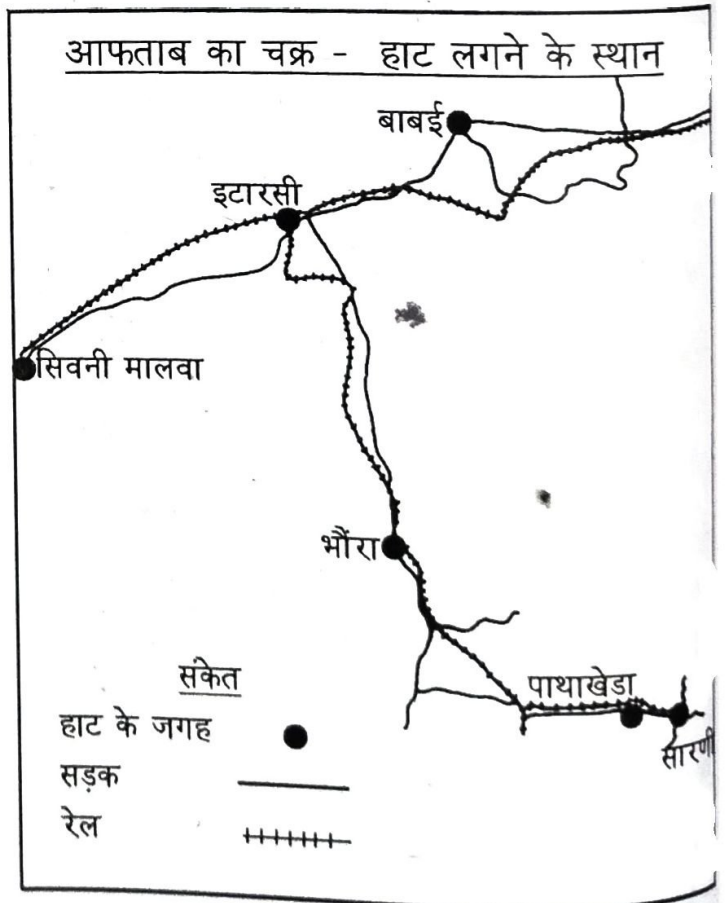
नहीं लौटता। भौंरा, पाथाखेड़ा और सारणी एक ही रास्ते पर हैं। इसलिए वह भौंरा में रात रुककर अगले दिन पाथाखेड़ा जाता है और पाथाखेड़ा में रात रुककर सारणी जाता है। सारणी से रविवार को इटारसी लौट आता है।

नीचे दी गई चक्र में आफताब के बारे में जानकारी पूरी करो।
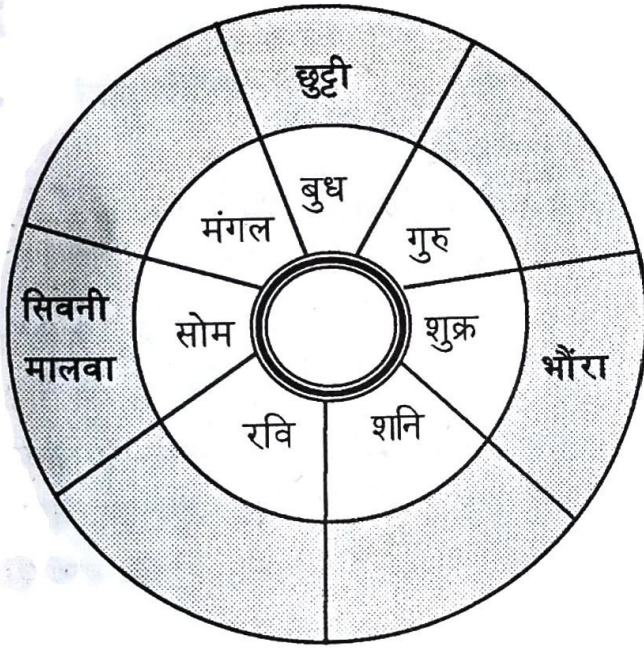
हर जगह के हाट में दस-बीस या उससे ज़्यादा गांवों से लाग आते हैं। इस तरह जो ताले आफताब बेचता है, वे लगभग दो सौ गांवों के लोगों तक पहुंच जाते हैं।

कई व्यापारी छुट्टी के दिन सामान लाने का काम करते हैं। सामान खरीदने का काम आफताब नहीं, उसके परिवार के लोग करते हैं। वे औज़ार और ताले खरीदने के लिए महीने में एक बार जबलपुर जाते हैं। जबलपुर से वे थोक में दो-तीन हज़ार रुपये का सामान लाते हैं।

इटारसी की तुलना में जबलपुर में ताले सस्ते मिल जाते हैं। जो ताला आफताब को 9 रुपये में पडता है उसे वह हाट में 12 रुपये में बेचता है। कभी-कभी आफताब सोचता है कि दिल्ली जाकर छह-आठ हज़ार रुपये का सामान लाना चाहिए। जबलपुर के व्यापारी भी दिल्ली के बाज़ार से ताले खरीदते हैं। दिल्ली के पास अलीगढ़ में ताले बनते हैं और वहां जबलपुर से भी सस्ते में ताले मिल सकते हैं।

आफताब क्यों घूमता रहता है?

आफताब के परिवार वाले जबलपुर से सामान क्यों लाते हैं?

तुम भी हाट जाते होगे। वहां किन गांवों के लोग आते हैं - सूची बनाओ।

किसी हाट के व्यापारी से पता करो कि उसका हफ्ते भर का चक्र क्या है? वह हफ्ते भर कहां-कहां अपनी दुकान लगाता है?

क्या वह व्यापारी हफ्ते के सातों दिन दुकान लगाता है? यदि नहीं, तो जिन दिनों वह दुकान नहीं लगाता, उन दिनों वह क्या करता है?

व्यापारी से मिली इस जानकारी को तालिका बनाकर उसमें भरो।

तुम अपनी तहसील के नक्शे में देखो कि तुम्हारी तहसील में कहां-कहां हाट लगता है। कई ऐसे शहर हैं, जहां पुराने समय से हफ्ते में एक दिन का बाज़ार लगता है। वहां के लोग स्थायी दुकानों वाले बाज़ारों में जाते हैं और हाट में भी।

तुमने 'एक दूसरे पर निर्भर' पाठ में देखा कि व्यापारियों के द्वारा सामान दूर-दूर तक पहुंचता है। हाट में दुकान लगाने वाले व्यापारी दूर-दूर के

गांवों तक जाते हैं। ये व्यापारी शहर के बाज़ार से सामान खरीदते हैं। बड़े शहरों (जैसे भोपाल, इन्दौर और जबलपुर) के बाज़ारों में सामान देश के कई इलाकों से आता है। कई गांवों के लोग भी हाट में दुकान लगते हैं। जूते, मटके, टोकरी जैसे सामान कारीगर हाट में लाकर बेचते हैं। कई किसान अनाज और सब्ज़ी भी बेचने आते हैं। इस प्रकार हाट-बाज़ार में पास और दूर की कई जगहों से सामान आता है। इस कारण कई जगहें एक दूसरे से जुड़ जाती हैं।

गलत वाक्यों को सुधारो।

क) हाट में स्थाई दुकानें होती हैं।

ख) आफताब जो ताले सिवनी में बेचता है, वे अलीगढ़ में बनते हैं।

मण्डी

मण्डी

हमने देखा कि हाट-बाज़ार द्वारा दूर-दूर के गांवों तक चीज़ें पहुंच जाती हैं। इसी प्रकार गांव से भी कई वस्तुएं बाहर जाती हैं। खेतों में उगने वाली फसलें दूर-दूर के इलाकों में पहुंचती हैं। यह कैसे होता है?

कई किसान अपनी उपज मण्डी में बेचने के लिए ले जाते हैं। मण्डी के व्यापारी उपज खरीद लेते हैं और दूर-दूर तक के इलाकों में पहुंचाते हैं।

चलो एक मण्डी में जाकर देखें कि वहां उपज कैसे बिकती है?

मण्डी के चित्र और हाट के चित्र में तुम्हें क्या अन्तर दिख रहा है?

मण्डी के चारों ओर व्यापारियों के कोठों से घिरा मैदान है। सामने एक बड़ा सा फाटक है, जिसमें से लद़े हुए ट्रक बाहर निकल रहे हैं। साथ ही मण्डी में आने वाले ट्रैक्टरों और बैलगाड़ियों का तांता भी लगा हुआ है। मैदान में बोरियों के कई ढेर दिख रहे हैं। व्यापारियों के कोठे भी बोरियों से भरे हैं। कोठों के सामने व्यापारियों के नामों के तख्ते लटके हैं - "धन्नूमल ऐंड संस", "छगनलाल ग्रेन मर्चेन्ट्स" आदि।

मण्डी में नीलामी

मैदान में यहां-वहां बड़े-बड़े कांटे (तराजू) रखे हैं, जिन पर अनाज तौला जा रहा है। कई जगह अनाज की खुली ढेरियां भी हैं, जिनके चारों ओर लोग खड़े हैं। देखें तो वहां क्या हो रहा है!

मण्डी में नीलामी द्वारा अनाज की बिक्री

एक जगह पर चने की **नीलामी** हो रही है। चना कन्हैयालाल किसान का है। वर्दी पहने दो आदमी खड़े हैं। उनके हाथ में रसीद पुस्तिका है। क्या तुम चित्र में इन्हें पहचान सकते हो? ये पुलिस वाले नहीं, **मण्डी समिति** के कर्मचारी हैं। एक बोली लगवा रहा है और दूसरा पर्ची बना रहा है। "गुलाबी चना 275" वर्दी वाले एक कर्मचारी ने बोली लगाई। कुछ व्यापारी आसपास खड़े हैं। कन्हैयालाल का चना हाथ में उठाकर परख रहे हैं। क्या किस्म है? दाने कैसे हैं? कीड़े तो नहीं हैं? कचरा कितना है? व्यापारी इन सब बातों का अन्दाज़ लगा रहे हैं।

एक व्यापारी ने बोली लगाई "280 रुपये"। वह उन व्यापारियों में से है, जिन्होंने मण्डी समिति के पास अपना **पंजीयन** (नाम दर्ज़) कराया हुआ है। मण्डी में जिनका पंजीयन हुआ हो, वे ही व्यापारी बोली लगा सकते हैं। मण्डी में घुसकर कोई भी व्यापारी बोली लगाना शुरू नहीं कर सकता है।

कर्मचारी ने चिल्लाकर कहा "280 एक, 280 दो।" इतने में एक और व्यापारी बोला "290 रुपये।" इस तरह बोली लगती गई। कुछ देर बाद मूलचन्द सेठ ने 335 रुपये की बोली लगाई। मण्डी समिति का कर्मचारी चिल्लाया "335 एक, 335 दो .... 335 तीन।" यही नीलामी की आखिरी बोली हो गई। आखिरी बोली के बाद समिति के कर्मचारी ने कन्हैयालाल को पर्ची काट कर दी। पर्ची को पढ़कर पता चलता है कि कन्हैयालाल का चना 335 रु. प्रति क्विंटल के भाव से सेठ मूलचंद को बिक गया।

किसी एक बोली पर तीन तक की गिनती पूरी होने से पहले यदि कोई व्यापारी चाहे तो उसे काटकर ऊंची बोली लगा सकता है। तीन की गिनती

होने के बाद कोई व्यापारी चाहे भी तो उससे ऊंची बोली नहीं लगा सकता है।

कन्हैयालाल और मूलचन्द ने कांटे पर चना तुलवाया। दस बोरी (दस क्विंटल) चना निकला। चना तुलवाने के बाद सेठ मूलचन्द ने पर्ची में लिखे भाव तथा वज़न के अनुसार बिल बनाया और कन्हैयालाल को रुपये दिये। उसने बोरों को हम्मालों द्वारा अपने कोठों पर पहुंचवाया। मूलचन्द ने और भी चना खरीदा है। उसे यह सारा चना इन्दौर भिजवाना है।

हम्माल

बताओ सेठ मूलचन्द ने कन्हैयालाल को कितने रुपये दिए?

कन्हैयालाल के चने की नीलामी 335 रुपये प्रति क्विंटल पर तय हुई थी। पर एक दूसरे किसान भीरूलाल को अपने चने के लिए 320 रुपये प्रति क्विंटल ही मिले। इस तरह सब किसानों के चने की नीलामी अलग-अलग बोलियों पर तय हुई।

कन्हैयालाल और भीरूलाल का चना अलग-अलग दामों पर क्यों बिका चर्चा करो।

मण्डी से माल खरीदने वाले व्यापारियों को मण्डी समिति को कुछ पैसे देने होते हैं। जैसे, मूलचन्द ने दिन भर में जितने रुपए का माल खरीदा उसका 1% यानी 100 रुपया में एक रुपया मण्डी समिति को दिया। इस चने की खरीदी पर उसने मण्डी समिति को 33.50 रुपये दिये। मण्डी समिति नीलामी करवाने के लिए यह पैसा व्यापारियों से लेती है। इसे **मण्डी शुल्क** कहते हैं।

मण्डी में चने के अलावा दूसरे अनाजों की भी नीलामी हो रही है। मण्डी के कर्मचारी हर जगह बोलियां लगवा रहे हैं। खूब ज़ोरों का शोर है। कोई अनजान व्यक्ति पहली बार आये तो शायद भौंचक्का रह जाए।

मण्डी समिति

मण्डी में बिक्री की पूरी व्यवस्था मण्डी समिति की देख-रेख में हुई। मण्डी समिति कैसे बनती है और उसका सदस्य कौन होता है? मण्डी समिति चुनाव द्वारा बनाई जाती है। चुनाव कौन लोग करते हैं? हर मण्डी का एक क्षेत्र या इलाका तय किया गया है। उस इलाके में आने वाली पंचायतों के सदस्य और मण्डी में खरीदने वाले पंजीकृत व्यापारी मिलकर समिति को चुनते हैं। समिति के सदस्य 5 सालों के लिए चुने जाते हैं। मण्डी समिति के सदस्य व्यापारी और किसान दोनों होते हैं। लेकिन नियम यह है कि समिति का अध्यक्ष और उपाध्यक्ष *किसान* ही हो सकता है। समिति में केवल दो व्यापारी सदस्य हो सकते हैं।

मण्डी में वर्दी पहने कर्मचारी कौन हैं और ये क्या करवाते हैं?

मण्डी समिति कैसे बनती हैं? सही विकल्प चुनो– पंचायत के सदस्य चुनते हैं/ व्यापारी चुनते हैं,/ सरकार तय करती है/ पंचायत के सदस्य और व्यापारी चुनते हैं।

अपने विचार बताओ -- मण्डी समिति का अध्यक्ष और उपाध्यक्ष किसान ही होना क्या उचित है?

मण्डी और हाट-बाज़ार की तुलना

तुमने मण्डी में देखा कि खरीदी-बिक्री कई बोरियों के हिसाब से हो रही थी। कोई भी दो-चार किलो बेचता या खरीदता नहीं था। लेकिनहाट-बाज़ार में लोग अपने-अपने परिवारों के लिए छोटी मात्रा में खरीदते हैं। छोटी मात्रा में खरीदने-बेचने को **खेरची** का व्यापार या फुटकर व्यापार कहते हैं।

व्यापारी मण्डी से जो सामान खरीदते हैं, उसे वे आगे बेचते हैं। बड़ी मात्रा में व्यापार को **थोक** व्यापार कहा जाता है।

थोक व्यापार न केवल अनाज मण्डी में होता है, परन्तु सभी चीज़ों की अपनी मण्डी या खास थोक के बाज़ार होते हैं। सब्ज़ी मण्डी, लोहा मण्डी, कपड़ा मण्डी, तेल मण्डी आदि जैसे थोक बाज़ार हैं। कुछ थोक बाज़ारों में सारा खरीदना-बेचना नीलामी से ही होता है। लेकिन अन्य थोक बाज़ारों में दूसरे तरीकों से खरीदा बेचा जाता है। जैसे लोहा मण्डी या थोक कपड़ा बाज़ार में नीलामी नहीं होती।

इन सभी थोक बाज़ारों में बिक्री बड़ी मात्रा में होती है। यदि कोई एक किलो तेल या अनाज या एक मीटर कपड़ा खरीदना चाहे तो नहीं खरीद सकता है। थोक में खरीदने के भाव भी खेरची से कम होते हैं।

आढ़त प्रथा

मण्डी के कानून में 1986 में कई बदलाव किए गए। उसके पहले मण्डी समिति के कर्मचारी नीलामी नहीं करवाते थे। अनाज की सारी नीलामी **आढ़तियों** के हाथ में थी। किसान अपना अनाज ले जाकर मण्डी में आढ़तिए की दुकान पर रख देता था, और अनाज बेचने के लिए नंबर लगा देता था। जब उसका अनाज बेचने की बारी आती तब आढ़तिया बोली लगवाता। भाव तय होने पर आढ़तिया किसान को पैसे दे देता। बाद में आढ़तिया व्यापारी से यह पैसे वसूल कर लेता था। बिक्री करवाने के लिए और व्यवस्था करने के लिए आढ़तिया किसान से कुछ पैसे (आढ़त) लेता था।

देवास शहर के पास खरेली गांव का एक छात्र है श्रीधर। उसने 1986 से पहले की देवास मण्डी की एक कहानी लिखी थीं जो "चकमक" पत्रिका में छपी थी। कहानी इस प्रकार है:

श्रीधर की कहानी

मैं और मेरे पिताजी दोनों साथ में सोयाबीन बेचने के लिए देवास कृषि उपज मण्डी में गए। मण्डी प्रांगण में हम्माल द्वारा ट्रक से माल उतरवाया। हम्माल को पैसे देने लगे, तब दोनों बड़ी देर तक लड़ते रहे।

फिर मैंने माल की देख-रेख की और पिताजी बाज़ार में घूमने गए। और वहां कुछ नाश्ता-पानी करके मेरे लिए लाये। मैंने भी नाश्ता किया। इसी बीच में एक व्यापारी मेरे पिताजी से पूछने लगा, "ए बुड्ढे तेरा सोयाबीन क्या भाव देगा।" तब पिताजी ने कहा, "सेठ साहब आप ज़रा तमीज़ से बोलो और अपनी सफेदी का ख्याल करो क्योंकि आप को भी अगर ऐसे कहूं तो आप को भी क्रोध आएगा।"

तभी एक दूसरा व्यापारी आया और उसने कहा, "दादा साहब, आप सोयाबीन किस भाव में देंगे?" मेरे पिताजी ने कहा, "बाज़ार में क्या भाव चल रहा है, उसके मुताबिक बेचूंगा।" इसी बीच माल बेचने का जो नंबर आढ़तिए के पास
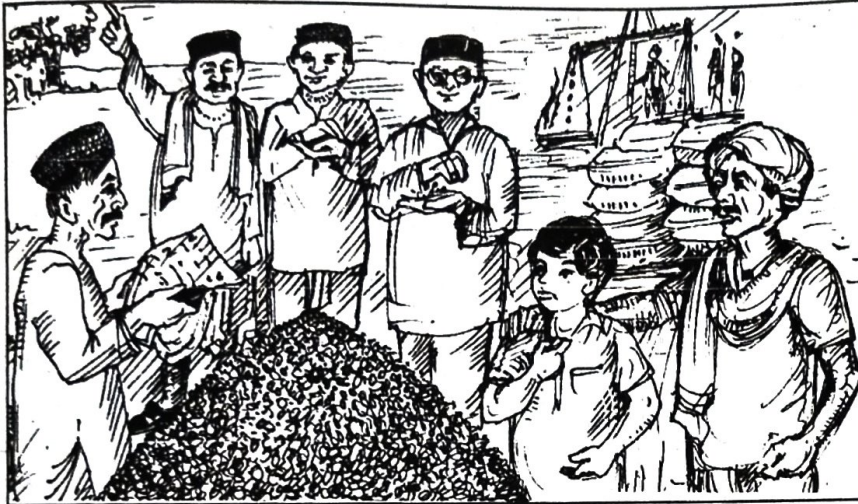
आढ़तिया नीलामी करवाते हुए

लगा हुआ था, वह नंबर आ गया। बोली लगने लगी। 395 की आखिरी बोली लगी। प्रति क्विंटल 395 का भाव मेरे सोयाबीन का तय हुआ।

सोयाबीन तुला और दो क्विंटल निकला। कुल 790 रुपये का सोयाबीन हुआ। आढ़तिया बड़ा चतुर था। पिताजी को गांव का बुड्ढा और सीधा समझकर उसने बिल में 670 रुपये का योग दिखाया। पिताजी पैसे लेने आढ़तिए की दुकान पे जाने ही वाले थे कि मैंने कहा– "पिताजी बिल मुझे तो बताओ।"

"तू क्या समझेगा।" पिताजी ने कहा। "पिताजी मैं आठवीं में पढ़ता हूँ, मैं भी समझता हूं।" मैंने कहा।

तब पिताजी ने मुझे बिल दिया। बिल में सोयाबीन दो क्विंटल लिखा था, उसका मूल्य 690 रुपये, तथा 20 रुपये आढ़तिए की आढ़त काटकर 670 रुपये का बिल था।

"पिताजी इसमें तो 100 रुपये कम लिखे हैं" मैंने पिताजी से कहा। "नहीं बेटे ऐसा नहीं होगा।" पिताजी बोले। "पिताजी दो क्विंटल के कितने रुपये होते हैं?" मैंने पूछा। "790 रुपये" पिताजी बोले। "इसमें से 20 रुपये आढ़त के कम कर दो।" मैंने कहा। "अब 770 रुपये हुए" तब पिताजी बोले। "इसमें तो 670 रुपये लिखे हुए हैं" मैंने कहा।

तब मैं और पिताजी उसी आढ़तिए के पास गए और बोले कि इस बिल में आपने 100 रुपये कम लिखे हैं। आढ़तिए ने बिल ठीक किया, मेरी पीठ ठोंकी और कहा कि लड़का बुद्धिमान है। फिर उसीने रुपये दिये। पिताजी ने कहा "वाह बेटे तूने तो कमाल कर दिया, नहीं तो 100 रुपये तो आढ़तिया पार कर जाता।"

यह कहानी मण्डी समितियों द्वारा नीलामी करवाने से पहले के दिनों की झलक दिखाती है। तब किसानों को बिक्री करवाने के लिए आढ़त देनी होती थी। श्रीधर की कहानी में तो आढ़तिये ने तुरन्त नकद भुगतान कर दिया। लेकिन उन दिनों सभी आढ़तिए किसानों को समय पर भुगतान नहीं करते थे। किसानों को अपना पैसा लेने के लिए आढ़तियों के कई चक्कर लगाने पड़ते थे। उनके साथ धोखा भी हो जाता था।

पहले बिक्री कौन करवाता था, और आजकल कैसी होती है?

यदि श्रीधर के पिताजी आज मण्डी में सोयाबीन बेचते तो क्या उन्हें आढ़त देनी पड़ती?

मण्डी शुल्क कौन देता है और किसे दिया जाता है?

कानून में बदलाव क्यों किया गया?

जुलाई 1986 में मण्डी के कानून में जो बदलाव किए गये उनके अनुसार आढ़तियों की जगह अब मण्डी समिति अपने कर्मचारियों द्वारा अनाज की नीलामी करवाती है।

कानून में बदलाव के तीन मुख्य कारण हैं। एक कारण यह है कि किसान को आढ़त नहीं देनी पड़े। पहले, आढ़तिया सौदा तय करने के लिए किसानों से आढ़त वसूल करता था। अब केवल खरीदने वाला व्यापारी, मण्डी समिति को शुल्क देता है। इस कमीशन के रुपयों से मण्डी समिति मण्डी का काम-काज करवाती है।

कानून में बदलाव का दूसरा कारण है, नीलामी करवाने में किसानों के साथ कोई धोखा नहीं हो। अतः मण्डी समिति ही बोली लगवाती है।

बहुत साल पहले जब मण्डी का कानून ही नहीं बना था, उस समय अनाज की बिक्री कई तरीकों से होती थी। किसानों के लिए आढ़तिया अपने तरीकों से सौदा तय करवाता था। मण्डी का कानून बनने के बाद कृषि उपज की बिक्री केवल खुली नीलामी द्वारा ही हो सकती है। यह नीलामी किसानों के सामने एक जगह की जाती है।

तीसरा कारण है, किसानों को भुगतान तुरन्त मिले। मण्डी समिति का मुख्य काम है कि वह व्यापारी से किसान को उसी दिन भुगतान दिलवाये। व्यापारी भुगतान नहीं करे तो किसान मण्डी समिति से शिकायत कर सकते हैं।

नए कानून से किसानों को फायदा हो रहा है, पर पूरी तरह नहीं। कुछ मण्डियों में व्यापारी किसानों को तुरन्त भुगतान नहीं करते हैं, और किसानों को पैसों के लिए कई चक्कर लगाने पड़ते हैं। कुछ जगहों पर समिति भी अपना काम ठीक से नहीं करती है और कानून के नियमों का पालन नहीं हो रहा है। नीचे दिये गए उदाहरण में मण्डी समिति की कुछ कमियां नज़र आती हैं। कुछ समय पहले एक समाचार पत्र में यह खबर छपी थी।

अनाज मण्डी में आज धरना ज़ारी

(6 फरवरी 1991) निप्र – आज तीसरे दिन भी यहां किसानों के धरने के कारण मण्डी के काम-काज ठप्प रहे। पुलिस ने धोखाधड़ी के आरोप में फरार एक व्यापारी के खिलाफ मामला दर्ज़ कर लिया है। इस मामले की जांच हेतु भोपाल से आए मण्डी के सरकारी अधिकारी कल रात तथा आज दोपहर मण्डी के कागज़ातों की जांच करते रहे। उधर धरने पर बैठे किसान नेताओं ने घोषणा की कि जब तक किसानों के 20 लाख के भुगतान और मण्डी में फैली अव्यवस्था का निर्णय नहीं होता, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

मण्डी कानून के अनुसार किसानों को किन-किन बातों से फायदा हो सकता है?

इस उदाहरण में कानून की कौन सी बात सफल नहीं हो पा रही है?

तुम्हारे यहां की मण्डी

तुम्हें अपने यहां पता करना है कि लोग मण्डी कानून के बारे में क्या सोचते हैं।

यदि तुम गाँव में रहते हो तो पता करोः—
क. तुम्हारे गांव के पास अनाज मण्डी कहां है?
ख. अनाज मण्डी करीब होने से क्या कोई फायदा होता है, समझाओ।
ग. तुम्हारे गांव में कई किसान होंगे जो अनाज बेचने मण्डी नहीं जाते। इसके क्या-क्या कारण हैं?
घ. कुछ किसानों से पता करो कि मण्डी कानून से उनको क्या फायदा हुआ है?
यदि तुम शहर में रहते हो तो पता करोः—
क. क्या तुम्हारे शहर में अनाज मण्डी है, कहां?
ख. तुम्हारे शहर में अनाज कहां-कहां से आता है?
ग. क्या तुम्हारे यहां की मण्डी से अनाज दूसरे शहरों को भी जाता है? कहां-कहां?
घ.शहर के व्यापारियों से पूछकर बताओ कि मण्डी कानून कितना सफल हो पाया है?

हमने मण्डी में हो रहे अनाज व्यापार के बारे में पढ़ा। पर हर किसान मण्डी में आकर अपनी उपज नहीं बेच पाता है। किसान अपने खेतों की फसल कई जगह बेचते हैं। कई किसान अपनी उपज गांव में ही दूसरे किसानों को बेचते हैं। कुछ किसान गांव में आए व्यापारी को बेचते हैं और कुछ किसान पास के शहर जाकर व्यापारियों को बेच आते हैं। गांव में ऐसे भी किसान होते हैं जो हाट-बाज़ार में थोड़ी उपज बेच देते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. पृष्ठ 113 में बने चित्र और पृष्ठ 116 पर बने चित्रों की तुलना करते हुए बताओ कि मण्डी के नियमों में क्या बदलाव आए हैं?
2. मण्डी में नीलामी कैसे होती है? नीलामी करवाने के लिए किसे और कितने पैसे भरने होते हैं?
3. कई लोग एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह समझाओ कि वह हाट के द्वारा कैसे जुड़े हैं और मण्डी द्वारा कैसे जुड़े हैं।
4. थोक व्यापार किसे कहते हैं – दो वाक्यों में लिखो।
5. पृष्ठ 114 को पढ़ कर बताओ कि मण्डी समिति का चुनाव कैसे होता है?
6. आढ़त प्रथा से किसानों को क्या परेशानियां होती थीं?
7. मण्डी और हाट में क्या फर्क है? नीचे दी गई तालिका को कापी में उतारकर भरो।

	मण्डी	हाट
दुकानें		
बेचने वाले		
खरीदने वाले		
खरीदने-बेचने के तरीके		

3. ग्राम पंचायत

यह पाठ ग्राम पंचायत के बारे में है। उपशीर्षकों को पढ़कर और चित्र देखकर अंदाज़ लगाओ कि इस पाठ में किन बातों के बारे में लिखा है?

तुम्हारे गांव में ग्राम-पंचायत के चुनाव कब हुए? चुनाव के बाद ग्राम पंचायत ने क्या काम किए? आपस में चर्चा करो।
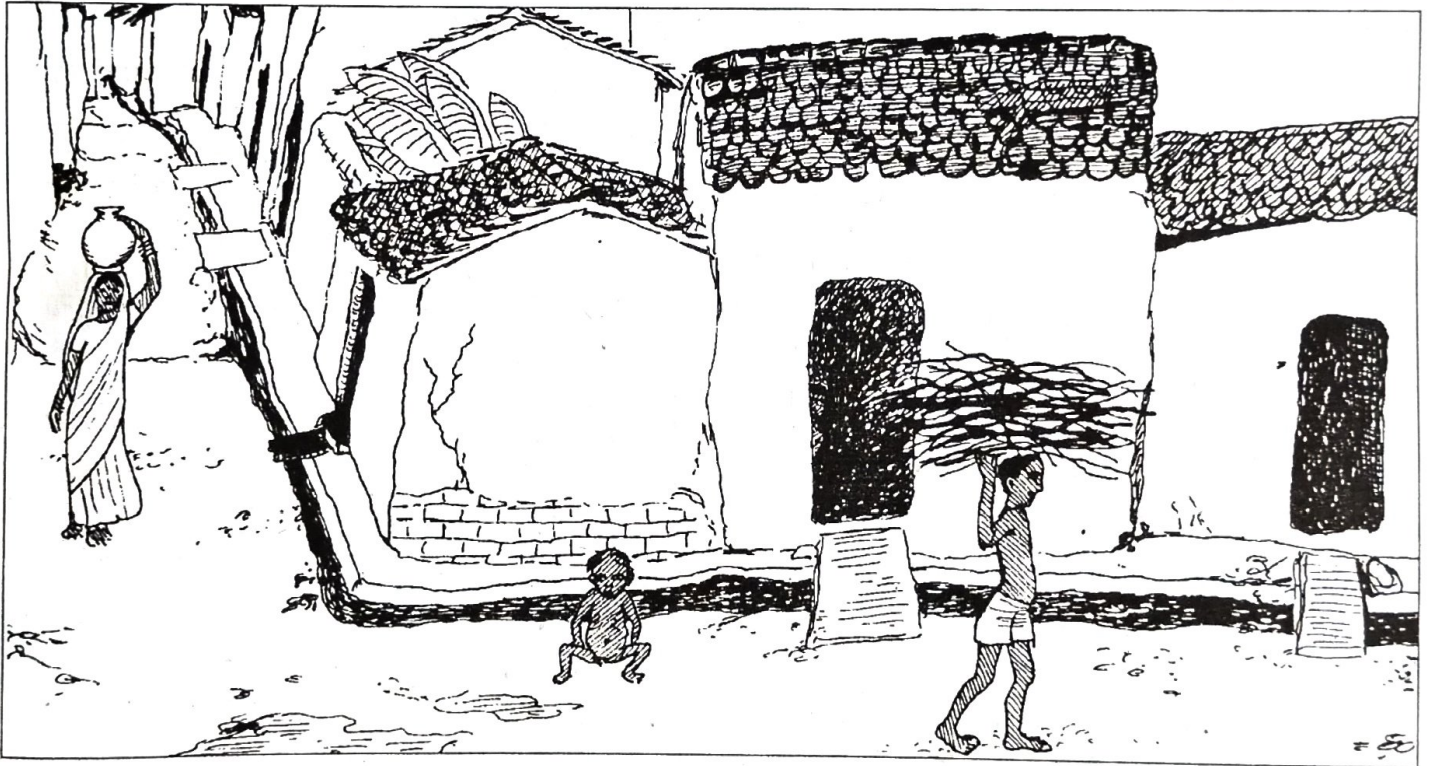
सब के लिए सुविधाओं की व्यवस्था

एक गांव है कनियाखेड़ी। गांव में कुल दस मोहल्ले हैं। एक मोहल्ले के घरों का सारा गंदा पानी सड़क पर बहकर जमा हो जाता है। सड़क पर कोई नाली नहीं है। इसीलिए वहां हमेशा ही कीचड़ बनी रहती है।

एक दूसरे मोहल्ले का कुआं दो साल से सूखा पड़ा है। दूसरा कुआं बहुत दूर है। इतनी दूर से पानी लाना मुश्किल तो है मगर वो भी क्या करें? पानी तो सबको पीना है। तुम पूछ सकते हो कि वे अपना कुआं क्यों नहीं ठीक करते? लेकिन मोहल्ले का कुआं किसी एक व्यक्ति का नहीं है। मोहल्ले भर के लोग इसका उपयोग करते हैं।

सड़क हो या कुआं, पुल हो या रपटा, ये सब किसी एक आदमी या परिवार के अपने तो होते नहीं। गांवों या शहरों में ऐसी बहुत सी चीज़ें होती

हैं जो सबके काम आती हैं। सारे लोग इनका उपयोग करते हैं। ऐसी सुविधाओं को **सार्वजनिक सुविधा** कहते हैं।

लेकिन जब ये सुविधाएं खराब हो जाएं तो इन्हें सुधरवाए कौन? इनकी देखभाल कौन करे? मान लो कोई एक आदमी या परिवार इन चीज़ों पर कब्ज़ा कर ले तो समस्या कौन सुलझाए? इन सब चीज़ों की सुरक्षा और देखभाल का इंतज़ाम तो करना होगा। जब सब उपयोग करते हैं तो **प्रबंध** (इंतज़ाम) भी तो सबको मिलकर ही करना होगा।

इस तरह की स्थानीय सार्वजनिक समस्याओं को सुलझाने और सुविधाओं का प्रबंध करने का एक तरीका बनाया गया है। गांवों में सार्वजनिक सुविधाओं का प्रबंध करने के लिये **ग्राम पंचायत** बनाई जाती है। शहरों में यही काम **नगरपालिका या नगरनिगम** द्वारा किया जाता है।

गुरुजी से चर्चा करो कि 'सार्वजनिक' का क्या अर्थ है।

तुम्हारे गांव में कौन सी सार्वजनिक सुविधाएं हैं?

इस पाठ में हम ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ेंगे। ग्राम पंचायत के बारे में जानने के लिये आओ अब कनियाखेड़ी चलें।

एक कहानी

ग्राम पंचायत कैसे बनती है

एक दिन की बात है। गर्मी का महीना था। तपती दोपहरी में किसी ने धन्ना के घर का दरवाज़ा खटखटाया। उसकी बेटी लखिया ने दरवाज़ा खोला।

दरवाज़ा खटखटाने वाला गांव का पटवारी था। वह **मतदाता सूची** (वोटर
लिखने आया था। पटवारी ने ब
महीनों में ग्राम पंचायत के चुन
इसीलिए मतदाता सूची बनाई
घर के सब लोगों के बारे में

मतदाता सूची

लखिया ने ग्राम पंचायत के ब
था। वह पंचायत के बारे में और
थी। पर इससे पहले कि वह अ
झड़ी शुरू करती, पटवारी ने
तो अपने घर के सदस्यों के
बताओ।"

"पर आप उनके नाम और उ
चाहते हैं?" लखिया ने पूछा।

"मैंने बताया न, ग्राम पंचायत
वाले हैं। इस लिये इस पंचायत
वाले लोगों के नाम लिखने हैं। इन
को मतदाता सूची कहते हैं।" प
दिया।

"सबसे पहले मेरा नाम ही
मैं भी वोट दूंगी।" लखिया बो

"नहीं लखिया", पटवारी ने
वोट नहीं दे सकतीं। 18 वर्ष य
उम्र वाले लोग ही वोट दे सकते
घर के ऐसे लोगों के नाम बता
18 वर्ष से अधिक हो।"

लखिया थोड़ा उदास हो ग
थी। फिर भी वह बताने लगी
"बापू का नाम और उम्र तो
आप जानते ही हो। मेरी मां का

नाम सूखीबाई है। उमर करीब चालीस साल होगी।" लखिया ने बताया।

"फिर मेरी बड़ी बहन है फत्तो। उसकी शादी हो गई है। सैलनपुर में ससुराल है उसकी।"

पटवारी लखिया की बात काटते हुए बोला, "नहीं फत्तो का नाम तो सैलनपुर ग्राम पंचायत की मतदाता सूची में आएगा। इस गांव की सूची में सिर्फ इसी ग्राम पंचायत में रहने वाले लोगों के नाम ही लिखने हैं।"

"फिर मेरी भाभी तिजिया तो दूसरे गांव से आई है उसका क्या होगा?" लखिया बोली।

पटवारी ने कहा, "तुम्हारी भाभी अब इस गांव में वोट डाल सकती है। अच्छा, और कौन-कौन रहता है तुम्हारे घर पर?"

"मेरा बड़ा भाई, भैयालाल। वह मेरे से 8 साल बड़ा है। एक मेरा भतीजा है, पर वो अभी छोटा है। उसके अलावा मेरी दादी है, नाम है चुनीबाई। पर वो तो बहुत बूढ़ी है। वो कहां वोट डालेंगी।" लखिया बोली।

"हां क्यों नहीं, लखिया, 18 से अधिक उम्र के सभी लोग वोट डाल सकते हैं।"

ग्राम-पंचायत का इलाका

नाम बताते बताते लखिया के मन में ग्राम पंचायत के बारे में कई सवाल आ रहे थे। इस से पहले कि पटवारी जाने को खड़ा होता, लखिया ने उससे पूछा, "क्या हर गांव में एक ग्राम पंचायत होती है?"

"कम से कम 1000 की आबादी पर एक ग्राम पंचायत होती है।" पटवारी ने उत्तर दिया।

लखिया बोल पड़ी, "इतने लोग तो बड़े गांवों में ही रहते हैं। तो क्या इसका मतलब यह हुआ कि सिर्फ बड़े गांवों में ग्राम पंचायत होती है? फिर 300-400 लोगों के छोटे गांवों का क्या होगा?"

पटवारी ने समझाया, "छोटे गांवों को आमतौर पर बड़े गांवों के साथ मिला दिया जाता है। यानी एक ग्राम पंचायत तीन-चार गांवों के लिए काम करती है। जैसे-कनियाखेड़ी ग्राम पंचायत में तीन और गांव हैं - पगांवा, नूनपुर और मानीगांव।"

पंच और सरपंच

"पटवारी जी, ग्राम-पंचायत के सदस्यों को पंच कहते हैं न," लखिया ने कहा।

"हां, ठीक कहा तुमने। एक ग्राम पंचायत में 10 से 20 तक पंच होते हैं।" पटवारी ने कहा।

लखिया ने फिर पूछा, "पटवारी जी, इन पंचों का काम क्या होता है?"

पटवारी: "ये पंच मिलकर ग्राम पंचायत के गांवों में सफाई, पानी, सड़क जैसी सार्वजनिक सुविधाओं की देखरेख करते हैं। यदि किसी गांव या मोहल्ले में इन सुविधाओं की कमी या गड़बड़ी हो तो वहां के पंच इसके बारे में ग्राम पंचायत को बताता है। फिर पंचायत इन सुविधाओं को सुधारने की कोशिश करती है।"

लखिया: "अगर सभी पंच एक ही मोहल्ले

या एक ही गांव के हो जाएं, तो दूसरे मोहल्लों के बारे में कौन ध्यान देगा?"

पटवारी: "ऐसा न हो, इसीलिए तो हर ग्राम पंचायत क्षेत्र को छोटे-छोटे क्षेत्रों में बांटा जाता है। इन्हें पंचायत वार्ड कहते हैं। हर वार्ड से लोग अपना-अपना पंच चुनते हैं। जो भी पंच बनना चाहता है, वह ग्राम-पंचायत के चुनाव में अपने वार्ड से खड़ा हो सकता है। वार्ड के लोग अपना मत देते हैं। जिस व्यक्ति को सबसे अधिक मत मिलें वही पंच बनता है।"

लखिया: "अगर एक बार कोई पंच चुन लिया गया तो फिर क्या हमेशा वही पंच बना रहेगा?"

पटवारी: "नहीं, हर पांच साल बाद पंचायत के चुनाव होते हैं, और नए पंच चुने जाते हैं।"

पटवारी ने अपने घड़ी देखते हुए कहा, "अरे, बहुत देर हो गई है। मुझे आज पगांवा की सूची भी पूरी करनी है।" यह कहते हुए पटवारी चला गया।

इन वाक्यों में से गलत वाक्यों को सुधारकर लिखो:

हर गांव पर एक पंचायत होती है।

हर साल नई ग्राम पंचायत चुनी जाती है।

हर वार्ड से एक पंच होता है।

यदि किसी क्षेत्र में 250 गांव हैं तो वहां 250 ग्राम पंचायतें ही होंगीं।

मतदाता सूची क्या होती है?

पटवारी ने फत्तो का नाम मतदाता सूची में क्यों नहीं लिखा?

लखिया वोट क्यों नहीं डाल सकती?

सरपंच व उपसरपंच

हर ग्राम पंचायत का एक सरपंच होता है। सरपंच को चुनने के लिए वे सभी लोग अपना मत (वोट) दे सकते हैं, जिनका नाम उस ग्राम पंचायत की मतदाता सूची में है। सरपंच ग्राम पंचायत की बैठक बुलाता है और पंचायत के कामों की देखरेख करता है।

हर ग्राम पंचायत का एक **उपसरपंच** भी होता है। उपसरपंच पंचों में से ही, पंचों द्वारा चुना जाता है। सरपंच के **उपस्थित** न रहने पर उपसरपंच उसका काम सम्भालता है।

पंचायतों में आरक्षण

सरपंच के कुछ पद अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति के लिए रखे गए हैं, यानी उनके लिए आरक्षित हैं। पिछड़े वर्ग के लिए भी सरपंच व पंच के कुछ पद आरक्षित होते हैं। इसी प्रकर महिलाओं के लिए भी आरक्षण है। कुल ग्राम पंचायतों के एक तिहाई सरपंच पद महिलाओं के लिए रखे गए हैं। इसके अलावा हर ग्राम पंचायत में एक तिहाई महिला पंचों का होना ज़रूरी है।

इस तरह चार प्रकार के लोगों को किसी न किसी रूप में आरक्षण दिया जाता है। वे हैं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, और महिलाएं।

अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति व पिछड़ा वर्ग के लोगों और महिलाओं के लिए आरक्षण क्यों ज़रूरी है - गुरुजी के साथ चर्चा करो।

सचिव

ग्राम पंचायत का एक **सचिव** होता है। वह चुना

नहीं जाता है बल्कि सरकार द्वारा **नियुक्त** किया जाता है। सचिव पंचायत का हिसाब किताब रखता है और पंचायत की बैठक का **विवरण** लिखता है।

> ***गुरुजी की मदद से पता करो-***
>
> *तुम्हारे गांव की जनसंख्या कितनी है?*
>
> *तुम्हारी ग्राम पंचायत में कितने वार्ड हैं?*
>
> *तुम्हारी ग्राम पंचायत में कितने गांव हैं?*
>
> *तुम्हारा घर किस वार्ड में आता है और इसका पंच कौन है?*

कनियाखेड़ी की पंचायत

कनियाखेड़ी में कई मोहल्ले हैं - घासीटोला, चिनखीटोला, नोंद मोहल्ला, गांधीवार्ड आदि। इसके अलावा, कनियाखेड़ी पंचायत में तीन और गांव भी हैं। इन सब क्षेत्रों से अलग-अलग पंच चुने जाते हैं। लखिया की भाभी तिजिया घासीटोला की पंच चुनी गई है। पंचों ने उसे उपसरपंच चुना है।

10 दिसंबर को साढ़े दस बजे ग्राम पंचायत की बैठक है। बैठक की सूचना कोटवार द्वारा तिजिया बाई को मिल चुकी है।

ग्राम-पंचायत की बैठक

जब तिजिया पंचायत भवन पहुंची, तब साढ़े दस बज चुके थे। सरपंच खैरातीसिंह और सचिव हरिमोहन यादव के अलावा सात और पंच आ चुके थे। "आओ-आओ तिजिया बाई। अच्छा हुआ तुम आ गईं। अब हम बैठक शुरू कर सकते हैं" सरपंच खैरातीसिंह ने कहा। कनियाखेड़ी की पंचायत में 17 सदस्य थे। 16 पंच और एक सरपंच। आधे सदस्यों से अधिक के उपस्थित होने पर ही बैठक शुरू हो सकती थी। आधे से कम सदस्य आएं तो बैठक निरस्त करनी पड़ती है।

ग्राम-पंचायत के कामों की चर्चा

बैठक शुरू हुई। सबने उपस्थिति बही पर हस्ताक्षर किए।

सबसे पहले सचिव हरिमोहन ने पिछली बैठक का विवरण पढ़ कर सुनाया। सभी पंच विवरण से सहमत थे। सरपंच खैराती सिंह ने विवरण पर हस्ताक्षर किए।

फिर पहले पिछले महीने किए गए कामों के बारे में बात होने लगी। सरपंच खैराती सिंह ने सचिव हरिमोहन से पूछा, "क्या-क्या काम हुए हैं पिछले महीने?"

"चिनखीटोला के रपटे का काम शुरू हो गया है। नोंद मोहल्ले के कुंए की सफ़ाई हुई है। फिर पंचायत भवन के कुछ कवेलू बदलवाए हैं। कुल मिलाकर पिछले महीने करीब तीन हज़ार रुपये खर्च हुए हैं" हरिमोहन ने बताया।

रहमत अली चिनखीटोला का पंच था। उससे रपटे के काम के बारे में बात हुई। कितना काम हुआ है? कितना बाकी है?

खैरातीसिंह ने पूछा, "अच्छा इस महीने और क्या-क्या करना है? आज पहले तिजिया बाई से पूछें - उनके वार्ड में क्या समस्याएं हैं।"

"हमारे वार्ड की समस्या कौन नहीं जानता! घासीटोले का कुआं दो साल से सूखा पड़ा है। हम औरतों को गांव के दूसरे छोर पर चिनखीटोला से रोज़ पानी लाना पड़ता है। हमारे मोहल्ले का कुआं गहरा करवा दिया जाए या हैंडपम्प लगवा दिया जाए तो हमारी यह परेशानी दूर हो जाएगी" तिजिया बोली।

इतने में पगांवां का एक पंच बोल पड़ा, "सब काम कनियाखेड़ी में ही हो जाते हैं। हमारा छोटा सा गांव भी तो इसी पंचायत में आता है। हमारे यहां नाली और कुएं की सफाई सालों से नहीं हुई है। तालाब में पानी नहीं भरता। पहले हमारे गांव के कुएं की सफाई कराइए। तालाब को गहरा करवाइए। इसमें ज़्यादा पैसों की ज़रूरत भी नहीं पड़ेगी।"

अतिक्रमण और जुर्माना

दो तीन और मामलों पर चर्चा हुई। नोंद मोहल्ले के एक आदमी ने सड़क के एक हिस्से पर ही अपना कमरा बना लिया था। पंचों ने तय किया कि यदि वह खुद अपना कमरा नहीं हटाता, तो पंचायत कमरा तुड़वा देगी।

फिर गांधी वार्ड के रामप्रसाद के मामले पर बात हुई। गांधी वार्ड के पंच लच्छू ने बताया कि रामप्रसाद अपने घर का गंदा पानी हमेशा सड़क पर बहा देता है। अपने घर का कचरा भी वह सड़क पर फेंकता है। पंचायत ने तय किया कि गंदगी फैलाने के लिए रामप्रसाद से जुर्माना लिया जाएगा।

ग्राम-पंचायत की आमदनी पर चर्चा

अबसचिव हरिमोहन ने पंचों के सामने पिछले महीने तक का हिसाब-किताब रखा। "इस बार संडास, बिजली और बाज़ार के टैक्स से बहुत कम पैसे प्राप्त हुए हैं। कुछ लोगों ने अभी तक मकान का टैक्स नहीं दिया है।" हरिमोहन ने कहा। "पिछले महीने ही चिनखीटोला के रपटे के लिए **जनपद पंचायत** से कुछ पैसे आए हैं। इस तरह अप्रैल से नवंबर तक कुल करीब दस हज़ार रुपये जमा हुए।"

ग्राम-पंचायत सार्वजनिक कामों के लिए कई जगहों से पैसे इकट्ठा करती है। वह गांव के लोगों से सफाई, बिजली, संडास व निजी मकानों पर **टैक्स** लेती है।

ग्राम पंचायत क्षेत्र में रहने वाले हर परिवार को ये टैक्स देने पड़ते हैं। इसके अलावा ग्राम-पंचायत को जुर्माने से भी कुछ पैसे मिल जाते हैं।

ग्राम-पंचायत क्षेत्र में यदि कोई बड़ा काम होना है, (जैसे, कुआं, रपटा, नाली या शाला भवन

गांव में कुओं की मरम्मत और पानी का प्रबंध पंचायत का काम है

अपनी पंचायत के पास इतने पैसे भी नहीं हैं। ये समस्या तो बड़ी टेढ़ी है।" सरपंच बोला।

इतने में एक पंच बोल पड़ा, "इसमें कोई मुश्किल नहीं है। अनुसूचित जाति के ग़रीब लोगों के लिए सरकार की योजनाएं हैं। जनपद पंचायत

बनवाना) तो इसके लिए टैक्स और जुर्माने की आमदनी काफी नहीं होती। इन कामों के लिए ग्राम-पंचायत कुछ पैसे जनपद पंचायत से मांग सकती है, और लोगों से चंदा भी कर सकती है। सरकार जनपद पंचायतों को ऐसे कामों के लिए पैसे देती है।

ग्राम-पंचायत के कामों के लिए पैसे

कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत की बैठक में कई कामों के बारे में बात हो चुकी थी। अब तय यह करना था कि इन कामों के लिए पैसे कहां से जुटेंगे।

"घासीटोला का कुआं गहरा करवाने या हैंडपम्प लगवाने में तो बहुत खर्चा आ जाएगा। को इन कामों के लिए पैसे मिल सकते हैं। हम जनपद को अर्ज़ी दे देते हैं। हमें अपने क्षेत्र के जनपद सदस्य से बात करनी चाहिए - वे जनपद पंचायत की अगली बैठक में इसके बारे में हमारी मांग रख सकते हैं।"

तिजिया ने कहा, "जनपद को कब अर्ज़ी देंगे और कब पैसे आएंगे। इसमें एक और साल बीत जाएगा। आप तो किसी तरह इन्हीं पैसों से काम चला लीजिए। कुछ पैसों का हम चंदा कर लेंगे।"

काफी देर तक इस बात पर बहस होती रही कि अभी ग्राम-पंचायत के पास जमा पैसों का क्या किया जाए।

अंत में तय हुआ कि घासीटोला के हैंडपंप के लिए जनपद पंचायत से पैसे मांगे जाएं।

सचिव हरिमोहन एक हैंडपंप के खर्चे का हिसाब बनाकर जनपद के लिए अर्ज़ी बनाएगा। ग्राम पंचायत में जमा पैसों से पगांवां की सड़क ठीक करवाने का तय हुआ।

बैठक की रपट

सब बातचीत खत्म होते-होते चार बज गए थे। पंचायत के सचिव हरिमोहन ने बैठक में हुई पूरी चर्चा के बिन्दु लिखे थे। ग्राम पंचायत की हर बैठक का विवरण लिखा जाता है। यह विवरण सचिव लिखता है।

ग्राम पंचायत बैठक के नियम

पंच आपस में बात कर रहे थे। एक ने कहा, "पिछली पंचायत में तो कभी-कभार ही बैठक होती थी। ये खैरातीसिंह हमेशा समय पर बैठक बुलाता है। अभी तक एक भी महीना नहीं चूका।"

एक और पंच ने कहा, "चूके कैसे? नए नियम और भी कड़े हो गए हैं। अब तो हर महीने ग्राम पंचायत की बैठक बुलाना ज़रूरी है। खैरातीसिंह यह जानता है कि अगर उसने लगातार तीन महीनों तक बैठक नहीं बुलवाई तो उसे हटाया भी जा सकता है।"

चिनखीटोला का पंच रहमत अली बोला, "बिरजन खेड़ी का सरपंच कभी बैठक नहीं बुलाता। बस सचिव को बाखर में बुलवाकर कागज़ बना लेता है और सबके घर बही भेजकर हस्ताक्षर करवा लेता है। कोई कुछ नहीं कहता। सब सरपंच से घबराते हैं।"

गांधीवार्ड का पंच वोला, " भई नियम कानून बनाना काफी नहीं है। अगर गांव के लोग और दूसरे पंच इन कानूनों को तोड़ने पर सरपंच से सवाल करें तभी सरपंच कानून तोड़ने से घबराएगा।" ये बातें करते करते सब पंच अपने अपने घर चले गए।

अभी तक तुमने जो पढ़ा, उसके आधार पर बताओ-

तिजिया कौन थी ?

कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत में कितने सदस्य हैं?

कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत में कौन-कौन से गांव आते हैं?

सही विकल्प चुनो -

तिजिया के पहुंचने तक ग्राम पंचायत बैठक शुरू नहीं हुई थी क्योंकि . . .

1. वह महिला पंच थी और महिला पंच के बिना बैठक शुरू नहीं हो सकती।

2. उसके आने पर ही पंचायत के आधे से अधिक सदस्य उपस्थित हुए।

3. वह उपसरपंच थी और उपसरपंच के बना बैठक शुरू नहीं हो सकती।

कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत को पैसे कहां-कहां से मिले?

घासीटोला और नोंद मोहल्ले की क्या-क्या समस्याएं थीं? उनके बारे में कनियाखेड़ी की ग्राम

पंचायत ने क्या तय किया?

कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत कितने दिनों में मिलती है?

जनपद पंचायत क्या है पता करो।

तुम्हारी ग्राम पंचायत कौन सी जनपद पंचायत में आती है ?

पिछले साल तुम्हारी ग्राम पंचायत ने क्या-क्या काम किए?

ग्राम-पंचायत के काम में मुश्किल

पैसे जुटाने में देरी

कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत की उस बैठक के बाद कई महीने बीत गए। हर महीने तिजिया बैठक में जाती। घासीटोला के हैंडपंप के पैसों के बारे में पूछताछ करती। उसे बताया गया कि मार्च में जब सरकार को अगले साल के कामों की योजना भेजेंगे तो उसी में हैंडपंप के लिए भी पैसे मांगेंगे। साल भर के पैसों के साथ ही सरकार से हैंडपंप का पैसा मिलेगा।

सितम्बर के महीने में कनियाखेड़ी ग्राम-पंचायत को जनपद पंचायत से सरकारी पैसे मिले। इनमें घासीटोला के हैंडपंप के पैसे भी थे। तिजिया ने अक्टूबर की बैठक में सरपंच से पैसे मांगे ताकि हैंडपंप का काम शुरू हो जाए। एक वार्ड के पंच रामदीन ने कहा, "तिजिया बाई तुम्हें ये सब काम करवाने में मुश्किल होगी। शहर से ठेकेदार लाना होगा। मैं शहर जाता रहता हूं, मैं ये काम करवा दूंगा।" तिजिया रामदीन की बात मान गई।

दो-तीन महीने हो गए पर हैंडपंप का काम शुरू नहीं हुआ। जब भी तिजिया रामदीन से इस के बारे में पूछती, वह कुछ बहाना बना देता।

पैसे का गलत इस्तेमाल

एक दिन तिजिया पानी भरने जा रही थी तब उसने रामदीन के घर के सामने लम्बे-लम्बे पाइप पड़े देखे। उसने रामदीन के पास जाकर पूछा, "क्यों भैया जी ये पाईप काहे के लिए आए हैं?" रामदीन ने अकड़कर जवाब दिया, "तुम्हें इससे क्या? कोई अपना हैंडपंप खुदवा रहा होगा।"

तिजिया को कुछ गड़बड़ लगी। चिनखीटोला के कुएं पर घासीटोला की कई औरतें मिल गईं। तिजिया ने उन्हें बताया कि वह अभी-अभी रामदीन के घर के सामने लम्बे-लम्बे पाईप देखकर आई है। "जब मैंने रामदीन से पूछा तो उसने अटपटा जवाब दिया। मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है" तिजिया ने कहा। एक औरत बोली, "चलो अपन सब खैरातीसिंह के यहां चलकर उनसे बात करते हैं।" सब औरतें तिजिया के साथ खैरातीसिंह के यहां गईं और उसे पूरा किस्सा सुनाया।

सरपंच खैरातीसिंह ने उनके सामने ही रामदीन को बुलवाकर उसे चेतावनी दी, "अगर दो दिन में काम शुरू नहीं हुआ तो पैसे लौटा देना। तिजिया ही हैंडपंप डलवा लेगी।"

दो दिन बाद घासीटोला में हैंडपंप का काम

शुरू हुआ। खुदाई करवाकर पाईप ज़मीन में उतारे गए। पर दो हफ्ते बाद फिर काम बंद हो गया।

घासीटोला में हैंडपंप लगने में देरी क्यों हुई? दो कारण समझाओ।

तिजिया, रामदीन, और खैरातीसिंह द्वारा कहे गए एक-एक वाक्य लिखो।

ग्राम सभा

घासीटोला के हैंडपंप का काम रुकने के बाद दो-तीन महीने और गुज़र गए। मार्च में **ग्राम सभा** की वार्षिक बैठक हुई। तिजिया ने सोचा कि अब ग्राम सभा में ही पंप के बारे में पूछना पड़ेगा। बैठक में ग्राम पंचायत के सभी गांवों (कनियाखेड़ी, पगांवा, नूनपुर, मानीगांव) के मतदाता आए। हर गांव और वार्ड के लोगों ने पंचायत से अपनी समस्याओं के बारे में पूछा।

घासीटोला के लोगों ने अपना हैंडपंप पूरा न होने पर बहुत शोर किया। तिजिया बाई ने कहा कि इतनी मुश्किल से तो पंप के पैसे आए थे, पर उस पंप का पानी आज तक किसी को नसीब नहीं हुआ। उसने यह भी कहा कि यदि पंद्रह दिन में पंप पूरा नहीं हुआ तो घासीटोला के लोग ज़िलाधीश के पास शिकायत करने जाएंगे। खैरातीसिंह ने आश्वासन दिया कि वह हैंडपंप का काम जल्दी पूरा कराएगा।

ग्राम सभा की बैठक के एक महीने बाद घासीटोला का हैंडपंप तैयार हो गया।

हर ग्राम पंचायत की एक ग्राम सभा होती है। ग्राम पंचायत क्षेत्र में रहने वाले सभी मतदाता उस ग्राम सभा के सदस्य होते हैं। ग्राम सभा की बैठक साल में कम से कम एक बार होनी चाहिए। ग्राम सभा के सामने ग्राम पंचायत का लेखा-जोखा और आने वाले साल की **अनुमानित** आमदनी और खर्च का **ब्यौरा** पेश होना चाहिए। ग्राम सभा के लोग ग्राम पंचायत के सदस्यों से सवाल पूछ सकते हैं।

कनियाखेड़ी ग्राम सभा के सदस्य कौन थे?

ग्राम सभा की बैठक कब-कब होनी चाहिए?

ग्राम सभा में घासीटोला के लोगों ने क्या किया?

• • • • • • • • • • •

अभ्यास के प्रश्न

1. "सार्वजनिक सुविधा" का क्या मतलब है? नीचे दी गई बातों में से कौन सी बातों को तुम "सार्वजनिक सुविधाओं" में शामिल करोगे? शाला, साईकिल, पुस्तक, अस्पताल, पानी की व्यवस्था, कपड़े, बाज़ार।
2. ग्राम पंचायत किस तरह से बनती है? इसके बारे में चार मुख्य बातें लिखो। ये बातें तुम्हें किस उप-शीर्षक के नीचे मिलेंगी?
3. ग्राम पंचायत क्या करती है और कौन-कौन से कर वसूल करती है, इनके बारे में पांच-पांच वाक्य ढूंढ़कर लिखो।
4. यदि तुम्हारे मोहल्ले में नालियां नहीं हैं और गंदा पानी सड़कों पर बहता है, तो तुम क्या करोगे? अपने शब्दों में लिखो।
5. इस पाठ में कई जगह जनपद पंचायत का ज़िक्र हुआ है। पता करो जनपद पंचायत क्या है? यह कैसे बनती है? उसके सदस्य कौन हैं?
6. ग्राम पंचायत के सामने क्या-क्या समस्याएं आती हैं? उन्हें सुलझाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?
7. गलत वाक्यों को सुधार कर लिखो :

(क) ग्राम पंचायत का सचिव गांव के लोगों द्वारा चुना जाता है।

(ख) किसी भी ग्राम पंचायत के सरपंच का महिला होना ज़रूरी है।

(ग) पंचों के चुनाव में पंचायत क्षेत्र में रहने वाला कोई भी व्यक्ति वोट डाल सकता है।

(घ) पटवारी नहीं चाहता था कि लखिया वोट डाले; इसलिए उसने उसका नाम नहीं लिखा।

(ङ) एक ग्राम पंचायत में कम से कम तीन गांव होते हैं।

4. नगरों में सुविधाओं का प्रबंध

गांवों में पानी, सड़क आदि की व्यवस्था कैसे होती है यह तुमने पिछले पाठ में पढ़ा। गांव और शहर में क्या-क्या अंतर हैं? शहरों में किन सुविधाओं की ज़रूरत पड़ती है? इन सुविधाओं का प्रबन्ध कैसे होता है - आपस में चर्चा करो।

रहमत अली और इमरान अमरबोर आए

इमरान, अपने पिता रहमत अली के साथ बस में अमरबोर जा रहा था। अमरबोर कनियाखेड़ी के पास एक कस्बा (छोटा शहर) है, जिसकी आबादी करीब तीस-चालीस हज़ार है। इस कस्बे में इमरान के चाचा हबीब रहते हैं। हबीब चाचा की बेटी की शादी है। शादी में शरीक होने के लिए ही इमरान और रहमत अली अमरबोर जा रहे हैं।

अमरबोर शहर दूर से दिखने लगा था। अचानक शहर आने से पहले ही बस रुक गई। उसे रोकने के लिए किसी ने एक लम्बा बांस सा गिराया था। कंडक्टर दौड़कर गया और पास बनी एक झोपड़ी में कुछ पैसे चुका कर आया। सड़क के एक किनारे पर खड़े एक आदमी ने बांस ऊपर किया और बस फिर शहर के अंदर चल दी। इमरान पहली बार शहर आया था। उसे ये सब नया-नया और कुछ अजीब सा लग रहा था। उसने अपने पिता से पूछा "अब्बा, उस आदमी ने अपनी बस क्यों रोकी? और कंडक्टर ने वहां पैसे क्यों चुकाए?"

शहर में नाका

"ये अमरबोर की नगरपालिका का **नाका** था। सवारी लेकर जो भी वाहन गुज़रता है जैसे बस या टेम्पो, उसे नगरपालिका को 'यात्री कर' या यात्री टैक्स चुकाना पड़ता है।" रहमत अली ने जवाब दिया।
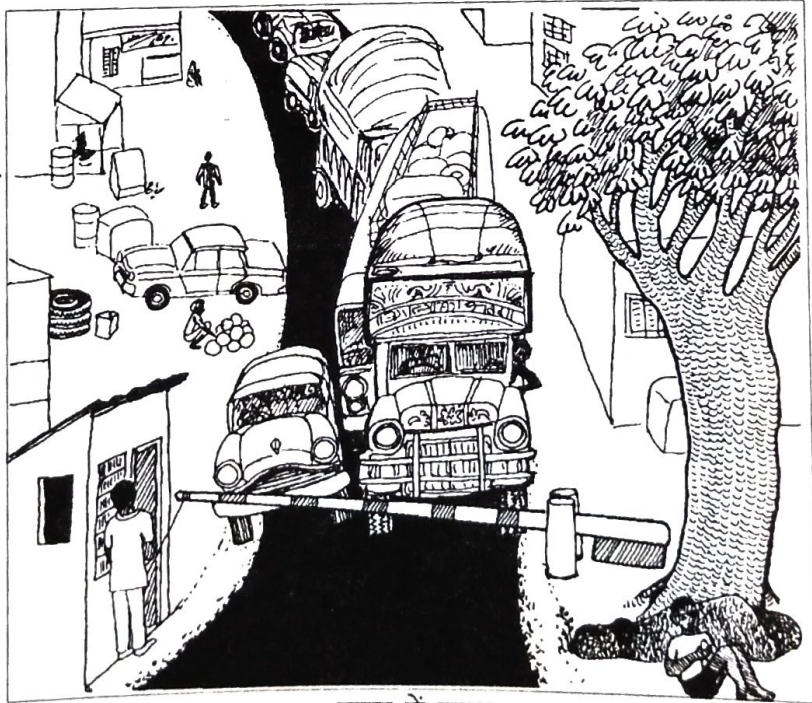
"ये नगरपालिका क्या है?" इमरान ने फिर पूछा। रहमत अली ने समझाया, "नगरपालिका ग्राम पंचायत जैसी होती है। जैसे अपनी ग्राम पंचायत गांव में सफाई, पीने का पानी, सड़क, पुल, रपटे आदि की देख-रेख करती है, वैसे ही नगरपालिका शहर में पीने के पानी, सफाई, सड़क आदि की देख-रेख का काम करती है।"

इतने में अमरबोर का बस अड्डा आ गया। इमरान और रहमत अली ने बस से उतर कर रिक्शा लिया और घर की ओर चल दिये।

नगर पालिका

तुमने पिछले पाठ में ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा था। ग्राम पंचायत में हर **वार्ड** के लोग अपना-अपना वार्ड सदस्य चुनते हैं। ये सदस्य ग्राम पंचायत का काम करते हैं। उसी तरह नगरपालिका में भी वार्ड होते हैं। हर वार्ड से एक सदस्य चुना जाता है।

यह समझ लो कि नगरपालिका एक तरह से शहर की पंचायत ही है। चूंकि शहर या कस्बे में गांव से बहुत अधिक लोग रहते हैं तो नगरपालिका के सदस्य भी अधिक होते हैं।

दस हज़ार (10,000) लोगों से अधिक जनसंख्या वाले शहर में नगरपालिका बनती है। एक नगरपालिका में 15 से 60 सदस्य होते हैं।

एक लाख (1,00,000) से अधिक लोगों के शहर में नगरनिगम बनता है। नगरनिगम में 50 से 150 सदस्य होते हैं।
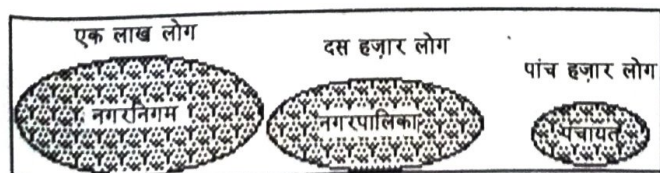
अमरबोर की नगरपालिका

सड़कें

रिक्शे से घर जाते समय, इमरान बड़ी उत्सुकता से आसपास देख रहा था।

शहर में डामर की पक्की सड़कें थीं, गांव की धूल भरी सड़कों से काफी अलग। लेकिन सड़क पर कई जगह बड़े-बड़े गड्ढे भी थे। "धीरे चलना भैया" रहमत अली ने रिक्शे वाले से कहा, "तुम्हारे शहर की सड़कें बहुत खराब हैं। नगरपालिका इन्हें सुधारती क्यों नहीं?" रहमत अली ने बातों-बातों में पूछा।

"क्या करें भैया? पहले जो नगरपालिका के **मेम्बर** थे, उन्होंने कई काम किए - एक बगीचा बनवाया, कई पक्की दुकानें भी बनवाईं। पर न तो ये सड़कें ठीक करवाईं, न पानी की समस्या पर कुछ ध्यान दिया। लोगों ने कहा, 'जब पानी की इतनी दिक्कत है और सड़कों पर इतने गड्ढे हैं तो दुकानों और बगीचों का क्या मतलब?'

जब दुबारा नगरपालिका के चुनाव हुए, तो पुराने मेम्बरों के साथ-साथ कई नए लोग मेम्बर बनने के लिए चुनाव में खड़े हुए। हर उम्मीदवार कहता, 'हम पानी की पूरी व्यवस्था ठीक कर देंगे।' लोगों ने नए उम्मीदवारों को बड़ी उम्मीद से वोट दिए। न सड़कें ठीक हुईं, न पानी की व्यवस्था।" रिक्शे वाला बताता रहा।

इतने में हबीब का घर आ गया। रहमत अली ने रिक्शे वाले को पैसे दिए। इमरान 'मुन्नू-मुन्नू' करता हुआ घर के अंदर घुस गया। मुन्नू हबीब चाचा का लड़का था। उसी से इमरान की पटती

थी। दोनों बाहर खेलने निकल गए।

पानी

थोड़ी देर बाद मुन्नू की अम्मा ने आवाज़ दी, "मुन्नू ओ मुन्नू। बेटा, नल आने वाला होगा। बाल्टी और गंज नल के पास तो रख आ। आज तुम और इमरान पानी भर लेना।"

इमरान आश्चर्य से सोचने लगा कि इन नलों में पानी कहां से और कैसे आता है? उसके गांव में तो नल नहीं हैं। सभी लोग कुएं से ही पानी भरते हैं।

वह मुन्नू के साथ पानी भरने गया। कई लोग बाल्टी, गंज लेकर नल के सामने **कतार** में खड़े थे। मुन्नू और इमरान भी खड़े हो गए। करीब छह बजे नल चालू हो गया। एक-एक करके सबने अपने-अपने बर्तन भरे। कुछ औरतें वहीं अपने बर्तन मांज रहीं थीं। मुन्नू और इमरान की बारी आई तो उन्होंने भी अपनी बाल्टियां और गंज भरा। घर ले जाकर बड़े टांके में डाल दी। फिर नल पर जाकर और पानी भरा। करीब एक घंटे इसी तरह दोनों पानी भरते रहे। फिर पानी धीमा हुआ और सात बजे बंद हो गया।

"बस इतनी देर पानी आता है यहां?" इमरान ने मुन्नू से पूछा।

"हां बस एक घंटा शाम और एक घंटा सुबह पानी आता है। उसी में सब काम करना पड़ता है। शाम को टंकी भरते हैं। सुबह नहाने-धोने बर्तन-कपड़े में ही पानी बंद हो जाता है।" मुन्नू ने बताया।

"हमारे गांव में तो मोहल्ले में ही कुंआ है जब चाहो पानी भर लो।" इमरान ने मुन्नू से कहा।

पानी भरना
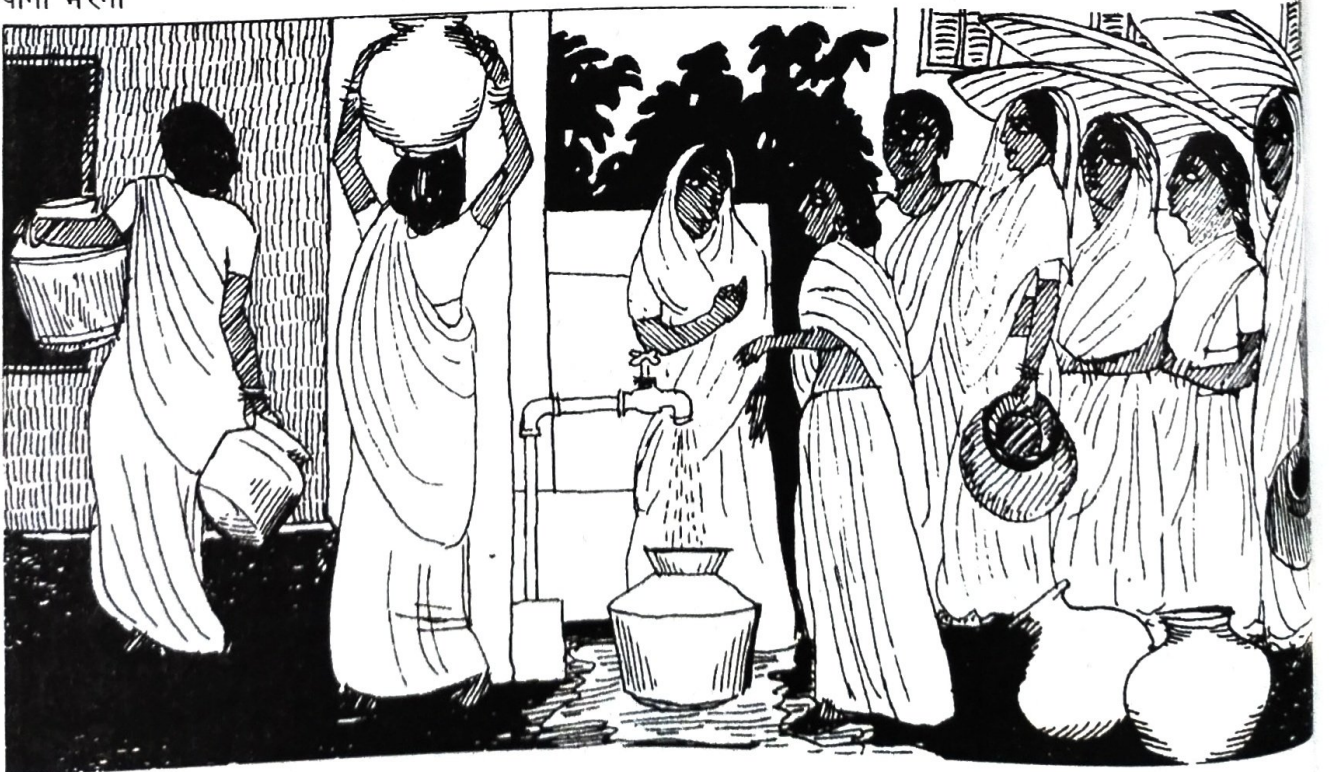
शाम को जब सब लोग खाना खाने बैठे तो इमरान ने अपने चाचा से पूछा, "ये तो बताइए, छोटे अब्बा, इन नलों में पानी आता कहां से है? और कैसे आता है?"

इमरान के चाचा उसे बताने लगे, "शहर में दो नलकूप, यानी बड़े गहरे पाईप वाले कुएं हैं। इन नलकूपों में मोटरें लगी हैं। जिनसे पानी नलकूप के ऊपर बनी बड़ी-बड़ी टंकियां में भर जाता है। इन टंकियों से हर मोहल्ले के लिए ज़मीन के नीचे पाईप बिछे हैं। जब टंकी भर जाती है तो इन पाईपों में पानी भेजने के **वाल्व** खोल दिए जाते हैं। वाल्व खोलने पर टंकी से पानी नीचे आकर इन पाईपों में बहने लगता है। इन पाइपों में ही जगह-जगह नल लगे हैं। इस तरह पानी हर मोहल्ले के नलों में पहुंचता है।"

"पर ये सब काम करता कौन है?" इमरान ने फिर पूछा।

"हमारे यहां एक नगरपालिका है। नगरपालिका के कुछ **कर्मचारी** ये काम करते हैं" चाचा ने कहा।

हमने पिछले पाठ में देखा था कि गांवों में सड़क, पीने का पानी, साफ सफाई आदि सार्वजनिक सुविधाओं का प्रबन्ध करने के लिए ग्राम पंचायत बनाई जाती है। शहरों और कस्बों में भी पानी, बिजली, सड़क साफ सफाई जैसी सार्वजनिक सुविधाओ की ज़रूरत पड़ती है। इन सब के लिए शहरों में नगरपालिका या नगर निगम बनाई जाती है।

तुमने अमरबोर के बारे में जितना पढ़ा, इमरान के पिताजी और चाचा ने जितना बताया, उसमें नगरपालिका के क्या-क्या काम समझ में आए?

नीचे दिए गए खाली स्थान भरो -

10,000 से अधिक जनसंख्या वाले शहर में ——— बनती है।

1,00,000 से अधिक लोगों के शहर में ——— बनती है।

नगरपालिका और नगरनिगम के सदस्य हर ——— से चुने जाते हैं।

नगरपालिका में ——— सदस्य होते हैं और नगरनिगम में ——— सदस्य होते हैं।

सड़क की बत्ती

ये सब बातें करते-करते अंधेरा होने लगा था। बाहर सड़क के किनारे लगे खम्भों पर बिजली के बल्ब चमचमाने लगे थे। हबीब चाचा ने बताया कि इन बिजली के खम्भों की देखरेख करना, शाम को बिजली जलाना और सुबह बंद करना, ये सब काम भी नगरपालिका का ही है।

नगरपालिका और नगरनिगम के नियम

नगरपालिका और नगरनिगम कैसे बनते हैं?

नगरपालिका व नगरनिगम के सदस्य कैसे बनते हैं? वे क्या-क्या काम करते हैं? इसके नियम कानून हैं। ये नियम कानून **राज्य की सरकार** बनाती है।

1. नगरपालिका या नगरनिगम 5 सालों के लिए बनाई जाती हैं।

2. शहर में रहने वाला कोई भी व्यक्ति जिसकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हो, नगरपालिका या नगरनिगम का सदस्य बनने के लिए चुनाव लड़ सकता है।

3. हर नगरपालिका या नगरनिगम में कम से कम एक तिहाई महिला मेम्बर और कुछ अनुसूचित जाति के मेम्बर होते हैं।

4. नगरपालिका का एक **अध्यक्ष** होता है। वह नगरपालिका का सदस्य होता है। अध्यक्ष नगरपालिका के अन्य सदस्यों द्वारा चुना जाता है। इसके कुछ पद भी आरक्षित होते है।

5. नगरनिगम का भी अध्यक्ष होता है जो महापौर या मेयर कहलाता है। महापौर भी नगरनिगम के सदस्यों द्वारा चुना जाता है।

6. नगरपालिका अध्यक्ष और नगरनिगम महापौर ढ़ाई साल के लिए ही चुने जाते हैं।

7. हर नगरपालिका का एक मुख्य **कार्यपालिक अधिकारी** होता है और हर नगरनिगम का एक **आयुक्त**। मुख्य कार्यपालिक अधिकारी और आयुक्त जनता द्वारा नहीं चुने जाते, - सरकार द्वारा **नियुक्त** किए जाते हैं। वे ही नगरपालिका और नगरनिगम के कामों की देखरेख करते हैं और लेखा-जोखा रखते हैं।

8. शहर में रहने वाले वे सभी लोग जिनकी उम्र 18 वर्ष से अधिक हैं, नगरपालिका व नगरनिगम के सदस्यों के चुनाव में वोट डाल सकते हैं।

9. यदि किसी वजह से नगरपालिका या नगरनिगम भंग कर दी जाए तो सरकार द्वारा नियुक्त किया गया प्रशासक नगरपालिका/निगम का काम संभालता है।

नगरपालिका/नगरनिगम के मुख्य काम

अमरबोर की कहानी में जितने काम तुमने पढ़े, उनके अलावा नगरपालिका या नगरनिगम ये काम भी करती हैं:-

– शहर की साफ सफाई करवाना, कचरा फिकवाना।

– बाज़ार व सब्ज़ी-बाज़ार की जगह और उसकी सफाई की व्यवस्था करना।

– कांजी हाउस - आवारा मवेशियों की देख रेख का प्रबंध।

– शहर में होने वाले जन्म और मृत्यु का लेखा-जोखा रखना।

– जब शहर में कोई भी बीमारी फैलती है तो उसे फैलने से रोकने के लिए टीकाकरण, पानी की सफाई आदि का काम करना।

– कुछ नगरपालिकाएं पुस्तकालय चलाते हैं, शालाभवन, बाग़, बग़ीचे आदि बनवाते हैं।

नगरपालिका या नगरनिगम की समितियां होती हैं जो ये अलग-अलग काम करती हैं – जैसे पानी व्यवस्था की समिति, सफाई व्यवस्था की समिति, स्वास्थ्य समिति आदि। अलग-अलग मेम्बर इन समितियों के सदस्य होते हैं। ये समितियां ही कामों के बारे में निर्णय लेती हैं।

नगरपालिका और नगरनिगम को पैसे कहां से मिलते हैं?

1. शहर में जिनका निजी मकान या ज़मीन है उन्हें मकान या ज़मीन पर कर देना पड़ता है। यह कर उस शहर की नगरपालिका या नगरनिगम इकट्ठा करती है।

2. पानी, सड़कों की बिजली और शहर की सफाई के लिए लोगों से महीने का टैक्स या कर वसूल किया जाता है।

3. शहर में जो दुकान लगाता है, उसे अपनी दुकान पर टैक्स भरना पड़ता है।

4. शहर में आने वाली सवारी गाड़ियां, जिनमें लोग पैसे देकर सफर करते हैं, जैसे बस, टेम्पो, जीप, उनसे नगरपालिका या नगरनिगम यात्री कर वसूल करती है। यह कर उस शहर से या उस शहर तक सफर करने वाले हर यात्री पर लिया जाता है।

5. इन करों के अलावा नगरपालिका या नगरनिगम – किसी भी मनोरंजन पर टैक्स या कर ले सकती है। (जैसे फिल्म, सर्कस, नौटंकी आदि पर)

6. नगरपालिका या नगर निगम को सरकार से अनुदान भी मिलता है।

सही विकल्प चुनो–

नगरपालिका का अध्यक्ष या नगरनिगम का महापौर ——— पांच साल/1 एक साल/ ढ़ाई साल के लिए चुना जाता है।

शहर में रहने वाले ———18 वर्ष/25 वर्ष/21 वर्ष से ऊपर उम्र के लोग नगरपालिका या नगरनिगम के सदस्य बनने के लिए चुनाव लड़ सकते हैं।

नगरपालिका और नगरनिगम ——— शहर की सड़कें बनवाने/एक जगह से दूसरी जगह बस की व्यवस्था करने/राज्य की सड़कें बनवाने का काम करती हैं।

नगरपालिका और नगर निगम को——— -चीज़ें बेचकर/लोगों की आमदनी पर कर लेकर/पानी और संडास पर टैक्स लेकर। पैसे मिलते हैं।

गुरुजी की मदद से पता करो और इन प्रश्नों के उत्तर दो।

तुम्हारे ज़िले में कहां-कहां नगरपालिकाएं हैं? कहां पर नगरनिगम हैं?

मध्यप्रदेश में कहां-कहां नगरनिगम हैं?

यदि तुम शहर या कस्बे में रहते हो तो पता करो–

क्या तुम्हारे यहां नगरपालिका या नगरनिगम है?

उसका अध्यक्ष या महापौर कौन है?

पानी के नल पर कितने पैसे वसूल किए जाते हैं?

नगरपालिका के कर्मचारी नाली साफ करने और कचरा उठाने कब-कब आते हैं?

अमरबोर में पानी की समस्या

अमरबोर में पानी की बड़ी समस्या थी। नियमित रूप से नल नहीं आते थे। कभी-कभी तीन-तीन दिन तक पानी नहीं आता। इस समस्या से अमरबोर के लोग बहुत परेशान थे।

कर्मचारी पानी टैक्स की पर्ची देने आया।

एक दिन नगरपालिका से एक कर्मचारी सुभाष वार्ड में आया। वह मोहल्ले के लोगों को पानी और संडास का टैक्स और सड़क की बिजली के टैक्स की पर्ची देने आया था।

दो दिनों से पानी नहीं आ रहा था। कुछ लोग नगरपालिका के उस कर्मचारी पर बिगड़ पड़े, "टैक्स की पर्ची देने तो चले आते हो पर पानी तो हर कभी बंद कर देते हो। आज तीसरे दिन भी नल नहीं आया। क्यों दें हम टैक्स?"

नगरपालिका का कर्मचारी कुछ सिटपिटाया, फिर बोला, "टैक्स तो आपको देना ही पड़ेगा, नहीं तो आपके नल कट जाएंगे। रही बात पानी

नहीं आने की, ये बात आप अपने वार्ड के मेम्बर मदनलालजी से कहिए। वे नगरपालिका के पानी समिति के सदस्य भी हैं। वे यह समस्या हल कर सकते हैं।" "अरे मदनलालजी को क्या फिक्र है। उन्हें तो पता भी नहीं चलता, कब पानी आया कब नहीं। उनके यहां निजी कुआं जो है।"

मुन्नीबाई नाम की एक महिला यह सब सुनकर कहने लगी, "इस बेचारे आदमी पर बिगड़कर कुछ न होगा। यह तो नगरपालिका का कर्मचारी ही है। अगर यह समस्या सुलझानी है तो आपने वार्ड के मेंबर मदनलालजी से मिलना होगा। आखिर उसे मेंबर इसीलिए तो चुना है।"

सुभाष वार्ड के लोग मेम्बर के पास गए

सब लोग तो नहीं तैयार हुए, पर करीब 15-20 लोग मुन्नीबाई के साथ खाली बाल्टियां लेकर मदनलाल के यहां पहुंच गए। थोड़ी देर बाद मदनलाल बाहर आया। इतने सारे लोगों को खाली बाल्टियां लेकर खड़ा देख वह थोड़ा ठिठका। पूछा, "क्या बात है?" मुन्नीबाई ने कहा, "हमारे मोहल्ले में हर कुछ दिनों में नल ही नहीं आता। आज तीन दिनों से पानी नहीं आ रहा है। हम लोगों को बहुत दिक्कत होती है। आप मेम्बर हैं, आपको कुछ करना होगा। आप अगर पानी नहीं दिलवाएंगे तो हमारे मोहल्ले के सभी लोग आपके घर से पानी भरेंगे।"

मदनलाल लोगों का रवैया देखकर थोड़ा घबराया। बोला, "अच्छा रुको। आज के लिए टैंकर में पानी भिजवाने की कोशिश करता हूं। असल में ये पानी की समस्या ज़्यादा इसलिए हो रही है क्योंकि पम्प पुराने हो गए हैं। बार-बार खराब होते रहते हैं। उन्हें बदला जाना है। पर बदलने के लिए नगरपालिका के पास पैसे नहीं है। तीन साल से हम लोग सरकार से पैसा मांग रहे हैं, पर मिलता ही नहीं। अभी पम्प सुधरवाने भेजा है। कल तक नल आ जाएगा।"

कई महीने गुज़र गए। कई बार पानी नहीं आया। कभी टैंकर भेजे जाते, कभी टैंकर नहीं भी आते। अमरबोर के सभी लोग ऐसे हालातों से काफी परेशान रहने लगे। औरतें ज़्यादा परेशान होतीं, चूंकि उन्हीं को पानी भरना पड़ता था। जिनके पास पैसे थे, उन्होंने कुएं खुदवा कर मोटर लगवा लीं, या फिर हैंडपम्प लगवा लिए। पर अधिकांश लोगों की समस्या बनी रही।

अमरबोर के लोग अध्यक्ष के पास गए

मुन्नीबाई को पता था कि समस्या तभी हल

होगी जब नए पम्प के लिए पैसे आएंगे और इसके लिए लोगों को इकट्ठा होना होगा और कई बार नगर पालिका सदस्य और अध्यक्ष के पास जाना होगा। मुन्नीबाई अपने मोहल्ले के कई लोगों से मिली। पहले तो लोगों ने कहा 'हम क्या कर सकते हैं? हमारी कौन सुनता है?' पर जब कई बार पानी नहीं आया, तब कई औरतें मुन्नीबाई के साथ हो लीं।

मुन्नीबाई के मोहल्ले में ही नहीं, आसपास के मोहल्लों से भी कई लोग मिलकर नगरपालिका के अध्यक्ष के पास गए। मुन्नीबाई ने कहा, "हम, रोज़-रोज़ पानी की किल्लत से ऊब गए हैं। हमें पता है कि यहाँ के पम्प बदलवाने की ज़रूरत है। हम सरकार के लिए अर्ज़ी देने आए हैं। इस अर्ज़ी पर 500 लोगों के हस्ताक्षर हैं। आप जब सरकार को अनुदान के लिए लिखें तो हमारी अर्ज़ी भी साथ भेज दें। कम से कम उन्हें पता तो चले कि यहां के लोग कितने परेशान हो रहे हैं। अगर अनुदान की अर्ज़ी की एक प्रति हमें मिल सकती है तो हम ज़िलाधीश और विधायक से भी मिलने की कोशिश करेंगे।"

नगरपालिका का अध्यक्ष मुन्नीबाई पर खीझ गया, "हमें सिखाने आई हो? हम कई बार सरकार को लिख चुके हैं। हमारी नहीं सुनते तो क्या तुम्हारी सुनेंगे?"

मुन्नीबाई ने अपना धैर्य बनाए रखा। बोली, "पानी की ये दिक्कत पिछले तीन सालों से चली आ रही है और इससे हम बहुत परेशान हैं। हम आपकी मुश्किल भी समझते हैं। इसीलिए तो आए हैं। हम विधायक और ज़िलाधीश को भी अपनी मुश्किल समझाएंगे। उन्हें सुनना ही पड़ेगा। आखिर सरकार भी तो हमारे ही वोटों से बनती है। विधायक भी जानता है कि यदि पानी की समस्या हल नहीं हुई तो अगले चुनाव में लोग उसे वोट नहीं देंगे।"

अध्यक्ष का गुस्सा कुछ ठंडा हुआ। उसने अर्ज़ी रख ली। मुन्नीबाई ने और लोगों को इकट्ठा किया और विधायक के पास भी गई। ज़िलाध्यक्ष को भी अर्ज़ी भेजी।

अमरबोर की समस्या हल हुई

तीन महीनों के बाद नए पम्प के लिए नगरपालिका के पास पैसे आए। अमरबोर में रोज़ पानी आने लगा। इस तरह अमरबोर में पानी की समस्या हल हुई। सब लोग मुन्नीबाई को आज भी याद करते हैं।

अब अमरबोर के लोग शहर की कोई भी समस्या सुलझाने के लिए नगरपालिका पहुंच जाते हैं। थोड़े बहुत पैसों की ज़रूरत हो तो चंदा करके इकट्ठा भी कर लेते हैं। मेम्बरों के साथ सरकार को भी अर्ज़ी लिखते हैं।

अमरबोर में क्या समस्या थी?

नगर पालिका को किस बात की दिक्कत थी?

अमरबोर की समस्या सुलझाने के लिए मुन्नीबाई ने क्या-क्या किया?

प्रतिनिधि

पिछले पाठ में हमने ग्राम पंचायत के बारे में पढ़ा था। नगर और गांव के लोग समय-समय पर अपने मोहल्लों से एक-एक व्यक्ति चुनते हैं। इन चुने

हुए 'प्रतिनिधियों' से बनती हैं नगरपालिका, ग्राम पंचायत या नगरनिगम। **प्रतिनिधि** बनाने का मतलब यह है कि लोग जिन्हें चुनते हैं, उन्हें कई ज़िम्मेदारियां दे रहे हैं जैसे, मोहल्ले की समस्याओं को दूर करना, सड़क, पानी की व्यवस्था करना आदि। इस तरह आमतौर से गांवों और शहरों में **सुविधाओं** का **प्रबन्ध** चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा होता है।

प्रशासक

कुछ जगहों की नगरपालिका या नगरनिगम के विरुद्ध उस शहर के लोग शिकायत करते हैं। शिकायत काम न करने के बारे में हो सकती है या पैसों के दुरुपयोग के बारे में। राज्य की सरकार इन शिकायतों के बारे में जांच करती है। यदि जांच में शिकायत सही निकली तो राज्य सरकार उस नगरपालिका या नगर-निगम को **भंग** कर सकती हैं। कभी-कभी दूसरे कारणों से भी राज्य सरकार द्वारा नगरपालिका भंग की जा सकती है।

भंग की गई नगरपालिका या नगरनिगम का काम संभालने के लिए राज्य सरकार एक **प्रशासक** नियुक्त करती है। तब प्रशासक ही नगरपालिका या नगरनिगम के सभी कामों पर **निर्णय** लेता है, उनकी व्यवस्था करता है। पूरा काम नगरपालिका के वही कर्मचारी करते हैं जो पहले कर रहे थे। फर्क यह है कि इन कामों का निर्णय नगरपालिका की समितियां नहीं लेतीं – प्रशासक लेता है।

कई जगहों पर बहुत सालों तक नगरपालिका या नगरनिगम के चुनाव नहीं होते। पुरानी नगरपालिका या नगरनिगम का समय खत्म हो जाता है, तब भी वहां प्रशासक ही नगरपालिका या नगरनिगम का काम संभालता है।

अभ्यास के प्रश्न

1. नगरपालिका और नगरनिगम के कम से कम 10 कामों के बारे में लिखो। इनकी जानकारी तुम्हें पाठ के किन उप-शीर्षकों के नीचे मिली?
2. नगरपालिका या नगरनिगम कैसे बनाई जाती है? अपने शब्दों में लिखो।
3. नगरपालिका और ग्राम पंचायत में क्या-क्या अंतर हैं?
4. सही विकल्प चुनो-
   क) अमरबोर में पानी का प्रबन्ध करना .... (नगरनिगम / पंचायत / व्यापारी / नगरपालिका) का काम है।
   ख) अमरबोर की मुख्य स्मस्या यह थी कि वहां. ..... (सफाई नहीं होती थी / पानी ठीक से नहीं मिलता था / लोग बहुत थे / महंगाई अधिक थी)।
   ग) इन में से कौन नगरपालिका का सदस्य नहीं बन सकता ...... (शहर की 22 वर्षीय महिला / गांव का बुज़ुर्ग / शहर का व्यापारी)।
5. नगर पालिका को सुविधाओं के प्रबन्ध के लिए पैसे कहां-कहां से मिलते हैं?
6. तुम शहर में रहते हो। तुम्हारे शहर में कई जगह गंदगी पड़ी रहती है और कई दिनों ठीक नहीं हुई है। तुम कैसी चिट्ठी लिखोगे और किन्हें लिखोगे? लिख कर बताओ।

5. किसान और मज़दूर

इस पाठ में छोटे बड़े और मध्यम किसानों और मज़दूरों के बारे में चर्चा की गई है। तुम इन लोगों के बारे में क्या जानते हो - कक्षा में चर्चा करो।

तुमने भूगोल में मैदान, पहाड़ और पठार के गांवों के बारे में पढ़ा था, और वहां की खेती-किसानी के बारे में जाना था। वह अलग-अलग गांवों की बात थी। इस पाठ में हम एक गांव में जाकर वहां के छोटे-बड़े किसानों और मज़दूरों से आजकल की किसानी के बारे में चर्चा करेंगे।

पिछले कुछ सालों में खेती के तरीकों में कई बदलाव आए हैं। पहले कुएं से पानी निकालने के लिए मोठ होते थे जिससे थोड़ी सी सिंचाई हो पाती थी। अब नहरों से हज़ारों एकड़ की सिंचाई हो जाती है। कुएं में मोटर लगा कर पानी निकाला जाता है। इस तरह बहुत सारी ज़मीन सिंचित हो गई है।

पहले जो बीज बोए जाते थे, उनकी उपज कम होती थी। किसान खेतों में गोबर की खाद डालते थे। अब संकर बीज, रासायनिक खाद और दवा का उपयोग होने लगा है। पहले हल-बखर, बैलों और मज़दूरों की मेहनत से पलेवा, बोनी, दावन, उड़ावनी की जाती थी। अब कई जगहों पर ट्रैक्टर और थ्रेशर जैसी मशीनों से काम किए जाने लगे हैं। कटाई के लिए हार्वेस्टर भी नज़र आ रहे हैं।

नई खेती की कुछ खास बातें है। इसमें कई चीज़ों का इन्तज़ाम एक साथ करना ज़रूरी होता है।
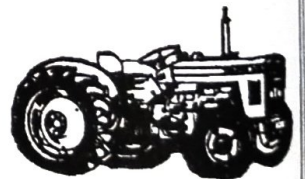
सिंचाई के बगैर नए बीजों का उपयोग नहीं किया जा सकता। इन बीजों से फसल उगाने के लिए सही मात्रा में **रासायनिक खाद** डालना ज़रूरी है।नए बीजों की फसलों में बीमारियां भी बहुत लगती हैं, इसलिए समय-समय पर **दवा** छिड़कना भी ज़रूरी हो जाता है।

किसानों को ये नए बीज, खाद व दवा खरीद कर ही डालने पड़ते हैं। पहले घर के बीज व गोबर की खाद से ही खेती का काम चल जाता था।

इन नए तरीकों से उपज तो बढ़ती है, लेकिन लंबे समय तक इनका उपयोग करने से मिट्टी बिगड़ सकती है। इस समस्या के बारे में तुम अगली कक्षाओं में पढ़ोगे।

> ***गुरुजी के साथ चर्चा करो कि तुम्हारे आस-पास की खेती में किन-किन बातों में बदलाव आए हैं?***
>
> ***नई खेती में पैसे का खर्च ज़्यादा क्यों होता है?***

आओ इस पाठ में देखें, खेती के इन नए तरीकों का अलग-अलग किसानों पर क्या असर पड़ रहा है।

रामू - एक मध्यम किसान

एक दिन हम भेड़ागांव गए। कोटगांव की तरह भेड़ागांव भी एक मैदानी गांव है। लेकिन यहां अधिकतर नहरों से सिंचाई होती है। जब हम भेड़ागांव पहुंचे तब सोयाबीन की कटाई शुरू हो चुकी थी। हमें देख कर दूर से रामू ने बुलाया।

"आओ पानी पीयो। थक गए होगे।"

रामू से हमारी अच्छी पहचान थी। हम उसके खेत की ओर चल दिए। फसल काफी घनी लग रही थी। इस बार दाने भी अच्छे आए थे। खेत पर बने टपरे की ओर चलते हुए हमने कहा "इस साल तो तुम्हारी फसल खूब अच्छी लग रही है। इस बार 30-35 बोरे सोयाबीन तो हो जाएगी।"

"हां, इस बार **सोसाइटी** से उधार मिल गया था। इसलिए मैं सही समय पर और ठीक मात्रा में खाद और दवा दोनों डाल पाया हूं। इसलिए फसल भी बढ़िया हुई है।" रामू ने उत्तर दिया।

रामू के पास 5 एकड़ ज़मीन है और एक बैलजोड़ी। जब से भेड़ागांव में नहरों से सिंचाई शुरू हुई है, वह साल में दो फसल ले लेता है। बरसात में सोयाबीन और ठण्ड में गेहूं व चने की फसल लेता है। सिंचाई और रासायनिक खाद से उपज काफी बढ़ गई है।

रामू, उसकी पत्नी और तीन बच्चे खेत पर काम कर रहे थे। उन के अलावा दो मज़दूर भी थे। रामू की पत्नी काम छोड़कर हमारी तरफ आई। उसने हमें पानी पिलाते हुए पूछा, "क्यों आज

कैसे आना हुआ?"

हमने कहा, "हम तो वैसे ही मिलने आए थे। आपका काम कैसा चल रहा है?" रामू की पत्नी बोली, "अभी तो कटाई ही पूरी नहीं हुई है। फिर कहीं से थ्रेशर किराए पर लेकर **दावन** कराना पड़ेगा। इस बार दो ही मज़दूर मिल पाए हैं इसलिए हर काम देर से हो रहा है। और बेचने भी तुरन्त जाना है।"

बोनी, पलेवा, निंदाई-गुडाई के समय तो रामू जैसे मध्यम किसानों को मज़दूरों की ज़रूरत नहीं पड़ती है। परिवार के सभी लोग अपने खेत पर काम करते हैं। परन्तु सोयाबीन और गेहूं की कटाई के समय पांच-छह मज़दूरों की ज़रूरत पड़ती है।

कटाई के समय मज़दूरों की ज़रूरत बढ़ जाती है। इसलिये मज़दूरी भी बढ़ जाती है। रामू जैसे मध्यम किसान उस समय इतने पैसे नहीं दे पाते। इसलिए उन्हें कम मज़दूरों से काम चलाना पड़ता है।

रामू को फसल बेचने की जल्दी है। उसने कहा, "मुझे सोयाबीन बेचना है। सोसाइटी से खाद-बीज के लिए जो कर्ज़ लिया था, उसे लौटाने के लिए फसल तुरन्त बेचनी है। यह कर्ज़ नहीं लौटाया तो अगली फसल के लिए कर्ज़ नहीं मिलेगा।"

रामू जैसे मध्यम किसानों के पास थोड़ी-सी ज़मीन होती है। इसमें उनके परिवार का **गुज़ारा** हो जाता है। उन्हें किसी दूसरे के खेत पर मज़दूरी करने के लिए नहीं जाना पड़ता है। परन्तु उनके पास इतने पैसे नहीं होते कि वे अपने ही पैसों से खाद-बीज-दवा आदि खरीद कर डाल पाएं। उन्हें हर साल सोसाइटी या **साहूकार** से उधार लेना पड़ता है। तभी वे सही मात्रा में खाद-दवा आदि डाल पाते हैं। और तभी उनकी फसल अच्छी हो पाती है।

बातें करते करते कुछ समय हो गया था। हमें और लोगों से भी मिलना था। रामू को अपनी कटाई खत्म करने की जल्दी थी। तो हम वहां से गांव की ओर निकल पड़े।

रामू ने फसल अच्छी होने का क्या कारण बताया?

इनमें से गलत वाक्यों को चुनकर सुधारो

-रामू का परिवार दूसरों के यहां मज़दूरी नहीं करता है।

- खाद-बीज के लिए रामू ने कर्ज़ लिया था।

- अपनी खेती से रामू का गुज़ारा नहीं होता है इसलिए उसे मज़दूरी भी करनी पड़ती है।

यदि तुम गांव में रहते हो:

तुम्हारे गांव में कम से कम कितने एकड़ ज़मीन वाले किसान परिवारों का अपनी खेती से गुज़ारा हो जाता है और उन्हें दूसरों के यहां मज़दूरी नहीं करनी पड़ती? सिंचित और असिंचित, दोनों के लिए बताओ। छह सात लोगों का एक परिवार मानो।)

गंगू – एक छोटा किसान

रास्ते में हमें गंगू मिल गया। वह अपनी फसल बेच कर शहर से लौट रहा था। हम गंगू के साथ बैलगाड़ी में बैठ कर गांव की ओर चले। रास्ते में गंगू से बातें होने लगीं।

"कहां से चले आ रहे हो?" हमने गंगू से पूछा।

"सोसाइटी के दफ्तर में सोयाबीन बेचने गया था, वहीं से आ रहा हूं।" गंगू ने कहा।

"तुमने तो अपनी फसल काटते ही बेच दी! इतनी जल्दी क्या थी? अभी तो बाज़ार में सोयाबीन बहुत सस्ता बिक रहा है। अभी बेच कर तुम्हें बहुत कम दाम मिला होगा।" हमने गंगू से कहा।

गंगू थोड़ी देर चुप रहा। फिर बोला, "हां मेरा सोयाबीन सस्ता तो बिका है, पर मुझे नगद पैसों की ज़रूरत है। खेती से साल भर का खर्चा कहां चलता है। घर को खर्चों के लिए उधार लिया हुआ था। इसीलिए सोयाबीन को बेच कर पैसे लाया हूं। अब जाकर उधार चुकाऊंगा।"

गंगू के साथ

गंगू के पास सिर्फ दो एकड़ सिंचित ज़मीन है। उसके पास खेती के और कोई **साधन** नहीं हैं। उसे अपनी दो एकड़ ज़मीन जोतने के लिए हल, बैल, खाद, बीज, दवा, सब कुछ उधार पर लेना पड़ता है। घर के खर्चों के लिए भी उधार लेना पड़ता है। जब से नहरों से सिंचाई होने लगी है, तब से वह अपने खेतों से दो फसल लेने लगा है। पर उधार चुकाने के लिए उसे अपनी फसल जल्दी बेचनी पड़ती है। पैसों की कमी के कारण वह इस बात का इन्तज़ार नहीं कर सकता कि जब भाव बढ़ें तब फसल बेचे। कभी उधार देने वाले को सस्ते में फसल बेचनी पड़ती है।
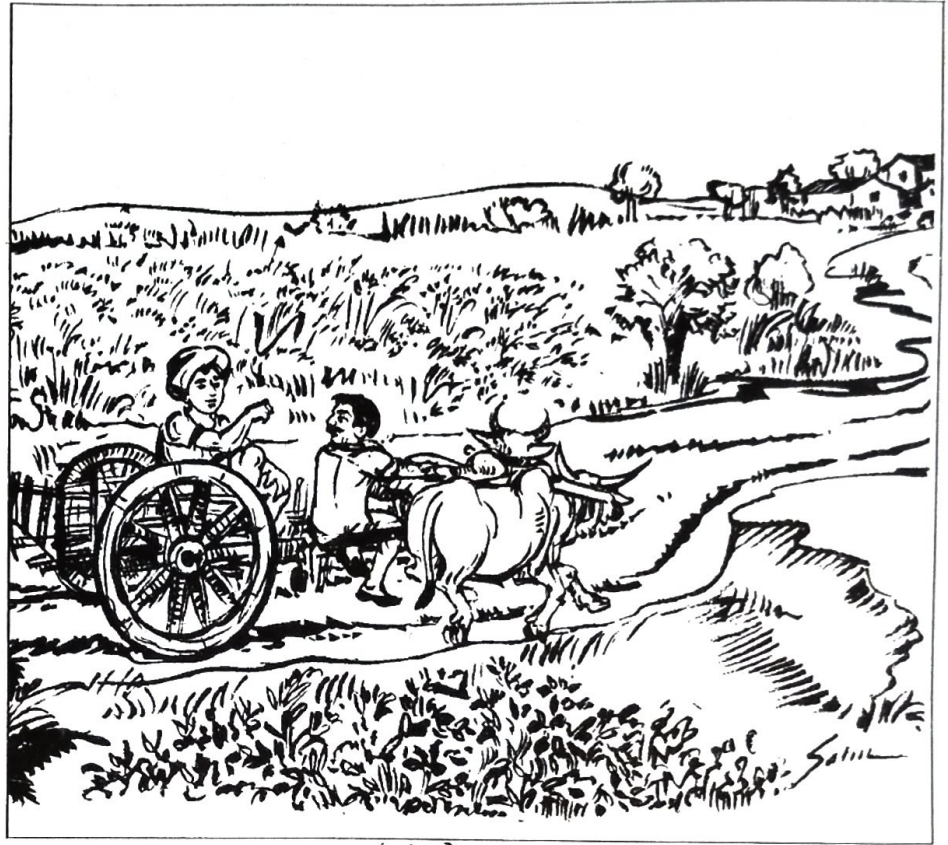
खेतों के बीच से गुज़रते हुए हमें कई खेतों में भरपूर फसल दिखाई दे रही थी। हमने गंगू से पूछा, "इस साल तुम्हारी फसल कैसी हुई है?"

गंगू ने कहा, "इस साल तो फसल कम हुई है।" यह सुनकर हमें अचरज हुआ।

हमने पूछा, "दूसरों की फसल तो अच्छी हुई है। तुम्हारी कम कैसे हो गई?"

गंगू ने थकी हुई आवाज़ में जवाब दिया, "इस साल मैं बहुत थोड़ी सी खाद डाल पाया हूं, क्योंकि जितने पैसे चाहिए थे, उतने का कर्ज़ा नहीं मिल पाया। मेरे दो एकड़ के खेत में कुल छह बोरे सोयाबीन ही हुआ है।"

गंगू जैसे छोटे किसानों को आसानी से कर्ज़ा नहीं मिल पाता है। उन्हें कई बार साहूकार को बहुत

ज़्यादा **ब्याज** देना पड़ता है। उनके पास ज़मीन कम होती है इसलिए आमदनी वैसे ही कम रहती है। इस हालत में छोटे किसान खेती के नए परंतु खर्चीले तरीकों का पूरी तरह इस्तेमाल नहीं कर पाते हैं।

गंगू की परेशानियां हम समझ पा रहे थे। हमने उससे पूछा "अब तुम क्या करोगे? साल भर का गुज़ारा कैसे होगा तुम्हारा?"

गंगू बोला, "मैं लोहारी का काम करता हूं। पर लोहारी का काम आजकल नहीं मिलता। मैं तो कल से ही दूसरों के खेतों पर सोयाबीन काटने जाऊंगा। मुझे अब मज़दूरी करके ही कमाई करनी पड़ेगी।"

गंगू एक छोटा किसान है। छोटे किसानों का गुज़ारा अपनी ही ज़मीन पर नहीं हो पाता। लेकिन कुछ महीनों के लिए अनाज मिल जाता है। उन्हें साल भर गुज़ारा करने के लिए दूसरों के खेतों पर मज़दूरी भी करनी पड़ती है। खेती और घर के खर्चे के लिए उन्हें कर्ज़ लेना पड़ता है।

वाक्य पूरा करो -

क) गंगू की फसल कम होने का कारण था कि . . . .।

ख) गंगू के लिए मज़दूरी करना ज़रूरी था क्योंकि . . . .।

ग) कर्ज़ चुकाने के लिए गंगू को फसल ....।

यदि तुम गांव में रहते हो -

क) तुम्हारे गांव में कितने एकड़ ज़मीन होने पर किसान परिवार बैलजोड़ी रख पाता है?

ख) किसानों को खाद-बीज के लिए कर्ज़ कहां-कहां से मिल जाता है? इस कर्ज़ को कब और कैसे वापिस करना होता है?

हरनारायण - एक बड़ा किसान

हरनारायण भेड़ागांव का एक और किसान है। उसके पास खेती के लिए 25 एकड़ ज़मीन है। ज़मीन पूरी तरह सिंचित भी है। वैसे गांव में उससे भी बड़े किसान हैं जिनके पास 50-100 एकड़ से ज़्यादा ज़मीन है। उन्हें खेतों से बड़ी मात्रा में उपज मिल जाती है।

जब हम हरनारायण से मिले तो वह अपने घर के बाहर खड़ा मज़दूरों से अपनी ट्रैक्टर-ट्रॉली से सोयाबीन के बोरे उतरवा कर घर में रखवा रहा था। 'जय राम जी' कहते हुए हमने उससे पूछा, "आप तो सोयाबीन अन्दर रखवा रहे हैं। मण्डी जाकर बेचने का विचार नहीं है क्या?" इस पर हरनारायण बोला, "बेचेंगे, पर इतनी जल्दी भी क्या है? अभी तो सोयाबीन के भाव बहुत कम हैं। कुछ समय बाद भाव बढ़ने लगेंगे तब बेचेंगे।"

यह सोयाबीन की कटाई का समय था। तुम जानते हो कि किसी भी फसल की कटाई के बाद बाज़ार में वह फसल बहुत मात्रा में आ जाती है और सस्ते में बिकती है। हरनारायण को तुरन्त पैसों की ज़रूरत नहीं थी और उसके पास सोयाबीन रखने के लिए कमरे थे। इस कारण वह भाव बढ़ने का इन्तज़ार कर रहा था।

हरनारायण ने काम खत्म करवाया और हमें घर के अन्दर ले गया। उसने अपनी बेटी से जल्दी से चाय-नाश्ता लाने को कहा।

हमने पूछा, "आप बहुत जल्दी में दिख रहे हैं। कहीं जाना है, क्या?"

"बस शहर तक जाना है। मैं 5 एकड़ ज़मीन खरीदने की सोच रहा हूं। ज़मीन का मालिक शहर

हरनारायण का घर

में रहता है। उससे बात करनी है और कुछ बाज़ार भी करना है।" हरनारायण ने कहा।

नाश्ते के साथ-साथ हरनारायण और हम बात करते रहे। उसने अपनी खेती के बारे में बहुत कुछ बताया। बीच में उसने कहा, "मैंने बैंक से लोन लेकर कई चीज़ें खरीदी हैं - मोटर पम्प, थ्रेशर और फिर टैक्ट्रर ट्राली। लोन भी चुका दिया है। अब अपने पैसों से ज़मीन खरीदने की सोच रहा हूं।"

हम हरनारायण जैसे बड़े किसानों के बारे में सोचने लगे। अपने खेतों की कमाई से उसके परिवार का गुज़ारा अच्छी तरह हो जाता है। वह खेती-बाड़ी की ज़रूरत की चीज़ों (जैसे खाद, बीज, दवा) में कोई कमी नहीं होने देता है। इन सब चीज़ों के लिए उसे उधार भी नहीं लेना पड़ता है। खेती की कमाई से इतना फायदा हो जाता है कि वह नई ज़मीन खरीदने की सोच पाता है। उसने खेती के सभी साधन - पम्प, ट्रैक्टर, थ्रेशर आदि पहले ही खरीद लिए हैं।

हरनारायण जैसे बड़े किसान सभी कामों के लिए मज़दूर रख लेते हैं। उनको और उनके परिवार के लोगों को अपने खेतों पर काम करने की ज़रूरत नहीं होती। वैसे भी बड़े किसानों के पास ज़मीन ज़्यादा होती है और सिर्फ परिवार के लोगों के सहारे जोती नहीं जा सकती।
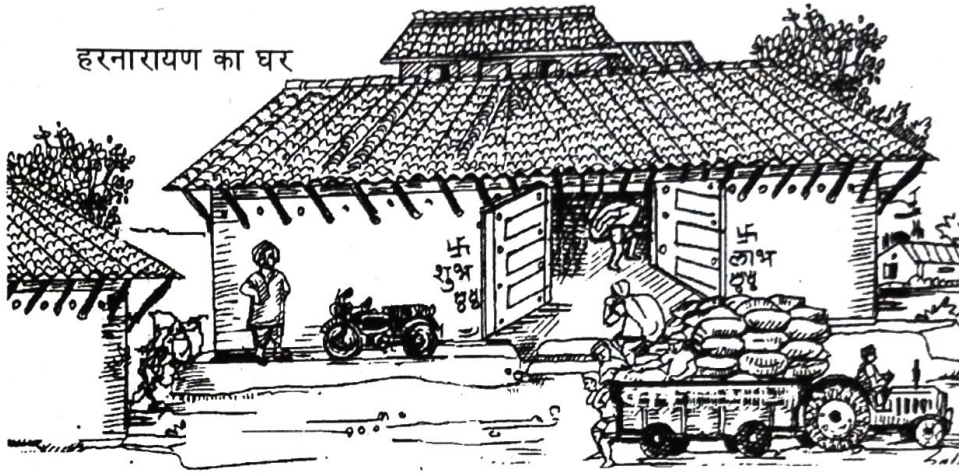
बड़े किसानों के यहां कुछ मज़दूर तो ऐसे होते हैं जिनको साल भर के लिए रखा जाता है। इन्हें **हरवाहा** कहते हैं। हरवाहों के अलावा फसलों की बोनी, कटाई आदि के समय और मज़दूरों को भी रखा जाता है।

वाक्य पूरे करो:-

क) हरनारायण फसल बाद में बेचना चाहता था क्योंकि . . .

ख) हरनारायण की खेती कर्ज़ पर नहीं चलती क्योंकि . . .

रामू भी हरनारायण की तरह और ज़मीन खरीदने के लिए पैसे क्यों नहीं बचा पाता है?

क्या रामू जैसे किसानों को हरवाहे रखने की ज़रूरत होती है? समझाओ।

गंगू और हरनारायण के परिवारों में क्या अंतर है?

तुम्हारे गांव में कितने एकड़ ज़मीन होने पर एक किसान परिवार को खेती के खर्च जैसे खाद-बीज आदि के लिए कर्ज़ लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती?

रज्जू बाई – एक मज़दूर

भेड़ागांव के सभी मज़दूर परिवार काम में लगे हुए थे। हम एक खेत पर पहुंचे जहां सोयाबीन की कटाई चल रही थी।

सोयाबीन की कटाई के समय एक साथ बहुत मज़दूर चाहिए होते हैं। सोयाबीन पकने के बाद उसकी कटाई जल्दी-से-जल्दी करनी पड़ती है। कटाई तुरन्त नहीं की जाए तो सोयाबीन के दानों के **तिड़कने** (फूट कर गिरने) का डर लगा रहता है।

भोजन का समय था। कई मज़दूर बैठे भोजन कर रहे थे। हम ने कहा, "आजकल तो आप लोगों को दम भरने की भी फुरसत नहीं है।" वहां बैठी रज्जू बाई ने जवाब दिया, "हां, कटाई का समय जो है - वह भी सोयाबीन की।"

रज्जू बाई जैसे कई मज़दूर परिवारों के पास बिल्कुल ज़मीन नहीं होती है। ऐसे परिवारों को **भूमिहीन** मज़दूर कहते हैं। इसलिए अपने खेतों से खाने के लिए अनाज पैदा करने का सवाल ही नहीं उठता है। ये लोग पूरी तरह दूसरों के खेतों पर मज़दूरी करके अपना गुज़ारा करते हैं।

सोयाबीन की कटाई

रज्जू बाई से हमने पूछा, "सिंचाई के बाद अब सालभर तो काम मिल जाता होगा?" रज्जू बाई ने कहा, "सिंचाई होने से मज़दूरी का काम तो बढ़ा है। अब हमें गांव में ही कटाई का काम मिल जाता है। हमें **चैत** करने बाहर के गांवों में नहीं जाना पड़ता है। पर यह तो सिर्फ कटाई के कुछ दिनों की बात है। साल के हर रोज़ हमें मज़दूरी कहां मिलती है?"

सिंचाई के कारण दो फसल लेना सम्भव हो जाता है और इसलिए मज़दूरी करने के अवसर भी बढ़ जाते हैं। फिर भी साल भर काम नहीं मिलता है। बोनी और कटाई के समय खूब काम रहता है और बाद में कम। दूसरे कामों के लिए मज़दूरी भी कम मिलती है। इसलिए बोनी और कटाई का समय ही कुछ कमाने का समय होता है। रज्जू बाई जैसे मज़दूरों को सिंचाई के बाद भी साल भर के गुज़ारे लायक आमदनी नहीं मिल पाती है। कई बार उन्हें कर्ज़ा लेना पड़ता है।

खाना खत्म करके मज़दूर उठकर वापस खेत पर जाने लगे। हम भी वहां से उठकर गांव की बस्ती की ओर लौट रहे थे कि रास्ते में हरनारायण के लड़के से फिर मुलाकात हुई। उसके खेत की कटाई अभी खतम हुई थी। उसने हमें बताया कि इस साल उसने एक खेत की कटाई **हार्वेस्टर कंबाईन** से किराए पर करवाई है।

हार्वेस्टर से कटाई

है। ज्वार अभी सस्ती है। दो-तीन महीनों का काम चल जाएगा। सोचा तो था ठण्ड के दिनों के लिए एक चादर भी खरीदूंगी। पर पैसे नहीं बच पाए हैं।" रज्जू बाई ने कहा।

भूमिहीन मज़दूर परिवार बहुत ग़रीब होते हैं। उनके पास ज़मीन नहीं होती है। वे गंगू जैसे भी नहीं है कि कुछ महीनों का अनाज पैदा कर पाएं। कुछ अनाज मज़दूरी में मिल जाता है परन्तु कई बार अनाज बाज़ार से महंगा खरीद कर भी खाना पड़ता है। यह सही है कि रज्जू बाई जैसे मज़दूरों की आमदनी बढ़ी है। लेकिन बढ़ती हुई महंगाई के कारण आज भी उन्हें अपनी रोज़ की ज़रूरतों के लिए बार-बार उधार लेना पड़ता है।

सोयाबीन की कटाई के समय मज़दूरी अधिक क्यों हो जाती है?

तुम्हारे गांव में बिना ज़मीन वाले मज़दूर परिवारों के पास साल भर क्या-क्या काम रहता है? पता करो और समझाओ।

हार्वेस्टर आने से क्या फर्क पड़ सकता है?

कटाई थोड़ी महंगी पड़ी पर काम जल्दी निपट गया। मज़दूर भी मुश्किल से मिलते है। इसलिए वह सोच रहा है कि अगले साल वह पूरी कटाई हार्वेस्टर से ही करवाएगा।

तुमने कोटगांव में हार्वेस्टर के बारे में पढ़ा था। यहां उसका चित्र देखो।

हार्वेस्टर एक दिन में सोयाबीन के बारह एकड़ खेत की कटाई कर सकता है। यदि मज़दूर इस काम को करें तो बहुत लोगों को काम मिल सकता है। हार्वेस्टर से कटाई होने लगे तो बहुत से मज़दूर परिवारों को काम नहीं मिलेगा।

गुरुजी की मदद से समझो: जो काम एक हार्वेस्टर एक दिन में करता है, उतना ही काम एक दिन में करने के लिए कितने मज़दूरों की ज़रूरत होगी?

अगले दिन भेड़ागांव में बाज़ार का दिन था। हाट करने के लिए बहुत से मज़दूर परिवार भी आए हुए थे। एक छोटी-सी बोतल में मीठा तेल खरीदते हुए हमें रज्जू बाई मिली। हमने पूछा "कटाई के पैसे मिल गए, रज्जू बाई, तभी बाज़ार करने आई हो?" "कटाई के पैसों से ज्वार खरीद कर रख लिया

हम भेड़ागांव के चार अलग-अलग परिवारों से मिले और हमने अलग-अलग किसानों और मज़दूरों पर सिंचाई और खेती के नए तरीकों का अलग-अलग असर भी देखा।

हमारे देश के अधिकांश लोग गांवों में रहते हैं और किसानी से जुड़े हैं। लगभग सभी गांवों में छोटे,

बड़े और मध्यम किसान और मज़दूर मिलेंगे। इनमें से बहुत से लोग भूमिहीन मज़दूर हैं, रज्जू बाई की तरह। इनके पास ज़मीन बिल्कुल नहीं है और वे सिर्फ अपनी मज़दूरी से गुज़ारा करते हैं। गंगू की तरह बहुत सारे छोटे किसान भी हैं। इनका अपनी खेती से गुज़ारा नहींहो पाता और उन्हें कुछ समय मज़दूरी या और कोई धंधा करना पड़ता है। बाकी जो ग्रामीण परिवार हैं उनमें से कई लोग मध्यम किसान हैं, यानी रामू जैसे। ये लोग खेती से गुज़ारा कर लेते हैं परंतु कोई बचत नहीं कर पाते। बहुत थोड़े से लोग हरनारायण जैसे बड़े किसान हैं। ये लोग खेती से **मुनाफा** कमा कर बचत भी कर लेते हैं।

ग़रीब मज़दूरों और किसानों के लिए कई योजनाएं बनीं हैं जिनके बारे में हम अगली कक्षाओं में पढ़ेंगे।

अभ्यास के प्रश्न

1. गंगू और रज्जूबाई में क्या समानताएं और क्या फर्क हैं? गुज़ारा, ज़मीन, मज़दूरी - इन बातों का ध्यान रखते हुए उत्तर देना।
2. एक वर्ष की बात है। भेड़ागांव के रामू ने सोयाबीन की बोनी कर दी थी क्योंकि शुरू-शुरू में अच्छी बारिश हो गई थी। परंतु उसके बाद बहुत दिनों तक पानी नहीं गिरा। दुबारा बोनी करने की ज़रूरत हो सकती थी। इस स्थिति में वह क्या-क्या कर सकता है सोचकर बताओ।
3. पृष्ठ 144 से 145 पढ़ कर बताओ -
   हरनारायण की अच्छी आमदनी होने के तीन मुख्य कारण क्या हैं?
4. रज्जू बाई जैसे मज़दूरों को गुज़ारे लायक आमदनी क्यों नहीं मिल पाती - तीन कारण समझाओ।
5. तुमने पाठ में अलग-अलग किसानों की हालात समझी। उनकी जानकारी नीचे दी गई तालिका में सही जगह भरो।

	ज़मीन	खेती के साधन	कर्ज़ा	मज़दूरी	फसल का बेचना
रामू जैसे मध्यम किसान	5 एकड़, गुज़ारे के लिए काफी		खाद-बीज के लिए		
गंगू जैसे छोटे किसान					फसल के बाद तुरंत बेचता है
हरनारायण जैसे बड़े किसान				मज़दूर लगाता है	
रज्जू बाई जैसे मज़दूर	कुछ नहीं				

6. ज़िला प्रशासन

मोहल्ला, गांव, तहसील और ज़िला

तुम्हारा पता-

तुम्हारा नाम क्या है------

तुम्हारे गांव/शहर का नाम क्या है -----------

तुम्हारी तहसील का नाम क्या है ----------

तुम्हारे ज़िले का नाम क्या है -----------

तुम रहते तो एक ही जगह हो, फिर तुम्हारे पते में इतनी जगहों के नाम कैसे आए? आखिर तुम कहां रहते हो - गांव में या तहसील में या ज़िले में?

चलो, इस बात का एक और उदाहरण लें। तुम अपने घर में रहते हो। तुम्हारा घर एक मोहल्ले में है। तुम्हारे घर और दूसरे कई घरों को मिलाकर तुम्हारा मोहल्ला बनता है।

तुम्हारा मोहल्ला तुम्हारे गांव में है। तुम्हारे मोहल्ले और दूसरे कई मोहल्लों को मिलाकर तुम्हारा गांव बनता है।

तुम अपने घर में रहते हुए अपने मोहल्ले में भी रहते हो, और अपने गांव में भी। क्योंकि तुम्हारा घर तुम्हारे ------ में है और तुम्हारा मोहल्ला तुम्हारे----- में है।

इसी तरह तुम्हारा गांव तुम्हारी तहसील में है। तुम्हारा गांव और कई और गांवों को मिलाकर तुम्हारी तहसील बनती है।

तुम्हारी तहसील तुम्हारे ज़िले में है। तुम्हारी तहसील और दूसरी कुछ तहसीलों को मिलाकर तुम्हारा ज़िला बनता है।

तुम्हारा ज़िला

तुम किस ज़िले में रहते हो?

गुरूजी से कहो तुम्हें ज़िले का नक्शा दिखाएं। अपने ज़िले के नक्शे में तुम अपनी तहसील पहचानो। तुमने अपनी तहसील का नक्शा देखा था।

क्या ज़िले के नक्शे में तुम्हारी तहसील उतनी ही बड़ी बनी है?

ज़िले में तुम्हारी तहसील के अलावा और कौन सी तहसीलें हैं?

इस नक्शे में तहसीलों की सीमा किस तरह दिखाई गई है?

ज़िले की सीमा किस तरह दिखाई गई है?

यहां दी गई तालिका में अपने ज़िले की सब तहसीलों के नाम लिखो। हर तहसील के कम से कम तीन गांवों के नाम भी उसके सामने लिखो।

तहसील	गांव

तुम्हारे ज़िले की उत्तरी और पूर्वी सीमा पर कौन-कौन सी तहसीलें हैं?

यहां दिए वाक्यों में से सही वाक्य चुनो। गलत वाक्यों को सही करके अपनी कापी में लिखो।

1. एक घर में कई मोहल्ले हैं।
2. एक तहसील में कई गांव हैं।
3. एक मोहल्ले में कई गांव हैं।
4. एक तहसील में कई ज़िले हैं।
5. एक गांव में कई घर हैं।
6. एक गांव में कई मोहल्ले हैं।
7. एक ज़िले में कई गांव हैं।
8. एक ज़िले में एक तहसील से ज़्यादा गांव है।

तहसील और ज़िले के अधिकारी व कर्मचारी

क्या तुम सोच सकते हो कि तहसील व ज़िलों में क्या होता है? यह जानने के लिए चलो तहसील और ज़िले के **मुख्यालयो** पर देखें क्या होता है।

> ***तुम्हारी तहसील का मुख्यालय कहां है? तुम्हारे ज़िले की अन्य तहसीलों के मुख्यालय कहां हैं?***
>
> ***तुम्हारे ज़िले का मुख्यालय कहां है?***

ज़िलों और तहसीलों के मुख्यालयों में कई दफ्तर हैं। इन दफ्तरों में कई **अधिकारी** और **कर्मचारी** काम करते हैं। इस पाठ में हम **पटवारी, तहसीलदार** और **जिलाधीश (कलेक्टर)** का काम देखेंगे।

> ***तुमने इन लोगों के बारे में सुना होगा। तुम पटवारी, तहसीलदार और ज़िलाध्यक्ष के बारे में क्या जानते हो- कुछ वाक्यों में बताओ।***
>
> ***इनमें से सबसे बड़ा अधिकारी तुम किसे मानते हो?***

पटवारी, तहसीलदार और ज़िलाधीश ज़मीन का हिसाब-किताब रखने और ज़मीन के झगड़ों में फैसला करने का काम करते हैं। चलो, एक पटवारी, एक तहसीलदार और एक ज़िलाधीश से मिलकर उनके काम और समस्याओं के बारे में समझें।

पटवारी

ज़मीन की नपाई करना और लेखा-जोखा रखना ही पटवारी का मुख्य काम है।

अगर ज़मीन को लेकर दो लोगों में झगड़ा हुआ तो वही उस ज़मीन का मालिक माना जाएगा, जिसके नाम से पटवारी के खाते में वह ज़मीन दर्ज़ है।

किस के पास कितनी ज़मीन है? किसने कितनी ज़मीन बेची? किसने खरीदी? कितनी सरकारी ज़मीन है? उस पर किसी का कब्ज़ा तो नहीं? खरीफ में कौन सी फसल बोई? कौन सी रबी में? यह जानकारी हर साल पटवारी इकट्ठा करता है। इस जानकारी के आधार पर वह यह हिसाब बनाता है कि हर एक किसान को अपनी ज़मीन पर कितनी **तौजी** या कर देना है।

ज़मीन पर सरकार तौजी लेती है। तौजी एक प्रकार का कर है जो, खेतीहर ज़मीन और फसल के हिसाब से लिया जाता है।

चलो चलते हैं कनियाखेड़ी के पटवारी से मिलने। तुम कनियाखेड़ी के बारे में पहले भी पढ़ चुके हो। याद है न?

कनियाखेड़ी का पटवारी

कनियाखेड़ी गांव अमरबोर तहसील में है। कनियाखेड़ी का पटवारी है मोहनकुमार। कनियाखेड़ी के अलावा वह तीन और गांवों का भी पटवारी है - पगांवा, नूनपुर और मानीगांव।

पटवारी मोहनकुमार तौजी का हिसाब-किताब बनाकर इन गांवों के **पटेल** को देता है। इसी के आधार पर पटेल अपने गांवों के किसानों से तौजी इकट्ठी करते हैं।

आज मोहनकुमार बहुत व्यस्त है। उसे अपने क्षेत्र के चारों गांवों के पटेलों को तौजी का हिसाब-किताब पूरा कर के देना है। हिसाब किताब की एक प्रति कल तक अमरबोर के तहसीलदार के दफ्तर में जमा भी करनी है।

मोहन कुमार कनियाखेड़ी के पटेल के यहां

पहुंचा। "राम-राम भैया। ये लो तौजी का फार्म। इस में गांव के सभी किसानों की तौजी की पहली किश्त लिखी है। वसूली कर के समय पर जमा कर देना।" मोहन कुमार ने पटेल से कहा।

मोहन कुमार ने तौजी का फार्म पटेल को सौंपा और अपनी साइकिल लेकर पगांवां गांव की ओर चल दिया।

वह पगांवां के पटेल के यहां बैठा उसे तौजी का फार्म दे रहा था कि इतने में एक किसान आया। "पटवारी जी राम-राम। आप को कई दिनों से ढूंढ रहा था। अच्छा हुआ आप मिल गए," उसने मोहन कुमार से कहा।

"क्यों, क्या काम है?" मोहन कुमार ने पूछा।

"मैंने अपने खेत से लगा हुआ पीपल के पेड़ वाला खेत खरीद लिया है। उसकी रजिस्ट्री भी हो गई है। आप खेत पर चलकर उसकी नपती कर दो। और अपने खाते में यह खेत मेरे नाम चढ़ा देना।" किसान ने पटवारी से कहा।

"आज मुझे फुरसत नहीं है। मैं अगले मंगलवार आ कर तुम्हारा काम कर दूंगा। तुम अभी नपती के लिए एक अर्ज़ी मुझे दे दो" मोहन कुमार ने जवाब दिया। इतने में एक और किसान वहां आया। "भैयाजी, मैं अपने खेत पर कुआं खुदवाना चाहता हूं। कुएं के लिए बैंक से सरकारी लोन भी चाहिए। मैं लोन के लिए अर्ज़ी दे रहा हूं। आप मुझे प्रमाण पत्र दे दें कि मेरे पास केवल तीन एकड़ ज़मीन है और मैं **अनुसूचित जाति**का हूं। मुझे कर्ज़े में छूट लेने के लिए यह प्रमाण पत्र चाहिए।" किसान ने कहा। मोहन कुमार ने अपने खाते में उस किसान का नाम ढूंढा। खाता देखने के बाद उसने किसान को प्रमाण पत्र दिया।

अपने कागज़ बटोरकर मोहनकुमार मानीगांव की ओर चल पड़ा।

पटवारी के काम से संबंधित चार वाक्य छांटकर कापी में उतारो।

पटेल का क्या काम है?

मोहन कुमार किन गांवों में काम करता है?

ये गांव कौन सी तहसील में हैं?

अपने गांव के पटवारी से पता करो-

वह तुम्हारे गांव के अलावा और किन गांवों में काम करता है?

यहां दिए गए कामों के अलावा उसे और कौन से काम करने पड़ते हैं?

अमरबोर का तहसीलदार

अमरबोर तहसील में बहुत सारे गांव हैं। इस पूरी तहसील में कई पटवारी काम करते हैं। हर पटवारी तीन-चार गांवों का काम देखता है। सभी पटवारी अपने गांवों की ज़मीन और तौजी का हिसाब किताब अमरबोर तहसील मुख्यालय में जमा करते हैं। तहसील का मुख्यालय

अमरबोर शहर में है। अमरबोर तहसील का तहसीलदार, तहसील के सभी गांवों के हिसाब-किताब की देख-रेख करता है। उसका नाम है आरिफ अन्सारी।

आओ अमरबोर के तहसीलदार से मिलकर उसके काम के बारे में पता करें।

अमरबोर का तहसीलदार

आज फरवरी की 10 तारीख है। दफ्तर पहुंचकर अमरबोर के तहसीलदार आरिफ अन्सारी ने तौजी की वसूली के कागज़ मंगवाए और जांच की कि कितने किसानों ने तौजी की पहली किश्त जमा नहीं की है। अन्सारी ने पाया कि दस-बारह गांवों के करीब सौ किसानों ने तौजी नहीं दी है। उसने दफ्तर के बाबू से कहा "इन सब किसानों को एक नोटिस भिजवा दो। यदि पंद्रह दिन में उन्होंने तौजी जमा नहीं की तो उन पर **कुड़की** का केस चलाया जाएगा।"

चित्र 2. अमरबोर तहसील का नक्शा

तौजी की जांच करते-करते अन्सारी को यह भी पता चला कि पांच-छः पटवारियों के हिसाब जमा ही नहीं हुए हैं। इस देरी का कारण बताने के लिए अन्सारी ने उन पटवारियों को चिट्ठी लिखवाई।

समय-समय पर तहसीलदार को तौजी के कागज़ातों की जांच करनी पड़ती है। यदि कोई किसान बहुत दिनों तक तौजी नहीं देता तो उस पर तहसीलदार की कचहरी में मुकदमा (केस) चलता है। तौजी पटाई गई या नहीं इसकी देख रेख तहसीलदार करता है।

यदि पटवारी अपने क्षेत्र की जानकारी समय पर तहसील के दफ्तर में नहीं भेजता, तब उससे कारण पूछने का अधिकार भी तहसीलदार को है। ज़मीन के झगड़ों की सुनवाई भी पहले तहसीलदार की कचहरी में होती है।

तौजी के कागज़ातों की जांच करने के बाद अन्सारी को कुछ मुकदमों की सुनवाई करनी थी। एक आदमी ने अर्ज़ी दी थी कि उसकी ज़मीन पर किसी दूसरे का कब्ज़ा है। अन्सारी ने दोनों आदमियों की गवाही सुनी और उस गांव के पटवारी को आदेश दिए कि वह अगली पेशी तक झगड़े वाले खेतों की नपाई कर के कचहरी में नक्शा पेश करे। उसने अगली पेशी की तारीख भी दी। दो-तीन मुकदमे सुन कर अन्सारी ने पेशियों का काम खत्म किया।

कई लोग बाहर इन्तज़ार कर रहे थे।

एक आदमी अपनी जाति प्रमाण पत्र पर तहसीलदार के हस्ताक्षर करवाने आया था। वह अपनी लड़कियों की छात्रवृत्ति के लिए यह

प्रमाणपत्र चाहता था। उस आदमी के गांव का नाम देख कर तहसीलदार ने कहा, "यह गांव तो इस तहसील में नहीं है। तुम्हें पिपलौदा जा कर वहां के तहसीलदार से प्रमाणित करवाना होगा।" इस तरह वह दिन गुज़रा।

चित्र 3 तहसीलदार की कचहरी

अगले दिन अन्सारी को चहटपानी गांव जाना था। वहां के पटवारी ने दर्ज़ कराया था कि बीस एकड़ सरकार की ज़मीन (छोटे घास) पर एक व्यक्ति ने कब्ज़ा कर लिया है।

जब अन्सारी चहटपानी गांव गया तो पटवारी ने उसे कब्ज़े वाली ज़मीन दिखाई। तहसीलदार ने नक्शे से मिलान कर के पाया कि पटवारी की बात सही है। पता चला कि यह कब्ज़ा लखीराम का है। वह गांव में नहीं, शहर में रहता है। अन्सारी ने लखीराम के विरुद्ध नाजायज़ कब्ज़ा करने का केस बनाया।

चहटपानी का दौरा करके तहसीलदार अन्सारी वापस अमरबोर चला गया।

अमरबोर एक काल्पनिक तहसील है। प[...] तहसीलदार अन्सारी को जो काम करते दिखा[...] है, वे हर तहसीलदार के काम हैं।

यदि कोई किसान तौजी न दे तो तहसीलदार क्या कर सकता है?

यदि पटवारी सही हिसाब-किताब बनाकर गांव के पटेल को न दे, तो तहसीलदार क्या करेगा?

तहसीलदार और पटवारी के कामों में क्या-क्या फर्क हैं? चार फर्क बताओ। तहसीलदार और पटवारी में से बड़ा अधिकारी कौन है और क्यों - कारण भी समझाओ।

तुम्हारी तहसील का तहसीलदार कौन है? क्या तुम कभी तहसीलदार के पास गए हो? अगर हां, तो किस लिए?

तुम्हारा तहसीलदार किन गांवों की तौजी का हिसाब देखता है- पांच गांवों के नाम बताओ।

कलेक्टर या जिलाधीश

तुमने अमरबोर के तहसीलदार के बारे में प[...] अमरबोर तहसील चन्दनपुर ज़िले में है। अमर[...] तहसील के अलावा कई और तहसीलें मिला[...] चन्दनपुर ज़िला बनता है। ये तहसीलें हैं: मेसदी[...] पिपलौदा, मोरखेड़ा, अमरबोर और मालीपुर।

चंदनपुर ज़िले के नक्शे में इन्हें पहचानो।

तुमने कलेक्टर का नाम सुना होगा। कलेक्टर [...] **ज़िलाध्यक्ष** या **ज़िलाधीश** भी कहते हैं। कलेक्[...] सिर्फ एक तहसील की नहीं, ज़िले की सभी तहसी[...] की देखरेख करता है। और वह केवल तौजी [...]

काम-काज ही नहीं देखता, ज़िले में हो रहे सभी कामों पर निगरानी रखता है।

ज़िले में कई **विभाग** होते हैं - पुलिस विभाग, शिक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, वन विभाग, पंचायत विभाग, ऐसे ही और कई विभाग हैं। इन सभी विभागों के अपने कर्मचारी और अधिकारी होते हैं। पर यदि किसी विभाग के काम में कोई समस्या आए तो ज़िलाधीश उस समस्या को सुलझाने के लिए कदम उठाता है। एक तरह से पूरे ज़िले की ज़िम्मेदारी कलेक्टर पर होती है।

ज़िलाधीश के बारे में कुछ जानने के लिए चलो मिलते हैं चन्दनपुर के कलेक्टर महेश नागले से।

चित्र 4 चन्दनपुर ज़िले का नक्शा

चन्दनपुर का ज़िलाधीश

चन्दनपुर ज़िले के ज़िलाधीश महेश नागले का दफ्तर है चन्दनपुर शहर में। वह रोज़ साढ़े दस बजे अपने दफ्तर पहुंचता है।

आज साढ़े ग्यारह बजे ज़िले के सभी विभागों के अधिकारियों की बैठक है। यह बैठक ज़िलाधीश नागले के दफ्तर में है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई, कृषि- सभी विभागों के अधिकारी आए हैं। नागले ने एक-एक कर के पिछले महीने हर **विभागाध्यक्ष**द्वारा किए गए कामों की जानकारी उनसे ली। जो काम नहीं हो पाए थे, उनमें आ रही समस्याओं के बारे में पूछा। बैठक दो बजे तक चलती रही।

बैठक के बाद नागले ने फाइलें देखीं। उसकी मेज़ पर फाइलों का ढेर था। वह एक-एक करके फाइल पढ़ता जा रहा था। उस पर अपने आदेश लिखता जा रहा था।
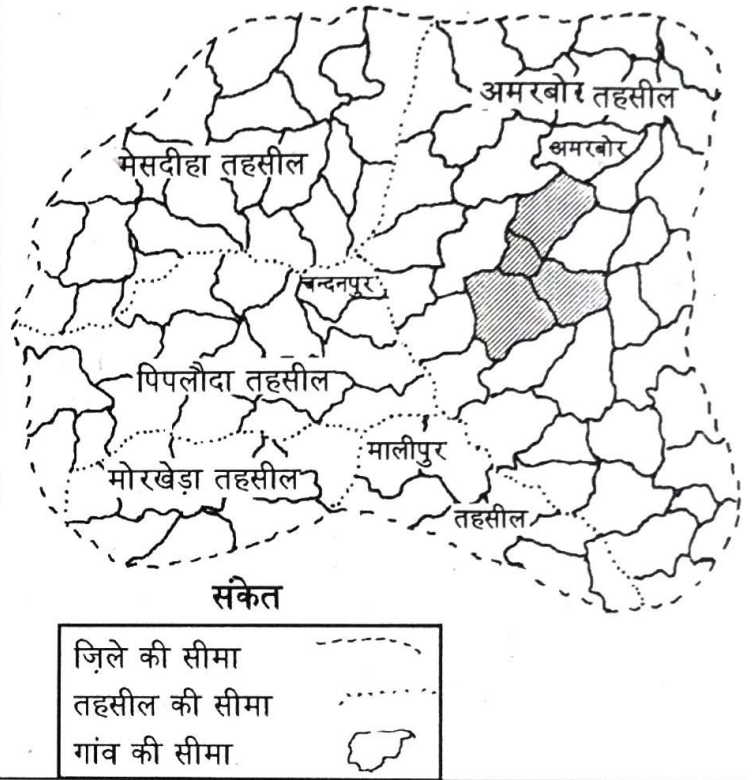
एक फाइल में मनकापुर ग्राम पंचायत के सरपंच के विरुद्ध शिकायत थी। महेश नागले ने फाइल पढ़ी। फिर फोन उठाकर उसने अपने बाबू से कहा "ज़रा ज़िला पंचायत अधिकारी से बात कराना।"

अधिकारी की बात सुन कर नागले ने कहा "अच्छा पंचायत इंस्पेक्टर ने जांच कर ली है? उसकी रपट अभी मुझ तक पहुंची नहीं। ज़रा भेज देना ताकि मैं कार्यवाही कर सकूं।" एक दो बातें और हुईं। फिर नागले ने फोन रख दिया।

फाइल देखते-देखते तीन बज गए थे। रोज़ तीन बजे से साढ़े चार बजे तक नागले ज़िले के लोगों से मिलता है। चन्दनपुर ज़िले की सभी तहसीलों के लोग अपनी समस्याएं लेकर ज़िलाधीश से मिलने आते हैं।

चित्र 5. जिलधीश से मिलते हुए लोग

मेसदीहा तहसील का एक छोटा किसान आया है। उसकी ज़मीन पर किसी दूसरे ने कब्ज़ा कर लिया था। इस किसान ने एक साल पहले तहसीलदार की कचहरी में अर्ज़ी दी थी। वह कई बार तहसीलदार से मिल भी चुका था। पर अब तक उसकी सुनवाई नहीं हुई थी। महेश नागले ने उससे अर्ज़ी की एक प्रति लेकर रख ली और कहा कि वह खुद इस मामले के बारे में तहसीलदार से बात करेगा।

तहसील पिपलौदा के कुछ किसान आए थे। उनके गांव में सिंचाई नहीं थी। वहां कुएं खुदवाना भी बहुत मुश्किल था। मनकापुर में बने बांध की नहरें पास के गांवों तक पहुंच गईं थीं, पर उनके गांव तक नहर नहीं आई थी। वे चाहते थे कि उनके गांव में भी नहर बनाई जाए ताकि उन्हें भी सिंचाई का फायदा मिल पाए।

नागले ने उन्हें बताया कि इस मामले में वह कुछ नहीं कर पाएगा। बांध और नहरें कहां बनाई जाएंगी, ये **राज्य सरकार** की सिंचाई की योजना में तय होता है। उनका गांव मनकापुर नहर की योजना में नहीं आता। यदि उनके यहां नहर का पानी आना संभव है तो उन्हें अपने **विधायक** से कह कर, यह बात राज्य सरकार की सिंचाई योजना में मंजूर करवानी होगी।

राज्य सरकार द्वारा बनाए गए नियम-कानून और योजनाओं को ज़िलाधीश, तहसीलदार और पटवारी ज़िले में लागू करते हैं। वे राज्य सरकार द्वारा दिए गए आदेशों का पालन करते हैं। वे स्वयं कोई नियम-कानून या नीति नहीं बदल सकते हैं, न ही कोई नया कानून या योजना बना सकते हैं।

अगली सुबह पांच बजे महेश नागले के घर पर अमरबोर से फोन आया। अमरबोर के रुई के कारखाने में रखे कपास के ढेर में आग लग गई थी। जलती हुई कपास उड़ कर आसपास भी जा रही थी। अभी भी आग को रोकने की कोशिश चल रही थी। महेश नागले ने तय किया कि वह थोड़ी देर में अमरबोर के लिए रवाना होगा। उसने **पुलिस अधीक्षक** और **सिविल सर्जन** से साथ चलने को कहा।

महेश नागले करीब आठ बजे तक अमरबोर पहुंचा और सीधे रुई के कारखाने पर गया। कपास काफी जल चुकी, पर आग पर काबू पा लिया गया था। नगरपालिका अध्यक्ष और तहसीलदार भी वहां थे। ज़िलाध्यक्ष ने उन से पता किया कि कितना नुकसान हुआ है। अध्यक्ष ने बताया कि कारखाने के दो मज़दूर काफी जल गए हैं और वे अस्पताल में भरती हैं।

नागले ने जले हुए घरों के मालिकों को बीस-बीस हज़ार रुपए का **मुआवज़ा** देने की घोषणा की। आग लगने की जांच करवाने का

भी वादा किया।

नागले में दोनों घायल मज़दूरों से भी मिला। नागले ने उन दोनों को दस-दस हज़ार रुपए देने की घोषणा की।

वापस चन्दनपुर लौटते समय नागले दो-तीन गांवों में रुका। वहां के किसानों और पंचों से उनकी समस्याओं पर चर्चा भी की। अमरबोर तहसील से निकलकर मनकापुर में सरपंच के खिलाफ शिकायत के बारे में पता किया। शाम को अंधेरा होने के बाद ही वह चन्दनपुर वापस पहुंच पाया।

चन्दनपुर ज़िला काल्पनिक जगह है पर चन्दनपुर ज़िले के ज़िलाधीश महेश नागले को तुमने जो भी काम करते पढ़ा, वे किसी भी ज़िलाधीश के काम हैं।

जो तुमने पढ़ा, उस के आधार पर बताओ कि ज़िलाधीश क्या-क्या काम करता है?

क्या ज़िलाधीश कोई नया कानून बना सकता है?

तहसीलदार और ज़िलाधीश में तीन फर्क बताओ। दोनों में से बड़ा अधिकारी कौन है? यह कैसे पता चलता है।

तुम्हारे ज़िले का ज़िलाधीश कौन है?

मध्य प्रदेश राज्य और उसके ज़िले

तुम्हारा ज़िला मध्यप्रदेश राज्य में है। मध्यप्रदेश में तुम्हारे ज़िले के अलावा और बहुत से ज़िले हैं। हर ज़िले का एक ज़िलाधीश होता है जो महेश नागले की तरह अपने ज़िले के कामों की देख-रेख करता है।

अगले पृष्ट पर मध्यप्रदेश का नक्शा दिया है। इस नक्शे में कितनी तरह की रेखाएं हैं?

नक्शे में ज़िलों की सीमा किस तरह दिखाई है?

मध्यप्रदेश की सीमा किस तरह दिखाई गई है?

इस नक्शे में अपना ज़िला पहचान कर उसे रंगो।

मध्य प्रदेश में और कितने ज़िले हैं?

मधयप्रदेश में कितने ज़िलाधीश हैं?

इन में से कौन सी जगहों की समस्याएं तुम्हारे ज़िले का ज़िलाधीश सुलझाएगा - होशंगाबाद, भोपाल, खातेगांव, हरदा, इंदौर, जबलपुर, देवास, नरसिंहपुर, ग्वालियर।

इस पूरे लम्बे चौड़े मध्यप्रदेश की एक **राज्य सरकार**है। राज्य सरकार का कानून मध्यप्रदेश के सभी ज़िलों में लागू होता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. ग़लत वाक्यों को सुधार कर लिखो-

    क) पूरे मध्यप्रदेश राज्य में होशंगाबाद ज़िले से अधिक तहसीलें हैं।

    ख) देवास ज़िले में हाटपिपल्या तहसील से अधिक गांव हैं।

    ग) हरदा तहसील होशंगाबाद ज़िले में है।

    घ) बैतूल ज़िला मध्यप्रदेश राज्य में है।

    ड) इंदौर ज़िले का ज़िलाधीश देवास की समस्या सुलझाएगा।

चित्र 6 मध्यप्रदेश का नक्शा
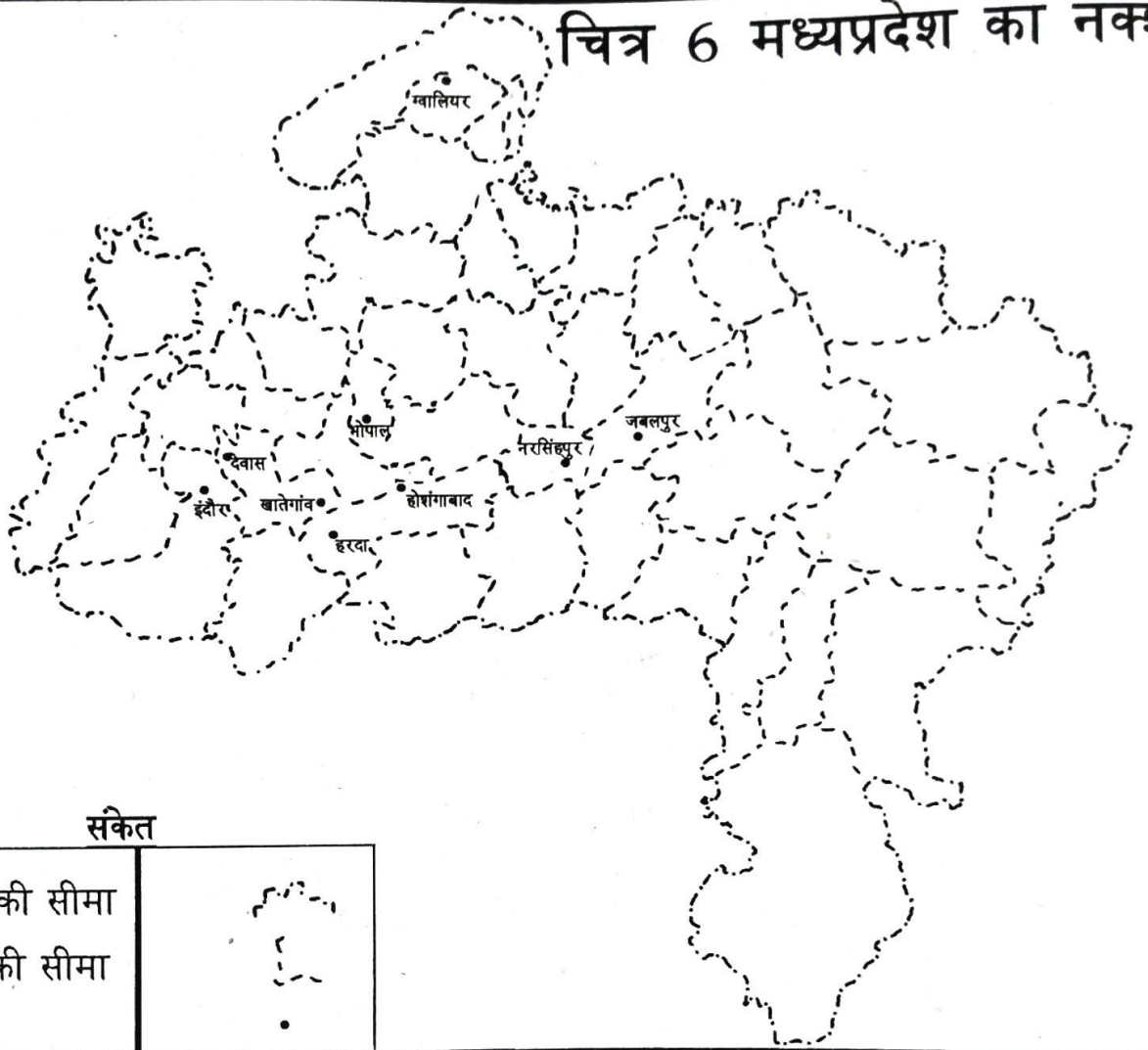
2. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरो।

क) खेतिहर भूमि की नपाई .... (तहसीलदार / पटवारी / विधायक / ज़िलाधीश) करता है।

ख) यदि पंचायत के खिलाफ शिकायत करनी है तो............. (पटवारी / तहसीलदार / जिलाधीश) के पास जाना होगा।

ग) पटवारी तौजी के कागज़ात समय पर बनाता है या नहीं, यह देखना .... (पटेल / तहसीलदार/ विधायक) का काम है।

3. यहां पर हमारे गांव के लोगों की कुछ समस्याएं दी गई हैं। किन समस्याओं के लिए पहले किसके पास जाना पड़ेगा। (तहसीलदार / पटवारी / सरपंच / ज़िलाधीश)?

क) हमारी गली में नाली नहीं है। इसलिए सड़क पर पानी इकट्ठा हो जाता है।

ख) रामलाल ने भीरू से ज़मीन खरीदी पर पटवारी ज़मीन उसके नाम नहीं चढ़ा रहा है।

ग) पुतली नदी पर बने बांध (जो पड़ोस के तहसील में है) की नहरें हमारे गांव तक नहीं पहुंची हैं।

4. नगरपालिका अध्यक्ष और तहसीलदार के बीच तुलना करके दोनों में अंतर बताओ।

5. ज़िलाधीश कौन से काम नहीं कर सकता? एक उदाहरण बताओ। वह काम कौन कर सकता है?

भूगोल

दिशाएं

नोट – तुमने अपनी प्राथमिक शाला में दिशाओं के बारे में पढ़ा होगा। भूगोल पढ़ने के लिए दिशाओं का ज्ञान बहुत ज़रूरी है। इसलिए हम अपनी याद ताज़ा करने के लिए कुछ अभ्यास करेंगे।

दिशा परिचय
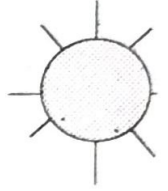
तुम्हें चारों दिशाओं के नाम तो याद होंगे।

पूरब, ———, ——— और ——— ।

तुम यह भी जानते होगे कि सूरज ——— दिशा से उगता है, और ——— दिशा में डूबता है।

सूरज जहाँ से उगता है उस तरफ मुंह करके खड़े हो जाओ। अब तुम्हारे सामने की तरफ —— दिशा होगी और पीछे की तरफ ——— दिशा होगी।

तुम्हारे सीधे हाथ की तरफ दक्षिण दिशा और उल्टे हाथ की तरफ उत्तर दिशा होगी।

<u>उत्तर की ओर मुंह करो</u> तुम अपने बायें (उल्टे) हाथ की तरफ मुड़ो। अब तुम उत्तर दिशा की ओर मुंह कर के खड़े हो (जैसे चित्र में दिख रहा है)।

अब तुम्हारा दायां (सीधा) हाथ ——— और उल्टा (बायां) हाथ ——— दिशा की ओर है और तुम्हारी पीठ की ओर ——— दिशा है।

चारों दिशाएं तुम इस चित्र के किनारों पर सही जगह भरो।
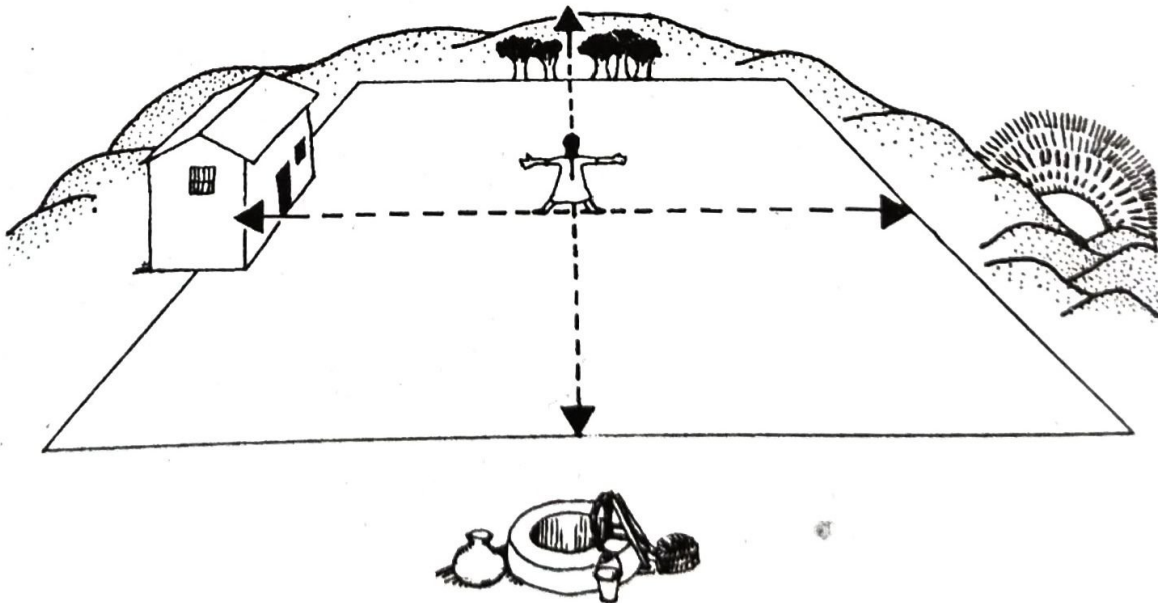
"किस दिशा में जाऊं?"
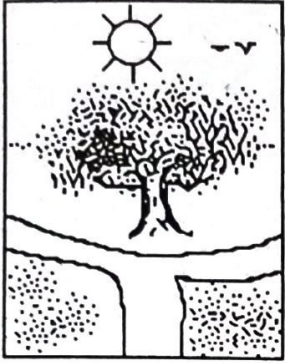
गुल्लू एक दिन सुबह-सुबह पलासनेर गांव के लिए निकला। उसे किसी ने बताया कि सड़क से सीधे जाओ। एक घंटा चलने के बाद एक बरगद का पेड़ मिलेगा। वहां दो सड़कें दिखेंगी। तुम उत्तर की ओर जाने वाली सड़क पर जाना।

गुल्लू बरगद तक तो पहुंच गया। उसके सामने दो रास्ते भी दिख गये। दोनों अलग-अलग दिशाओं में जा रहे हैं। गुल्लू को समझ में नहीं आ रहा था इनमें से उत्तर की ओर जाने वाली सड़क कौन सी है।

अगर तुम गुल्लू की जगह होते तो कैसे पता करते?

तुम्हारी शाला के चारों ओर

तुम दिक्सूचक से भी उत्तर दिशा पता कर सकते हो। एक दिक्सूचक लेकर शाला के बाहर जाओ और चारों दिशाएं पहचानो। तुम शाला के बाहर चारों ओर घूमकर देखो – हर दिशा में क्या-क्या है? पहले दिक्सूचक की मदद से देखो कि शाला के उत्तर में क्या है?

दक्षिण में क्या है?

पूरब में क्या है?

पश्चिम में क्या है?

दिक्सूचक

दिशा का खेल

दौलत पांचवीं कक्षा में पढ़ता है। उसके गुरुजी ने बच्चों को दिशा का अभ्यास कराने के लिए एक खेल खिलवाया। उन्होंने बच्चों को जैसे चित्र में दिखाया गया है, वैसे खड़े किया। उन्होंने कहा, "उत्तरा, उत्तर की ओर मुंह करके खड़ी है। बाकी बच्चे किन दिशाओं की ओर मुंह करके खड़े हैं?"

उत्तरा से सिद्दीका तक –

पूरा से जोधा तक –

चुन्नू से हरि तक –

धीरू से दौलत तक –

खेल को आगे बढ़ाओ

सिद्दीका के दक्षिण में कौन खड़ा है?

धीरू के उत्तर में कौन खड़ा है?

चुन्नू के पूर्व में कौन खड़ा है?

पूरा के पश्चिम में कौन खड़ा है?

मीरा के दक्षिण में कितने बच्चे खड़े हैं?

लक्ष्मन के दक्षिण में कितने बच्चे खड़े हैं?

पूरा के पश्चिम में कौन-कौन खड़ा है नाम बताओ।
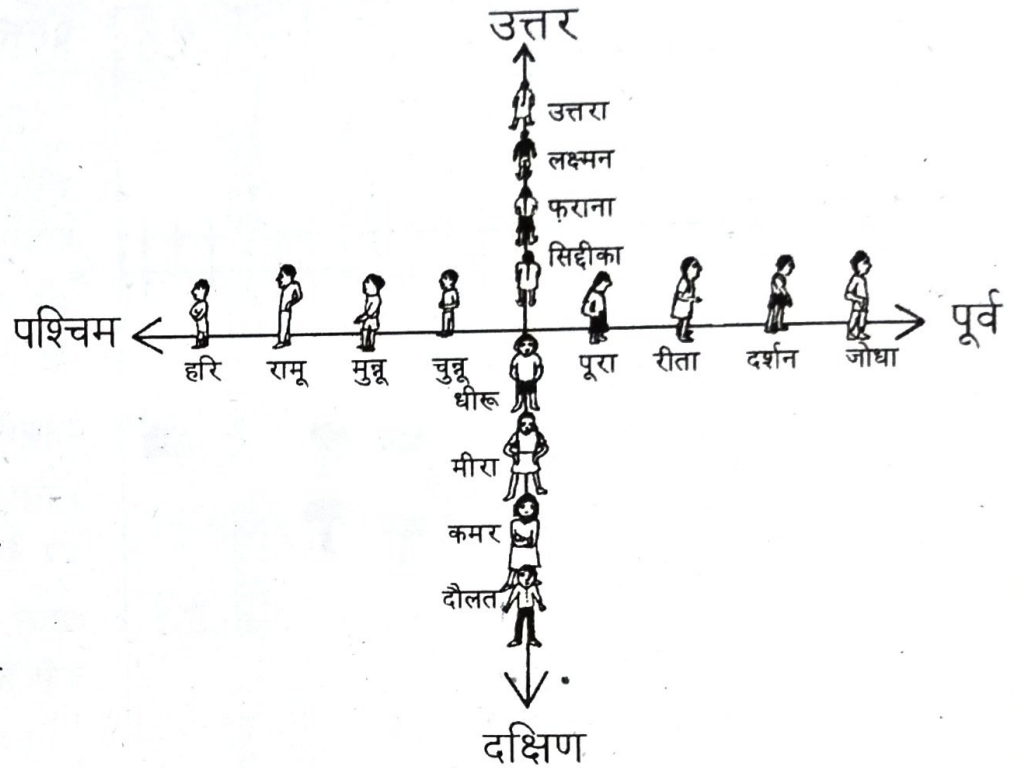
मानचित्र में दिशा

इस पुस्तक में तुम कई मानचित्र देखोगे। इनमें कई गांव, शहर, नदी, पहाड़, देश, समुद्र, होंगे। ऐसे मानचित्रों में दिशाएं कैसे पता करें? कैसे पता करें कि कोई जगह पूरब में है कि पश्चिम में, उत्तर में है कि दक्षिण में?

मानचित्रों को इस प्रकार बनाते हैं कि हमेशा उत्तर दिशा ऊपर के हाशिये या किनारे की ओर होती है।

तुमने देखा कि जब धरती पर उत्तर दिशा तुम्हारे सामने होती है, तब दाहिने हाथ पर पूर्व दिशा और बाएं हाथ पर पश्चिम दिशा होती है। यही बात मानचित्र पर भी लागू होती है। मानचित्र को जब तुम अपने सामने रखते हो या सामने टांगते हो, तो मानचित्र में उत्तर दिशा तुम्हारे सामने होती है। मानचित्र पर भी पूर्व दिशा दाहिने और पश्चिम दिशा बाएं हाथ पर होती है। दक्षिण दिशा निचले हाशिये या किनारे की ओर होती है।
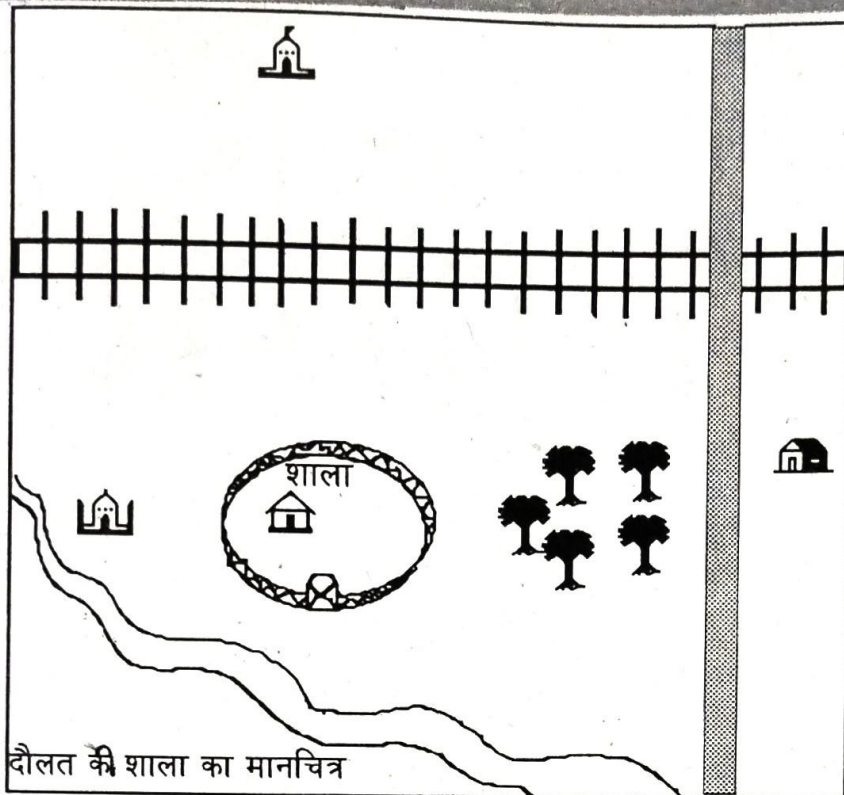
दौलत की शाला का मानचित्र

दौलत के गुरुजी ने शाला और आसपास का नक्शा श्यामपट पर बनाया।

क्या तुम बता सकते हो कि शाला की किस दिशा में रेल लाईन है?

शाला की किस दिशा में पेड़ हैं?

शाला की किस दिशा में दौलत का घर है?

शाला की किस दिशा में मस्जिद बनी है?

मानचित्र में कोई जगह किस दिशा में है, यह पता करने का एक आसान तरीका है। चलो इस तरीके के बारे में जानें।

दिशा तीर बनाओ

एक पुरानी कापी या किताब का कवर लो। कवर पर पेन से दिशा के तीर ऐसे बनाओ जैसा चित्र में दिखाया है। चारों दिशाओं के नाम भी सही जगह पर लिख लो।

दिशा तीर

तुमने जो चित्र बनाया उसे सावधानी से काटकर अलग कर लो। सभी बच्चे अपना अलग दिशा तीर बना लें।

दिशा बताओ

किसी भी जगह की किस दिशा में क्या है, यह जानने के लिए अपने दिशा तीर को उस जगह पर रखो।

अगर यह पता करना है कि शाला की किस दिशा में मस्जिद है, दिशा तीर को शाला के ऊपर रखो। तीर के बीच में जो गोला है वह शाला के ठीक ऊपर होना चाहिए। यह भी ध्यान रहे कि जिस तीर पर "उत्तर" लिखा है, वह नक्शे के ऊपरी हाशिये या किनारे
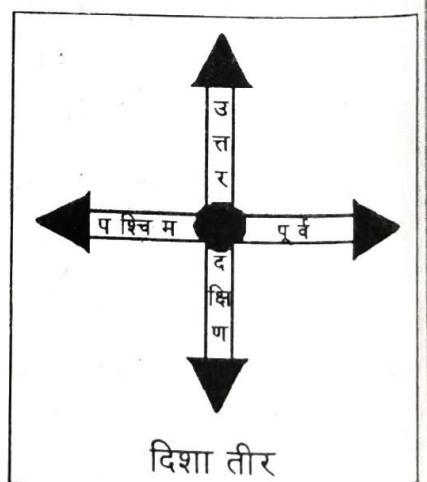
की ओर होना चाहिए। अब देखो कौन सा तीर मस्जिद की ओर है। वही मस्जिद की दिशा है।

अब तुम दिशा तीर निम्नलिखित जगहों पर रखो और उत्तर दो।

दौलत के **घर** की किस दिशा में सड़क है?

मस्जिद की किस दिशा में नदी है?

नदी की किस दिशा में मस्जिद है?

मंदिर के दक्षिण में क्या है?

पेड़ों के पश्चिम में क्या-क्या है?

तुम बनाओ

दौलत की शाला के पूर्व में, मगर बागुड़ के पश्चिम में एक पेड़ बनाओ।

मंदिर के दक्षिण में, मगर रेल लाईन के उत्तर में एक पेड़ बनाओ।

एक गुत्थी सुलझाओ

दौलत अपने घर पर पड़े बहुत पुराने कागज़ों को देख रहा था। उसे अचानक एक पुराना कागज़ मिला जिसमें एक छिपाये गये खज़ाने का राज़ लिखा था। कागज़ में ऐसा लिखा था।

"मैं ठाकुर गब्बरसिंह ने अपने सारे हीरे और सोने के ज़ेवरात एक टापू के बीच, मंदिर में गाड़े हैं। सब गहने एक लोहे की पेटी में हैं, जिसके दो ताले हैं। हरेक ताले की चाबी अलग-अलग गांव में छिपी है। उन्हें ढूंढने और उस टापू तक पहुंचने का रास्ता इस प्रकार है।

"हासिलपुर के उत्तर की ओर जाने वाली सड़क पर चलने पर बनस नदी आयेगी। इस नदी को पार करने पर सड़क के पूर्व में ईनामगांव मिलेगा। ईनामगांव के दक्षिण में एक बरगद का पेड़ है जिसके छेद में एक डिब्बे में पहली चाबी है।

"ईनामगांव से फिर से सड़क पर उत्तर की ओर जाने पर एक तिगड्डा मिलेगा। वहां पश्चिम दिशा में मुड़ना है। पश्चिम दिशा में कुछ देर चलने पर बनस नदी फिर मिलेगी। बनस नदी के पश्चिम में और सड़क के उत्तर में एक गांव है - त्रिपुरी। इस गांव के पूर्व में एक पत्थर है जिसके नीचे दूसरी चाबी मिलेगी।

"त्रिपुरी से सड़क पर ही पश्चिम में और आगे चलने पर एक घना जंगल आयेगा। जंगल के पहले से उत्तर की ओर मुड़कर सीधे चलना चाहिए। सड़क के अंत में तालाब का किनारा आयेगा। वहां से तालाब के बीच में टापू पर जाने पर झुरमुट के बीच में एक मंदिर दिखेगा। मंदिर की दीवार के पास एक पत्थर होगा। उस पत्थर को हटाने पर एक सुरंग दिखेगी जिसके अंदर वह ज़ेवर भरा बक्सा मिलेगा।

इस लख के साथ एक और कागज़ पर एक नक्शा बना था। नक्शे में हासिलपुर का नाम था। दूसरे गांव बने ज़रूर थे, मगर उनके नाम नहीं थे।
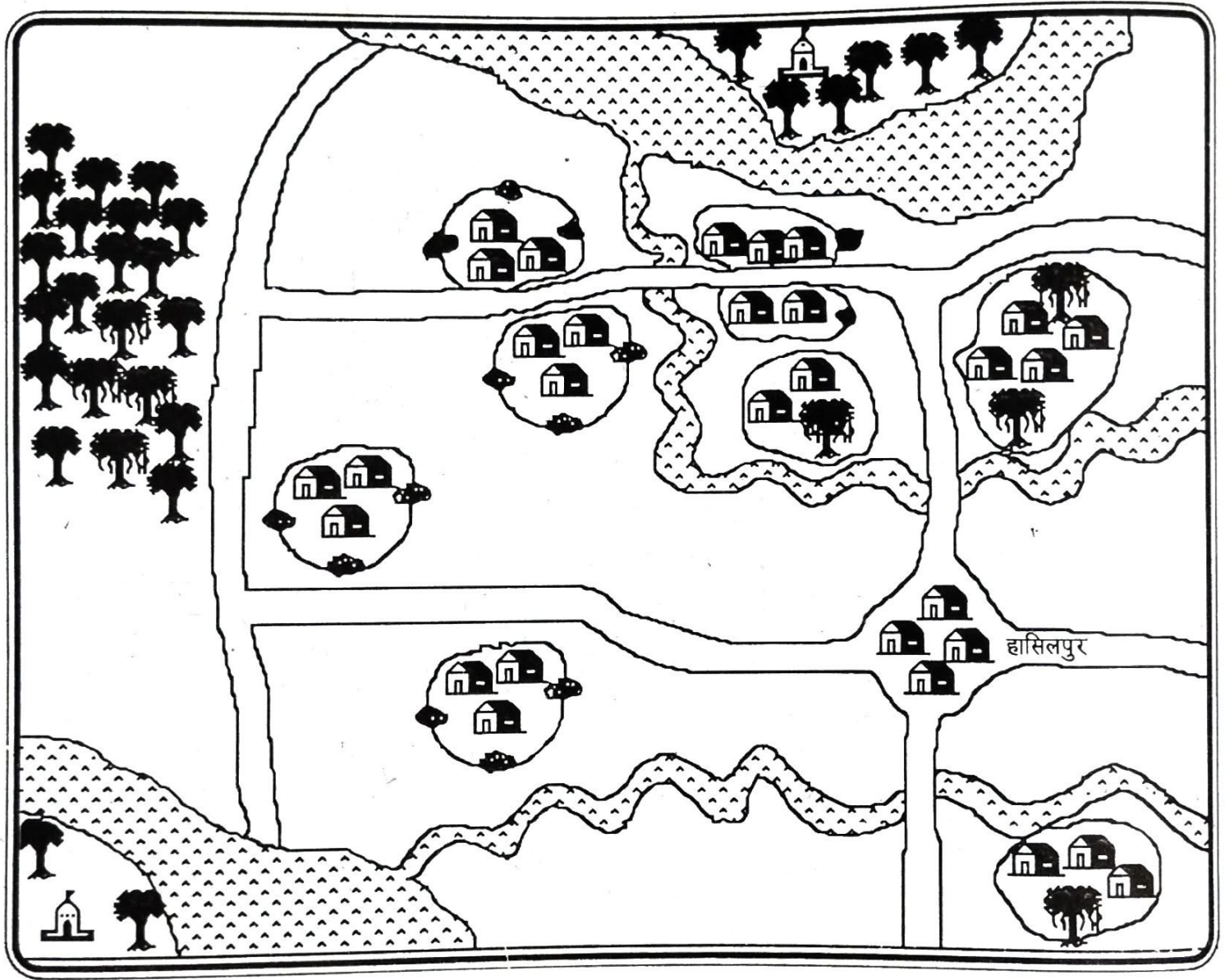
तुम तीर बनाकर बताओ, दौलत किस रास्ते से गया होगा?

ईनामगांव और त्रिपुरी को पहचानो और नक्शे पर उनका नाम लिखो।

जहां-जहां चाबी मिली वहां × का निशान लगाओ।

जहाँ ज़ेवर मिले वहां 0 का निशान लगाओ!

1. आओ मानचित्र बनाएं

मानचित्र

तुमने बहुत से मानचित्र देखे होंगे, मध्यप्रदेश के, भारत के, विश्व के। मानचित्रों से हमें कौन सी जगह कहां पर है, वह जगह कैसी है, उसके आसपास क्या है, ये सब बातें पता चलती हैं। मानचित्र क्या है मानचित्र कैसे बनते हैं, हम इस पाठ में पढ़ेंगे।

चित्र और मानचित्र

तुमने कई जगहों के चित्र या फोटो देखे होंगे। उनमें और मानचित्रों में बहुत अंतर है। यहां दौलत की कक्षा का चित्र है। पृष्ठ 170 पर उसी कक्षा का मानचित्र भी बना है। दोनों में देखो कितना अन्तर है। तुम्हें इन दोनों में क्या-क्या अन्तर दिख रहे हैं?

1. चित्र में आमतौर पर चीज़ें वैसे बनती हैं जैसे वे दिखती हैं। मानचित्र में चीज़ें चिन्ह या संकेत से दिखायी जाती हैं।

2. चित्र आमतौर पर ऐसे बनाए जाते हैं जैसे कोई उस जगह को उसके किनारे खड़े होकर देख रहा हो। लेकिन मानचित्र हमेशा ऐसा बनाया जाता है जैसे उस जगह को ऊपर या आसमान से देख रहे हों।

मानचित्र कैसे बनता है?

एक दिन कक्षा में गुरुजी मानचित्र दिखा रहे थे तो दौलत ने पूछा, "सर, ये मानचित्र कैसे बनाते हैं? इतनी बड़ी जगह का नक्शा इतने छोटे कागज़ पर कैसे बन जाता है?" गुरुजी ने कहा, "कल हम अपनी कक्षा का मानचित्र खुद बनाएंगे। तब हम
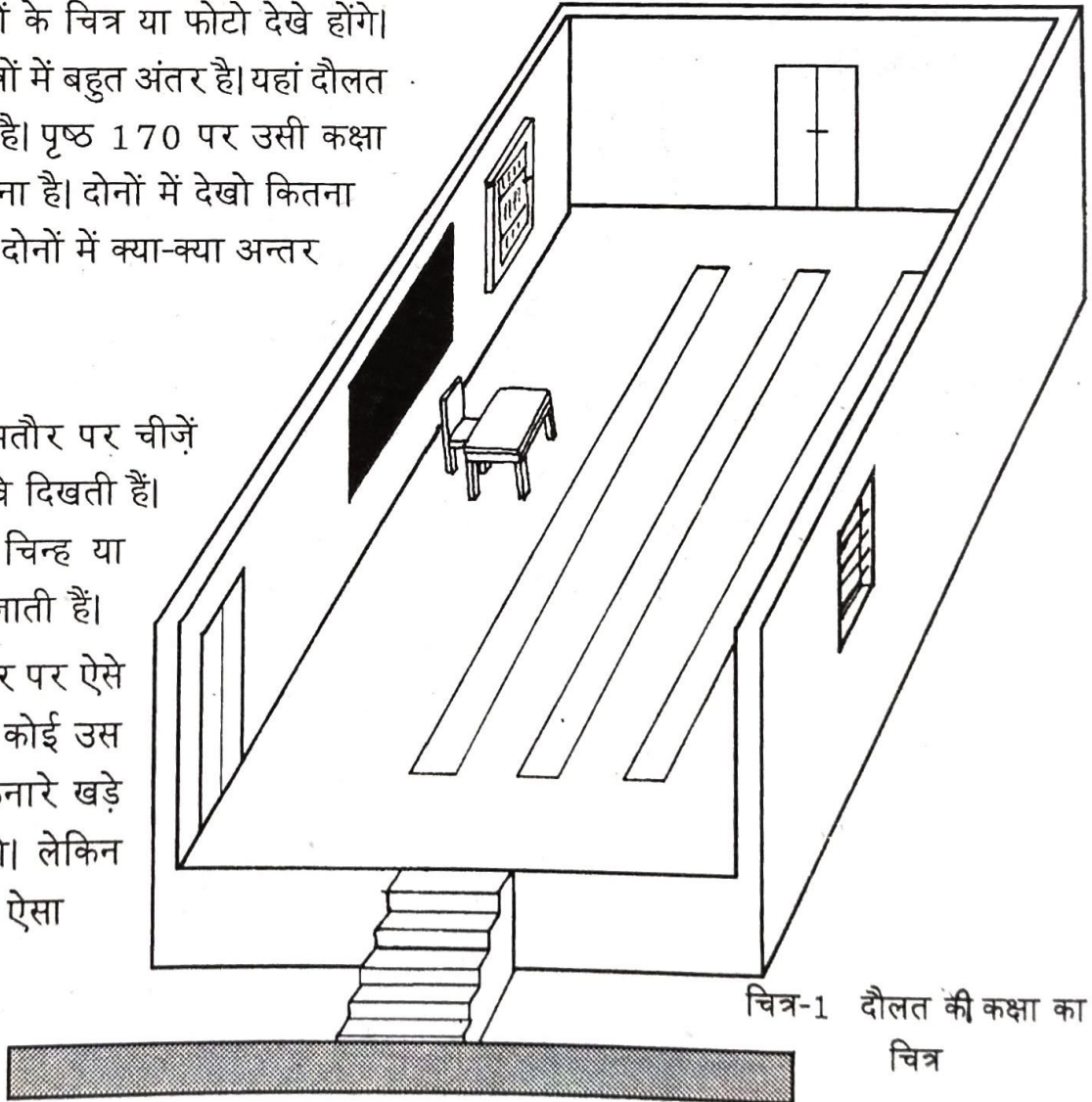
चित्र-1 दौलत की कक्षा का चित्र

ठीक-ठीक समझ पायेंगे कि मानचित्र कैसे बनता है। तुम लोग कल आधा मीटर स्केल, माचिस की तीलियां और चॉकपीस तैयार रखो।"

चिन्ह बनाओ

अगले दिन मानचित्र बनाने का काम शुरू हुआ। गुरुजी ने कहा, "पहले तुम लोग उन सब चीज़ों की सूची बनाओ जो इस कमरे में हैं। मगर केवल उन्हीं चीज़ों की जो इधर-उधर हटायी नहीं जा सकें। सूची बनी – अलमारी, दरवाज़ा, खिड़की, बोर्ड। सूची बोर्ड पर लिखी गयी। फिर गुरुजी ने कहा तुम लोगों ने पढ़ा था कि मानचित्र में सब चीज़ों को चिन्हों से दिखाया जाता है। तुम भी इन सब चीज़ों के चिन्ह बनाओ।" सबने मिलकर हर चीज़ के लिए अलग-अलग चिन्ह बनाए।

चिन्ह सूची

चीज़	चिन्ह
अलमारी	
दरवाज़ा	
खिड़की	
सड़क	
ब्लैक-बोर्ड	
सीढ़ी	

उत्तर की ओर मुंह करो

सभी छात्र अब टोलियों में बैठ गये। गुरुजी ने सबको उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठने को कहा। सब ने ऐसा ही किया।

कक्षा नापो

गुरुजी ने कहा, "अब इतनी बड़ी कक्षा का हमें एक छोटा नक्शा या मानचित्र बनाना है। इसके लिए पहले कक्षा की लंबाई चौड़ाई नापेंगे और उसके अनुरूप हम छोटा नक्शा बनायेंगे। सभी टोलियां बारी-बारी से कक्षा को नापें।" दौलत और दूसरे छात्रों ने सामने वाली दीवार यानी, उत्तरी दीवार को आधा मीटर स्केल से नापा।

छः स्केल लम्बी दीवार थी।

एक स्केल बराबर एक तीली

गुरुजी ने कहा, "छः स्केल लम्बी इस दीवार को छोटा बनाना है। चलो हम एक माचिस की तीली को एक स्केल के बराबर मान लेते हैं। यानी हमारे नक्शे में उत्तरी दीवार छः तीलियों से बनेगी। सभी टोलियां फर्श पर छः तीलियां रख लें।"

दौलत ने छः तीलियां लाईन से लगाईं। इस तरह उत्तरी दीवार बनी।

फिर पूर्वी दीवार नापी गई। वह 9 स्केल लम्बी थी। सो 9 माचिस की तीलियां रखी गईं।

दक्षिणी दीवार 6 स्केल और पश्चिमी दीवार 9 स्केल लम्बी निकलीं। सभी टोलियों के बच्चे उसी हिसाब से तीली रखते गये। जब तीलियों से चारों दीवारें बन गईं तो चॉक से उनके चारों ओर रेखा खींची गई। फिर तीलियां हटवाईं गईं।

इस तरह कक्षा की दीवारें बनीं। (चित्र 2 देखो)

चित्र 2
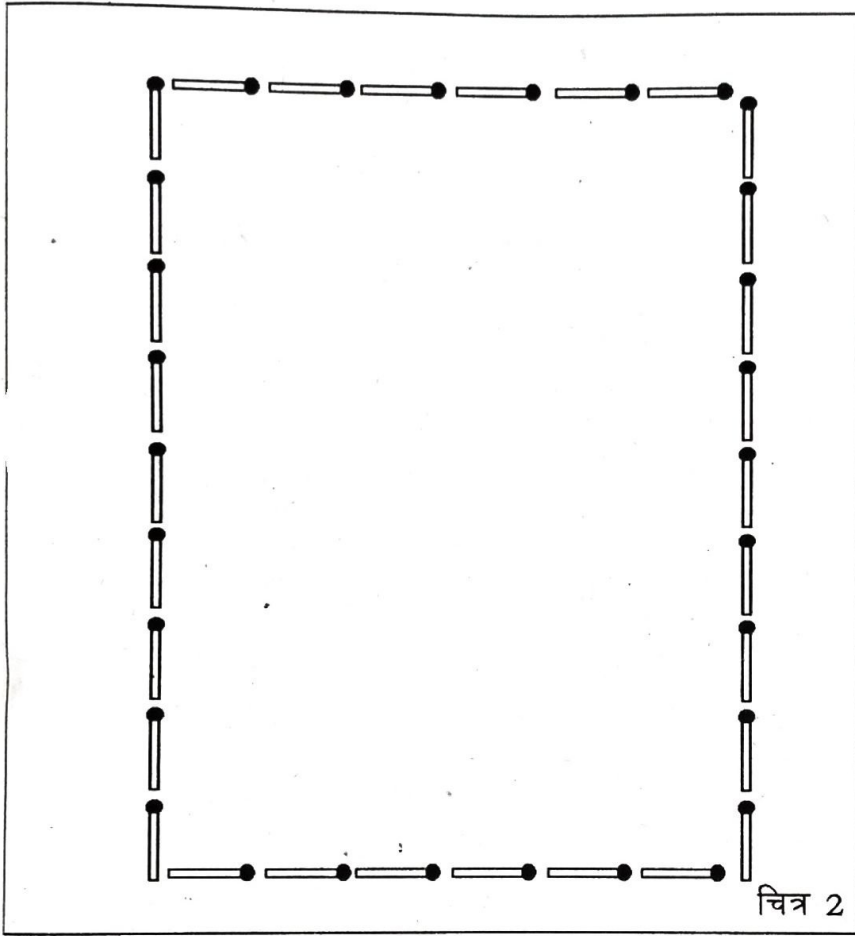
चिन्ह भरो

कक्षा की दीवार तो बन गई। अब कक्षा के अंदर जो चीज़ें थीं, उन्हें सही जगह दिखाना था। कक्षा में जहां जिस दिशा में दरवाज़े थे, नक्शे में वहीं दरवाज़े का चिन्ह बनाया गया। जहां अलमारी थी, वहां अलमारी का चिन्ह, जहां खिड़कियां थीं, वहां खिड़कियों का चिन्ह। अब दौलत का मानचित्र बनकर तैयार हो गया। चित्र 3 देखो।

दिशा ठीक करो

जब सब टोलियों के नक्शे बन गये तो सब ने एक दूसरे के नक्शों का मिलान किया। दौलत ने देखा कि रामू और उत्तरा के नक्शे कुछ फर्क बने हैं।

गुरुजी ने उन नक्शों को देखकर बताया, "ये तो गड़बड़ हो गई है। भई उत्तरी दीवार की ओर मानचित्र की भी उत्तरी रेखा होनी चाहिये। रामू और उत्तरा ने तो उत्तरी दीवार दायें हाथ की ओर बना दी। यह ठीक नहीं है। उत्तरी दीवार ऊपरी किनारे की तरफ बननी चाहिये।"

रामू और उत्तरा ने फिर से अपने मानचित्र ठीक से बनाए।

इस तरह दौलत की कक्षा का मानचित्र बना। अब तुम भी अपनी कक्षा का मानचित्र इसी तरह बनाना।

पैमाना

गुरुजी ने कहा, "तुम लोगों ने कक्षा को आधा मीटर स्केल से नापा और नक्शा बनाने के लिए एक तीली को एक स्केल के बराबर माना। यानी तुम्हारे नक्शे में अगर कोई दूरी एक तीली है तो वास्तव में कमरे में वह एक स्केल के बराबर है। तो यह तुम्हारे नक्शे का पैमाना हुआ।"
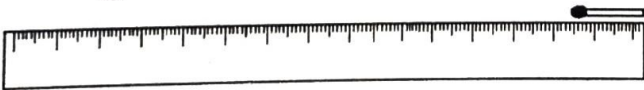
एक तीली = 1 स्केल

गुरुजी ने कहा, "हर नक्शे में पैमाना दिया होता है। इससे हम पता कर सकते हैं कि नक्शे में जो दूरी है वह वास्तव में कितनी दूरी के बराबर है।"

चित्र 3. दौलत के कक्षा का मानचित्र
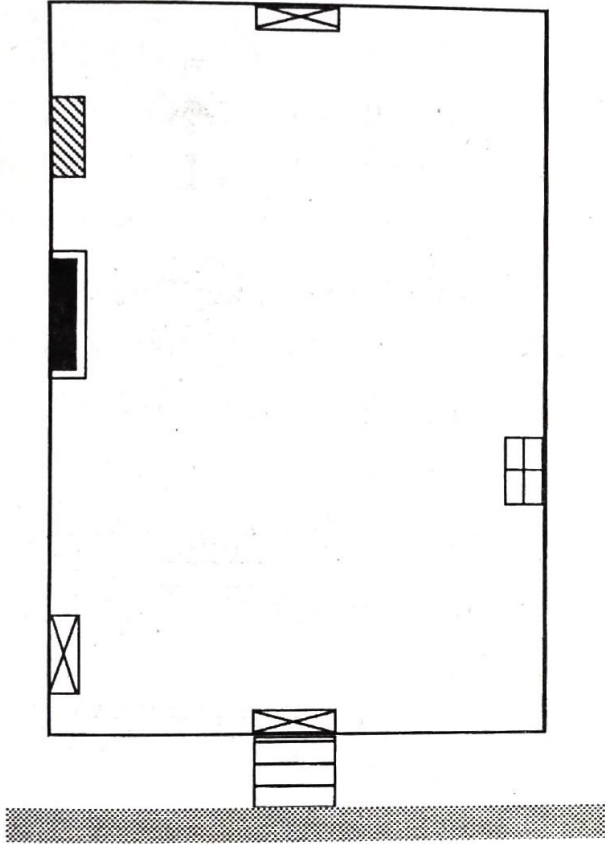
संकेत	
दरवाज़ा	
खिड़की	
अलमारी	
ब्लैक-बोर्ड	
सीढ़ी	
सड़क	

हमेशा याद रखो

1. मानचित्र हम ऐसे बनाते हैं, जैसे ऊपर आसमान से धरती की ओर देख रहे हों।
2. मानचित्र में सब चीज़ें, दीवार, सड़क आदि को चिन्हों से दिखाया जाता है।
3. ज़मीन पर दूरियां नापकर पैमाने के अनुसार छोटा करके मानचित्र बनाते हैं।
4. मानचित्र में उत्तर दिशा हमेशा ऊपरी किनारे की ओर होती है। सारी चीज़ें उसी दिशा में दिखाते हैं, जिस दिशा में वे धरती पर हैं।

तुम भी बनाओ

तुम भी अब अपनी कक्षा का मानचित्र बनाओ।

1. सबसे पहले खड़े होकर चारों **दिशाओं का पता करो।** टोलियां बनाकर सब उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाओ।
2. कक्षा में जो भी न हटायी जाने वाली चीज़ें हैं बोर्ड पर उनकी **सूची बनाओ।** हरेक के आगे उसका संकेत या **चिन्ह बनाओ।**
3. एक कागज़ पर अपनी कक्षा का मोटा आकार (**स्केच**) **बना लो** और उसमें चिन्ह भरो।
4. कुछ छात्र **आधा मीटर स्केल** से दीवारों की **लम्बाई नापें।** नापकर बोर्ड पर लिख लें कि हरेक दीवार कितने स्केल लंबी है।
5. हरेक स्केल के लिए एक माचिस की **तीली फर्श पर रखो** और इस प्रकार चारों दीवारें बनाओ। ध्यान रहे, उत्तरी दीवार ऊपरी किनारे की ओर हो।
6. तीलियां हटाने से पहले उनकी जगह उतनी ही लम्बी **रेखा चॉक से खींचो।**
7. अब कक्षा में ध्यान से देखो, हर चीज़ किस दिशा में है। मानचित्र में उन चीज़ों के **चिन्ह सही जगह भरो।**
8. सब एक दूसरे के मानचित्र देखो और आपस में **गलतियां सुधारो।**
9. अब एक बार सभी चीज़ों का मिलान अपने मानचित्र से करके देख लो – सभी चीज़ें जो तुमने दर्शाई हैं, क्या सही दिशा और सही जगह पर हैं? क्या कक्षा की लम्बाई-चौड़ाई पैमाने के अनुरूप है?
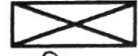
पैमाने से बड़े छोटे नक्शे :

तुमने एक तीली को आधा मीटर स्केल के बराबर माना था। अगर तुम्हें और बड़ा नक्शा बनाना है तो दो तीलियों को एक स्केल के बराबर मान सकते हो। फिर नक्शे का आकार दुगुना हो जायेगा। इस तरह पैमाना बदलकर हम बड़े छोटे आकार के मानचित्र बना सकते हैं।

(क) यहां मध्यप्रदेश के कई छोटे-बड़े नक्शे बने हैं। इनमें से कौन से नक्शे एक सी लम्बाई-चौड़ाई के हैं?
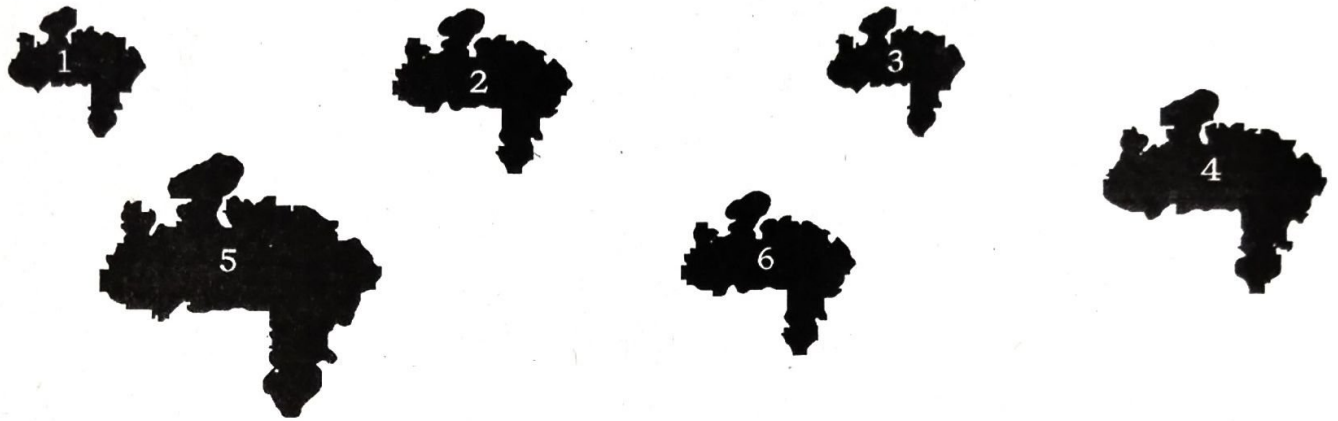
(ख) यहां दिए भारत के नक्शे कितने अलग-अलग आकारों में बनाए गए हैं? पहचानो।

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां दो चित्र बने हैं। इनमें से एक चित्र का नक्शा भी बना हुआ है। चित्रों और नक्शे का मिलान करके बताओ कि नक्शा चित्र अ का है या चित्र ब का। मिलान करने के लिए चिन्हों की सूची ध्यान से देख लो।
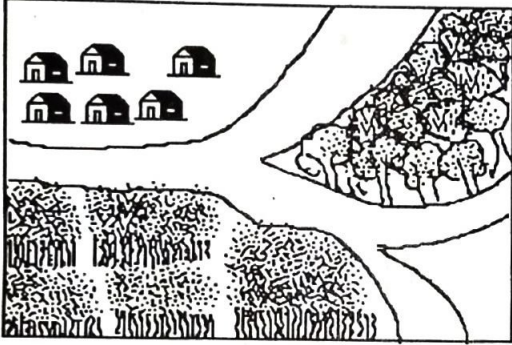
अ
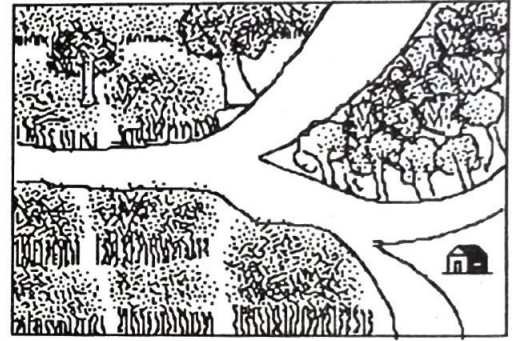
ब

संकेत सूची
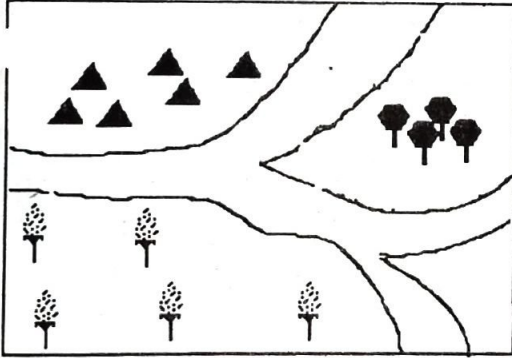
	खेत
	घर
	जंगल
	सड़क

2 क) मोनू ने अपने चौक का नक्शा बनाया। उसका चौक पूर्व से पश्चिम 2 स्केल और उत्तर से दक्षिण 3 स्केल था। मोनू के एक स्केल को माचिस की एक तीली के बराबर मानो। अब बताओ नीचे दिए नक्शों में से कौन-सा नक्शा मोनू के चौक का है?
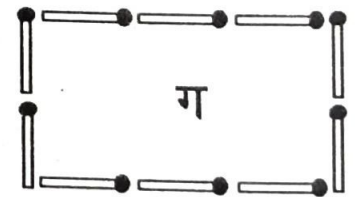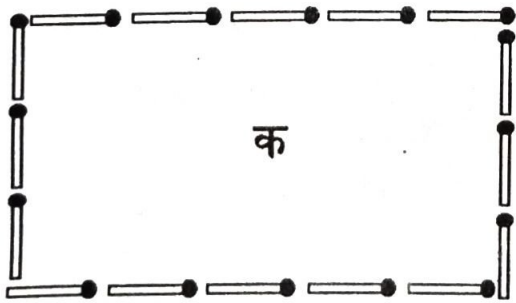
ख) अगर हम एक स्केल को दो तीली के बराबर मानें तो चौक कितना बड़ा बनेगा? अपनी कापी में बनाओ।

3. इस पुस्तक के पृष्ठ 158 पर मध्यप्रदेश का नक्शा है। नक्शा देखकर बताओ कि –

- इंदौर भोपाल की किस दिशा में है?
- जबलपुर भोपाल की किस दिशा में है?
- जबलपुर इंदौर की किस दिशा में है?
- हरदा के पूर्व में पड़ने वाले दो शहरों के नाम क्या हैं?

(तुम दिशा तीर की मदद ले सकते हो)

2. मैदान, पहाड़ और पठार

यहां दिए चित्रों को देखो। तुम्हारे आसपास का क्षेत्र इनमें से किस चित्र जैसा दिखता है?

इन चारों चित्रों का वर्णन करो। उनके बीच जो समानताएं व फर्क नज़र आ रहे हैं, बताओ।

इनमें से एक चित्र पठार का है, एक पहाड़ का है, एक पहाड़ों से घिरे हुए पठार का है और एक चित्र मैदान का है।

मैदान में दूर-दूर तक बिल्कुल समतल ज़मीन है, न कहीं अधिक ऊंची, और न कहीं अधिक नीची।

पहाड़ में उंची-ऊंची चोटियां हैं और दोनों तरफ तेज़ ढलान वाली ज़मीन है।

पठार में ढलानों के ऊपर ऊंचाई पर समतल ज़मीन है, जो बीच-बीच में कहीं-कहीं ऊंची-नीची भी है।

पहाड़ों से घिरे पठार के चारों तरफ पहाड़ हैं।

पहचान कर बताओ कि कौन सा चित्र –

मैदान का है	*पठार का है*
पहाड़ का है	*पहाड़ों से घिरे पठार का है*

तुम्हारा क्षेत्र

तुम्हारे आसपास का क्षेत्र क्या किसी खास नाम से जाना जाता है – जैसे नर्मदा का मैदान, मालवा का पठार या सतपुड़ा पर्वत?
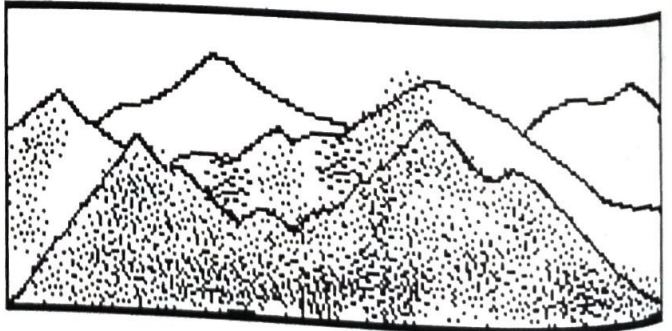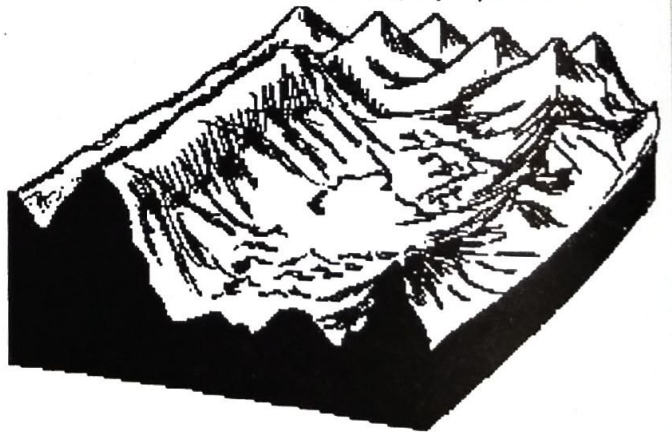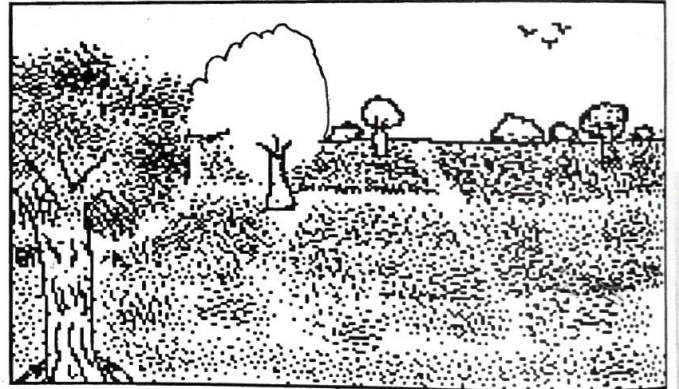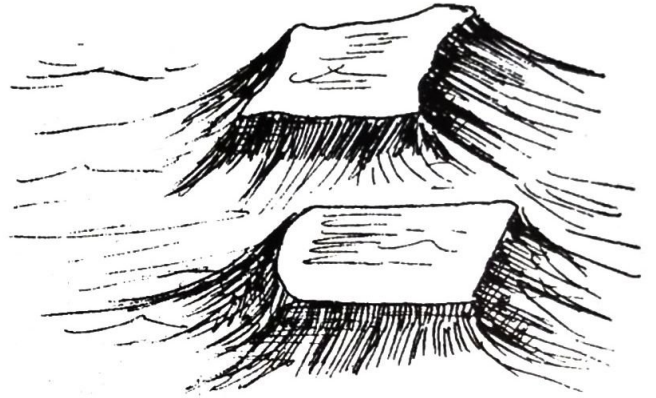
मध्यप्रदेश का प्राकृतिक मानचित्र कक्षा में टांगो। उसमें अपने ज़िले या तहसील का इलाका पहचानो। गुरुजी की सहायता लेकर मानचित्र से पता करो कि तुम किस मैदान, पहाड़ या पठार पर रहते हो?

5-6 वाक्यों में अपने चारों ओर के क्षेत्र की प्राकृतिक बनावट का वर्णन करो।

लोग कहां बसते हैं?

मैदान हो या पहाड़ या पठार – लोग वहीं बसते हैं जहां पानी मिले, खेती के लायक ज़मीन हो ताकि भोजन की चीज़ें उगायी जा सकें और आसपास मिलने वाली चीज़ों से रहने के लिए घर भी बना लिए जाएं।

तुम जहां रहते हो वहां लोगों के खाने में क्या चीज़ें बहुत प्रमुख हैं? नीचे लिखो–

1. तुम्हारे क्षेत्र में कौन सा अनाज खाया जाता है–
2. कौन सी दाल ------
3. कौन सा तेल ---------
4. कौन से मसाले -----------
5. कौन से फल -------------
6. कौन सी सब्ज़ियां ------------------

इन चीज़ों के अलावा शक्कर, गुड़ और नमक भी भोजन के लिए ज़रूरी है।

इनमें से कौन सी चीज़ें तुम्हारे आसपास के क्षेत्र में ही उगाई या बनाई जाती हैं? सूची बनाओ।

क्या यह कहना ठीक होगा कि आमतौर पर लोग वही चीज़ें ज़्यादा खाते हैं जो उनके आसपास के क्षेत्र में मिल जाती हैं?

जैसे गेहूं पैदा करने वाले लोग गेहूं की रोटी खाते हैं। जहां चावल अधिक होता है, वहां भोजन का मुख्य अनाज चावल है।

पानी के बिना भी मनुष्य नहीं रह सकता।

पानी किन कामों के लिए बहुत ज़रूरी है?

तुम जहां रहते हो, वहां पानी के क्या-क्या साधन हैं?

जहां पानी हमेशा न मिले वहां लोग रह तो नहीं पाएंगे न?

पर पानी हर जगह आसानी से नहीं मिलता। पानी मिलने की क्या सुविधाएं हैं और क्या कठिनाइयां हैं – यह देखकर ही किसी जगह गांव या नगर बसता है।

तुम जिस जगह रहते हो वहां लोगों के मकान किस चीज़ के बनते हैं?
इनमें से कौन-सी चीज़ें आसपास के क्षेत्र में ही मिल जाती हैं?

क्या यह कहना ठीक होगा कि लोग उन्हीं चीज़ों से घर बनाते हैं जो आसपास के क्षेत्र से मिल जाती हैं क्योंकि उन्हें लाकर घर बनाने में आसानी होती है?

मैदानों, पहाड़ों व पठारों पर लोग कैसे बसे हैं? इन तीन इलाकों की बनावट बहुत अलग है। इसलिए इन इलाकों में लोगों को बसने के लिए अलग-अलग सुविधाएं हैं और उन्हें अलग-अलग कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

तुम्हारे अनुसार लोगों को बसने के लिए सबसे ज़्यादा सुविधा कहां होगी व सबसे ज़्यादा कठिनाई कहां होगी? कारणों के साथ चर्चा करो।

नर्मदा का मैदान, सतपुड़ा का पहाड़ और भोपाल-विदिशा का पठार
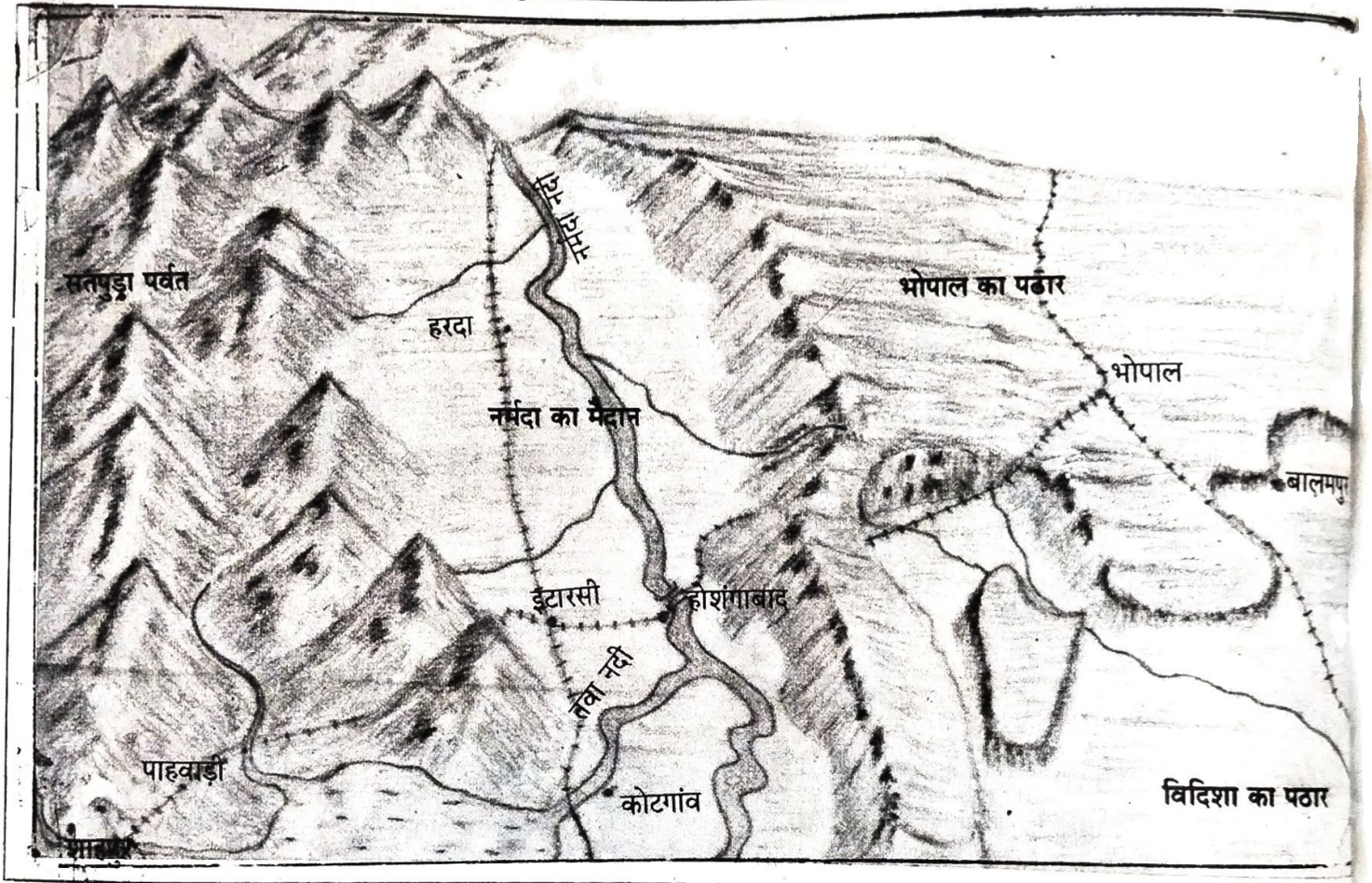
यह मध्यप्रदेश के पहाड़, पठार, मैदान के कुछ हिस्सों का चित्र है।

इसमें तुम्हें क्या-क्या पहचान में आ रहा है?

चित्र में कौन से पहाड़ दिख रहे हैं?

कौन सा मैदान दिख रहा है?

कौन से पठार दिख रहे हैं?

क्या पठार का कगार है या वह पहाड़ों से घिरा है?

चित्र में सबसे बड़ा मैदान किस नदी का है?

क्या इस नदी में कोई और नदी मिल रही है?

उसका नाम क्या है?

उसके किनारे क्या कोई गांव दिखता है?

नर्मदा के मैदान में कौन से शहर दिखाए गए हैं?

भोपाल नगर पहाड़ पर बसा है या पठार पर?

बालमपुर नाम का गांव किस पठार की कगार के नीचे बसा है?

इस चित्र में तुम्हें पहाड़ों से घिरा कौन-सा गांव व कौन सा शहर दिखता है?

चलो, नर्मदा के मैदान, सतपुड़ा पर्वत और भोपाल-विदिशा के पठार - इन क्षेत्रों में बसे एक-एक गांव को देखने चलते हैं।
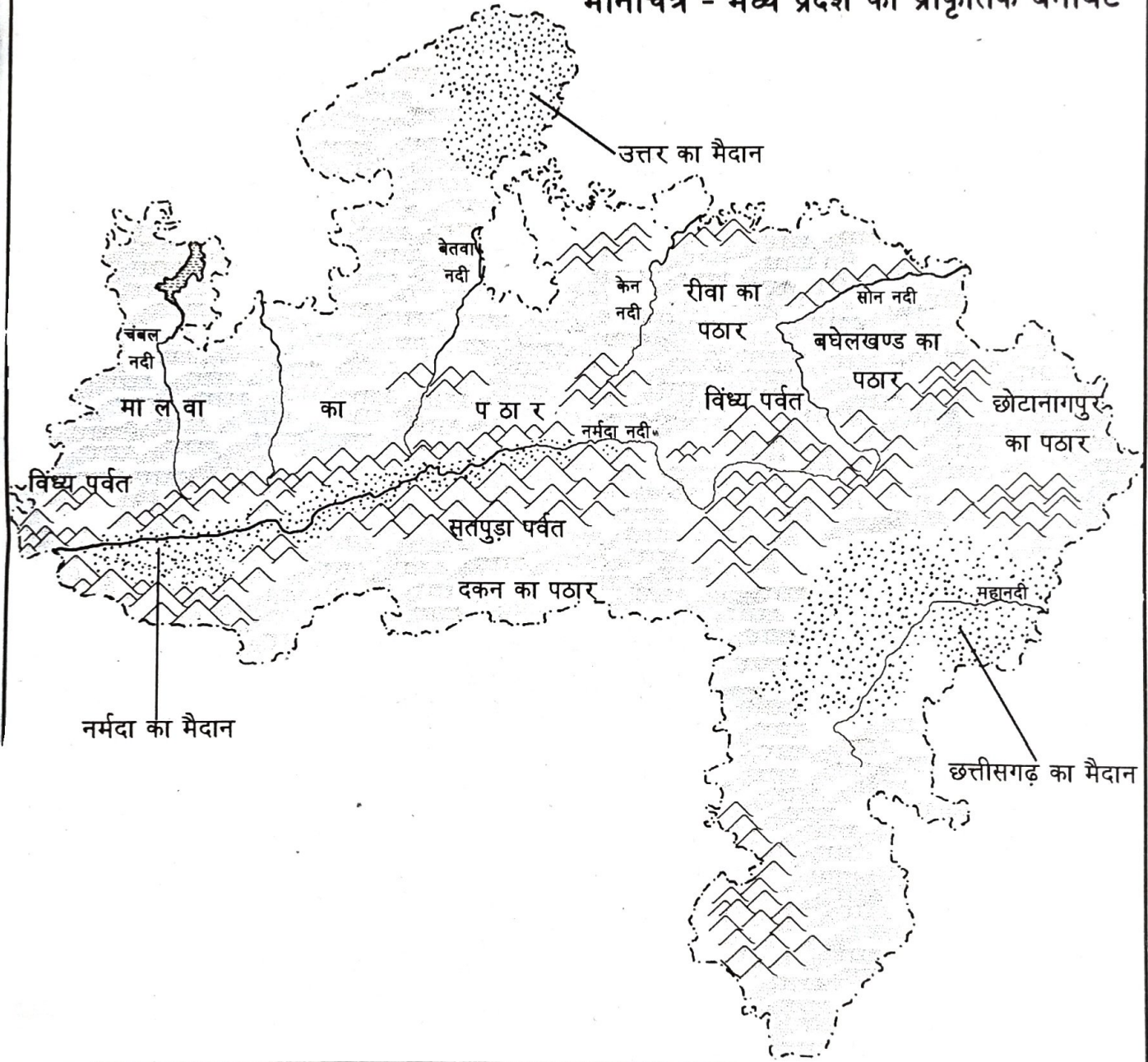
संकेत

मैदान	
पहाड़	
पठार	
नदी	

3. मैदान का एक गांव कोटगांव

इस पाठ के उपशीर्षकों व चित्रों को देखकर जानो कि मैदान के गांवों की किन बातों के बारे में पाठ में चर्चा होगी। मैदानों की इन बातों के बारे में तुमने क्या-क्या देखा और सुना है – चर्चा करो।

चित्र 1. नर्मदा नदी पर सब्ज़ियों से लदी नाव

नदियों का मैदान

नर्मदा नदी के किनारे होशंगाबाद शहर बसा है। होशंगाबाद से कुछ दूरी पर तवा नदी बहती है। हां यह वही तवा नदी है, जो तुमने पृष्ठ 176 के चित्र में देखी थी। यह नदी अपना पानी लाकर नर्मदा में गिराती है, इस तरह तवा नर्मदा नदी की एक **सहायक नदी** है। यह सतपुड़ा पर्वत से निकलकर होशंगाबाद के पूर्व में बांद्राभान नाम की जगह पर नर्मदा नदी में मिलती है।

> ***क्या तुमने कभी किसी नदी-नाले को दूसरे नदी-नाले में मिलते देखा है?***

हम होशंगाबाद से तवा नदी की ओर सड़क से चले तो दूर-दूर तक खेत ही खेत दिखाई दिए। कहीं लंबे-चौड़े जंगल नहीं दिखे। यहां बिलकुल समतल, सपाट भूमि है - कोई पहाड़ नहीं, तेज़ ढलानें नहीं। यह नर्मदा नदी का मैदान है।

होशंगाबाद से लगभग नौ किलोमीटर चलने पर तवा नदी मिली। यह एक बहुत चौड़ी नदी है, जिसमें रेत ही रेत बिछी है। किनारे के पास एक पतली धार में पानी बह रहा है। सिर्फ बरसात के महीनों में नदी के दोनों किनारों तक पानी भरता है।

नदी के पास खेतों में भी दूर-दूर तक महीन मिट्टी बिछी है। यहां जब लोग कुआं खोदते हैं तो पांच-छः फीट तक मिट्टी निकलती है, फिर लगभग 20 फीट तक रेत निकलती जाती है। उसके नीचे गोल चिकने पत्थर मिलते हैं।
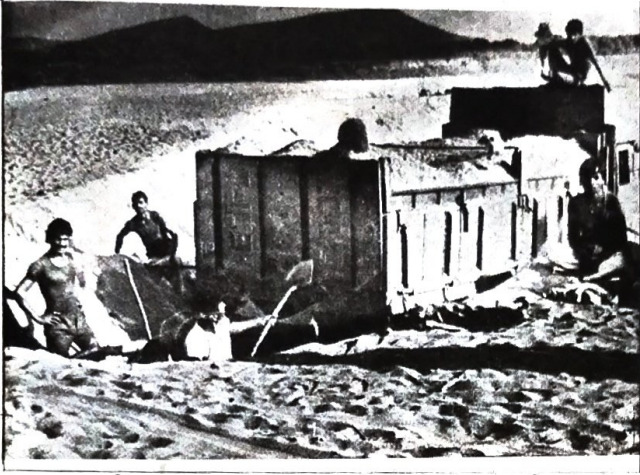
चित्र 2. तवा के पाट से रेत की ढुलाई

ये बालू, रेत, मिट्टी, पत्थर - सब तवा और अन्य नदी नालों में बह-बह कर आए हैं और यहां मैदान में बिछे हैं। नदी में लुढ़क-लुढ़क कर पत्थर भी गोल और चिकने हो गए हैं। नर्मदा, तवा और उनकी सहायक नदियों ने मिट्टी, रेत, बालू बिछा-बिछा कर यह सपाट मैदान बनाया है।

रास्ते में थोड़ी थोड़ी दूरी पर गांव मिले। जब हम किसी गांव के पास आने को होते तो हमें पहले ही पेड़ों के झुरमुट दिख जाते। वैसे तो हमें दूर-दूर तक कोई जंगल नहीं दिखता था – सब तरफ खेत थे। ऐसा क्यों? यह शायद इसीलिए होगा क्योंकि यहां मैदान की मिट्टी खेती के लिए बहुत अच्छी है। तभी लोगों ने पेड़ काटकर खेत बना लिए हैं।

इस तरह का मैदानी इलाका नर्मदा नदी के दोनों किनारों पर बहुत दूर तक फैला है।

मध्यप्रदेश के प्राकृतिक मानचित्र में नर्मदा का मैदान देखो - कहां से कहां तक फैला है?
इस मैदान में इनमें से कौन से नगर बसे हैं – हरदा, भोपाल, देवास, सागर, इटारसी, पिपरिया, बैतूल, नरसिंहपुर?
एक नदी के मैदान की क्या खास बातें हैं – यह बताने वाले पांच वाक्य ऊपर के अंश से चुनो।

* कोटगांव *

चलते-चलते हम बाबई शहर पहुंच गए थे। हमें लोगों ने बताया कि पास ही बागरा नाम के कस्बे में कवेलू बनाने का कारखाना है। हमने बागरा के कवेलू के बारे में सुन रखा था। तो हम बागरा की तरफ जाने लगे।

सड़क पर हमें कई गांव दिखे। हमारे मन में मैदान के गांवों के बारे में इतने सवाल कुलबुला रहे थे कि हम से रहा नहीं गया। एक कच्ची सड़क एक गांव की तरफ जाती दिखी। हम उसी पर चल

चित्र 3. कोटगांव की सपाट समतल भूमि

दिए और पहुंचे कोटगांव।

मैदान के और गांवों की तरह कोटगांव भी पेड़ों के झुरमुट के बीच बसा है। गांव के पश्चिम में तवा नदी बहती है। कोटगांव के बीच में बेलिया नाम का नाला बहता है और तवा में जा मिलता है। तवा की तरह बेलिया में भी बारिश में खूब पानी बहता है। बाकी महीनों में यह नाला भी सूख जाता है।

कोटगांव के खेतों में उपजाऊ मिट्टी बिछाने का काम बेलिया नाला भी करता है।

पृष्ठ 189 पर दिया कोटगांव का नक्शा देखो और उसमें बेलिया नाला पहचानो।

मिट्टी

नदी के मैदान में रहने वाले लोगों को फसल उगाने के लिए कैसी मिट्टी मिलती है? यह देखने हम कोटगांव के खेतों में घूमे। सबसे पहली सुविधा तो यह दिखी कि सब दूर खेतों में नदियों ने जो मिट्टी बिछाई है वह काफी गहरी और महीन है। नदी जंगलों से कूड़ा-कचरा, सड़े पत्ते व जड़ें भी बहाकर लाती है। ये चीज़ें भी मिट्टी में मिली हैं और इस कारण मिट्टी बहुत उपजाऊ है। उसमें कंकड़, पत्थर भी नहीं हैं। यह सुविधा हर जगह के लोगों को नहीं मिलती। जब हम पहाड़ और पठार पर जाएंगे तब इस बात को समझेंगे।

क्या तुम अन्दाज़ लगा सकते हो कि पहाड़ों की मिट्टी मैदान की मिट्टी से कैसे फर्क होगी?

मैदान में सब तरफ मिट्टी अच्छी तो है - पर उसमें भी कुछ फर्क है। कहीं-कहीं **चिकनी काली मिट्टी** है। कहीं **दोमट मिट्टी** है, जिसमें चिकनी मिट्टी और रेत बराबर-बराबर मिली रहती है

नदी लाकर बिछाती उपजाऊ मिट्टी ....
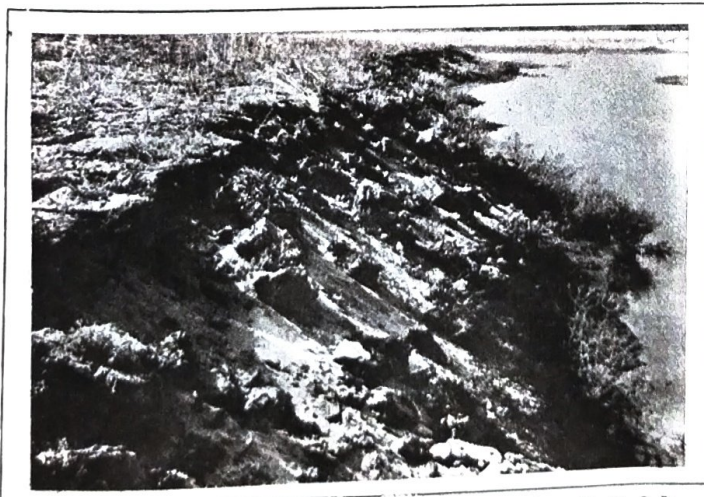
चित्र 4. यह तवा नदी का किनारा है। इस चित्र में ऊंचे रेतीले किनारे के ऊपर भारी दोमट मिट्टी की मोटी परत बिछी हुई दिख रही है। इस उपजाऊ दोमट मिट्टी के कुछ ढेले टूटकर रेतीले किनारे पर पड़े हुए हैं।
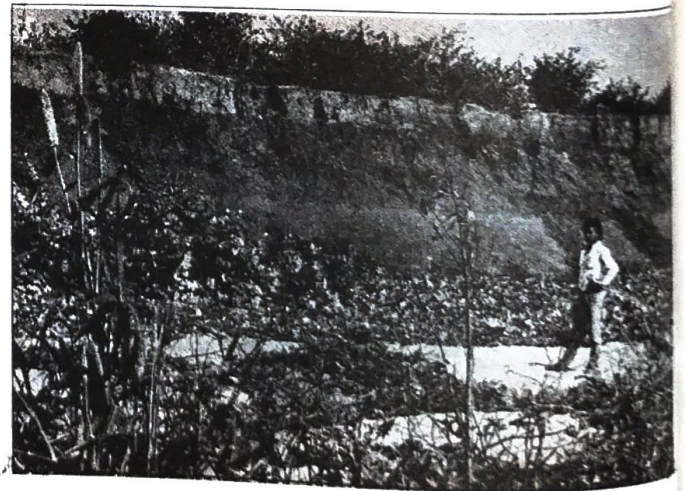
चित्र 5. इसमें साफ दिखाई दे रहा है कि नदी ने दोमट मिट्टी और रेत की कितनी परतें बिछाई है। इस तरह रेत और मिट्टी केवल नदी किनारे ही नहीं बल्कि दूर दूर तक बिछी हुई है। नदी का मैदान इसी तरह रेत और मिट्टी की परतों के बिछने से बनता है। चित्र में किनारे के ऊपर बिही (अमरूद) का बगीचा लगा है। नीचे रेत पर तरबूज़ के बाड़े बने हैं।

मिट्टी और फसलें

यहां की मिट्टी पर क्या हर तरह की फसल हो जाती है? यह जानने के लिये हमने कोटगांव के किसानों से बात की। उन्होंने बताया कि चिकनी और दोमट मिट्टी - दोनों ही गेहूं; चना, ज्वार, मसूर, तुअर, धान और सोयाबीन की फसल के लिए बहुत अच्छी हैं। इन मिट्टियों में पानी भी ठहरता है।

मगर पानी के रुकने के कारण दोमट मिट्टी में तिल और मूंगफली नहीं उगायी जा सकती। तिल और मूंगफली जैसी फसलें भुरभुरी सी मिट्टी में होती हैं, जिसमें पानी ज़्यादा न ठहरे। इन फसलों के लिए कुछ ढलवां ज़मीन हो तो और भी अच्छा है। यहां गन्ना भी नहीं उगाया जाता। इसलिए तेल और शक्कर जैसी चीज़ें दूसरे इलाकों से यहां बिकने आती हैं।

मिट्टी और बगीचे

बेलिया नाले के पास की मिट्टी में कई फलों के पेड़ उगाए गए हैं और बगीचे बने हैं। नींबू, आम, बेर, बिही, पपीते और जामुन के पेड़ उग रहे थे। किसानों ने बताया कि नाले के पास की मिट्टी में बालू-रेत ज़्यादा मिली रहती है। इसलिए यह मिट्टी ज्यादा **भुरभुरी** है। इसमें पानी नहीं रुकता है और इस कारण इस मिट्टी में फसल कम ही ले पाते है। लेकिन पेड़ों की लंबी-लंबी जड़ें भुरभुरी मिट्टी में नीचे तक जाकर पानी खींच पाती हैं। इसीलिए नदी-नाले के पास की मिट्टी बगीचों के लिए बहुत अच्छी है। (चित्र 4,5)

क्या तुम गांव में रहते हो? तुम्हारे यहां किस तरह की मिट्टी में कौन सी फसल होती है? कुछ ऐसी भी फसलें होंगी जो तुम्हारे यहां नहीं होतीं— क्या उनके लिए तुम्हारे गांव की मिट्टी ठीक नहीं है?

खाली स्थान भरो—

कोटगांव में ज़्यादातर ——— व ——— मिट्टी है। इसमें ———, ——— और ——— फसलें होती हैं, पर ———, ——— और ——— फसलें नहीं होतीं।

नदी-नालों के पास की मिट्टी ——— होती है और इसमें ——— लगाना आसान होता है।

सिंचाई

फसल कौन सी होगी, कितनी होगी यह सिर्फ मिट्टी पर निर्भर नहीं करता। कई फसलों के लिए सिंचाई का पानी चाहिए, क्योंकि वर्षा तो सिर्फ तीन-चार महीने होती है! क्या कोटगांव के किसान सिर्फ बारिश की फसल लेते हैं? अगर नहीं तो बाकी महीनों में खेती करने के लिए उन्हें पानी कैसे मिलता है? इस प्रश्न के बारे में हमने खोजबीन शुरू की।

असिंचित फसलें

कोटगांव में एक समय सिंचाई के साधन बहुत कम थे। बस कुछ कुओं पर **मोट** चलती थी। मोट से बहुत ज़्यादा ज़मीन सींची नहीं जा सकती। साल के अधिकतर समय में नदी में पानी भी कम रहता है और वह भी गहराई में। इसलिए इससे सिंचाई नहीं हो पाती थी।

इन कारणों से यहां अधिकतर ज़मीन पर खरीफ (बारिश) की फसल ली जाती थी। उस समय यहां कोदों, कुटकी, ज्वार और तुअर आदि फसलें उगायी जाती थीं। जहां कहीं सिंचाई होती थी, वहां रबी (सर्दी) में पानी देकर गेहूं व चना उगाया जाता था। बिना सिंचाई के भी गेहूं की फसल होती थी, पर उसकी पैदावार कम थी।

मगर आजकल नर्मदा के मैदान में सिंचाई का काफी प्रबंध किया जा रहा है।

बांध और नहरें

तवा नदी पर एक ऊंचा बांध बनाया गया है। उससे बरसात का पानी इकट्ठा किया जाता है। बांध से पानी जगह-जगह ले जाया जाता है। इस तरह होशंगाबाद के बड़े इलाके में सिंचाई का प्रबंध हुआ है।

ज़रा सोचकर बताओ, क्या इस तरह एक बड़े इलाके में नहरों से सिंचाई करना पहाड़ों में संभव है? नहरें बनाने में वहां क्या कठिनाई होगी जो मैदान में नहीं होती है?

अब तक कोटगांव के कुछ ही खेतों में नहर का पानी पहुंचा है। यहां अधिकतर सिंचाई तो कुओं से ही होती है।

कुएं

हमें मालूम पड़ा कि कोटगांव में कुएं आसानी से खुद जाते हैं। मैदान होने के कारण यहां ज़मीन खोदने पर चट्टान नहीं मिलती। यह सुविधा पहाड़ व पठार पर रहने वालों को नहीं मिलती है।

नदी पास में होने के कारण कोटगांव में पानी

चित्र 6. रिंग कुआं

8 मीटर की गहराई पर ही मिल जाता है। मिट्टी के नीचे बालू, रेत और गोल पत्थरों के बीच बहुत पानी भरा रहता है।

कोटगांव में लगभग पांच-छः हज़ार रुपए में कुआं खुद कर तैयार हो जाता है। पहाड़ व पठार के किसानों को कुआं खुदवाना कहीं ज़्यादा महंगा पड़ता है।

तुम जहां रहते हो वहां कुआं खोदने पर चट्टान निकलती है या मिट्टी व रेत?

रिंग कुआं

कोटगांव में कुएं खोदने में एक कठिनाई ज़रूर होती है। कुछ पांच-छः फीट खोदने पर रेत निकल आती है। कुआं खोदते-खोदते मिट्टी व रेत उसमें धंसती जाती है।

पिछले कुछ सालों से इस कठिनाई से निपटने का एक तरीका खोजा गया है। आजकल कोटगांव और आसपास के गांवों में एक नई तरह का कुआं बनाया जाता है जिसे **रिंग कुआं** कहते हैं। जैसे चित्र 6 में दिखाया गया है।

पहले कई रिंग - यानी सीमेंट-कांक्रीट के घेरे बना लिये जाते हैं। जैसे-जैसे कुआं खुदता है, वैसे-वैसे ये रिंग कुएं के अंदर बैठाए जाते हैं। इससे रेत धंसने का डर नहीं रहता और कुआं खोदने के साथ ही इसकी पक्की दीवार भी बन जाती है। जहां रिंग का इस्तेमाल होता है, वहां कुएं की चौड़ाई भी कम रखी जा सकती है।

क्या तुम्हारे क्षेत्र में रिंग का कुआं बनता है?

मोटर पंप

मैदान में सिंचाई की सुविधा और कठिनाई की बात समझने पर हमारा ध्यान कुओं में लगी बिजली की मोटर और डीज़ल पंप पर गया। इन्हीं से पानी कुएं से निकाला जाता है। मोटर से 10-15 एकड़ तक की सिंचाई की जाती है।

समतल भूमि होने की वजह से पानी आसानी से छोटी नालियों द्वारा खेतों में दूर-दूर तक पहुंच जाता है। इतना पानी निकालने पर भी कुओं में पानी की कमी नहीं पड़ती। कोटगांव में सिंचाई के लगभग 50 कुएं हैं।

तुम्हारे गांव में सिंचाई कैसे होती है और कितनी होती है - कोटगांव से तुलना करते हुए चर्चा करो।

नदी-कुओं के होने पर भी पहले कोटगांव में ज़्यादा सिंचाई क्यों नहीं होती थी?

मैदान में नहर बनाना व कुआं खोदना आसान क्यों है?

कोटगांव के किसान कुएं में ईंट की चुनाई न करके रिंग क्यों डालते हैं?

क्या तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि पिछले कुछ सालों में सिंचाई के कारण कोटगांव की खेती में क्या बदलाव आया होगा?

सिंचित फसलें

पहले बरसात के मौसम में सिर्फ कोदों, कुटकी, ज्वार उगाई जाती थी। इन्हें बहुत ज़्यादा पानी नहीं चाहिए। अब सिंचाई कर सकते हैं। खरीफ में धान व सोयाबीन जैसी फसलें उगाना आसान हो गया है। इन फसलों को ठीक समय पर पानी देना होता है। केवल बरसात के भरोसे इन्हें उगाना कठिन है।

पहले सर्दी के मौसम में बहुत कम गेहूं उगाया जाता था। अब सिंचाई के पानी से खूब गेहूं होता है। नई किस्म का गेहूं भी उगाया जाने लगा है। नई किस्म के गेहूं में पानी खूब देना होता है पर पैदावार भी बहुत ज़्यादा होती है। गेहूं के अलावा रबी में चना व मसूर भी उगाई जाती है।

कोटगांव में अब पहले की तुलना में सब्ज़ी बहुत उगाई जाने लगी है। सब्ज़ी उगाने के लिए भी खूब

चित्र 7. गेहूं की कटाई
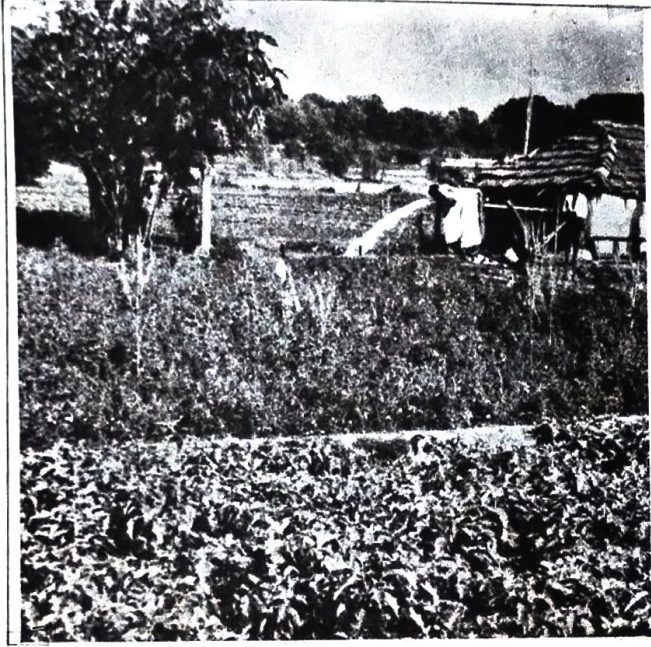
चित्र 8. गर्मी में सब्ज़ी की खेती

पानी की ज़रूरत पड़ती है। सिंचाई की मदद से अब कोटगांव में गर्मी और सर्दी दोनों मौसमों की सब्ज़ी उगाई जाती है – जैसे टमाटर, बैंगन, भिण्डी, बरबटी।

गर्मी में, जब खेतों में फसल नहीं होती, नदियों में पानी नहीं होता, तब भी कुओं के पास के खेतों

चित्र 9. रेत में उगती सब्ज़ी व फल

में सब्ज़ियां उगाई जाती हैं।

गर्मी, सर्दी या बरसात - कोटगांव के किसानों को अब हर मौसम में काम लगा रहता है।

तालिका भरो–

कोटगांव की फसलें

	सिंचाई से पहले	*सिंचाई के बाद*
गर्मी में		
सर्दी में		
बरसात में		

क्या तुम बता सकते हो कि पिछले कुछ वर्षों में कोटगांव के लोगों के भोजन में क्या-क्या परिवर्तन आए होंगे?

क्या तुम्हारे गांव में भी सिंचाई के कारण फसलों में, लोगों के काम में, भोजन में, कुछ बदला है?

नदी की रेत पर खेती

गर्मी में कोटगांव में हरी सब्ज़ी के अलावा तरबूज़ और खरबूज़ के ढेर भी दिखते हैं। ये कहां उगाए जाते हैं?

तवा के किनारे होने के कारण कोटगांव के किसानों को एक और फायदा है। तुमने देखा था कि तवा नदी की तलहटी पर खूब रेत बिछी थी। गर्मी के मौसम में इस रेत पर बाड़ियां बनाकर कई सब्ज़ियां या फल उगाए जाते हैं। नदी का पानी लेकर इनकी सिंचाई भी की जाती है। यहां उगाया गया कद्दू, लौकी, टिण्डा, तोरई, गिल्की, ककड़ी, खरबूज़, तरबूज़ आदि दूर-दूर के बाज़ारों में बिक जाता है।

चारे की कमी

मैदान की अच्छी मिट्टी और पानी की सुविधा का उपयोग यहां के किसानों ने कैसे किया है – यह हम देख रहे थे। देखते-देखते हमारे ध्यान में यह बात आई कि यहां जितनी मिट्टी पर खेती की जा सके, की जाती है। झाड़-पेड़ बहुत कम हैं। यहां जानवरों के लिए हरे चारे की बहुत कमी होती होगी। किसानों से पूछा तो उन्होंने यह बात सही बताई। हरे चारे की कमी के कारण कोटगांव में पशुपालन कम ही होता है। खेती के लिए व घर में दूध की ज़रूरत के लिए गाय-बकरी पाले जाते हैं। दूध का धंधा कम ही होता है।

चित्र 10. सटे-सटे घर

घर व बस्ती

कोटगांव में लोगों के घर पास-पास बने हैं। मैदान में बसे गांवों में अक्सर ऐसा ही होता है। यहां आबादी अधिक है और घर बनाने के लिए ज़मीन कम। घर सटे-सटे बनाए जाते हैं, ताकि उपजाऊ भूमि पर ज़्यादा से ज़्यादा खेती की जा सके।

क्या तुम्हारे गांव में भी घर इसी तरह बने हुए हैं?

हमारी नज़र में यह बात भी आई कि कोटगांव के घरों की दीवारें आमतौर पर मिट्टी की बनी हैं व छतें बांस और खपरैल की। लकड़ी की बल्लियों का इस्तेमाल छत को सहारा देने के लिए किया गया है। कुछ धनी लोगों के घर ईंट के भी बने हैं। यानी, घर बनाने के लिए मुख्य रूप से मिट्टी का इस्तेमाल होता है और थोड़ी बहुत लकड़ी का। ये चीज़ें आसपास आसानी से मिल जाती हैं।

बाज़ार

कोटगांव के इस दौरे से हम लौटने लगे। हम सोचते जा रहे थे कि मैदान के किसान पानी और मिट्टी की सुविधा के कारण साल भर में कितनी सारी चीज़ें उगा लेते हैं। उनके परिवार की ज़रूरत से ऊपर जो उपज बचती होगी उसको वे कहां बेचते होंगे?

मैदानों में भूमि अच्छी है, पानी अच्छा मिल जाता है – इसलिए, यहां बहुत सारे गांव बसे हैं। चारों तरफ, थोड़ी-थोड़ी दूरी पर गांव हैं। आसपास ही होशंगाबाद, बाबई, इटारसी, बागरा, सोहागपुर, पिपरिया, जैसे शहर हैं। इस क्षेत्र में बड़ी घनी आबादी है। इन्हीं शहरों में वे अपनी उपज बेचते हैं। यहां उन्हें अच्छे भाव मिल जाते हैं।

चित्र 11. नर्मदा के मैदान में चैत करने आये पहाड़ों के आदिवासी

फिर, खरीदने वालों तक किसान अपनी उपज पहुंचा पाएं, इस बात की भी कठिनाई नहीं है। सीधा, सपाट मैदान है – यहां सड़कें व रेल लाईनें बिछाना आसान है।

चारों तरफ बहुत सारी बस्तियां हैं – उनके बीच लोगों का आना जाना लगा रहता है। इस कारण चारों तरफ कई कच्ची पक्की सड़कें बिछी हुई हैं। हर तरफ जाकर किसान अपनी उपज बेच सकता है। कोटगांव के किसान भी बाबई, इटारसी, होशंगाबाद, बागरा में उपज बेचने जाते हैं।

मज़दूरों की ज़रूरत

इस पूरे क्षेत्र में कई गांव हैं और उनमें खूब खेती होती है – इस कारण कोटगांव के मज़दूरों को आसपास ही मज़दूरी भी मिल जाती है। उन्हें खेती में मज़दूरी मिल जाती है और आसपास के शहरों में लगे छोटे-बड़े कारखानों (जैसे बागरा का कवेलू कारखाना) में भी काम मिल जाता है। यहां के मज़दूर दूर-दूर तक मज़दूरी की तलाश में नहीं जाते।

यह बात हमें इसलिए ध्यान में आई क्योंकि हमने सुन रखा था कि पहाड़ों पर रहने वाले आदिवासी मैदानी गांवों में **चैत करने** आते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि मैदानों में खेती का इतना काम हो जाता है कि बाहर से मज़दूर यहां काम ढूंढने आ जाते हैं।

हाल में कई किसान हार्वेस्टर किराए पर लेकर अपने खेतों की फसल कटवाने लगे हैं। मज़दूरों की तुलना में हार्वेस्टर से कटाई बहुत तेज़ी से पूरी हो जाती है। क्या तुमने हार्वेस्टर देखा है? इससे कितने काम एक साथ हो सकते हैं?

•••••••••••••••

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. कोटगांव किस नदी के मैदान में बसा है? उस नदी से गांव के लोगों को क्या-क्या लाभ है पृष्ठ 180, 181 व 184 में दी जानकारी ढूंढ कर उत्तर लिखो।
2. क्या कोटगांव के कुओं में साल भर पानी मिलता रहता है? इनसे किस मौसम में कौन सी फसलों के खेत सींचे जाते हैं?
3. नदियों के किनारे फलों के बगीचे क्यों लगाये जाते हैं?
4. कोटगांव के किसान अपनी उपज क्यों बेचते हैं?
5. कोटगांव की उपज किन बाज़ारों में बिकने जाती है?
6. कोटगांव के मज़दूरों को चैत करने बहुत दूर क्यों नहीं जाना पड़ता - सिर्फ दो वाक्यों में लिखो।
7. क) मैदान में मिट्टी अच्छी क्यों होती है?
   ख) समतल ज़मीन के क्या-क्या फायदे पाठ में बताए गए हैं?
8. नहर व कुएं से सिंचाई की तुलना करो। दोनों के एक-एक फायदे व एक-एक नुकसान सोचो।
9. यहां दिए वाक्यों में से गलत वाक्यों को सुधारो–
   क) कोटगांव के किसान अपनी उपज बहुत कम बेच पाते हैं।
   ख) कोटगांव के आसपास बहुत से गांव व शहर हैं।
   ग) कोटगांव की बस्ती दूर-दूर तक बिखरी हुई हैं।
   घ) मैदान में सड़कें व रेल लाईनें बिछाना कठिन है।
   ङ) कोटगांव के किसान मज़दूरी की तलाश में दूर-दूर तक घूमते हैं।
10. रिक्त स्थान भरो-
   क) कुओं में रेतीली मिट्टी को धंसने से रोकने के लिए ——— कुएं बनाए जाते हैं।
   ख) कोटगांव में ———— की कमी के कारण दूध का धंधा कम होता है।

गांव और सीमा

आगले पृष्ठ पर कोटगांव का मानचित्र है। संकेत सूचि देखकर समझो कि इसमें क्या-क्या दिखाया है। अब इन प्रश्नों के उत्तर दो–

- पक्की सड़क कोटगांव की किस दिशा में है?
- कोटगांव की बस्ती में क्या-क्या चीज़ें दिख रही हैं?
- खेत बस्ती के पूर्व में आधिक हैं कि पश्चिम में??
- कोटगांव में कितने कुएं और नलकूप हैं?
- नलकूप कहां पर अधिक हैं – बेलिया नाले के उत्तर में या दक्षिण में?

गांव की सीमा

कोटगांव के नक्शे में गांव के चारों ओर उसकी सीमा बनी हुई है।

सीमा का संकेत पहचानो। नक्शे में कोटगांव की सीमा पर उंगली फेरो।

सीमा के अन्दर कोटगांव के खेत हैं और उसकी दूसरी तरफ दूसरे गांव के खेत हैं।

नक्शे में देखो कि कोटगांव के खेत उत्तर दिशा में जहां खत्म होते हैं वहां गूजरवाड़ा गांव के खेत शुरू हो जाते हैं।

- दक्षिण दिशा में कोटगांव के खेतों के बाद किस गांव के खेत हैं?
- कोटगांव की पूर्व दिशा में किस गांव के खेत हैं?
- मानागांव के कितने कुएं इस नक्शे में दिखाए गए हैं?

यहां तीन गांवों की सीमा बनी है। इन तीनों में से कोटगांव का आकार कौन सा है? सही चित्र के बीच में कोटगांव लिखो।
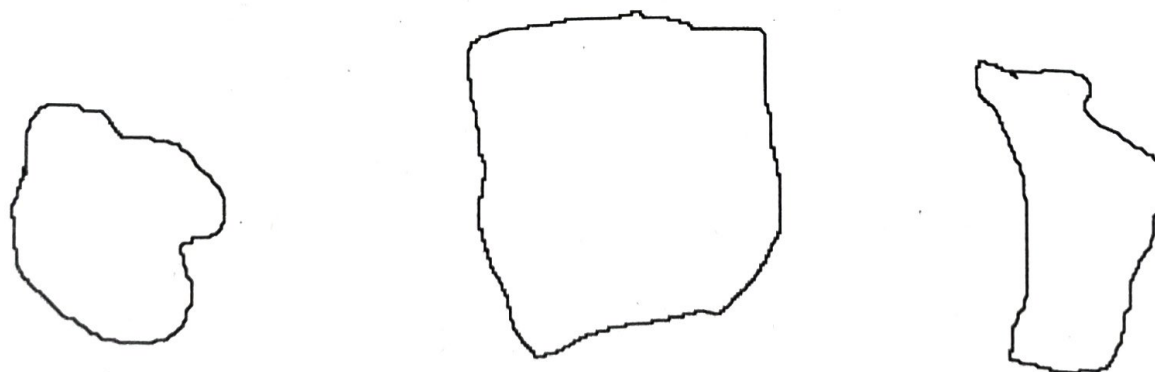
कोटगांव का नक्शा

संकेत

गांव की सीमा	`\ /`	तालाब	☺	मंदिर	मंदिर का चिह्न
कच्ची सड़क	. . . .	बगीचा	बगीचे का चिह्न	नलकूप	▲
पक्की सड़क	मोटी रेखा	रेत का जमाव	बिंदुओं की पट्टी	कुंआं	•
नदी/नाला	दोहरी लहरदार रेखा	घर	घर का चिह्न		
खेत	रेखाओं से घिरा क्षेत्र	शाला	शाला का चिह्न		
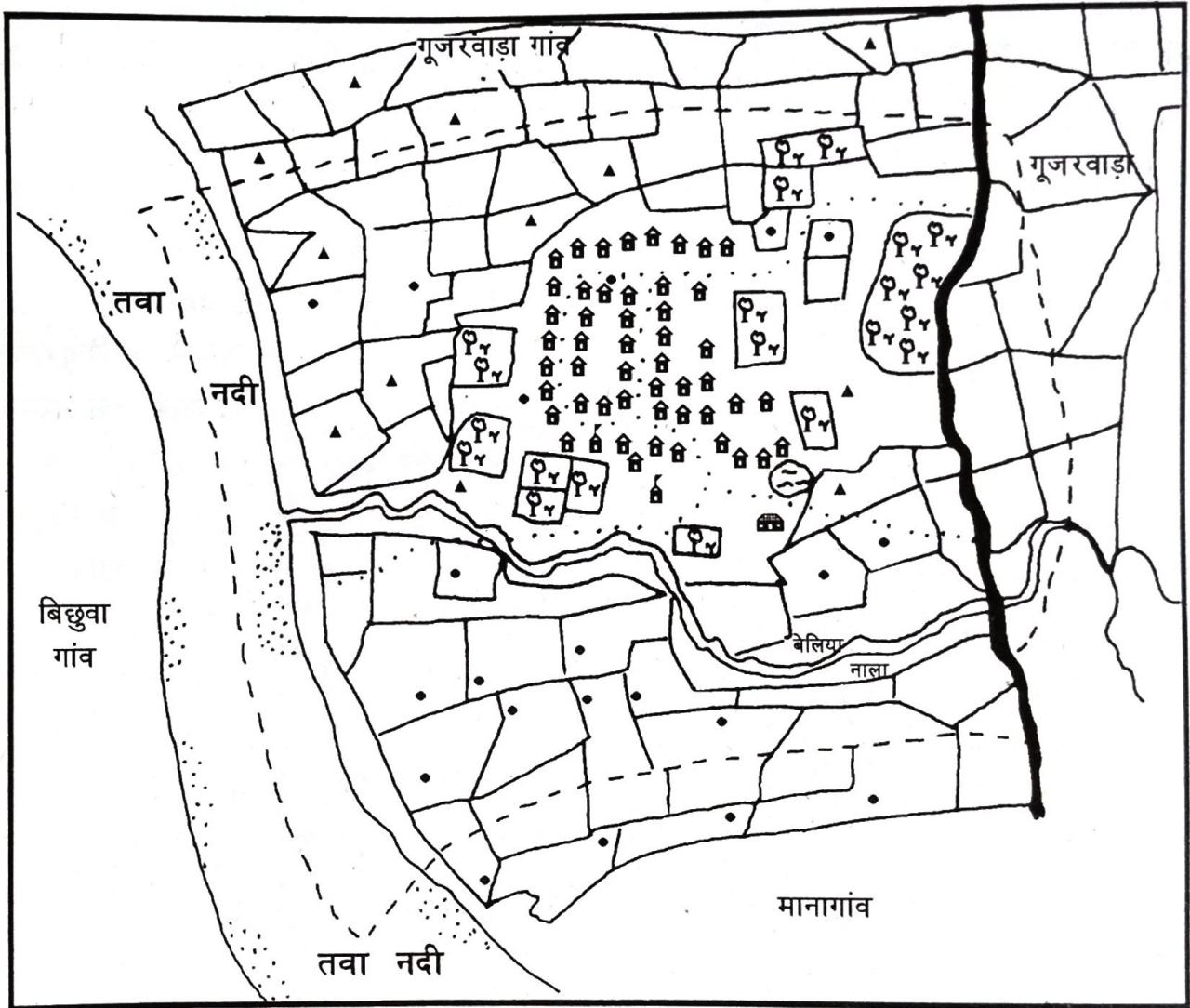
4. पहाड़ों के बीच बसा एक गांव पाहवाड़ी

इस पाठ के चित्रों को देखकर चर्चा करो कि तुम्हारे इलाके और पाहवाड़ी के बीच क्या-क्या अन्तर हैं।

सतपुड़ा के पहाड़

कोटगांव के दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत है - ऊंचा-नीचा, पथरीला, जंगलों से ढका। यहीं से तवा नदी बह कर आती है। उसमें सैकड़ों छोटी-बड़ी नदियों और नालों का पानी मिलता है। पृष्ठ 176 के चित्र में देखो कहां पहाड़ों की नदियां आकर तवा में मिल रही हैं।

चलो सतपुड़ा पहाड़ों पर जाकर देखें वहां लोग कैसे रहते हैं।

यहां रहने वाले आदिवासी अपने घर बार छोड़कर दूर-दूर के गांवों और शहरों में, सड़कों और रेल लाईनों पर काम करने जाते हैं। वे मैदान के गांवों में गेहूं की फसल काटने यानी चैत करने भी जाते हैं। क्या तुमने कभी सोचा कि ये लोग चैत करने क्यों जाते हैं?

क्या तुम्हारे यहां से भी लोग दूर-दूर मज़दूरी करने जाते हैं?

चित्र 1.सतपुड़ा पर्वतों पर जंगल

सतपुड़ा पहाड़ों की तरफ जाने के लिए हम होशंगाबाद से बैतूल की सड़क पर चले। मध्य प्रदेश के मानचित्र में देखो और बताओ हम किस दिशा में चले? थोड़ी दूर इटारसी के आगे तक नर्मदा नदी का मैदान है। फिर सड़क और रेल लाईन मोड़दार रास्ते से ऊपर पहाड़ पर चढ़ती है।

पहाड़ की ढलानों पर जंगल ही जंगल हैं। बीच-बीच में समतल भूमि भी है परन्तु कई जगह यह भी जंगलों से ढकी है। नर्मदा के मैदान की तरह यहां बड़े-बड़े इलाकों में खेती होती नहीं दिखती।

क्या यहां बहुत सारे लोग बस सकते हैं? ऐसे पहाड़ी प्रदेशों में जहां कहीं समतल भूमि है, वहां खेती के छोटे-छोटे हिस्से हैं, वहीं छोटे-छोटे गांव बस गए हैं। बीच-बीच में बहुत सी भूमि ऊंची-नीची, पथरीली और जंगली है। यहां पहाड़ी भूमि अब भी जंगलों से ढकी है, जबकि मैदानों में जंगल साफ

हो गए हैं और दूर-दूर तक खेती होती है।

इस अंश की चार मुख्य बातें चार वाक्यों में लिखो।

पाहवाड़ी का रास्ता

इटारसी से 50 किलोमीटर चलने पर माचना नामक पहाड़ी नदी मिलती है। यह तवा की सहायक नदी है। रास्ते में कई नदी-नाले पड़ते हैं, जिन पर पुलिया बनाकर सड़क डाली गई है। माचना के किनारे एक छोटा सा शहर बसा है - शाहपुर।

शाहपुर के आसपास बहुत से पहाड़ और जंगल हैं। इन्हीं के बीच एक कच्ची सड़क उत्तर-पश्चिम की ओर जाती है जिस पर हम पाहवाड़ी नामक गांव की ओर चले।

सड़क ऊबड़-खाबड़ है, कहीं उतार, कहीं चढ़ाव। अक्सर जहां सड़क उतरती है वहां किसी सूखे नाले में से होकर जाती है। कुछ नालों पर पुलिया है और कुछ पर नहीं। बरसात में ये नाले पानी से भर जाते हैं, तब शाहपुर से पाहवाड़ी जाना कठिन हो जाता है। ऐसे ही नाले मिट्टी, बालू और पत्ते बहाकर ले जाते हैं और नर्मदा नदी के मैदान में बिछाते जाते हैं।

पाहवाड़ी की भूमि

पाहवाड़ी की भूमि का यह चित्र देखो। कोटगांव से कितना भिन्न है। खेत भी ऊंचे-नीचे हैं, बीच-बीच में जंगली पेड़ उगे हैं। खेतों के बीच निचली भूमि पर नाले बह निकलते हैं। इनमें खेतों की मिट्टी बहकर चली जाती है और खेतों में बचती है बलुई, कंकड़-पत्थर वाली कम उपजाऊ मिट्टी। यहां की मिट्टी लाल और पीली है। मिट्टी की परत भी मोटी नहीं है। गांव में केवल कुछ भागों में, जो पहाड़ से दूर हैं, समतल भूमि है। वहां काली चिकनी मिट्टी मिलती है। चारों ओर पहाड़ों से पानी के साथ बहकर आई मिट्टी, इन निचले समतल भागों में इकट्ठी हो जाती है।

चित्र 2 में कम उपजाऊ ज़मीन किस अंक से दिखाई गई है? उपजाऊ मिट्टी किस अंक से दिखाई गई है?
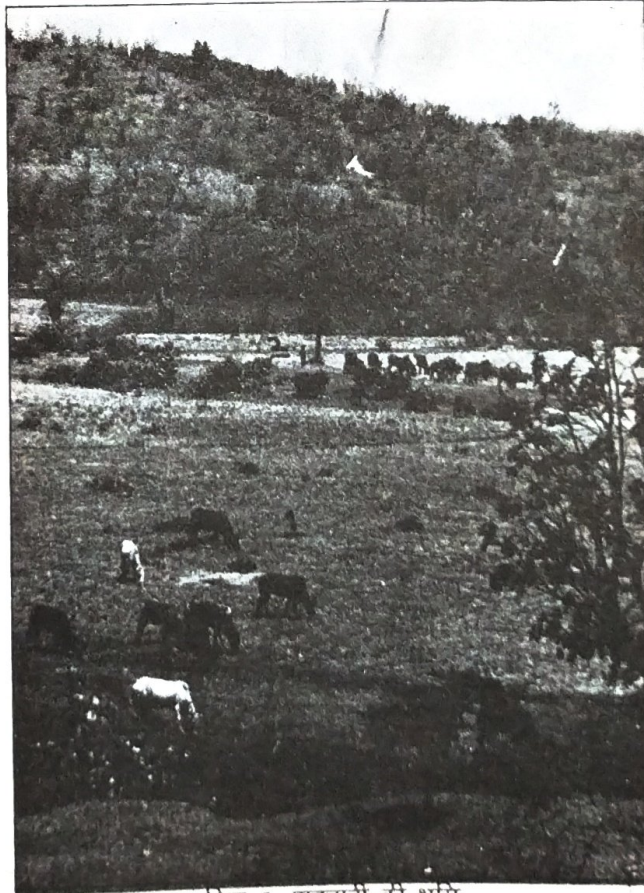
चित्र 2. पाहवाड़ी की भूमि

पहाड़ी भागों के खेतिहर प्रदेश की यह विशेषता है कि खेत-खेत के बीच मिट्टी फर्क हो जाती है। एक खेत में अगर काली मिट्टी है तो उसके बिलकुल पास के खेत में लाल या बलुई मिट्टी हो सकती है।

खाली स्थान भरो –
पाहवाड़ी में ज़्यादातर ज़मीन ढलवां है और मिट्टी ———— है। जो हिस्से समतल हैं वहां मिट्टी ————है।
क्या तुम जानते हो कि ढलवां ज़मीन पर कौन

चित्र 3. ऊबड़-खाबड़ और पथरीली ज़मीन

ली जातीं क्योंकि उसमें पानी भर जाता है, और इन फसलों की जड़ें सड़ जाती हैं। अब कुछ किसान काली मिट्टी में सोयाबीन बोने लगे हैं।

पहाड़ों पर खेती का भरोसा कम ही रहता है। पथरीली बलुई मिट्टी पर पैदावार कम रहती है और फिर बारिश का भी भरोसा नहीं है। कोदो कुटकी के लिये लगातार तीन महीने बारिश की ज़रूरत होती है। अगर कभी खूब बारिश एक साथ हो जाये या कई हफ्ते सूखा रहे तो ये फसलें नष्ट हो जाती हैं। तब जितना बीज बोया उतना अनाज भी नहीं मिलता।

सी फसलें हो सकती हैं? और समतल ज़मीन पर कौन सी फसलें हो सकती हैं?

पाहवाड़ी में गेहूं ज़्यादा होता होगा या कोदो-कुटकी?

पाहवाड़ी की फसलें

बरसात में (खरीफ)– पाहवाड़ी में ज़्यादातर खेती बरसात में की जाती है – कोदो, कुटकी, ज्वार, तिल आदि फसलें उगाई जाती हैं। ये फसलें ढलवां भूमि पर, बलुई, लाल और पीली मिट्टी में उगाई जाती हैं, क्योंकि इस मिट्टी में से पानी बह जाता है। चिकनी काली मिट्टी में ये फसलें नहीं

चित्र 4. कोदो का खेत

मिट्टी और पानी की दिक्कत के अलावा पहाड़ी खेती को एक और खतरा है।

पाहवाड़ी के चारों ओर जंगल हैं और उनमें जंगली पशु रहते हैं। कई जानवर, खासकर जंगली सुअर, खेतों को चरने आ जाते हैं। कभी-कभी तो वे इतना नुक्सान करते हैं कि किसानों को कुछ नहीं मिल पाता है। इनसे बचाव के लिए किसान खेतों के बीच ऊंचे मचान बनाकर रखवाली करते हैं, और जानवरों को डराने के कई इन्तज़ाम करते हैं।

ज़मीन कमज़ोर होने के कारण पथरीली ज़मीन पर हर साल फसल भी नहीं उगाई जा सकती। एक साल फसल लेने के बाद भूमि को पड़ती छोड़ना पड़ता है। तभी उसमें इतनी **उर्वरता** हो पाती है कि अगली फसल ली जा सके। मान लो किसी के पास

20 एकड़ ज़मीन है। तो वह एक साल 10 एकड़ में बुआई करता है, फिर अगले साल दूसरे 10 एकड़ में बोता है। पर तुमने देखा कि कोटगांव में किसान एक ही खेत में साल में दो या तीन तक फसलें ले लेते हैं।

कोटगांव या पाहवाड़ी - कहां के किसानों को अधिक उपज मिलती है?

पाहवाड़ी की ढलवां ज़मीन पर खेती करने की चार दिक्कतें बताओ।

बाड़ा

पाहवाड़ी के किसान अपने पहाड़ी खेतों के बजाए अपने घर के साथ बने बाड़े पर ज़्यादा भरोसा करते हैं।

पाहवाड़ी के हर किसान के घर के साथ आधा-एक एकड़ का बाड़ा बना है। बाड़े के चारों ओर कंटीले झाड़ों की मज़बूत बागुड़ लगी है।

घर के आसपास समतल ज़मीन है इसलिए यहां मिट्टी भी अच्छी है। बाड़े में खाद आदि डालकर किसान इसकी मिट्टी और सुधार लेते हैं। बाड़े में जंगली जानवरों और पक्षियों से बचाव भी ज़्यादा कर पाते हैं।

कई किसानों के बाड़े में कुआं है और वे थोड़ी बहुत सिंचाई भी कर लेते हैं।

इस तरह बाड़ों में बरसात में मक्का और गिलकी, बरबटी, कद्दू जैसी सब्ज़ियां पैदा कर ली जाती हैं।

चित्र 5. घर के साथ लगा बाड़ा। बाड़े में ऊंची मचान है। चारों तरफ झाड़ियों की बाड़ है। इस बाड़े में गेहूं कट चुका है
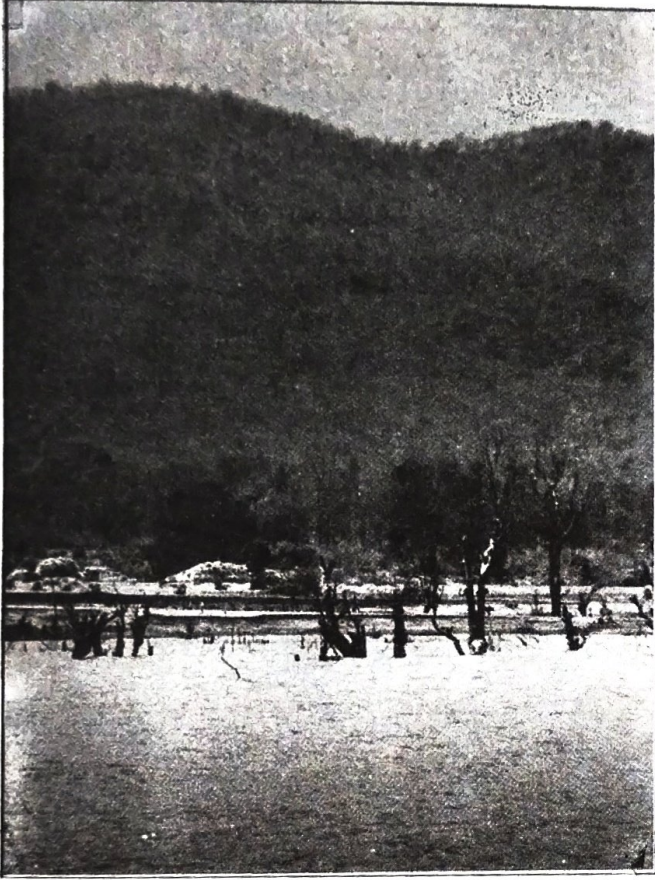
चित्र 6. चिलम टेकरी बांध के पास सिंचित गेहूं की कटी फसल

पहाड़ी खेतों से थोड़ी बहुत कोदों-कुटकी मिल जाती है और बाड़े से मक्का और सब्ज़ियां। कुछ महीनों का भोजन इस तरह जुट जाता है।

बाड़े और पहाड़ी खेत में क्या फर्क है, चर्चा करो।

जाड़े (रबी) की फसल

बरसात के बाद पहाड़ी खेतों की पथरीली मिट्टी में नमी नहीं बचती। इसलिए उन पर रबी में कोई फसल नहीं होती। पहाड़ी खेत खाली पड़े रहते हैं।

जाड़े में कुछ किसान अपने बाड़ों में गेहूं उगा लेते हैं। सेम की बेलें भी चढ़ा दी जाती हैं। सेम की हरी सब्ज़ी के अलावा बीज भी खाने के लिए सुखा कर रख दिए जाते हैं।

जिन किसानों के पास समतल ज़मीन और काली मिट्टी के खेत हैं वे अब सिंचाई का कुछ इंतज़ाम करके जाड़े में गेहूं, चना, अलसी और दालें उगाने लगे हैं। कोटगांव में ये फसलें बिना सिंचाई के भी हो जाती थीं, क्योंकि वहां की मिट्टी में बरसात के पानी की नमी बनी रहती है। पर, यह सुविधा पाहवाड़ी में कम है।

पाहवाड़ी की फसलों की तालिका भरो-		
	जाड़े में	***बरसात में***
पहाड़ी खेतों में		
बाड़े में		
समतल खेतों मे		

चित्र 7. चट्टान खोद कर कुआं बनाते हुए

पीने का पानी और सिंचाई

पाहवाड़ी जैसी पथरीली भूमि पर कुएं खोदना बहुत कठिन और महंगा है। यहां मिट्टी की परत गहरी नहीं है और थोड़ा खोदने पर ही चट्टान निकल आती है। (चित्र 7 देखो) चट्टान को तोड़कर कुआं बनाने पर भी हमेशा पानी मिलने का भरोसा नहीं रहता। सोचो, यहां पीने के पानी की कितनी समस्या होगी। जहां बस्ती है वहां पहले एक ही कुआं था, अब वहां कई हैंड पंप लगा दिये गये हैं। कुछ आराम हुआ है।

सिंचाई के लिये पाहवाड़ी में 7-8 कुएं बन गए हैं लेकिन 3-4 कुओं में ही साल भर पानी रहता है। इनमें मोट चलते हैं। कुछ कुओं में डीज़ल पंप भी लग गए हैं। पाहवाड़ी के घरों में तो बिजली पहुंच गई है, मगर खेती के लिये बिजली नहीं है। इसलिए पानी खींचने की दिक्कत है। इस कारण यहां अभी तक सिंचित भूमि अधिक नहीं है।

चट्टान में कुआं खोदने के बजाए पहाड़ी इलाकों में पानी के लिए एक दूसरा इन्तज़ाम भी किया जाता है। यह है बरसात के पानी को तालाबों में इकट्ठा करके रखना।

पाहवाड़ी के आसपास नालों पर मिट्टी के बांध बनाकर कई छोटे **जलाशय** (तालाब) बनाए गए हैं। पहाड़ियों की ढलान के एक तरफ मिट्टी का बंधान बनाने से ढाल पर बहकर आया सारा पानी एक जगह इकट्ठा हो जाता है। ऐसे छोटे तालाबों से पंप की सहायता से पानी खींच कर सिंचाई की जाती है। कहीं-कहीं बांधों से नहरें भी निकाली गई हैं। पर यहां की ऊंची-नीची ज़मीन पर नहरों से खेतों तक पानी पहुंचाना मुश्किल हो जाता है।

पाहवाड़ी के पास एक बांध है, चिलम टेकरी। चिलम टेकरी बांध से पाहवाड़ी की लगभग 150 एकड़ भूमि की सिंचाई होती है। (चित्र 6)

इस भूमि पर कौन-सी फसल होती होगी - खरीफ की या रबी की?

क्या कोटगांव के आसपास भी तुम्हें कई छोटे-छोटे तालाब मिले थे?

कोटगांव के लोग तालाब क्यों नहीं बनाते?

पाहवाड़ी में तालाब बनाने की क्या सुविधा है?

इनमें पानी कहां से और किस मौसम में आता है?

सतपुड़ा के जंगल

सतपुड़ा के जंगलों में सागौन जैसे कीमती लकड़ी के पेड़ हैं। कारखानों में लकड़ी की मांग के कारण व्यापारियों और ठेकेदारों द्वारा इन पेड़ों की बहुत कटाई होती थी। तब सरकार ने एक कानून बनाकर जंगल को काटने और जानवरों को मारने पर रोक लगाई। अब सरकार की आज्ञा लेकर ही ठेकेदार पेड़ काट सकते हैं।

सरकार भी पेड़ काट कर डिपो में रखती है और वहां से बेचती है। पाहवाड़ी के पास भौंरा नाम की जगह पर एक बड़ा वन डिपो है जहां सैकड़ों मोटे-पतले लट्ठे जमा किए गए हैं।

सरकारी रोकथाम और नियमों का असर पाहवाड़ी के लोगों पर भी पड़ा है।

चित्र 8. तेंदू पत्ता तोड़ा जा रहा है

पाहवाड़ी के आदिवासी और जंगल की चीज़ें

पाहवाड़ी में गोंड, कोरकू और परधान नामक आदिवासियों की संख्या काफी है। ये जनजातियां जंगलों के बीच छोटे-छोटे गांवों में रहती है। आदिवासियों का जंगलों से पुराना और घना संबंध है। पहले तो लोग जंगल से शिकार करके, फल मूल आदि इकट्ठा करके भोजन पा लेते थे। थोड़ी खेती क़रके अनाज आदि भी उगा लेते थे और जंगलों से पशुओं के लिये चारा भी मिल जाता था।

अब पहले जैसे इन लोगों को जंगलों से चीज़ें लाने की छूट नहीं है। वे जंगल से सिर्फ घरों में जलाने के लिये लकड़ी सिर पर उठाकर ला सकते हैं, इसके अलावा कुछ नहीं। घर बनाने के लिये बांस व लकड़ी उन्हें सरकारी डिपो से मिलती है।

पास के शाहपुर शहर में थोड़ी बहुत लकड़ी बेचकर कुछ पैसे कमाना भी लोगों के लिए कठिनाई का काम हो गया है।

पहले लोग पाहवाड़ी के जंगलों में चिरौंजी, जामुन, लाख, गोंद, शहद, झाड़ू बनाने की घास आदि भी इकट्ठा कर के बेचते थे। लेकिन अब ये चीज़ें भी **सरकारी संपत्ति** हैं। आदिवासी अब इन चीज़ों को सरकार से **लाइसेन्स** लिए बिना इकट्ठा नहीं कर सकते। पाहवाड़ी के जंगलों में तेंदू पेड़ की पत्तियां भी तोड़ी जाती हैं। ये पत्तियां बीड़ी बनाने के काम आती हैं। तेंदू पत्ते तोड़ने के काम में भी यहां के लोगों को कुछ मज़दूरी मिल जाती है।

महुआ

यहां जंगलों में होने वाले फल-फूलों में मुख्य है महुआ। तुमने महुए का फूल कभी खाया है? कितना मीठा और महकदार होता है! अप्रैल में जब महुआ के बड़े-बड़े पेड़ फूलते हैं तो जंगल महकने लगता है। इसको ताज़ा भी खाते हैं और सुखाकर भी खाते हैं। महुए से खाने की कई चीज़ें भी बनाते हैं। पाहवाड़ी के आसपास महुए के पेड़ बहुत से हैं। एक परिवार के लोग महुआ फूलने के मौसम में 2-3 क्विंटल तक महुआ बीन लेते हैं। महुआ बाज़ार में बेचकर ये लोग अपनी ज़रूरत की चीज़ें खरीदते हैं। मई-जून में महुए का फल – जिसे गुल्ली कहते हैं, तैयार हो जाता है। इसका तेल निकाला जाता है। इसे भी लोग इकट्ठा

चित्र 9. महुए का फूल
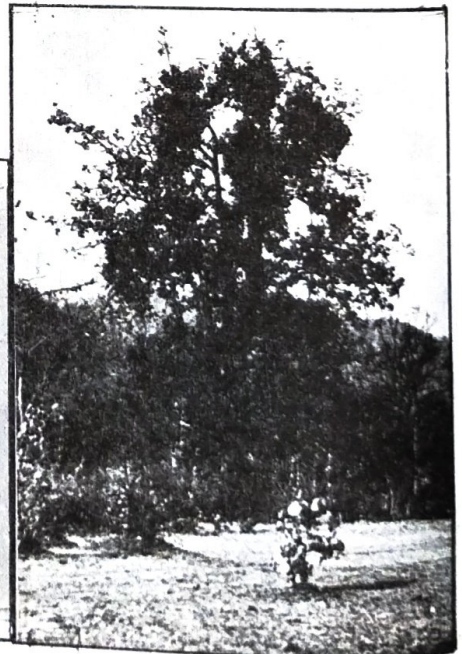
चित्र 10. महुए का पेड़

करके बेचते हैं। महुए का तेल साबुन बनाने के काम में भी आता है और खाने के काम भी आता है।

इस तरह यहां लोग जंगल पर काफी निर्भर हैं। वे कमज़ोर खेती की कमी जंगल की मदद से पूरी करने की कोशिश करते हैं। जंगल की चीज़ें बेचकर और जंगल में मज़दूरी कर के वे दो पैसे कमाते हैं और पेट भरने का अनाज तेल खरीदते हैं।

पाहवाड़ी के लोगों को जंगल से क्या-क्या सहायता मिलती है?

क्या कोटगांव के लोग भी इसी तरह जंगलों पर निर्भर हैं?

जंगल सरकारी संपत्ति होने से पाहवाड़ी के लोगों को जंगल का उपयोग करने में किस तरह की कठिनाइयां हो गई हैं? 1) भोजन की चीज़ों की 2) मकान बनाने की चीज़ों की 3) बाज़ार में बेचने की चीज़ों की – इनकी सूची बनाओ।

चित्र 11. जलाऊ लकड़ी बीनकर ला रहे हैं

पशुपालन

पाहवाड़ी में लगभग सभी परिवारों के पास 5-6 या अधिक पशु हैं – गाय, बैल, भैंस आदि। कुछ लोग बकरी और मुर्गी भी पालते हैं। पहले आसपास के जंगलों में पशु आराम से चरते थे। अब पशु चराने के लिये सरकार से लायसेन्स लेना पड़ता है। गांव का एक व्यक्ति सभी के पशु लेकर जंगल जाता है और शाम को उन्हें वापिस लाता है। कुछ चारा खेतों से भी मिल जाता है। इसलिए कोटगांव के समान यहां हरे चारे की कमी नहीं होती।

अब पाहवाड़ी में पशुपालन बढ़ रहा है। यहां से अंडे, दूध, बकरियां आदि बाज़ार में बिकने जाती हैं। दूध तो शाहपुर में बिक जाता है, पर अंडे सारणी तक जाते हैं। यहां अभी अच्छी नस्ल के पशु नहीं आए हैं। अधिकतर **स्थानीय नस्ल**की छोटी-छोटी गाएं हैं। उनसे दूध बहुत अधिक नहीं मिलता।

क्या तुम कुछ अन्दाज़ा लगा सकते हो कि यहां के लोगों को क्या सुविधायें मिलें तो यहां दूध, अंडे आदि का धंधा बढ़ सके?

घर

आओ देखें, ये लोग घर किन चीज़ों से बनाते हैं। कोटगांव के घरों में मिट्टी और मिट्टी से बनी ईंट और कवेलू घर बनाने की मुख्य चीज़ें थीं। पाहवाड़ी के घरों में लकड़ी का उपयोग खूब होता है। यहां अधिकांश घर ऐसे हैं, जिनमें बांस या

चित्र 12. पाहवाड़ी के घर

कारखाना लगा है। यहां से अच्छे, बड़े-बड़े पक्के कवेलू वहां के लोगों को मिल जाते हैं।

लोगों की जीविका की समस्या

पाहवाड़ी के आदिवासियों को, अब जंगल से बहुत भोजन नहीं मिल पाता। यहां के खेत भी कमज़ोर हैं इसलिए, यहां के खेतों पर ज़्यादा

लकड़ी का टट्टर बनाकर, उस पर मिट्टी का लेप करके दीवारें बनाई जाती हैं। बांस और बल्लियों से छत पर ठाठ बनाया जाता है। बांस बांधने के लिए लोग अक्सर पेड़ की जड़ से रस्सी जैसा रेशा निकाल कर बांधते हैं। कुछ लोग तार भी बांधने लगे हैं। ठाठ पर कवेलू बिछे हैं। कवेलू छोटे और टेढ़े मेढ़े हैं। ये कवेलू यहां के लोग स्वयं बना लेते हैं। तुम्हें याद होगा कि कोटगांव के पास कवेलू का

मज़दूरी भी नहीं मिलती। यही कारण है कि बुवाई और कटाई के समय बहुत से लोग चैत करने मैदान के गांवों में चले जाते हैं। या, अन्य कामों की तलाश में निकल पड़ते हैं। शाहपुर और भौंरा भी जाते हैं। भौंरा में **रोपणी** और लकड़ी का सरकारी डिपो है। वहां भी उन्हें काम मिल जाता है। इस तरह जीविका की कमी के कारण पाहवाड़ी के लोग साल भर अपने घरों में नहीं रह पाते।

• • • • • • • • • • •

अभ्यास के प्रश्न

1. पाहवाड़ी के लोगों को आने जाने में क्या कठिनाई होती है?
2. पाहवाड़ी के किसान उसी खेत में हर साल फसल क्यों नहीं ले पाते? सिर्फ चार लाईनों में लिखो।
3. पाहवाड़ी जैसे पहाड़ी प्रदेश में कुएं बनाना क्यों कठिन और महंगा है?
4. पाहवाड़ी से कोटगांव की तरह बहुत उपज बाज़ार नहीं जाती है, ऐसा क्यों है?
5. मैदानी और पहाड़ी इलाकों के बीच जो फर्क है, उन्हें समझाते हुए दस वाक्य लिखो।
6. कोटगांव के चित्र 10 व पाहवाड़ी के चित्र 5 में तुम्हें क्या फर्क दिख रहा है? इस फर्क का क्या कारण है।

5. पठार का एक गांव - बालमपुर

पठार का नज़ारा

तुमने मैदान और पहाड़ों की दुनिया की कुछ झलक देखी। क्या दोनों में कुछ अंतर लगा? आओ अब भोपाल के पठार की तरफ चलें।

पृष्ठ 176 के चित्र में तुम भोपाल का पठार देखो। क्या यह नर्मदा के मैदान से ऊंचा है? क्या यह सतपुड़ा पर्वत जितना ऊंचा है?

अगर हम पठार के ऊपर चारों ओर घूमें तो यह नहीं लगेगा कि हम ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। असल में पठार के ऊपर का इलाका हल्का ऊंचा नीचा समतल सा होता है। उस पर सतपुड़ा के पहाड़ जैसी ढलानें नहीं होतीं।

हम भोपाल से विदिशा की तरफ चले। उत्तर की तरफ लगभग 20 किलोमीटर चलने के बाद भोपाल के पठार की समतल सतह अचानक खत्म हो गई। हमें घुमावदार रास्ते से नीचे उतरना पड़ा। हम किसी पहाड़ पर तो चढ़े नहीं थे, फिर यह ढलान किसकी थी?

दरअसल हम भोपाल के पठार की **कगार** (यानी किनारे) से नीचे उतर रहे थे। कगार से नीचे उतर कर हम विदिशा के पठार पर पहुंच गए।

चित्र 1 में देखो, दूर से पठार कैसा दिखता है। भोपाल के पठार के नीचे दूर तक समतल विदिशा का पठार भी दिख रहा है। भोपाल के पठार का किनारा बिलकुल सीधा दीवार की तरह खड़ा है।

इस चित्र में किस अक्षर से क्या दिखाया गया है—

भोपाल का पठार -   विदिशा का पठार -

भोपाल के पठार की कगार -

चित्र 1. भोपाल-विदिशा का पठार
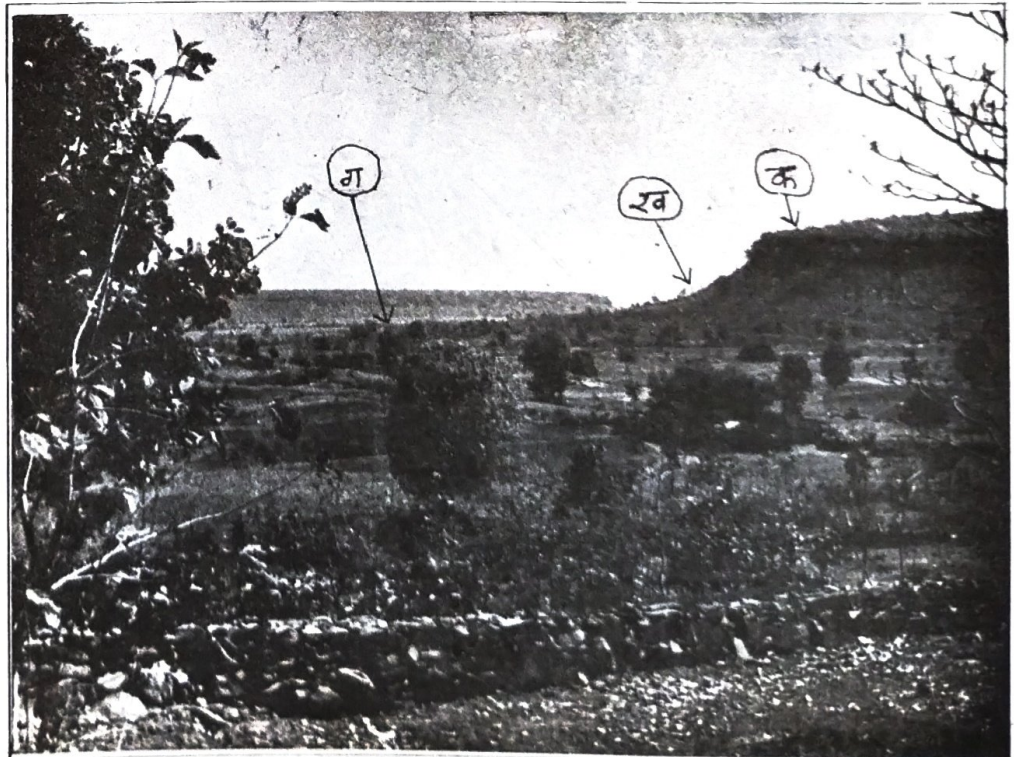
पठार की बनावट

तुमने नर्मदा के समतल मैदान पर दूर-दूर तक खेतों की बात पढ़ी थी। भोपाल का पठार पूरी तरह समतल तो नहीं है पर हल्का ऊंचा-नीचा ही है। क्या यहां भी मैदान की तरह खूब खेतिहर भूमि है?

पथरीले और समतल हिस्से

पठार के बहुत से हिस्से समतल हैं और वहां खेती लायक अच्छी मिट्टी है। लेकिन पठार के कई हिस्से **ढलवां** हैं जहां मिट्टी की परत कम गहरी है। इन हिस्सों में खेती अच्छी नहीं होती है।

पठारों में आम तौर पर मिट्टी की परत के नीचे चट्टान होती है। ढलवां ज़मीन, जहां मिट्टी की परत हल्की है, और नदियों के पाट में चट्टान की यह सतह दिखती है।

क्या मैदानी नदी नालों के पास की ज़मीन भी पथरीली होती है?

कगार के पास की ज़मीन भी पथरीली व ऊंची-नीची है। उस पर बलुई और कंकरीली मिट्टी की पतली परत ही मिलती है। ऐसी ज़मीन हमें पाहवाड़ी में भी दिखी थी। भला बताओ ऐसी ज़मीन पर कोई खेती करे तो क्या उगेगा!

पठार के ऐसे पथरीले हिस्से दूर से ही अलग नज़र आ जाते हैं। वहां काफी जंगल, झाड़ियां व घास दिखाई देती है। भोपाल के पठार के जंगल कुछ कट गए हैं। फिर भी कुछ बाकी बचे हैं।

पठार पर ढलवां इलाकों और कगार से हटकर जो सपाट समतल ज़मीन के हिस्से हैं वहां काली चिकनी मिट्टी है। महीन कणों की यह काली मिट्टी पानी के साथ दूर तक बह आती है और समतल ज़मीन पर बिछ जाती है। वैसे मिट्टी के नीचे भी काली चट्टान है जिसके टूटने से भी काली चिकनी मिट्टी बनती है। यह मिट्टी बहुत उपजाऊ है। अगर सिंचाई का पानी मिले तो इसमें साल में दो फसलें हो सकती हैं।

चित्र 2 कगार से टूटी चट्टानें, पत्थर और कंकड़

चित्र 1 में कौन से अक्षर -

पठार का समतल इलाका दिखाते हैं -

पठार का ढलवा हिस्सा दिखाते हैं -

चित्र 1 में कहां कैसी मिट्टी होगी - सही विकल्प चुनो। (पथरीली / काली / नहीं)

'क' पर मिट्टी —————— होगी।

'ख' पर मिट्टी —————— होगी।

'ग' पर मिट्टी —————— होगी।

पठार के बारे में अब तक बताई गई कौन सी तीन बातें मैदान की बातों से फर्क लग रही हैं?

मैदान, पहाड़ और पठार --- इन तीनों में से समतल ज़मीन ज़्यादा कहां होगी?
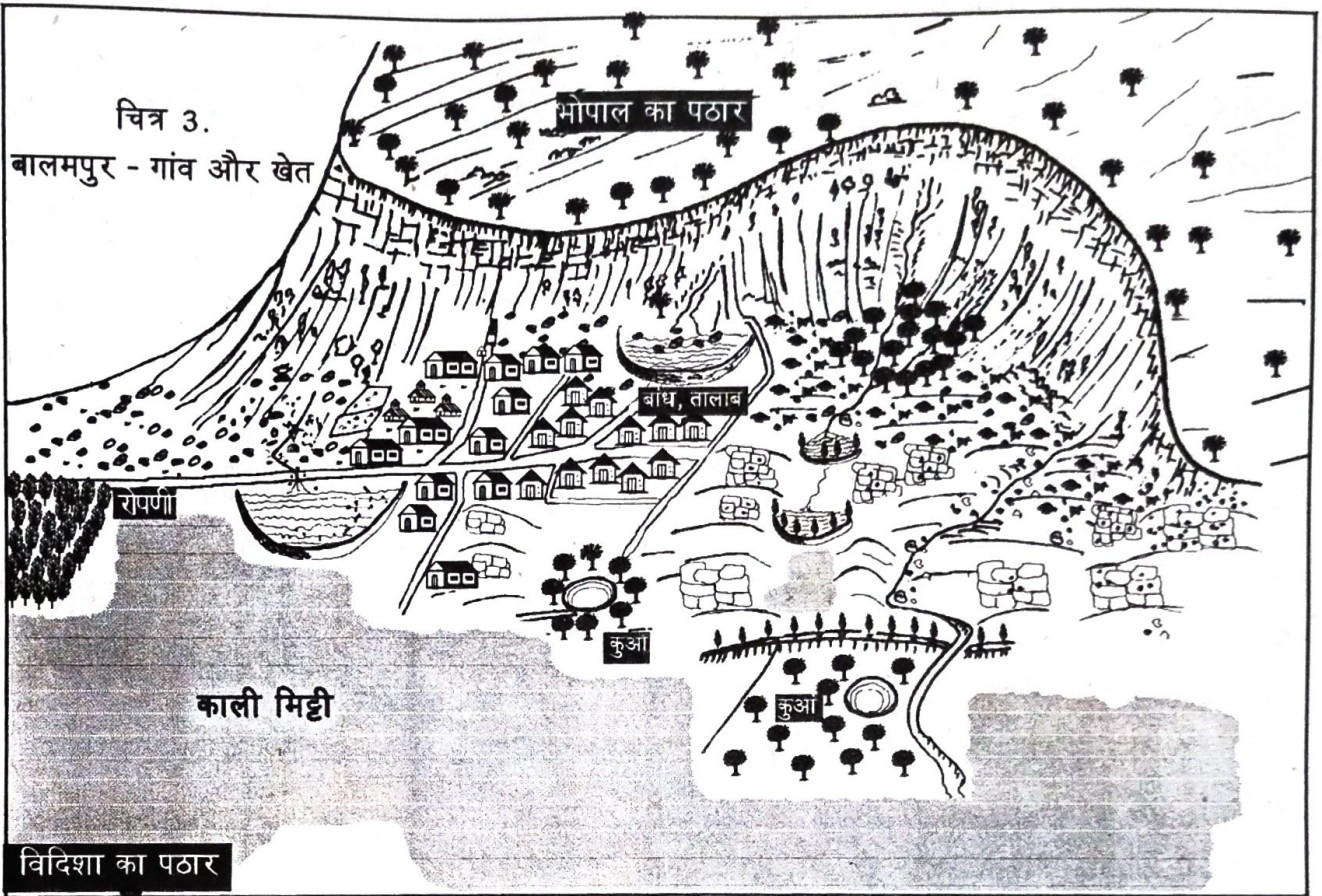
कगार के तले एक गांव बालमपुर

बालमपुर की धरती

भोपाल के पठार की कगार के ठीक नीचे एक गांव बसा है - बालमपुर। विदिशा की सड़क छोड़कर हम कच्ची सड़क से होते हुए बालमुपर पहुंच सकते हैं। यह गांव कगार की जड़ में बसा है। चित्र 2 में देखो गांव के ऊपर कगार की बड़ी-बड़ी चट्टानें, टूटे पत्थर, कंकड़, बालू सब दिख रहे हैं।

कगार से उतरने वाले नदी नाले बरसात में खूब पानी लाते हैं और उनके साथ ही कंकड़, बालू, आदि आकर ढलान के पास के खेत पर बिछते जाते हैं।

बताओ इनके बिछने से खेत की मिट्टी बेहतर होगी या खराब होगी?

क्या मैदान में भी नदी-नालों के साथ खेतों में कंकड़-पत्थर बिछते हैं?

कगार से कुछ दूर बालमपुर गांव के समतल हिस्सों में काली चिकनी मिट्टी की ज़मीन भी है।

अब चलो देखें कि पठार के इस गांव में लोग खेती बाड़ी कैसे करते हैं।

तालाब और बांध

ऊपर बालमपुर गांव का एक चित्र देखो। चित्र में सड़क, घर, कुएं, तालाब व बांध पहचानो। कगार से उतरते हुए कुछ नाले भी दिख रहे हैं। नालों के सामने बंधान बनाए गए हैं। बंधान के एक तरफ नाले का पानी जमा होकर भर जाता है और इस तरह तालाब बन जाता है।

चित्र 3 में कितने तालाब व बांध दिख रहे हैं? कोटगांव की समतल भूमि पर ऐसे तालाब नहीं

बनाए गए थे। बालमपुर की तुलना में कोटगांव में तालाब बनाना मुश्किल क्यों है? सोचकर बताओ।

इन तालाबों का एक फायदा तो यह है कि इनमें बरसात का पानी इकट्ठा किया जा सकता है और सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकता है। इनका एक और फायदा है। ये मिट्टी को कटने से रोकते हैं और खेतों पर कंकड़-पत्थर बिछने से भी रोकते हैं। यह कैसे - चलो देखें।

नदी नालों के साथ कगार के कंकड़, बालू और पत्थर नीचे आ कर खेतों में बिछ जाते हैं – यह तुम जानते हो। बालमपुर में तेज़ी से बहते नालों के साथ कगार के पास के खेतों की मिट्टी के बह जाने का भी डर रहता है।

बंधानों के कारण कंकड़-बालू तालाब में ही रोक लिए जाते हैं और खेत की मिट्टी बहने से बच जाती है।

बालमपुर के एक किसान ने अपनी भूमि पर ही छोटा बांध बनाकर तालाब बना लिया है। बांध बनाने से उसके खेत में बरसात का पानी रुका रहता है और मिट्टी को पानी सोखने का समय मिल जाता है। कंकड़ पत्थर भी रुक जाते हैं और उसके सब खेतों पर नहीं बिखरते। मिट्टी का कटाव भी रुक जाता है। इस किसान के खेत के बांध को चित्र 3 में देखो। इस तरह किसानों ने प्राकृतिक बनावट और पानी का उपयोग कितनी समझदारी से किया है!

सही विकल्प चुनकर खाली स्थान भरो

कगार के पास की ज़मीन पर नाले ——— बिछाते हैं और ——— बहा कर ले जाते हैं। (मिट्टी, कंकड़-पत्थर)

तालाब कगार के ——— बनाए गए हैं। (ऊपर, नीचे, बीच में)

तालाब बनाने के लिए ——— गए हैं/गई है। (बंधान बनाए/ज़मीन खोदी)

बंधान से रोके गए पानी के कारण ——— में नमी रहती है; ——— के लिए पानी मिलता है; ——— खेतों में नहीं बिछते। (सिंचाई, मिट्टी, कंकड़-पत्थर)

चित्र 3 में जहां ढलवां व पथरीले खेत होंगे वहां 'प' लिखो। जहां चिकनी मिट्टी बिछी होगी वहां 'च' लिखो।

कुएं

अभी ऊपर तुमने देखा कि ढलवां भूमि पर बांध बनाकर आसपास की भूमि पर सिंचाई हो सकती है। लेकिन इससे पूरे गांव की भूमि तो नहीं सींची जा सकती है।

बालमपुर के किसानों ने खेतों की सिंचाई के लिए कुएं बनाये हैं। पीने के पानी के कई कुएं गांव में पहले भी थे लेकिन सिंचाई के लिये कुएं तो अभी कुछ सालों से बनाए जाने लगे हैं।

यहां मिट्टी की परत के नीचे कठोर चट्टान है। उसे बारूद से तोड़ना पड़ता है। फिर भी चट्टान तोड़ने पर हर जगह पानी नहीं मिलता है। यहां की चट्टानों में दरारें हैं जिनमें भू-जल भरा रहता है।

चट्टानों में जो दरार रहती हैं, अक्सर उनमें **भू-जल** भरा रहता है। ऐसी कोई दरार जब कुएं की दीवार या तलहटी में मिल जाती है तभी पानी की धारा फूट निकलती है। अगर नहीं निकली तो सिंचाई के लिए काफी पानी नहीं मिलता। किसी

तरह यह दरार मिल जाए और कुएं में पर्याप्त पानी आए, इसके लिए कुआं काफी बड़े दायरे का बनाया जाता है। पानी मिलता है तो 30-40 फीट की गहराई पर मिलता है। इतना गहरा कुआं चट्टान में खोदना बहुत मुश्किल और महंगा काम है।

बालमपुर के किसान बताते हैं कि अभी केवल 4-5 कुओं से सिंचाई होती है। एक कुएं से 4-6 एकड़ की ही सिंचाई हो पाती है। नर्मदा के मैदान में बसे गांवों को वहां की धरती ने इतना पानी दिया है कि वे खूब सिंचाई कर सकते हैं। जबकि पठारी गांवों में यह सुविधा कुछ ही खेतों को मिलती है।

पठार पर सिंचाई का एक और तरीका है – नलकूप। लेकिन अभी बालमपुर में यह साधन विकसित नहीं है।

> *बालमपुर में सिंचाई की क्या कठिनाइयां हैं, सही विकल्प चुनो–*
> *1. यहां बारिश नहीं होती। 2. यहां बांध व तालाब नहीं बन सकते। 3. यहां कुआं बनाना मुश्किल है। 4. यहां नलकूप नहीं बन सकते। 5.यहां के लोगों के पास पैसे नहीं हैं।*
> *पाहवाड़ी और बालमपुर की सिंचाई की कठिनाइयों में क्या समानता दिखती है?*

खेती

तुमने ऊपर पढ़ा था कि बालमपुर में मिट्टी कहीं अच्छी है और कहीं पथरीली है। तुमने यह भी देखा कि वहां सिंचाई कम होती है। आओ अब देखें कि वहां ऐसे में खेती कैसे होती है।

> *तुम अपने अंदाज़ से बताओ कि बालमपुर में पाहवाड़ी से अच्छी खेती होगी कि नहीं।*

रबी की फसलें

भोपाल-विदिशा के पठार में रबी की ही मुख्य फसल है। बालमपुर में भी अधिकांश ज़मीन पर जाड़े में ही फसल ली जाती है। रबी में यहां चना और मसूर जैसी दालें और गेहूं बोया जाता है।

यहां सिंचाई कम होती है, इसलिए बरसात के बाद मिट्टी में जो नमी रह जाती है उसी के भरोसे ये फसलें उगायी जाती हैं।

किसान ज़्यादा सिंचाई तो नहीं कर पाते पर मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखने की कोशिश करते हैं। वे हर साल एक खेत में एक सी फसल नहीं बोते हैं। चना और गेहूं बदल-बदल कर बोते हैं। बता सकते हो ऐसा क्यों है? एक ही फसल बोते रहें तो मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। चना व दालें बोने से जड़ों के पास **उर्वर पदार्थ** इकट्ठा होता है और उससे मिट्टी अच्छी होती है।

खरीफ की फसलें

पानी तो बालमपुर में भी काफी बरसता है। फिर भी किसान खरीफ (बारिश) की फसल नहीं लेते। ऐसा क्यों है? किसानों ने बताया कि चिकनी काली मिट्टी में पानी खूब ठहरता है। बरसात में मक्का, ज्वार आदि बोएं तो उनकी जड़ें सड़ जाती हैं और पैदावार अच्छी नहीं होती। इसलिए जहां बलुई और ढलवां जमीन है, वहीं खरीफ में मक्का और ज्वार बोई जाती है।

खरीफ की फसल कम लेने का एक और कारण भी है। बालमपुर के किसान बरसात में अगर फसल बो दें तो उनके खेतों की नमी खत्म हो जाएगी और रबी में गेहूं चना उगाने के लिए मिट्टी में नमी नहीं रहेगी।

कुछ किसान जिनके पास सिंचाई के साधन हैं, खरीफ की फसल ऐसी भूमि में बोते हैं जहां सिंचाई की सुविधा हो। सोयाबीन तथा ज्वार खरीफ की फसलें हैं। ये किसान खरीफ की फसलें काटकर फिर खेत को खूब अच्छी तरह सींचते हैं तब जोतकर गेहूं और चना बोते हैं। अगर सिंचाई के साधन हों तो बालमुपर के किसान उपज बढ़ा सकते हैं और दो फसलें पैदा कर सकते हैं।

सही विकल्प चुनो –

बालमपुर में ज़्यादातर फसलें कब ली जाती हैं- (गर्मी में/सर्दी में/बरसात में)

बालमपुर की फसलें कैसे ली जाती हैं - (सिंचाई से/बरसात के पानी से/मिट्टी की नमी की मदद से)

बालमपुर के खेतों में मिट्टी कैसी है - (काली व चिकनी/रेतीली/दोमट)

काली मिट्टी में पानी- (ठहरता है / नहीं ठहरता है)

चित्र 4 बालमपुर में जंगल की रोपणी

रिक्त स्थान भरो -

चिकनी मिट्टी में बरसात की —— व —— फसलें नहीं बोई जातीं क्योंकि —————— ।

बरसात की फसल उसी ज़मीन पर बोते हैं जिसमें ———— हो ताकि बरसात की फसल काटने के बाद रबी में गेंहू-चना ———— जा सके।

पशुपालन

कोटगांव की तरह बालमपुर में भी चारे की कमी हो जाती है। पास के जंगल में **वृक्षारोपण**हो रहा है, इसलिए वहां जानवर चरने नहीं जा सकते। खेती से निकला भूसा आदि ही चारे के लिए मिलता है, जो पूरा नहीं पड़ता। अधिकतर किसान खेती के काम और घर में दूध की ज़रूरत पूरी करने के लिए ही जानवर पालते हैं।

जंगल कटे - जंगल लगे

जब खेती-बाड़ी में कठिनाइयां हों तो लोगों के लिए दूसरे काम धंधों का बहुत महत्व हो जाता है। पठार की पथरीली ज़मीन पर खेती नहीं की जा सकती पर उस पर उगे जंगल से लोगों को फायदा मिल सकता है।

बालमपुर के पुराने रहने वाले बुजुर्ग लोग बताते हैं कि गांव के ऊपर पठार की भूमि, कगार तथा उसके नीचे की भूमि लगभग 25 साल पहले तक घने वनों से ढकी थी और बीच-बीच में ऊंची घास भी उगती थी। यहां सांभर, चीतल, रीछ, तेंदुए, शेर आदि मिलते थे। भोपाल के लोग यहां शिकार के लिए आते थे। गांव के लोग भी जानवरों को मार लेते थे। वे जंगल में मिलने वाली और चीज़ों को

इकट्ठा करके बेचा करते थे।

धीरे-धीरे जंगल कटते गए। अब ज़्यादातर जंगल कट गया है, और अब लोग उनमें बस कुछ तेंदूपत्ता तोड़ते हैं व डलिया बनाने की पतली लकड़ी ले आते हैं। बालमपुर में बांस के कारीगरों के दो परिवार अब भी डलिया बनाते हैं पर वे बांस जंगल से नहीं ला सकते। उन्हें बांस भोपाल के बाज़ार से लाना पड़ता है।

रोपणीः बालमपुर के आसपास के खराब हुए जंगलों को फिर से लगाया जा रहा है। (चित्र 4) इसके लिए गांव में एक सरकारी रोपणी बनाई गई है। इसमें लकड़ी और फल देने वाले वृक्ष तथा बांस - सभी की पौध तैयार की जाती है।

बरसात में जब पेड़ लगाए जाते हैं तब इस गांव के 100-300 लोगों को रोपणी में काम भी मिल जाता है। दूसरे मौसम में भी 25-30 लोग रोपणी में काम पा लेते हैं। एक किसान ने कगार के नीचे अपनी ज़मीन के पथरीले हिस्से में जंगल लगाया है ताकि वह लकड़ी आदि बेच कर मुनाफा कमा सके।

जंगल और रोपणी से बालमपुर के लोगों को अब क्या मदद् मिलती है?

बालमपुर के घर

बालमपुर के पुराने मकान तो लकड़ी के ही बने हैं। चित्र 5 में देखो, घर में लकड़ी कहां-कहां लगी है। लकड़ी और बांस के **छाजन** के ऊपर खपरैल पड़ी है। यहां खपरैल तो कुम्हार बनाते ही हैं, और लोग खुद भी बना लेते हैं। दीवारें पत्थर और मिट्टी
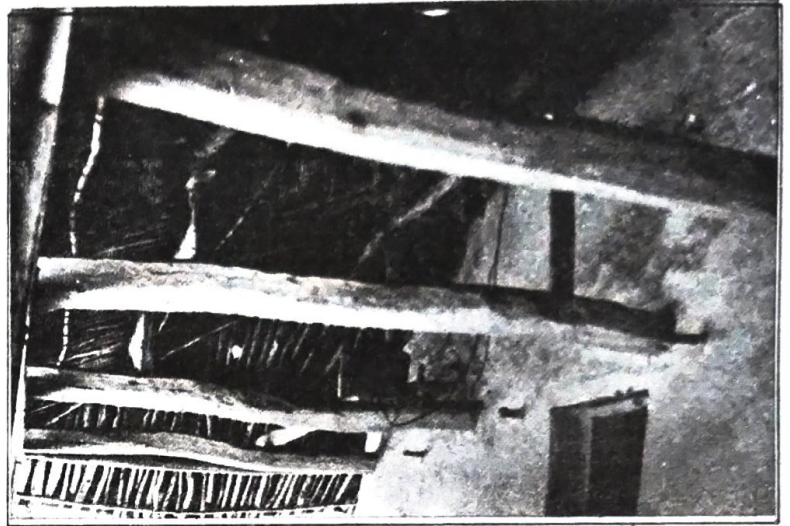
चित्र 5 लकड़ी का ठाठ, ऊपर कवेलू

से जोड़ी गई हैं। फर्श भी पत्थर के हैं क्योंकि यहां आसपास पत्थर आसानी से मिल जाता है। कई घरों में छत भी पत्थर की पट्टियों से बनी हैं।

यह तो हुई पुरानी बात, जब पास में जंगल से लकड़ी और बांस काटने पर कोई पाबंदी नहीं थी। मकान तो बालमपुर में अब भी बन रहे हैं, लेकिन किस चीज़ से? चित्र 6 में एक बनते हुए मकान को देखो। पत्थर की दीवारें हैं और उनके ऊपर रखी गईं हैं लंबी-लंबी पत्थर की मियालें।

गांव के लोग बताते हैं कि दीवारें बनाने का अलंगा (पत्थर की बड़ी ईंटें) तो पठार के कगार से काट लेते हैं। देखो यहां के लोगों के कैसे काम आया पठार का कगार! लेकिन लंबा पत्थर यहां नहीं मिलता। यह रायसेन या विदिशा की खदानों से आता है।

बालमपुर गांव में सिलावट लोगों के कई परिवार हैं जो पत्थर काटने का काम अब भी करते हैं। ये सिलावट लोग पत्थर के अलंगों के अलावा चक्की और लकड़ी के खंभे के लिए पत्थर की कुर्सी भी बनाते हैं।

बालमपुर के लिये सड़क तथा बाज़ार

बालमपुर भोपाल और विदिशा के रास्ते में पड़ता है। इनके बीच की रेल लाईन पर एक छोटा स्टेशन है – सूखी सेवनिया। वहीं उतर कर 7 किलोमीटर और चलकर बालमपुर आना होता है। रेल लाईन बिछने से पहले लोगों को शहर आने-जाने में कितनी कठिनाई होती होगी! ऐसे में अनाज बेचना और सामान लाना कितना कठिन रहा होगा।

25 साल पहले यहां से कच्ची सड़क निकाली गई। तब बैलगाड़ियां तो चलने लगीं लेकिन ट्रक और बस चलना फिर भी कम था। अब तो पक्की डामर की सड़क बन गई है। इससे किसानों को क्या सुविधा हुई? भोपाल का बाज़ार तो बहुत बड़ा है और वहां अनाज की बड़ी मंडी भी है। जिन किसानों को अनाज बेचना होता है, भोपाल की मंडी में बेच आते हैं। कभी थोड़ा अनाज बेचकर ज़रूरत का सामान खरीदना हुआ तो विदिशा की तरफ दीवानगंज के हाट में बेचने चले जाते हैं।

तुमने कोटगांव के बारे में पढ़ा था कि वहां कई सड़कें चारों तरफ जाती हैं। बालमपुर के पास में एक ही सड़क और रेल लाईन है। बालमपुर की बस्ती दो ही दिशाओं में जुड़ी है - दक्षिण में भोपाल से और उत्तर में विदिशा से। वहां खड़े होकर पूर्व और पश्चिम की ओर देखें तो ऊंचे कगार, पथरीली ढलान, झाड़ियां और छोटे पेड़ ही दिखते हैं। बस्तियां तो इन दिशाओं में भी होंगी लेकिन प्रकृति ने वहां चढ़ने-उतरने वाले रास्ते बनाना कितना कठिन कर दिया है।

■■■■■■■■■■■■■■

चित्र 6 पत्थर की मियालें

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इन प्रश्नों का उत्तर पाठ के किस उपशीर्षक में मिलेगा– सही जोड़ी मिलाओ–
   क) बालमपुर के घरों की छत कैसे बनती है – **तालाब और बांध**
   ख) बालम्पुर के लोग खेती के अलावा क्या काम करते हैं - **पठार की बनावट**
   ग) पठार पर कंकरीली मिट्टी कहां पाई जाती है - **जंगल कटे जंगल लगे**
   घ) पठार पर जंगल कहां पाए जाते हैं - **घर**
2. चित्र 3 में तुम्हें क्या दिख रहा है - पूरे दृश्य का विस्तार से पांच-छः वाक्यों में वर्णन करो।
3. बालमपुर के किसानों को साल में दो फसलें लेने में क्या कठिनाई है? यह कठिनाई कोटगांव में क्यों नहीं है?
4. बालमपुर के किसानों को कुआं बनाना कठिन और महंगा क्यों पड़ता है? सिर्फ 6 वाक्यों में लिखो।
5. बालमपुर के कई लोग लकड़ी, ईंट और खपरैल की बजाय पत्थर से घर बनाते हैं। ऐसा क्यों?
6. बालमपुर से पूर्व व पश्चिम दिशा में जाने में क्या प्राकृतिक रुकावट है?
7. कोटगांव व बालमपुर के घरों में क्या फर्क दिखता है?
8. पाहवाड़ी और बालमपुर गांवों में इन बातों में क्या समानता दिखती है –
   1. बनावट 2. मिट्टी 3. कुएं 4. तालाब व बांध

8. पठार की कगार से बालमपुर के लोगों को मिलने वाले कोई तीन फायदे बताओ।
9. पठार पर सड़क व रेल लाईन बनाने के लिए क्या-क्या करना पड़ता होगा - चर्चा करो।

6. तहसील का नक्शा

जैसे तुमने अपनी कक्षा का नक्शा बनाया वैसे ही तुम्हारे आसपास के खेतों, गांवों आदि को भी नापकर नक्शा बनाया गया है। तुम अपनी तहसील के नक्शे को देखो।

गुरुजी कक्षा को पांच-पांच बच्चों की टोलियों में बांट दें। हर टोली को तहसील का एक नक्शा दे दें। हर टोली में एक छात्र/छात्रा कापी, पेन लेकर तैयार रहे। नक्शा देखकर कई सवालों के जवाब लिखने होंगे।

अपना गांव/शहर

सबसे पहले नक्शे में अपने गांव/शहर को पहचानो। नक्शे में गांव/शहर की सीमा किस चिन्ह से बनाई गई है?

अपने गांव/शहर की सीमा को देखो और उसका आकार अपनी कॉपी में बनाओ।

क्या आसपास के गांवों के आकार भी ऐसे ही हैं?

क्या तुमने कभी सोचा था कि तुम्हारे गांव/शहर का आकार ऐसा दिखता है? तुम्हारी शाला के सबसे पास तुम्हारे गांव/शहर की सीमा कहां से गुज़रती है? गुरुजी के साथ वहां जा कर देखो - तुम्हारा गांव क़हां खत्म होता है और कहां से दूसरा गांव शुरू होता है। उस दूसरे गांव का क्या नाम है? तहसील के नक्शे में अपनी पहचान के दूसरे गांवों/शहरों को ढूंढो।

संकेत सूची देखो :

तहसील के नक्शे से तहसील के सारे गांव शहर कहां है, यह तो पता चलता ही है। साथ में कहां-कहां शाला है, डाकघर है, रेल्वे स्टेशन है, कहां से सड़कें और रेल लाईनें गुज़रती हैं – ऐसी कई बातें भी पता चलती हैं। ये सब चिन्हों से बताई गई हैं। तुम संकेत सूची में देखो और बताओ इन चीजों के क्या चिन्ह बने हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढकर लिखो।

सड़कें और रेल :

क्या तुम्हारी तहसील से रेल लाईन गुज़रती है? अगर हां तो चिन्ह देखकर बताओ रेलवे स्टेशन कहां-कहां हैं? (पांच नाम लिखो)

नदी और जंगल :

1. तुम्हारी तहसील से कौन सी नदी बहती है? 2. वह तुम्हारे गांव की किस दिशा में बहती है?
3. उस नदी के किनारे बसे पांच गांवों के नाम लिखो। 4. क्या तुम्हारी तहसील का कुछ भाग जंगल है? अगर हां तो जंगल के बीच बसे पाच गांवों के नाम लिखो।
5. जंगल नाका कितने गांवों में है, गिनो। जंगल नाके में क्या होता है?

सुविधायें :

सभी गांवों में शाला, अस्पताल जैसी सुविधायें नहीं होती हैं। बहुत से गांवों में शाला है, मगर कुछ ही गांवों में डाकघर या दवाखाना होता है। कई गांव के लोग एक खास गांव में बाज़ार करने आते हैं। चलो नक्शे को गौर से देखें – कौन-कौन से गांवों में क्या-क्या सुविधायें हैं?
1. ऐसी चार जगहों के नाम बताओ जहां शाला और डाकघर दोनों हैं।
2. तुम्हारी तहसील में इन दिनों कहां-कहां बाज़ार लगता है, तालिका भरो –

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार

3. तुम्हारी तहसील में कौन-कौन से शहर हैं?
4. उन शहरों में कौन-कौन सी सुविधायें हैं जो आम गांवों में नहीं हैं, नक्शा देखकर बताओ।

तहसील की सीमा

तुमने ऊपर बताए प्रश्नों के उत्तर नक्शे में से ढूंढ कर लिखे। तुम कहां का नक्शा देख रहे थे?
मानो तुम एक बस में बैठे हो और नक्शे में दिखाई किसी एक पक्की सड़क पर जा रहे हो। तुम सड़क पर पड़ने वाले आखिरी गांव तक पहुंचे। फिर बस सड़क पर और आगे बढ़ी और एक दूसरे गांव तक पहुंची। वह गांव और सड़क इस नक्शे में क्यों नहीं दिखाई गई है?
आखिरी गांव की सीमा और बीच के गांवों की सीमा के चिन्हों में क्या फर्क है?
यह दूसरा चिन्ह तहसील की सीमा दिखाता है।
इसके बाद आने वाले गांव तुम्हारी तहसील में नहीं आते इसलिए इस नक्शे में नहीं दिखाए गए हैं।
देखो क्या चारों दिशाओं में तुम्हारी तहसील की सीमा एक से चिन्ह से दिखाई गई है?
तहसील की सीमा के अन्दर आने वाले सभी गांवों-शहरों की देखरेख के लिए तहसीलदार नाम का अधिकारी होता है।
तुम्हारी तहसील का कार्यालय कहां है? तहसील के कार्यालय पर तुम्हारे यहां के लोग किन कामों के लिए जाते हैं?

7. पृथ्वी और ग्लोब

दुनिया गोल है

हमारी पृथ्वी जिस पर ये सारे गांव, शहर, ज़िले, राज्य और देश हैं और ये सब पहाड़, पठार, मैदान व नदियां हैं - गोल है। पृथ्वी एक बहुत बड़ी गेंद की तरह गोल है।

हमें ऐसे देखने पर पृथ्वी गोल नहीं लगती है क्योंकि, पृथ्वी बहुत बड़ी है। हम इसे पूरा का पूरा देख ही नहीं सकते।

हां, जो लोग एक खास तरह के जहाज़ में बैठकर पृथ्वी से बहुत दूर गये हैं, चांद तक गए हैं - उन्होंने वहां से पृथ्वी को देखा है। जैसे हमें पृथ्वी से चांद और सूरज दिखते हैं, वैसे ही चन्द्रमा पर पहुंच कर लोग पृथ्वी को देख सकते हैं। पृथ्वी चांद की तरह आकाश में टंगी हुई एक गोल गेंद सी दिखाई देती है। पृथ्वी का ज़्यादातर हिस्सा नीला दिखाई देता है। यह सागरों का रंग है। बड़े-बड़े ज़मीन के टुकड़े भी दिखते हैं। ये वही टुकड़े हैं जिन पर हम सब रहते हैं। सागर और ज़मीन के ऊपर कहीं-कहीं सफेद बादल भी दिखते हैं।
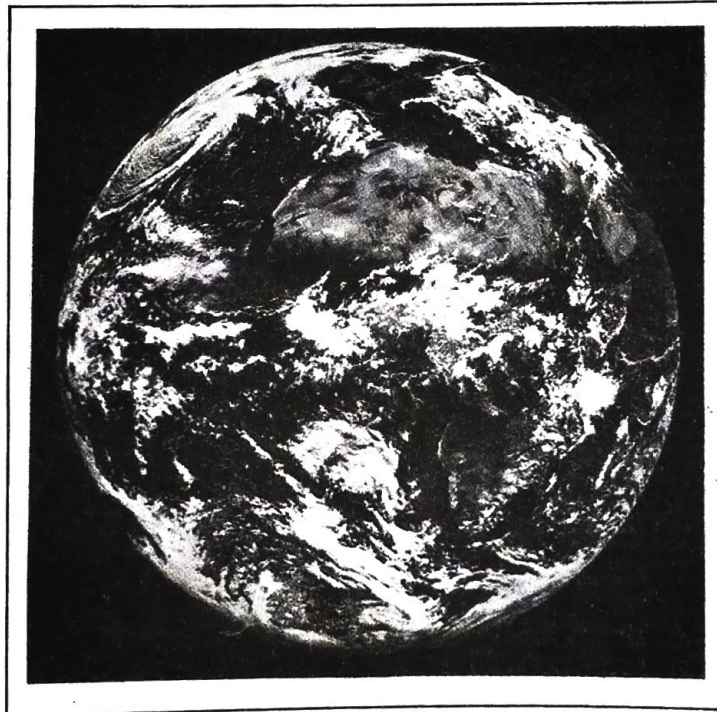
चन्द्रमा से खींचे गए पृथ्वी के इस चित्र में हम ये चीज़ें देख सकते हैं।

पृथ्वी पर ज़मीन और पानी (स्थल व जल)

पृथ्वी पर ज़मीन के बड़े-बड़े हिस्से दिख रहे हैं। ज़मीन के बड़े-बड़े हिस्सों के चारों तरफ लंबे चौड़े समुद्र हैं। इसीलिए ज़मीन के इन बड़े-बड़े हिस्सों को महाद्वीप कहा जाता है। उनके चारों तरफ जो सागर हैं उन्हें महासागर कहा जाता है।

आओ एक नक्शे में स्थल (ज़मीन) और जल (पानी) को रंग कर बताएं। पृष्ट 211 पर पृथ्वी का एक नक्शा बना है जिसमें सारे महाद्वीप व महासागर एक साथ दिख रहे हैं। महासागर लहरों से दिखाए गए हैं। तुम महासागरों को नीले रंग से रंग दो।

नक्शे में दिख रहा बाकी हिस्सा ज़मीन है। इसे पेन्सिल से रंग दो।

मानचित्र 1. संसार

आर्कटिक महासागर
न्यू यार्क
पेरिस
अटलांटिक महासागर
दिल्ली
बंबई
प्रशांत महासागर
हिन्द महासागर
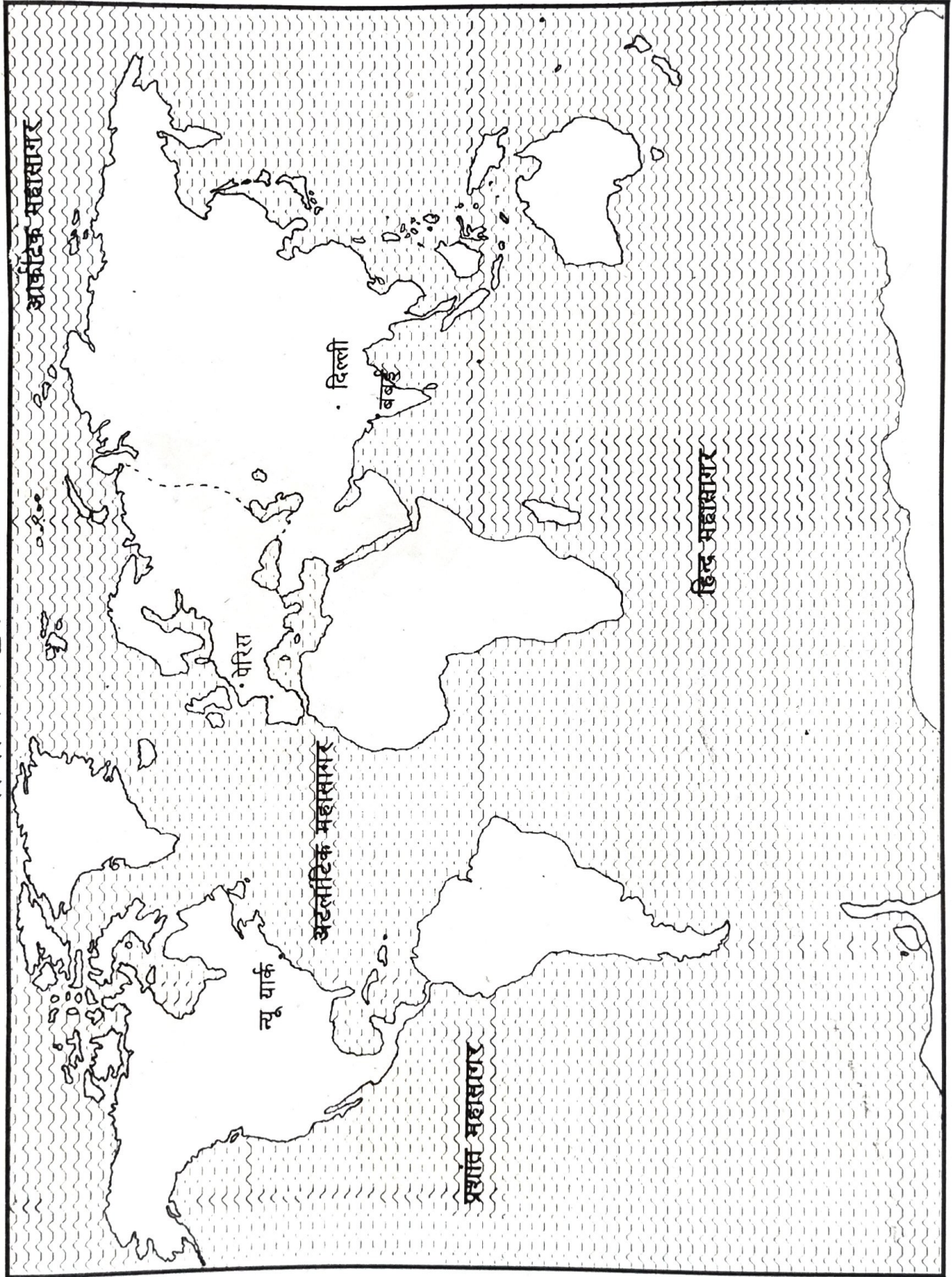
महाद्वीप व महासागर

आओ अब जानें कि ज़मीन के इन विशाल टुकड़ों को लोग किन-किन नामों से जानते हैं।

यहां अलग-अलग महाद्वीपों के आकार बने हैं और उनके नाम भी लिखे हुए हैं। इनकी मदद से तुम महाद्वीपों को पहचानो। मानचित्र 2 में हर महाद्वीप पर उसका नाम लिखो और हर महाद्वीप को एक अलग रंग से रंग लो।

मानचित्र 2. संसार
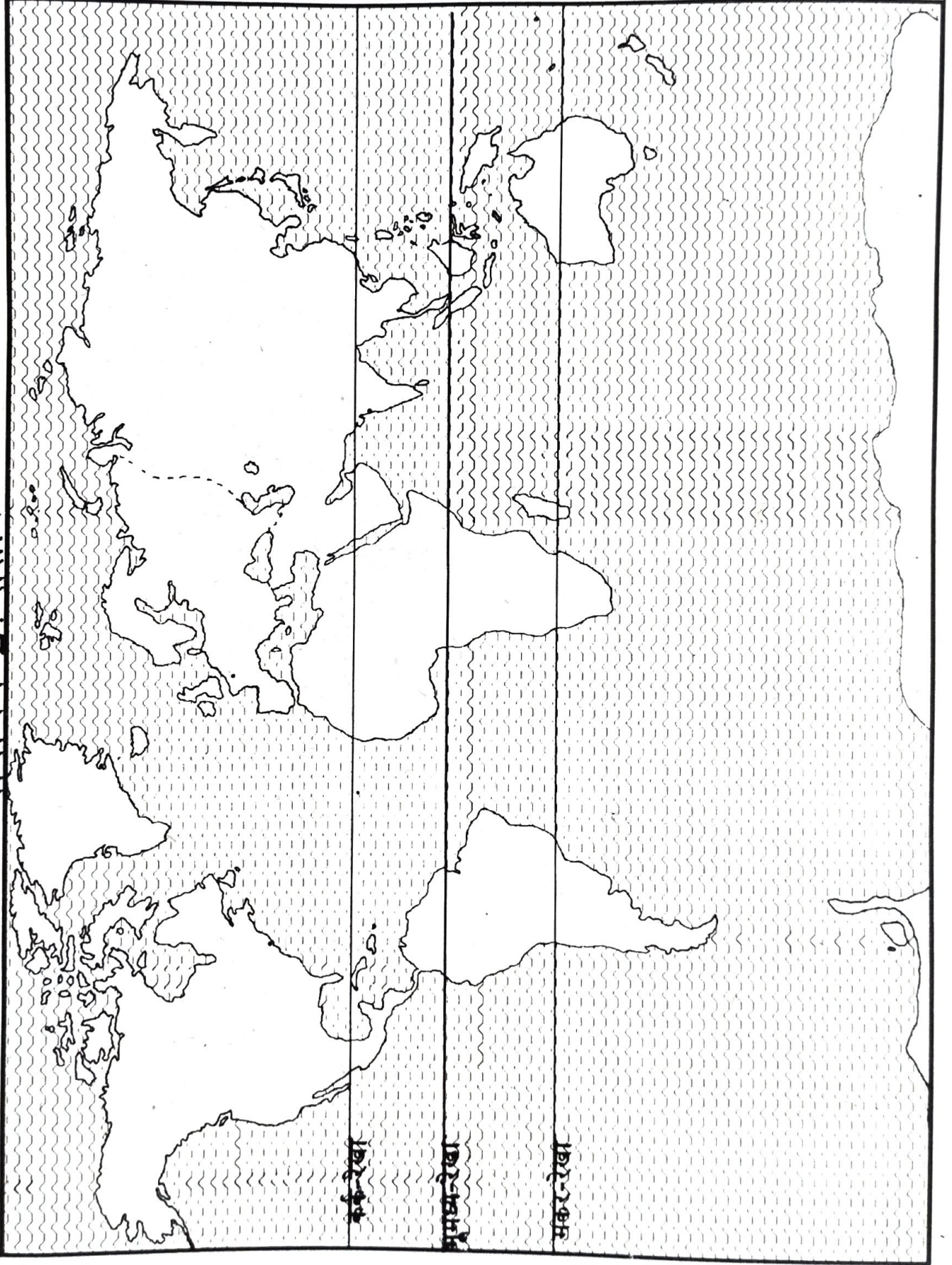
लगभग हर महाद्वीप में कई बड़े छोटे पहाड़ हैं, पठार व मैदान हैं, नदियां, झीलें व तालाब हैं। सभी महाद्वीपों में कई देश हैं जिनमें करोड़ों लोग रहते हैं। तुम आगे के पाठों में एशिया महाद्वीप और उसके कुछ देशों के बारे में पढ़ोगे।

मानचित्र 1 में महासागरों के नाम देखो। मानचित्र 2 में महासागरों के नाम भी सही जगह लिखो।

क्या तुमने कहीं सागर देखा है? तालाब और नदी को तुम कैसे पार करते हो? क्या तुम इसी तरह सागरों को पार कर सकते हो?

सागर बहुत गहरे भी हैं। वहां हवा जब चलती है तो ऊंची लहरें उठती हैं। एक जगह से दूसरी जगह जाने में कई हफ्ते तक लग जाते हैं। कई दिनों तक चारों ओर सिर्फ पानी ही पानी दिखता है, ज़मीन दिखती ही नहीं। बड़े सागरों को पार करने के लिए बड़े जहाज़ों में सफर करना पड़ता है। इस पुस्तक में कई जगह जहाज़ों के चित्र दिये गये हैं। उन्हें देखो।

चलो नक्शे में ही एक जगह से दूसरी जगह जा कर देखें।

यदि तुम्हें दिल्ली से पेरिस, जाना है तो स्थल या सागर, कहां से जा सकते हो?

तुम किस महाद्वीप से किस महाद्वीप को गए? अगर तुमने सागर पार किया तो कौन सा?

बंबई से यदि न्यू यार्क जाना हो तो क्या स्थल से होते हुए पहुंच सकते हो?

मानचित्र पर उंगली फेर कर बताओ कि किस रास्ते से जा सकते हो?

ग्लोब

गोल पृथ्वी की बात सबसे अच्छी तरह समझने के लिए ग्लोब देखो। यह गोल पृथ्वी का नमूना है यानी माडल है। जैसे तुम बड़ी बैलगाड़ी को ठठेरे या मिट्टी से छोटे में बना देते हो, वैसे ही अपनी विशाल पृथ्वी को छोटे में बनाया गया है।

दुनिया के सभी देश ग्लोब पर अलग-अलग रंगों में दिख रहे हैं। नीले रंग में सागर दिख रहे हैं।

तुम भारत देश पर उंगली रखो और किसी भी दिशा में उंगली आगे बढ़ाते जाओ। उंगली वापस लाए बिना दुबारा भारत देश पर उंगली लाओ। सभी बच्चे ग्लोब पर एक-एक देश चुनकर बारी-बारी यह खेल खेल सकते हैं।

भूमध्य रेखा, कर्क रेखा, मकर रेखा

तुमने ग्लोब का चक्कर लगाते-लगाते देख लिया होगा कि उस पर कई आड़ी व खड़ी रेखाएं बनी हुई हैं। ग्लोब पर ये रेखाएं भला क्यों बनाई गई हैं? इन रेखाओं की मदद से हमें यह बताने में आसानी होती है कि ग्लोब पर कोई जगह कहां है?

जैसे, अगर कोई कहे कि ग्लोब में जावा नाम का द्वीप ढूंढो। तुम इतने बड़े ग्लोब में कहां-कहां ढूंढोगे? पर अगर हम कहें कि जावा द्वीप भूमध्य रेखा पर है तो तुम उसे आसानी से ढूंढ पाओगे।

पृथ्वी का बीचोंबीच बताने के लिए ग्लोब पर एक मोटी रेखा खिंची हुई है। इसे **भूमध्य रेखा** और **विषवत् रेखा** दो नाम से जाना जाता है। इस रेखा को ग्लोब पर ढूंढो और उसके पूरे घेरे पर उंगली फेरो। यह रेखा ग्लोब को दो बराबर हिस्सों में बांट देती है - उत्तरी हिस्सा और दक्षिणी हिस्सा।

भूमध्य रेखा किन महाद्वीपों में से खिंची हुई है, नाम लिखो।

भूमध्य रेखा के कुछ उत्तर में **कर्क रेखा** नाम की रेखा ढूंढो तथा दक्षिण में **मकर रेखा** ढूंढो।

कर्क और मकर रेखाओं के पूरे घेरे पर उंगली फेरो।

कर्क रेखा किन महाद्वीपों से गुज़रती है?

मकर रेखा किन महाद्वीपों से गुज़रती है?

भारत के बीच से कौन सी रेखा गुज़रती है?

भारत भूमध्य रेखा के उत्तर में है या दक्षिण में?

तुमने ध्यान दिया होगा कि भूमध्य रेखा से जितनी दूर उत्तर में जाने पर कर्क रेखा बनी है, भूमध्य रेखा से उतनी ही दूर दक्षिण में जाने पर मकर रेखा बनी है। ये बातें हम मानचित्र 2 देख कर भी समझ सकते हैं।

ध्रुव

अब तक तुमने देख ही लिया होगा कि पृथ्वी के दो सिरे थोड़े चपटे हैं। एक सिरा **उत्तरी ध्रुव** कहलाता है। दूसरा सिरा **दक्षिणी ध्रुव** कहलाता है। **ग्लोब** में इन्हें पहचानो।

उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के पास की दो-दो जगहों के नाम बताओ।

खाली स्थान भरो-

उत्तरी ध्रुव की .... दिशा में भूमध्य रेखा है।

दक्षिणी ध्रुव की .... दिशा में भूमध्य रेखा है।

अफ्रीका महाद्वीप उत्तरी ध्रुव और .... ध्रुव के बीच में है।

सही गलत बताओ-

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप भूमध्य रेखा और कर्क रेखा के बीच में है।

एशिया महाद्वीप उत्तरी ध्रुव से शुरू हो कर कर्क रेखा पर खत्म हो जाता है।

उत्तर अमेरिका महाद्वीप दक्षिणी ध्रुव के पास है।

दक्षिण अमेरिका महाद्वीप से मकर रेखा गुज़रती है।

8. एशिया महाद्वीप

आओ इस किताब में एशिया नाम के महाद्वीप और उसके आसपास के सागरों के बारे में पढ़ें।

अपना भारत देश एशिया महाद्वीप का ही हिस्सा है।

एशिया के आकार की तुलना अन्य महाद्वीपों से करो। वह किन महाद्वीपों से बड़ा है?

एशिया के मानचित्र को दीवार पर टांगो। एशिया में भारत के अतिरिक्त बहुत से देश हैं, जिन्हें अलग-अलग रंगों से दिखाया गया है। मानचित्र में देशों को रंगने के लिए कितने सारे रंगों का उपयोग किया गया है!

देशों के बीच की सीमा किस चिन्ह से दिखाई गई है?

मानचित्र 1 की मदद से तुम मानचित्र 2 में एशिया के देशों के नाम लिख लो और उन्हें अलग-अलग रंगों से रंग लो।

मानचित्र को ध्यान से देखो, इसमें कौन सा देश सबसे बड़ा है?

नीचे भारत के पड़ोसी देशों की सूची बनाओ:

भारत के उत्तर के देश -

पूर्व के देश -

पश्चिम के देश -

भारत के दक्षिण के देश -

तुमने देखा कि एशिया भी सागरों से घिरा है। एशिया को घेरे हुए कौन-कौन से महासागर हैं? इनके नाम मानचित्र 1 में देखो और मानचित्र 2 में भरो।

तुमने पढ़ा होगा कि भारत के पास समुद्र में कई द्वीप (या टापू) हैं। इन द्वीपों को देखकर तुम यह जान गए होगे कि द्वीप वह छोटे भू-भाग हैं, जिनके चारों ओर समुद्र है।

कुछ द्वीप भारत के भी हिस्से हैं। उनके नाम बताओ। इस तरह के अनेक द्वीपों के समूह दक्षिणी पूर्वी एशिया में हैं। मानचित्र में से ऐसे कई द्वीपों के नाम जानो।

इनमें से एक द्वीपों का समूह भारत के दक्षिण पूर्व में भूमध्य रेखा पर है। यह इंडोनेशिया देश है।

हमारी धरती पर अलग-अलग जगह पर मौसम, पेड़-पौधे, जानवर, फसल, लोगों का रहन सहन आदि अलग-अलग हैं। इंडोनेशिया, जो भूमध्य रेखा पर है, और उत्तरी ध्रुव में ज़मीन आसमान का फर्क है। आओ भूमध्य रेखा से शुरू कर के उत्तरी ध्रुव तक की यात्रा करें और अलग-अलग देशों की नई-नई बातें जानें।

मानचित्र 1 एशिया महाद्वीप के देश
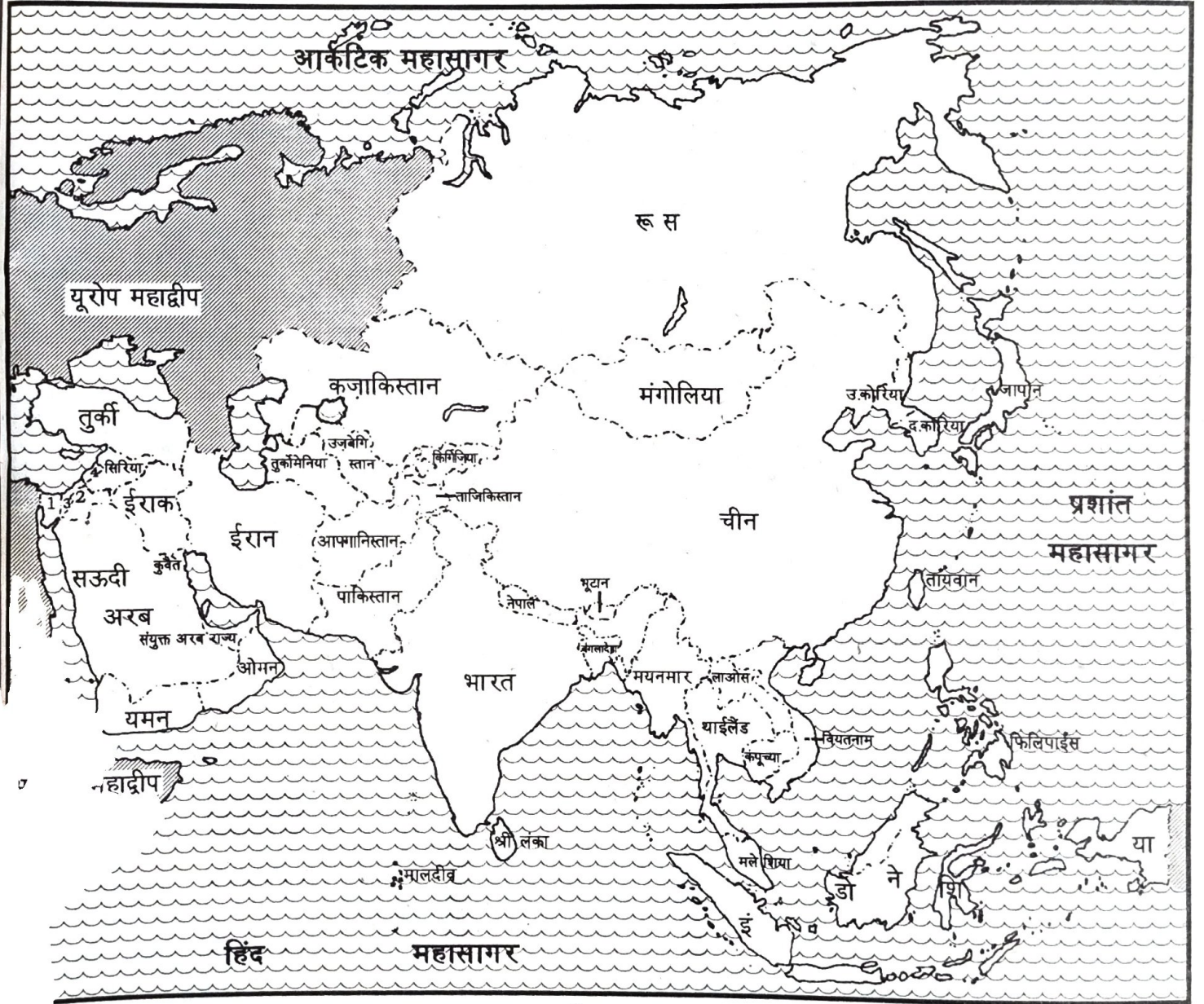
<u>संकेत</u>

सागर		1.	मिस्र
देशों की सीमा		2.	जार्डन
		3.	इस्रेल
दूसरे महाद्वीप		4.	लेबनान

मानचित्र 2 एशिया के देश
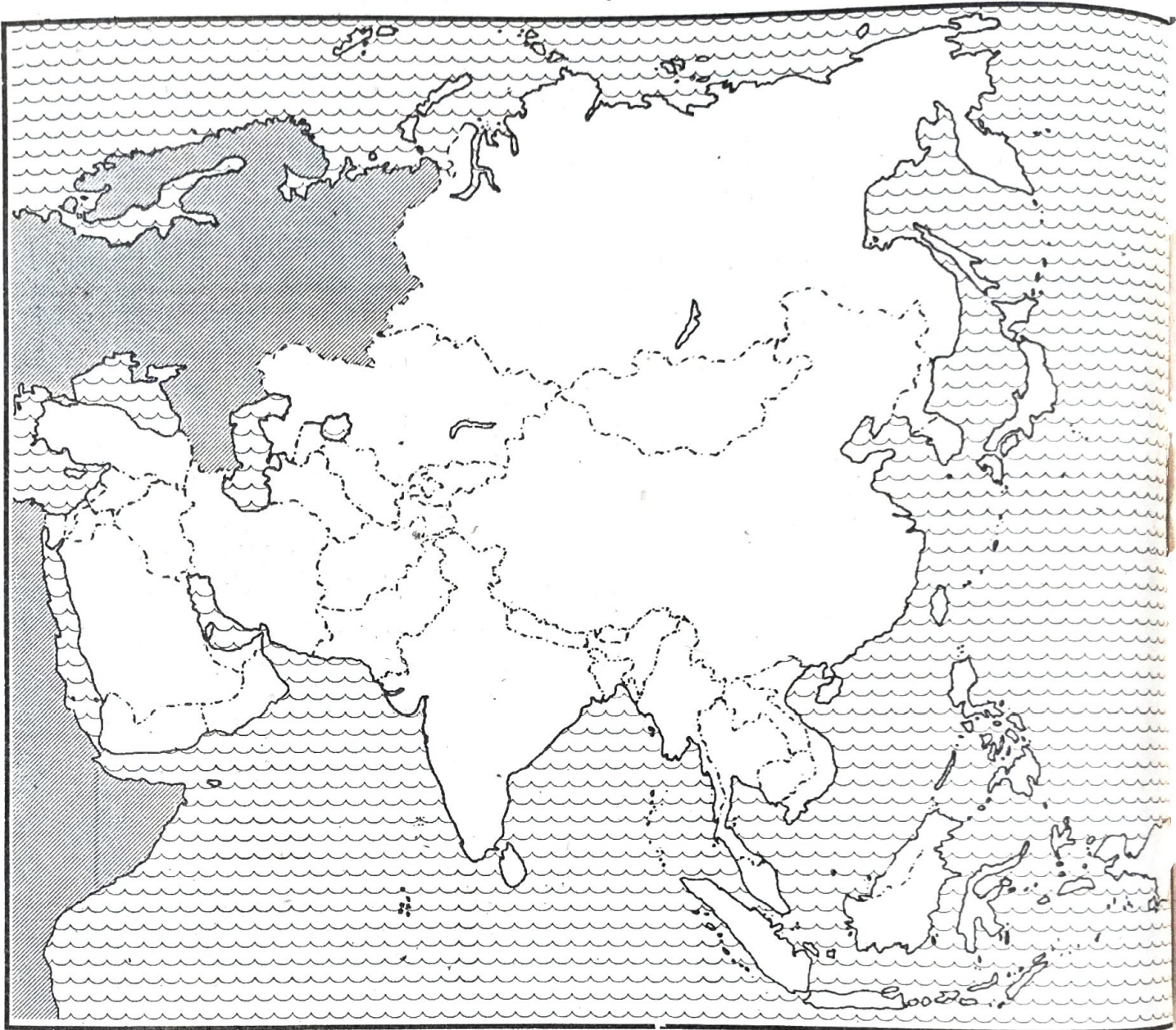
इस मानचित्र में सारे देशों के नाम भरो और हरेक देश को अलग-अलग रंग से रंगो। ध्यान रहे कि एक दूसरे से लगे हुए देशों के रंग एक से न हो।

9 सागरों से घिरा, घने जंगलों से ढका

द्वीपों का देश - इंडोनेशिया

चारों तरफ सागर ही सागर! उसमें हज़ारों छोटे-बड़े द्वीप! ये द्वीप घने जंगलों से ढके हुए। इन जंगलों के बीच-बीच में ऊपर उठे दिखाई देते ज्वालामुखी वाले पहाड़। इन ज्वालामुखियों में से उफनती, पिघलती चट्टानें और आग। सागर, जंगल, मैदान, नदी और ज्वालामुखियों के बीच घनी बस्तियों में बसे लोग। यह है द्वीपों का देश - इंडोनेशिया।
इस पाठ में इंडोनेशिया के बारे में कई चित्र दिए गए हैं। उन्हें देखो। वहां के जंगल, खेत, घर और लोगों की तुलना अपने यहां से करो।

इंडोनेशिया कहां पर है? वहां कैसे पहुंचें?

भारत के दक्षिण पूर्व में इंडोनेशिया नामक देश है। इसमें 10,000 से अधिक द्वीप हैं। इन द्वीपों के चारों ओर समुद्र है। इस देश तक पहुंचने के लिए समुद्र को जहाज़ों या बड़ी नावों से पार करना होता है। इंडोनेशिया के विभिन्न द्वीपों के बीच आने-जाने के लिए नावों का ही उपयोग होता है। है न मज़े की बात!

एटलस में देखो - इंडोनेशिया कहां पर है?

भारत से वहां पहुंचने के लिए हमें कौन सा सागर पार करना होगा?

इंडोनेशिया जाने के लिए हमें दक्षिण भारत के मद्रास शहर पहुंच कर वहां से एक जहाज़ में बैठकर कई दिन समुद्र में सफर करना पड़ेगा।

इंडोनेशिया का मानचित्र

मानचित्र नं.1 में इंडोनेशिया के अलग-अलग द्वीपों के नाम, आसपास के सागरों के नाम और पड़ोसी देशों के नाम दिए हैं।

मानचित्र इंडोनेशिया और उसके पड़ोसी देश
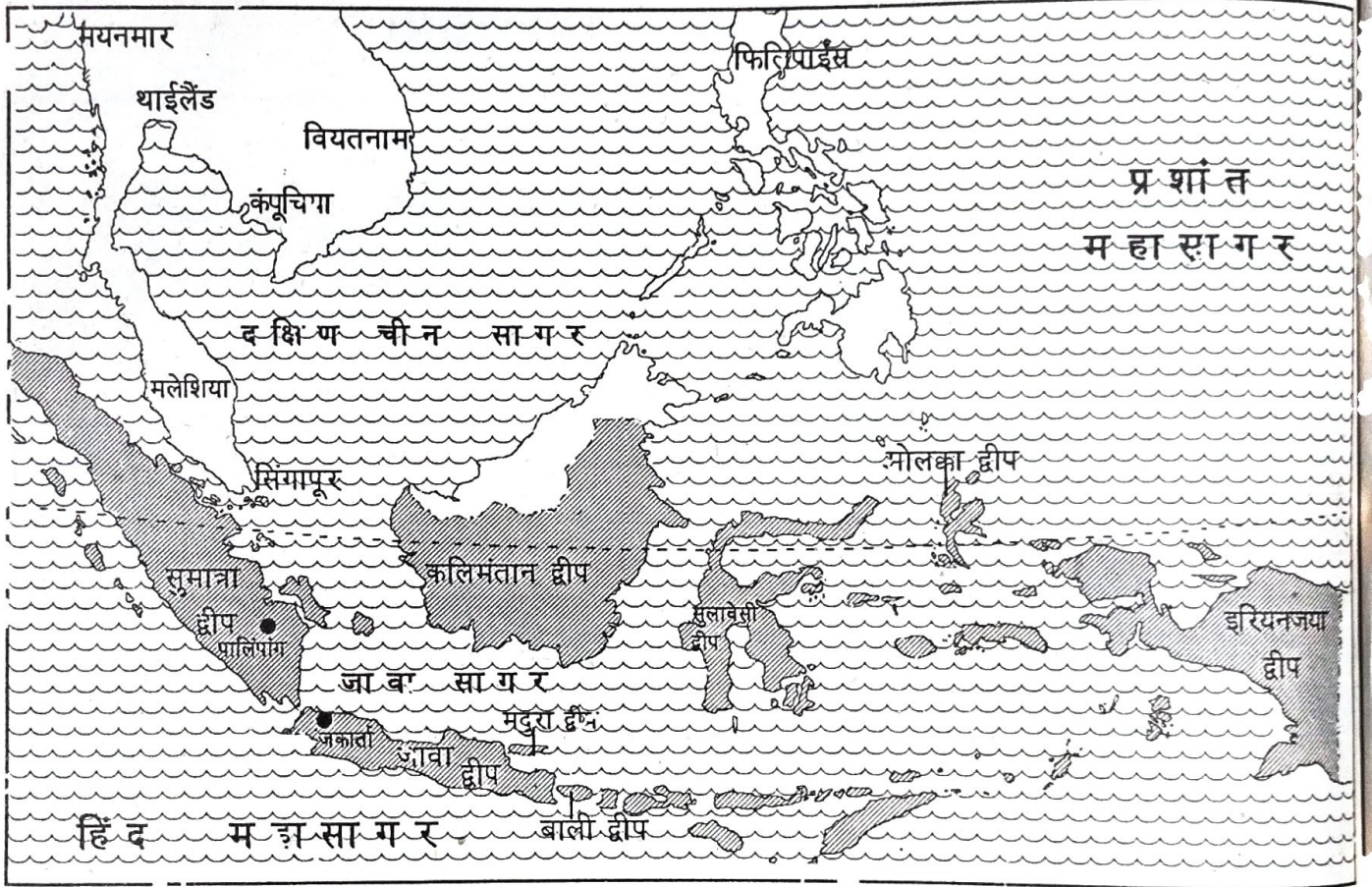
संकेत

सागर	
इंडोनेशिया	
भूमध्य रेखा	
प्रमुख शहर	

पैमाना

1 से.मी. = 350 कि.मी.

मानचित्र 1 को देखकर इस सूची को भरो-

इंडोनेशिया के द्वीपों के नाम-

पड़ोसी देशों के नाम-

सागरों के नाम-

इंडोनेशिया के द्वीपों पर अनेक पहाड़ हैं। इनमे से कुछ बहुत ऊंचे हैं। यहां कई ज्वालामुखी पंहाड़ हैं। ये समय-समय पर फूटते रहते हैं।

जब ज्वालामुखी फूटते हैं तो आसपास के पेड़-पौधों, बस्तियों को नष्ट कर देते हैं। लेकिन इनसे निकली राख से चारों ओर की मिट्टी बहुत उपजाऊ हो गई है। उस पर खेती की जाती है।

चित्र 2 ज्वालामुखीः पहाड़ के शिखर पर एक विशाल गड्ढा दिख रहा है जिससे धुंआं निकल रहा है। यह गड्ढा ही ज्वालामुख है जिससे ज़मीन के भीतर सुलगने वाली आग बाहर निकलती है। इस मुंह से निकलकर अक्सर पिघली चट्टान चारों ओर बहने लगती है। इस पिघली चट्टान को 'लावा' कहते हैं। लावा बहने का दृश्य दूर से ऐसा लगता है मानो आग की धाराएं बह रही हों। ज्वालामुखी से राख, चट्टानों के टुकड़े, गैसें, धुंआं आदि भी निकलते हैं। लावा ठंडा होकर कठोर चट्टानें बन जाता है। इस चित्र में जावा द्वीप के सुमेरु और ब्रोमो ज्वालामुखी पर्वत दिख रहे हैं।

जावा द्वीप की बनावट का चित्र देखो। (चित्र - 3) इंडोनेशिया के अन्य द्वीप भी कुछ इसी प्रकार की बनावट के हैं। उनमें जावा से भी ज़्यादा पहाड़ी हिस्से हैं। उनका बहुत सा हिस्सा वनों से ढका है।

भूमध्य रेखा के प्रदेश

तुम्हें याद होगा कि इंडोनेशिया के बीच से होकर भूमध्य रेखा जाती है।

भूमध्य रेखा इंडोनेशिया के किन द्वीपों से होकर गुज़रती है?

तुमने पिछले पाठ में ग्लोब में भूमध्य रेखा को देखा था और यह भी देखा था कि वह किन महाद्वीपों से होकर जाती है। भूमध्य रेखा के दोनों ओर के प्रदेश साल भर गर्म रहने वाले प्रदेश हैं।

तुम अगले पाठों में जापान और ईरान के बारे में पढ़ोगे। वे देश भूमध्य रेखा के काफी उत्तर में पड़ते हैं। वहां कई महीनों तक जाड़ा पड़ता है और बर्फ भी पड़ जाती है।

साल भर गर्मी - साल भर वर्षा

अपने प्रदेश की तरह इंडोनेशिया में जाड़ा, गर्मी तथा वर्षा की ऋतुएं नहीं होतीं, क्योंकि वहां सूर्य साल भर सिर के ऊपर चमकता है। वहां तो साल भर गर्मी पड़ती रहती है। कभी भी ठंड नहीं पड़ती

है। वहां के लोगों को गर्म कपड़ों की ज़रूरत ही नहीं होती। हां, ऊंचे पहाड़ों पर अवश्य ठंड रहती है।

इंडोनेशिया में साल भर गर्मी के साथ-साथ बारिश भी होती रहती है। रोज़ दोपहर के बाद बारिश होती है। ऐसा क्यों होता है?
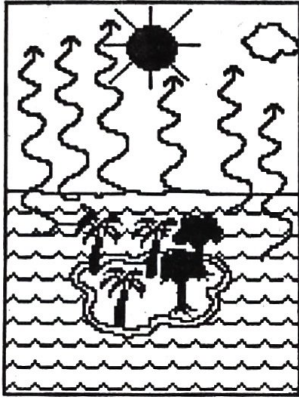
चित्र 4. दिन के 12 बजे

चित्र 5. दोपहर में

तुमने देखा था कि इंडोनेशिया के द्वीप सागर से घिरे हैं। सूर्य की तेज़ किरणों से चारों ओर के समुद्र का पानी भाप बन कर बादलों के रूप में छाता रहता है। बादल द्वीपों के भीतर तक पहुंच कर घनघोर वर्षा करते हैं। इनसे इंडोनेशिया में साल भर वर्षा होती रहती है। यदि समुद्र इतना नज़दीक न होता, तो वर्षा भी कम होती।

इसी कारण यहां साल भर खेती होती रहती है। अपने यहां गर्मियों में खेत खाली रहते हैं, लेकिन इंडोनेशिया में साधारणतः ऐसा नहीं होता।

तुम्हारे यहां की ऋतुओं और इंडोनेशिया की ऋतुओं में क्या-क्या फर्क हैं?

घने वन

पेड़-पौधों के लिए तीन प्रमुख चीज़ों की आवश्यकता होती है, धूप, पानी और मिट्टी। इंडोनेशिया में पेड़ों के लिए पर्याप्त धूप पड़ती है, और साल भर पानी बरसता है, तो पेड़-पौधे मौज से पलते-बढ़ते हैं। यहां हज़ारों तरह के पौधे तथा पेड़ होते हैं।
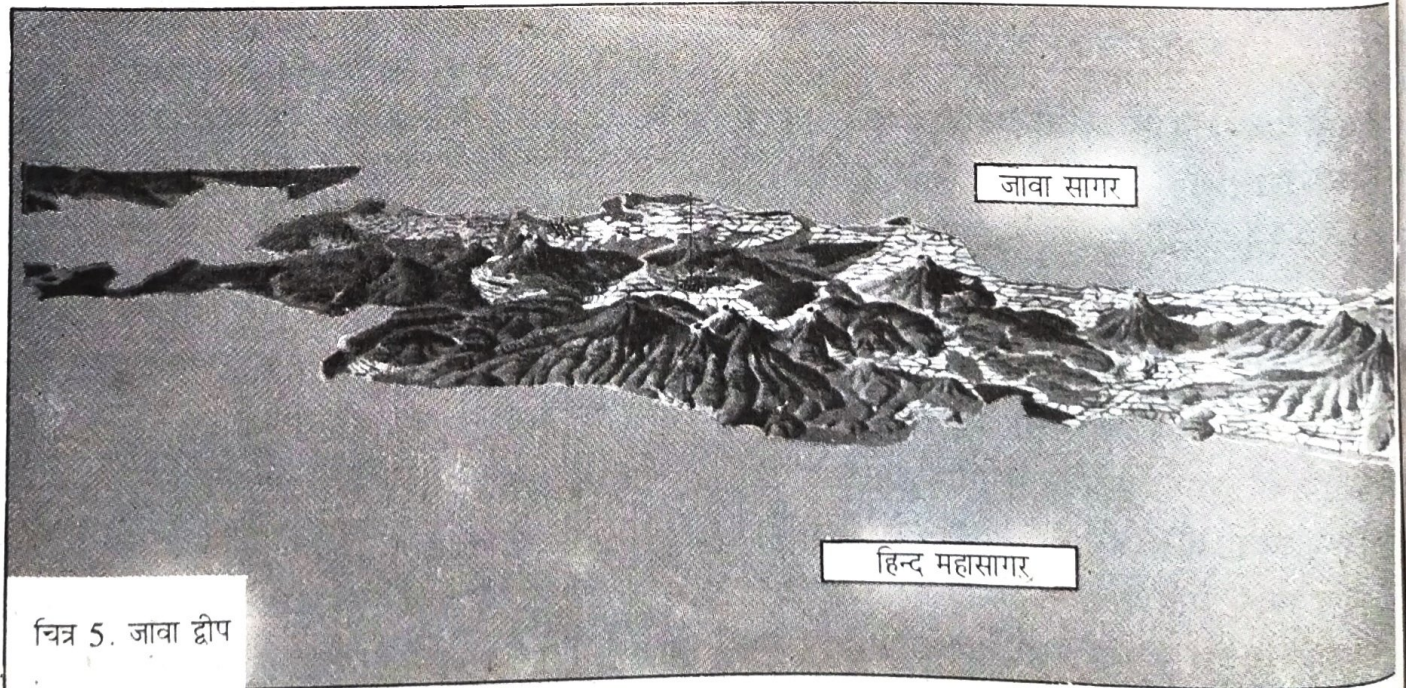
चित्र 5. जावा द्वीप

यहां के जंगल इतने घने होते हैं कि दिन में भी अंधेरा रहता है। (चित्र - 6) चारों ओर बड़े पेड़, छोटे पेड़, घास, पेड़ों में लिपटी बेलें देखने को मिलती हैं। पेड़ एक दूसरे से सूरज की रोशनी के लिए होड़ के कारण लम्बे होते जाते हैं। पानी खूब बरसता है और घने जंगल के कारण सूख नहीं पाता, तो कहीं-कहीं दलदल बन जाते हैं। यही कारण है कि वनों को काट कर साफ करना और रास्ता बनाना तक कठिन हो जाता है।

साल भर नमी और गर्मी होने के कारण यहां के पेड़ों के सारे पत्ते किसी एक मौसम में एक साथ कभी नहीं झड़ते। पत्ते झड़ते हैं और नए पत्ते निकलते जाते हैं। ये वन सालभर हरे-भरे रहते हैं। ऐसे वनों को **'सदाबहार वन'** कहते हैं। अपने मध्यप्रदेश में वनों में गर्मी के मौसम में पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। यह पतझड़ का मौसम होता है। पूरा जंगल का जंगल उजड़ा लगता है। जून-जुलाई में

चित्र 6.भूमध्य-रेखीय वन

क्या तुम जावा द्वीप के पहाड़ों में से ज्वालामुखी पहचान सकते हो? यहां के मैदानों को भी पहचानो।

मदुरा द्वीप

बाली द्वीप
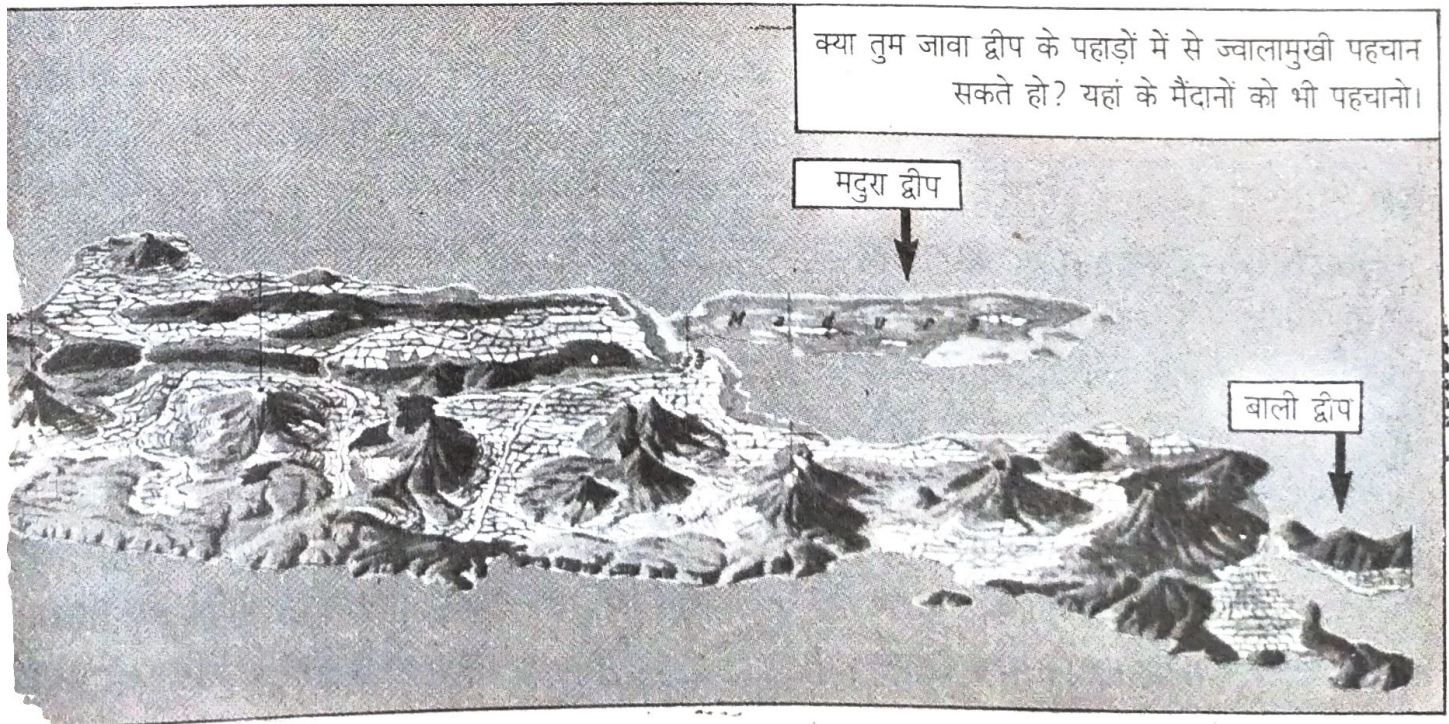
बारिश होने के बाद ही इनमें हरे पत्ते लगते हैं। इंडोनेशिया में ऐसा नहीं होता है। वहां के पेड़ों में साल भर हरियाली बनी रहती है।

इंडोनेशिया में घने वन क्यों पाए जाते हैं?

वहां के पेड़ ऊंचे क्यों उगते हैं?

इंडोनेशिया के वनों में पतझड़ क्यों नहीं होता ?

अपने प्रदेश के वनों में गर्मी के दिनों में पत्ते झड़ जाते हैं, जबकि इंडोनेशिया में ऐसा नहीं होता । इसका क्या कारण हो सकता है?

इन घने वनों के पेड़ों के ऊपर रंग बिरंगी चिड़िया पाई जाती हैं। इन जंगलों में अनेक जंगली जानवर जैसे हाथी, शेर, रीछ, हिरण, लोमड़ी, बड़े बन्दर आदि बहुत हैं।

इन पक्षियों व जानवरों को साल भर खाने को फल फूल मिलते रहते हैं। साल भर गर्मी और नमी रहने के कारण यहां साल भर किसी न किसी पेड़ में फल लगते रहते हैं।

अनोखा पक्षी

वनों का उपयोग

शिकार और बटोरना - आज भी इंडोनेशिया के घने वनों में कई शिकारी झुण्ड रहते हैं। ये झुण्ड अपने उपयोग की सारी चीज़ें जंगल से शिकार करके या बटोर कर प्राप्त करते हैं।

जंगल जलाकर खेती - यहां के कई लोग बड़ी मेहनत से जंगल को काट कर जलाते हैं और उसकी राख पर खेती करते हैं। राख खत्म हो जाने पर दूसरी जगह जाकर फिर से जंगल जलाकर खेत बनाते हैं। इस तरह की खेती को **'झूम खेती'** कहते हैं। इस के बारे में तुम आगे की कक्षाओं में पढ़ोगे।

यहां के जंगलों में मूल्यवान लकड़ी जैसे - सागौन, महोगनी, आबनूस, आदि के पेड़ बहुत होते हैं। यहां बांस, बेंत के पेड़ भी मिलते हैं जिनकी लकड़ी से मकान, जहाज़ आदि बनाए जाते हैं।

यहां से लकड़ी विदेशों को भी भेजी जाती है। बन्दरगाह पर लकड़ी से लदे जलयान दिखाई देते हैं। जंगलों की कटाई अब यहां एक समस्या है, क्योंकि जंगल खत्म होते जा रहे हैं। इससे वर्षा के साथ मिट्टी तेज़ी से कटकर बह भी जाती है।

क्या तुम्हारे आसपास सागौन, बेंत और बांस जैसे पेड़ पाए जाते हैं? यदि पाए जाते हैं, तो उनका क्या उपयोग होता है?

इन्हीं जंगलों में पहले काली मिर्च, दालचीनी, लौंग, इलायची जैसे मसालों के पौधे प्राकृतिक रूप से उगते थे। अब तो इनकी खेती होने लगी है। आज भी इन जंगलों में अनेक पौधे ऐसे मिलते हैं जो बहुत उपयोगी हो सकते हैं। इसलिये इन जंगलों का अध्ययन किया जाता है और उन्हें सुरक्षित रखने की कोशिश हो रही है।

मनुष्य जैसा बंदर

इंडोनेशिया में खेती

तुम शायद सोचते होगे कि अगर यहां जंगल ही जंगल हैं तो लोग कहां रहते होंगे? वे खेती कहां और कैसे करते होंगे? इंडोनेशिया के बहुत से द्वीपों के अधिकतर भाग

अब भी जंगलों से ढके हैं। केवल समुद-तट के मैदानों को साफ कर के खेती होती है। लेकिन कुछ द्वीपों जैसे जावा, बाली, मदुरा, सुमात्रा आदि में बहुत सा हिस्सा साफ कर लिया गया है, जहां खूब खेती होती है। तुम जावा द्वीप के चित्र में ऐसे मैदानों को देखो। इंडोनेशिया में सिर्फ मैदानों में ही खेती नहीं होती। पहाड़ी ढलानों पर, जहां उपजाऊ मिट्टी है, वहां भी खेत बनाए गए हैं। यदि ढलान को खेत में बदल दें तो वर्षा के साथ पानी ढलान पर तेजी से बहेगा और मिट्टी कट जायेगी। इसलिये यहां के लोग ढलानों को काट कर सीढ़ीनुमा छोटे-छोटे खेत बना लेते हैं। इनके किनारों पर ऊंची मेढ़ बनाकर वर्षा के पानी को रोक लेते हैं। अतिरिक्त पानी बीच-बीच की नालियों में निकाल देते हैं। इन खेतों के बीच-बीच में पेड़ भी होते हैं। चित्र 7 में देखो। ऐसे खेत धान की खेती के लिए बहुत उपयोगी हैं। इसलिए चावल ही इंडोनेशिया की मुख्य फसल है।
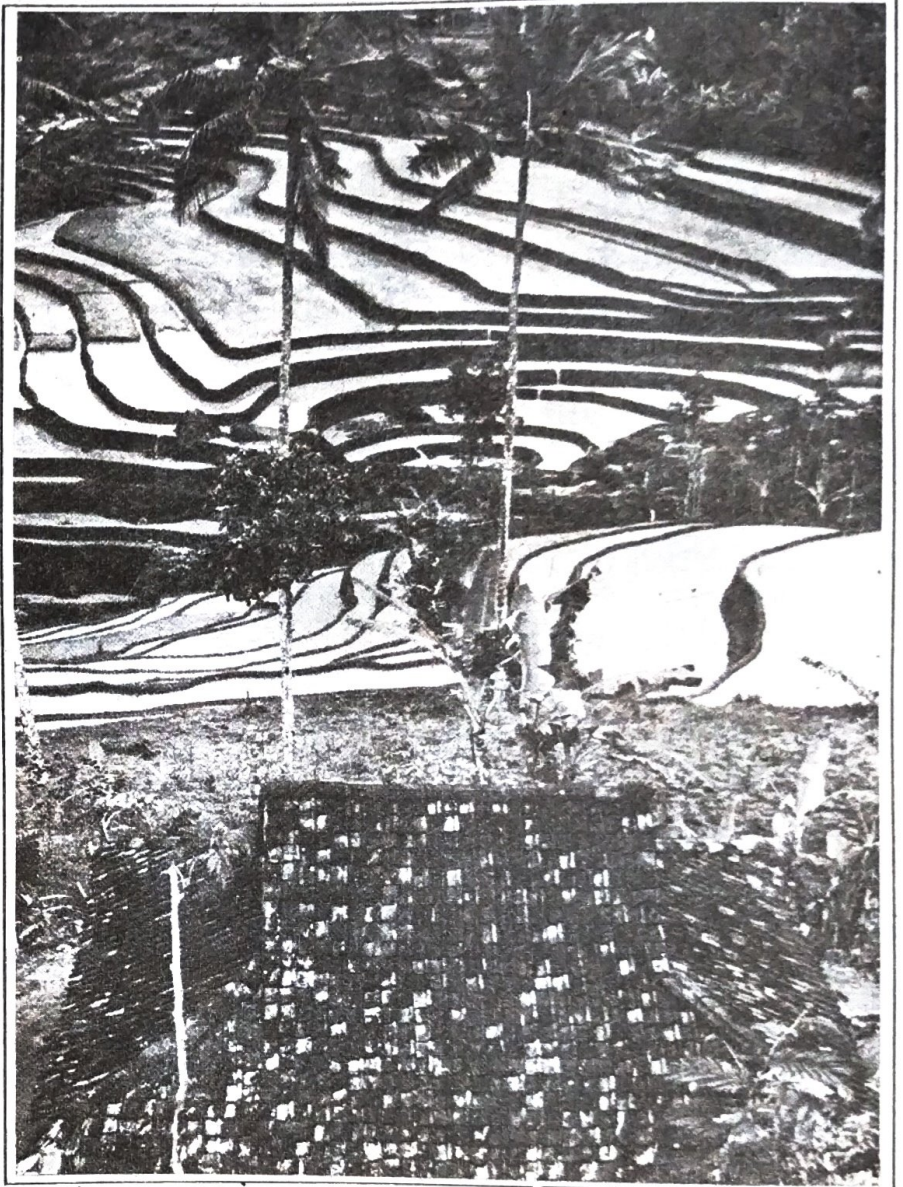
चित्र 7. सीढ़ीनुमा खेत - इनमें पानी रोकने के लिए क्या प्रबन्ध किया गया है? पेड़ किस चीज़ के हैं? क्या ऐसे पेड़ तुम्हारे खेतों के आसपास भी होते हैं?

अपने प्रदेश में चावल किस ऋतु में होता है?

इंडोनेशिया में चावल अधिक क्यों होता है? गेहूं क्यों नहीं होता? कक्षा में चर्चा करो।

मसालों की खेती

इंडोनेशिया इलायची, लौंग, जायफल, काली मिर्च आदि के लिए सदियों से प्रसिद्ध है। इस तरह के मसाले अपने देश में भी केरला में होते हैं। भारत के इस राज्य में भी सालभर तेज़ गर्मी और अधिक वर्षा होती है।

इंडोनेशिया में उगने वाले ये मसाले दूसरे देशों को बेचे जाते हैं। इन गर्म मसालों का उपयोग दूर के देशों जैसे, हॉलैन्ड, फ्रांस, इटली, इंग्लैंड, स्पेन,

पुर्तगाल, आदि में भी सदियों से होता आ रहा है।

शुरू में तो घने वनों में इन मसालों के पौधे जंगली उगते थे। वहां के लोग ढूंढकर उन्हें इकट्ठा करते थे और शहर लाकर व्यापारियों को बेच देते थे। डच व अरब व्यापारी इन मसालों को जहाज़ों में लादकर ले जाते और धन कमाते थे। उनके देश में ऐसे मसाले नहीं उगते। भारत के व्यापारी भी मसालों का व्यापार करने यहां आते थे। इनमें से बहुत से लोग इंडोनेशिया में ही बस गए। धीरे-धीरे जब इन मसालों की मांग बढ़ी तो उनकी खेती की जाने लगी।

चित्र 8. रबर का पेड़

इंडोनेशिया दूसरे देशों को कॉफी, रबर, कालीमिर्च, तम्बाकू, चाय, नारियल का तेल और खोपरा भी बेचता है।

इंडोनेशिया में चावल के अलावा मक्का सोयाबीन, सैगो (जिससे साबुदाना बनता है), मूंगफली, नारियल, केला, आदि भी पैदा होते हैं। जावा द्वीप गन्ने की खेती के लिए प्रसिद्ध है।

चाय, कोको तथा कुनैन दवा बनाने के लिए सिंकोना की भी खेती यहां होती है। कुनैन मलेरिया नामक बुखार की दवा है।

मानचित्र 2 देखो और जानो इंडोनेशिया के किन द्वीपों में कौन सी फसल होती है।

यहां की जलवायु रबर के वृक्ष के लिए भी अच्छी है, इसलिए अब बगानों में रबर के पेड़ भी लगाए गए हैं। उसके तने से दूध जैसा पदार्थ निकलता है, जिससे रबर बनाया जाता है। तुम पेन्सिल से लिखकर रबर से मिटाते होगे।

चित्र 8 में रबर के वृक्ष से दूध निकालने का ढंग देखो और उसका वर्णन करो। बताओ हम लोग रबर की और कौन सी चीज़ें इस्तेमाल करते हैं।

इंडोनेशिया में होने वाली इन फसलों को अधिक पानी की आवश्यकता होती है। भारत के उन राज्यों में जैसे केरला, बंगाल, तथा आसाम जहां खूब वर्षा होती है, इनमें से कई फसलें होती हैं।

इंडोनेशिया में होने वाली सारी फसलों के नाम लिखो।

खनिज तथा उद्योग

इंडोनेशिया में अनेक खनिज निकाले जाते हैं जैसे टिन, खनिज तेल, मैंगनीज़, बॉक्साइट, कोयला, लोहा आदि।

क्या तुम इनको पहचानते हो? अपने चारों ओर धातु की चीज़ें देखकर बताओ वे किस खनिज से बनाई जाती हैं?

तुमने घर में अल्युमिनियम के बर्तन देखे होंगे। उसके कच्चे खनिज को ही बॉक्साइट कहते हैं। इंडोनेशिया में बॉक्साइट की खदानें हैं। अपने देश में भी यह खूब निकाला जाता है।

तुमने यह भी देखा होगा कि पीतल के बर्तनों में सफेद सी धातु से कलाई की जाती है जिसे हम

मानचित्र 2 इंडोनेशिया के उत्पादन
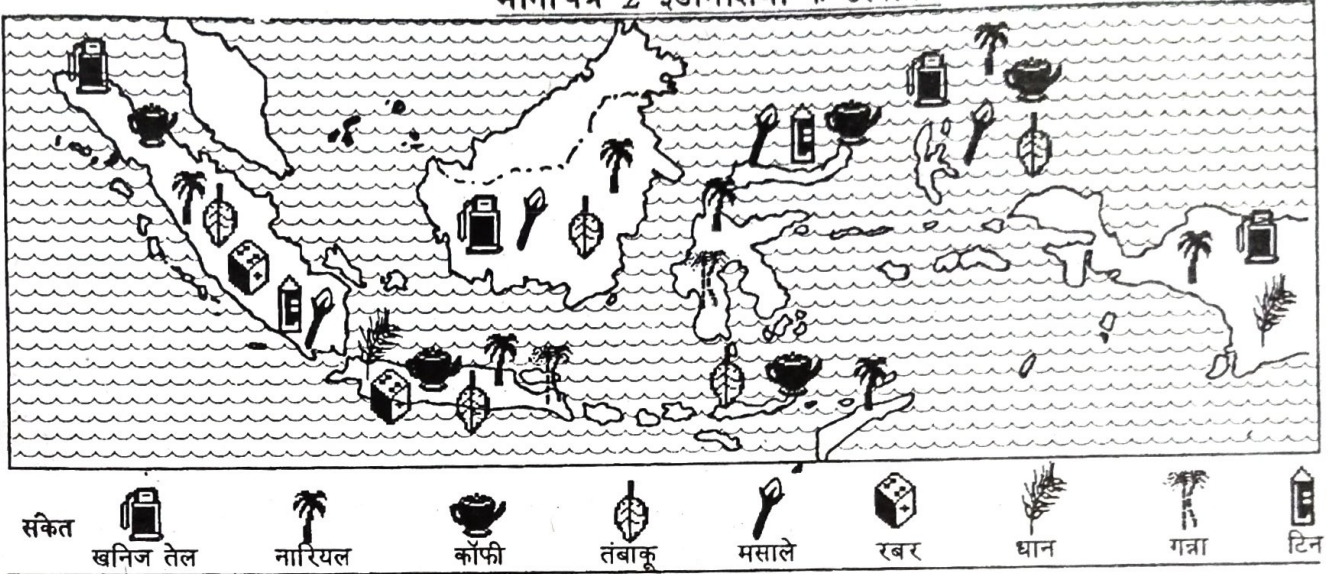
रांगा कहते हैं। यही टिन धातु है।

तुम घरों में केरोसीन जलाते हो। पेट्रोल से स्कूटर, मोटरें आदि चलती हैं। यह खनिज तेल को साफ करने पर मिलते हैं। इंडोनेशिया के कई द्वीपों पर खनिज तेल कुंओं से निकाला जाता है।

मानचित्र 2 में देखो, टिन और खनिज तेल इंडोनेशिया के किन द्वीपों पर निकाला जाता है?

पहले खनिज तेल निकाल कर बाहर भेज दिया जाता था, अब उसका देश में भी उपयोग होने लगा है। वैसे, इंडोनेशिया में पाए जाने वाले खनिजों का अधिकतर व्यापार होता है।

सन् 1945 में इंडोनेशिया एक स्वतंत्र देश हो गया। तब यहां उद्योगों का विकास शुरू हुआ। खनिजों और खेती से मिलने वाली चीज़ों के कारण अब यहां कई उद्योग लगाए जा रहे हैं।

यहां अब बाहर से सूत मंगाकर कपड़ा बनाने और वस्त्र सिलने का उद्योग भी विकसित हुआ है। नाव तथा जहाज़ बनाने के उद्योग विकसित होने से समुद्री परिवहन में सुविधा हुई है। सड़कें और रेल मार्ग भी बनाए जा रहे हैं।

नीचे इंडोनेशिया में होने वाली कुछ चीज़ों के नाम दिए गए हैं। उनसे संबंधित उद्योगों की सूची में से छांटकर लिखो कि कौन सी चीज़ें किन उद्योगों में काम आती हैं। जैसे - रबर टायर बनाने के काम आता है।

इंडोनेशिया के कुछ उद्योगों की सूची -

तेल को साफ करने के कारखाने, मोटर गाड़ी, मशीनें, शक्कर, कागज़, जहाज़, टायर।

उत्पादन	उद्योग
रबर	टायर
गन्ना	
लकड़ी, बांस	
खनिज तेल	
कच्चा लोहा	
कोयला	

आबादी, शहर-गांव

इंडोनेशिया के कई द्वीपों में, खासकर जावा, मदुरा और बाली में बहुत घनी आबादी बसी है। अब इन द्वीपों के लोग दूसरे द्वीपों जैसे कलिमंतान में जाकर बस रहे हैं।

इंडोनेशिया में बड़े-बड़े शहर हैं - जकार्ता जो वहां की राजधानी है, बांडुंग, योग्यकार्ता, सुराबाया आदि। फिर भी अधिकतर लोग गांवों में ही रहते हैं। यहां के गांव के घर और शहर के घरों के चित्र देखो।

इन दोनों में तुम्हें क्या अंतर दिख रहे हैं?

इनकी छत इतनी ढलवां क्यों है?

गांव के घर लकड़ी के खंभों पर बने हैं। ऐसा क्यों होगा - चर्चा करो।

इंडोनेशिया के लोग

भारत और इंडोनेशिया के बीच बहुत सारे अंतर हैं जिनके बारे में तुमने पढ़ा। फिर भी इन दोनों देशों में अनेक धर्म और अनेक भाषा के लोग रहते हैं। इंडोनेशिया के अधिकतर लोग मुसलमान हैं। मगर वहां हिन्दू, बौद्ध, और ईसाई धर्म के बहुत लोग रहते हैं। इसके अलावा हर द्वीप में अलग-अलग बोली और रहन-सहन मिलता है। इंडोनेशिया की राष्ट्रभाषा '**भाषा इंडोनेशिया**' है।

भारत और इंडोनेशिया के बीच बहुत पुराने समय से लोगों का आना-जाना रहा है। वहां के लोगों व जगहों के नामों में संस्कृत भाषा का असर देखा जा सकता है। वहां भारत के जैसे पुराने मंदिर बने हैं। वहां के लोग भी रामलीला खेलते हैं।

चित्र 9. गांव के घर

चित्र 10. शहर के घर
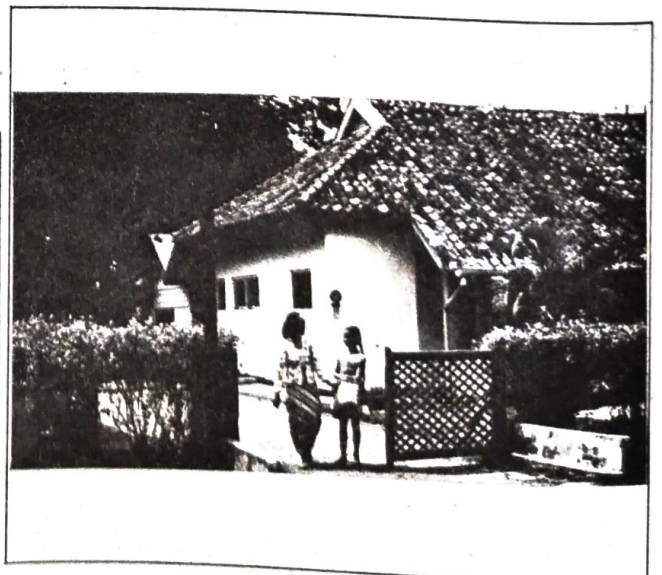
अभ्यास के प्रश्न

1. जिस इलाके में तुम रहते हो, वह इंडोनेशिया से किन-किन बातों में अलग है?
2. पृष्ठ 221 पढ़ कर 'लावा' के बारे में बताने वाले वाक्य छांटकर लिखो।
3. इंडोनेशिया के पेड़-पौधों की मुख्य बातें सिर्फ तीन वाक्यों में लिखो।
4. पाठ में सीढ़ीनुमा खेतों के बारे में किस उपशीर्षक के नीचे लिखा होगा, सही उपशीर्षक चुनोः क) घने वन, ख) मसालों की खेती, ग) इंडोनेशिया में खेती, घ) खनिज तथा उद्योग।
5. भूमध्य रेखीय प्रदेश की तीन मुख्य विशेषताएं बताओ।
6. अगर इंडोनेशिया में रोज़ तेज़ धूप न पड़ती तो भी क्या वहां रोज़ बारिश होती? कारण सहित समझाओ।
7. इंडोनेशिया के वनों के कटने के तुम्हें क्या-क्या कारण नज़र आये?
8. भूमध्य रेखीय वनों को बचाना क्यों ज़रूरी है?
9. सीढ़ीनुमा खेत बनाने से क्या-क्या फायदे हैं - सही उत्तर छांटो।
   क) मिट्टी कटने से बचती है।
   ख) खेतों में खरपतवार नहीं उगेंगे।
   ग) खेतों में पानी रुका रहता है।
   घ) खेतों में मशीन चलाना आसान हो जाता है।
   ङ) मिट्टी उपजाऊ बन जाती है।
10. इंडोनेशिया के लोगों को ज्वालमुखियों से क्या फायदे और क्या नुक्सान हैं?
11. इंडोनेशिया से विदेशों को भेजी जाने वाली पांच फसलों के नाम लिखो।
12. यूरोप के लोग इंडोनेशिया में किन वस्तुओं को खरीदने आए?
13. इस पाठ में इंडोनेशिया की कई जगहों के नाम हैं। इनमें से कौन-कौन से नाम संस्कृत भाषा से प्रभावित लगते हैं - गुरुजी की मदद से उनकी एक सूची बनाओ।

10. जापान

तुमने कई बार जापान के बारे में सुना होगा। उस देश की बनी कई सारी चीज़ें - जैसे रेडियो, टेपरिकार्डर, टी.वी. और विडियो बहुत जानी मानी हैं। शायद तुमने इनमें से कुछ देखी भी होंगी।

जापान एक बहुत ही छोटा देश है। उसके अधिकांश भाग पहाड़ी हैं तथा वनों से ढके हैं। वहां खेतिहर भूमि बहुत कम है और खनिज भी बहुत कम मिलते हैं। फिर भी आज जापान विश्व के सबसे धनी देशों में से एक है। जापान के कारखानों में तरह-तरह की चीज़ें बनती हैं जो विश्व भर में बिकती हैं।

इस पाठ में हम देखेंगे कि जापान के लोगों ने कैसे ऐसी कमियों के होते हुए भी अपने उद्योगों का विकास किया है।

पाठ में दिये गये चित्रों को एक नज़र देखो। अब अंदाज़ से एक सूची बनाओ - जापान के बारे में इस पाठ में किन-किन बातों पर चर्चा होगी।

कहां है, कैसे पहुंचें

एशिया के नक्शे में जापान को ढूंढो। बताओ वह भारत से किस दिशा में जाने पर मिलेगा?

क्या हम भारत से जापान रेल या बस से जा सकते हैं?

जापान देश के चारों ओर समुद्र हैं। इन समुद्रों को किन नामों से जाना जाता है - एशिया के नक्शे से पता लगाओ।

यह भी देखो कि जापान के आसपास चारों दिशाओं में कौन से देश हैं? उनके नाम लिखो।

इंडोनेशिया की तरह जापान देश भी टापुओं या द्वीपों का बना है। इसमें कई हज़ार छोटे द्वीप हैं, और चार बड़े द्वीप हैं, जिनके नाम हैं - होकाईदो, हान्शू, क्यूशू और शिकोकू। मानचित्र 2 में इन्हें ढूंढो।

ठंड और गर्मी

अब इस बात पर ध्यान दो कि जापान पृथ्वी पर कहां स्थित है। तुमने इंडोनेशिया देश को भूमध्य रेखा के पास पाया था। अब देखो कि जापान भूमध्य रेखा से कितनी

दूर, उत्तर में है। मोटे तौर पर भूमध्य रेखा के निकट के प्रदेशों में साल भर अधिक गर्मी रहती है। जैसे-जैसे हम भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण में ध्रुवों की ओर बढ़ते हैं, ठंड बढ़ती जाती है।

भूमध्य रेखा से दूर होने के कारण जापान में कुछ महीने जाड़े के होते हैं और कुछ गर्मी के। वहां पर साल भर में चार ऋतुएं होती हैं।

ठंड के महीनों में (यानी दिसंबर, जनवरी में) जापान में कड़ाके की ठंड पड़ती है। तब कुछ वर्षा भी होती है। जापान के उत्तरी भागों में तो हिमपात होता है और पूरा प्रदेश हिम से ढक जाता है।

मार्च के महीने से जापान में बसंत ऋतु शुरू होती है। इस ऋतु में हिम पिघल जाती है। ठंड कम हो जाती है और चारों ओर फूल खिलने लगते हैं। फिर गर्मी की ऋतु आती है जो मई से अगस्त तक रहती है। इन्हीं महीनों में जापान में वर्षा होती है। याद करो, जुलाई-अगस्त में अपने प्रदेश में भी बारिश होती है। गर्मी में ही जापान में खेती का काम भी शुरू होता है। सितंबर और अक्टूबर के महीनों में हल्की ठंड शुरू हो जाती है। पेड़ो पर पत्ते लाल-पीले

मानचित्र 2. जापान
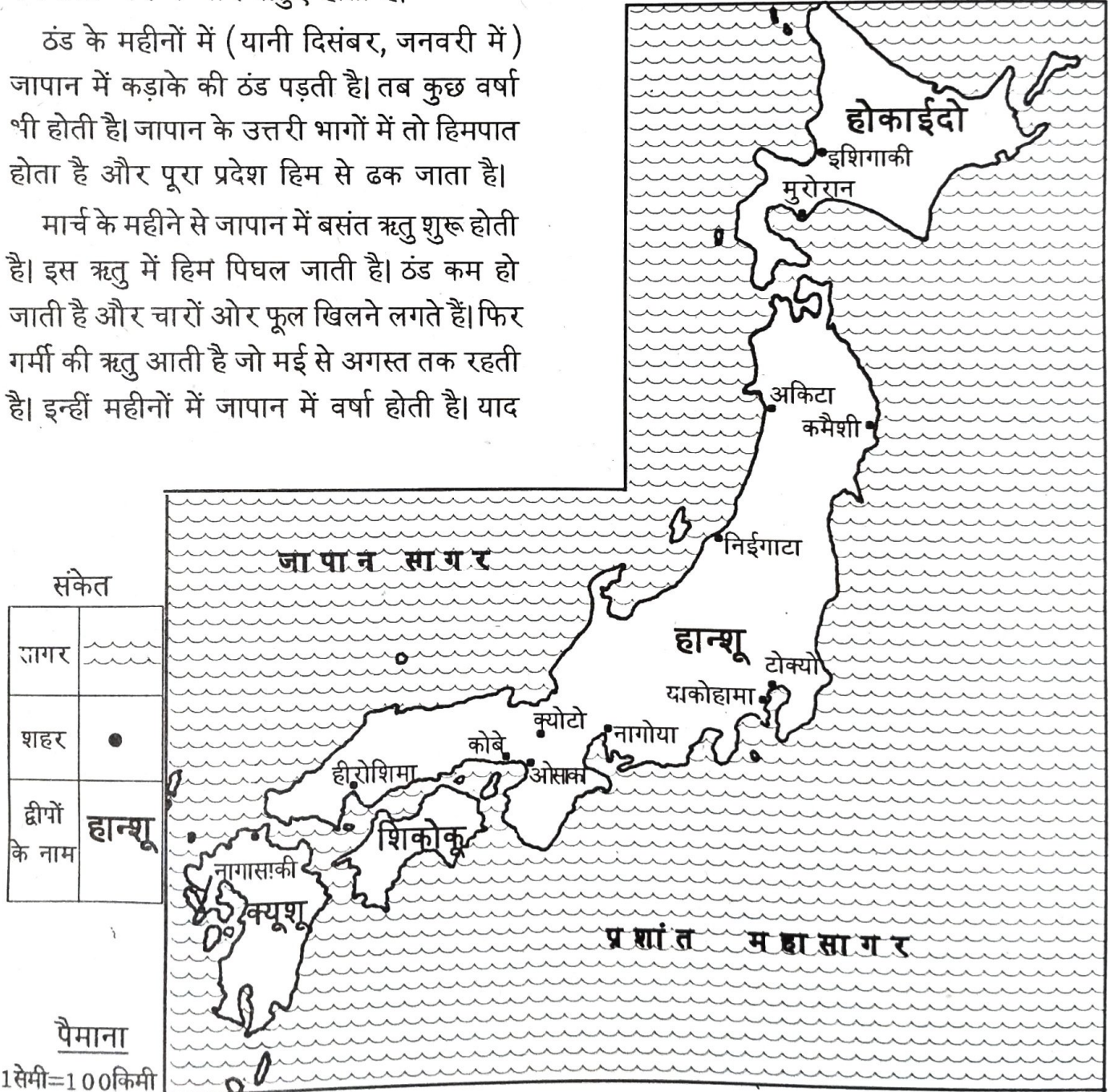
हो जाते हैं और हवा के झोंकों के साथ झड़ने लगते हैं। यह पतझड़ का मौसम है। इस मौसम में फसल पक कर कटने के लिए तैयार हो जाती है।

तुमने यह भी ध्यान दिया होगा कि जापान में इंडोनेशिया की तरह साल भर वर्षा नहीं होती है। फिर भी सागरों से घिरे होने के कारण जापान में कभी भी सूखा मौसम नहीं होता है। नमी बनी रहती है।

तो ये हैं जापान के चार मौसम।

> *इंडोनेशिया में साल भर ...... मौसम होता है जबकि जापान में ..... मौसम होते हैं। (एक, चार)*

> *इंडोनेशिया में .... गर्मी रहती है जबकि जापान में .... गर्मी रहती है। (साल भर, कुछ महीने)*
>
> *जापान में खेतों में काम .... ऋतु में शुरू होता है और ... ऋतु में फसल पक जाती है।*
>
> *जापान में वर्षा .... ऋतु में होती है।*

गर्मी और सर्दी के मौसम तो अपने यहां मध्य-प्रदेश में भी होते हैं। पर जापान की जलवायु मध्य-प्रदेश से भी भिन्न है।

> *ग्लोब व नक्शे में देखो कि पृथ्वी पर जापान कहां है और मध्यप्रदेश कहां है?*
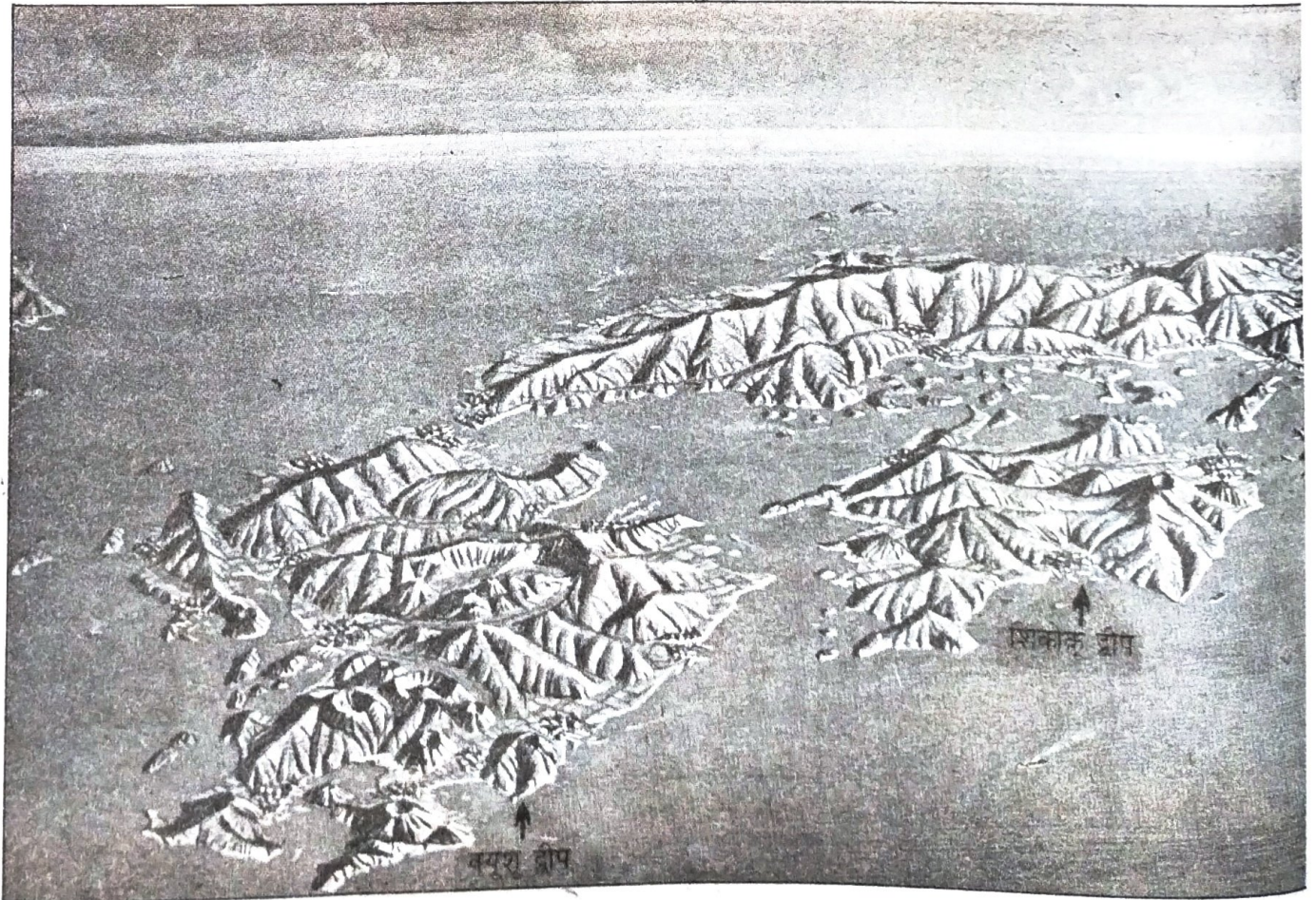
भूमध्य रेखा के ज़्यादा निकट कौन सा क्षेत्र है?

अब बताओ कि जाड़े के मौसम में ज़्यादा ठंड कहां पड़ेगी? गर्मी के मौसम में अधिक गर्मी कहां होगी? मध्यप्रदेश में या जापान में?

यहां भी पहाड़ और ज्वालामुखी

जापान देश दिखता कैसा है?

इसका अन्दाज़ा तुम चित्र 2 को देखकर लगा सकते हो। इस चित्र में जापान के पर्वत, घाटी, मैदान आदि दिखाई देते हैं।

इस चित्र को देखकर तुम्हें नीचे दिए गए वाक्यों में से कौन से वाक्य सही लगते हैं?

1. जापान द्वीपों का देश है।

2. जापान पहाड़ों का देश है।

3. जापान एक पठार है।

4. जापान एक चौड़ा मैदानी देश है।

5. जापान में जावा की तरह ज्वालामुखी हैं।

चित्र में ज्वालामुखी पहचानो और उन पर 'ज' लिखो।

इस चित्र को देखकर बताओ कि जापान के लोग कहां बस कर रहते होंगे? सब ओर तो पहाड़ ही
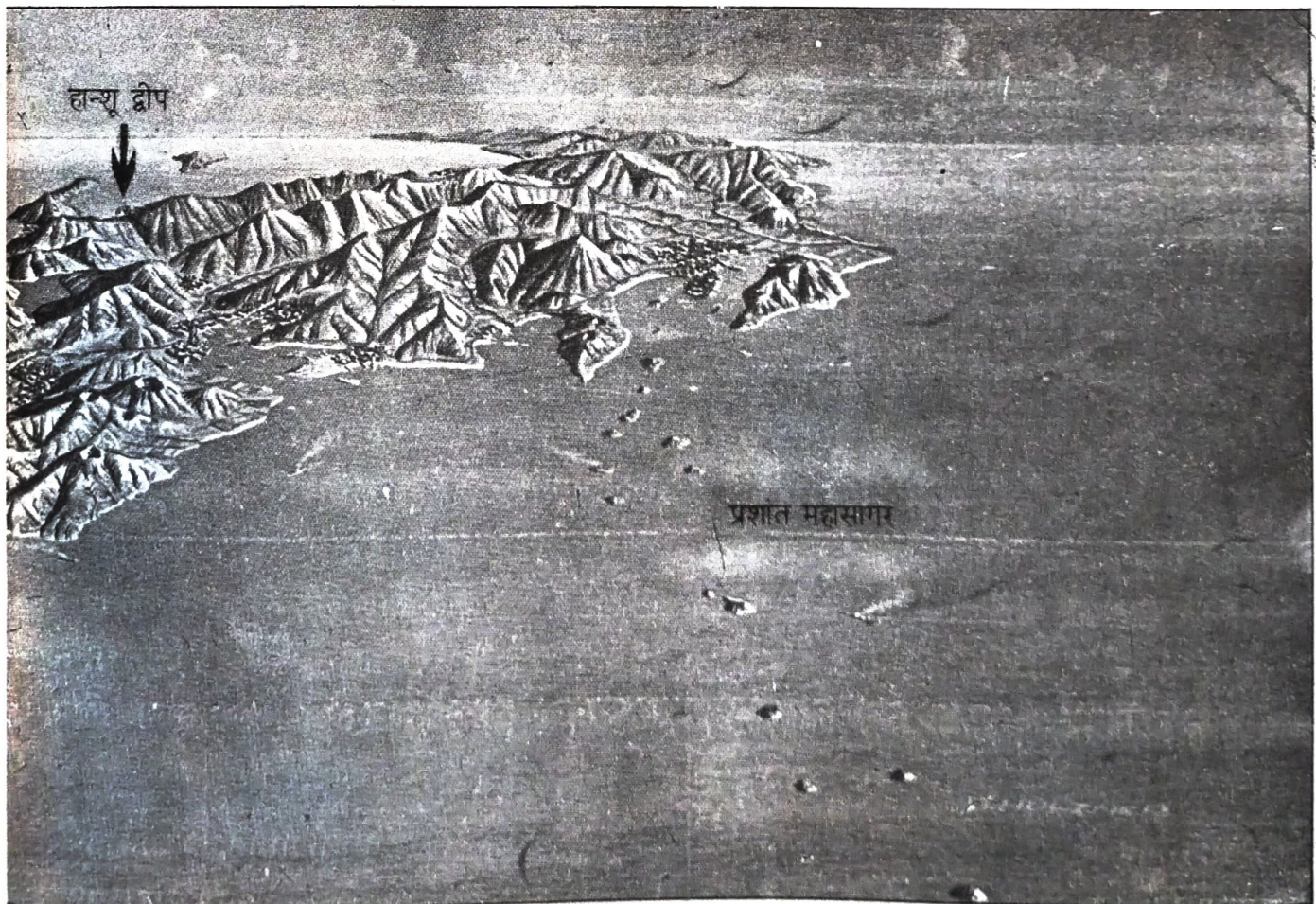
135

पहाड़ हैं। पर ध्यान से देखो। पहाड़ों के नीचे और समुद्र के किनारे छोटे-छोटे मैदान हैं।

> ***इन मैदानों को पहचानो और इनके आगे 'म' का निशान लगाओ।***

इन्हीं मैदानों में अधिकांश खेती होती है और गांव बसे हैं। यहीं पर बड़े-बड़े शहर भी स्थित हैं। जापान के घनी आबादी वाले इलाके भी यही मैदान हैं।

> ***जापान के नक्शे में (मानचित्र 1) देखो, किस द्वीप पर कौन-कौन से शहर बसे हैं। हर द्वीप के प्रमुख शहरों के नाम लिखो।***

वन

जापान में बहुत पहाड़ हैं, यह तुमने देखा। अधिकतर पहाड़ वनों से ढके हैं।

3. कोणधारी पेड़ और सुईनुमा पत्ति

चित्र में वहां के कुछ पेड़ देखो। अपने आसपास तो ऐसे पेड़ नहीं पाये जाते हैं, लेकिन हिमालय पर्वत पर ऐसे वन ज़रूर होते हैं। जिन इलाकों में मौसम साल भर बहुत ठंडा रहता है, वहां ऐसे पेड़ पाए जाते हैं। इन पेड़ों की पत्तियां लंबी व नुकीली सुई जैसी होती हैं। इन्हें कोणधारी पेड़ भी कहते हैं।

जापान में ऐसे पेड़ ऊंचे पहाड़ों और होकाईदो द्वीप पर पाये जाते हैं। यहां साल भर मौसम ठंडा रहता है और बर्फ भी गिरती है। पर, हर जगह ऐसे पेड़ नहीं

जिन हिस्सों में कुछ हल्की ठंड का मौसम रहता है वहां ठंडे प्रदेश के चौड़ी पत्ती वाले पेड़ होते हैं। अपना प्रदेश तो गर्म प्रदेश है। यहां उगने वाले नीम, पीपल आदि गर्म प्रदेश के पेड़ कहलाते हैं। जापान के वनों में बर्च, मेपल आदि के वृक्ष होते हैं। ये ठंडे प्रदेश के चौड़ी पत्ती वाले पेड़ हैं। इन वनों में पतझड़ के मौसम में सारे पत्ते झड़ जाते हैं। फिर, पूरे जाड़े में पेड़ ठूंठ जैसे खड़े रहते हैं। मार्च में नई कोपलें फूटती हैं और पेड़ फिर पत्तियों से लद जाते हैं। इन पेड़ों की पत्तियां चौड़ी होती हैं।

4. ठंडे प्रदेश के चौड़ी पत्ती वाले पेड़

> ***नुकीली पत्ती के पेड़ कहां होते है?***

जापान में खेती

अब चलो जापान के पहाड़ों और जंगलों को छोड़कर वहां के खेतों को देखें। चित्र 7 में सपाट मैदान दिख रहा है। उसके किनारे पहाड़ खड़े हैं। तुम्हें मैदान में पानी से भरे खेत तो ज़रूर दिख रहे होंगे।

> ***इनमें क्या उगता होगा?***

जापान में मैदान इतने छोटे हैं और वहां की आबादी इतनी ज़्यादा है कि लोग पहाड़ों की ढलानों पर भी खेती करते हैं। पथरीली और बहुत ढलानी ज़मीन पर तो खेती नहीं हो सकती। इसलिए जिन पर्वतीय ढलानों पर थोड़ी मिट्टी है, उन्हें काटकर छोटे-छोटे सीढ़ीनुमा खेत बना लिए जाते हैं।
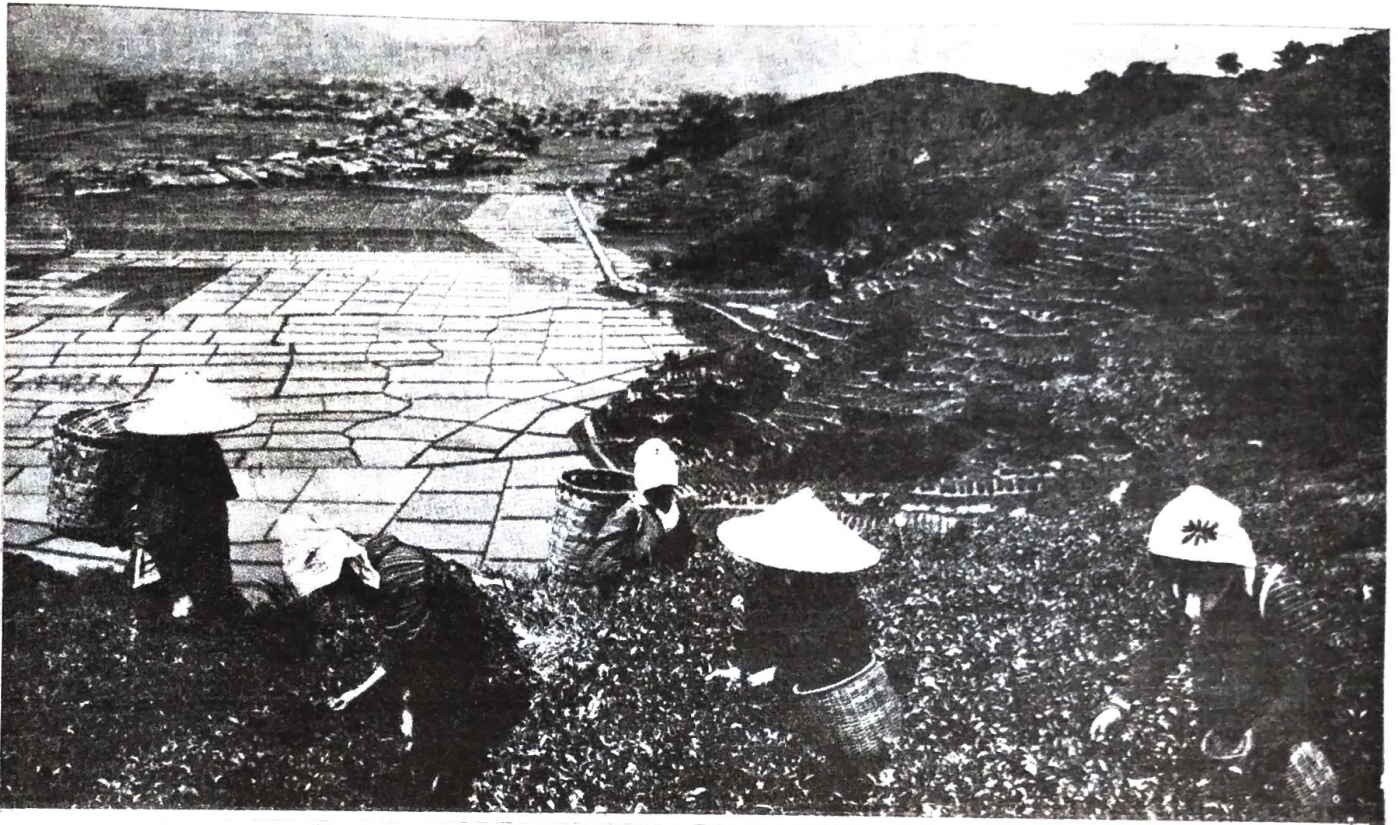
चित्र 5. जापान में पहाड़ की ढ़लानों और समतल ज़मीन पर खेती

चित्र में तुम एक पहाड़ पर ऐसे सीढ़ीनुमा खेत देख पा रहे हो। इंडोनेशिया में भी इस तरह के सीढ़ीनुमा खेतों की बात तुमने पढ़ी है। चित्र में एक पहाड़ पर कुछ औरतें काम कर रही दिखती हैं।

क्या तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि वे क्या कर रही हैं?

इस पहाड़ की ढलान पर क्या उगा है?

जापान में पहाड़ों की ढलानों पर चाय खूब उगाई जाती है। चाय के पौधों के लिए बहुत सा पानी गिर के बह जाना चाहिए। इसलिए ढलान पर ये अच्छे उगते हैं।

ढलानों पर कई प्रकार के फलदार पेड़ भी लगाए जाते हैं। शहतूत के पेड़ भी बहुत उगाए जाते हैं। इनकी पत्तियां खाकर रेशम की इल्लियां पलती हैं। इल्लियां अपने चारों ओर रेशम के धागे की गोलियां बना लेती हैं। इन्हें ककून कहते हैं। इस धागे से रेशमी कपड़ा बनता है। जापान में रेशम काफी मात्रा में बनाया जाता है।

यह तो रही पहाड़ी ढलानों पर उगने वाले पेड़-पौधों की बात। अब आओ पता करें कि जापान के निचले मैदानों में क्या-क्या फसलें ली जाती हैं।

जून से सिंतबर तक बारिश के साथ-साथ जापान के दक्षिणी भागों में तेज धूप भी पड़ती है। इन महीनों में जापान में धान की खेती खूब होती है। अपने यहां भी धान इन्हीं महीनों में उगाया जाता है। जापान के दक्षिणी द्वीपों में धान की खूब खेती होती है। जापान के उत्तरी भागों में धान की खेती कम होती जाती है। इसका कारण है कि उत्तरी भागों में गर्मी कम पड़ती है और वर्षा भी कम होती है। कुछ ठण्डे भागों में भिन्न किस्म का चावल होता है। अन्य फसलें जैसे गेहूं, जौ, राई तथा आलू आदि

अन्य सब्ज़ियां भी उगाई जाती हैं। ये फसलें उन भागों में होती हैं जहां कठिन जाड़ा नहीं होता और खेती हो सकती है।

छोटे किसान, छोटे खेत और छोटी मशीनें

जापान के अधिकांश किसान छोटे किसान हैं और उनके पास बहुत कम ज़मीन है। अधिकांश किसानों के पास एक हेक्टेयर से भी कम ज़मीन है। इस कारण वहां खेत बहुत छोटे-छोटे होते हैं। सीढ़ीनुमा होने के कारण भी खेत छोटे होते हैं।

यहां तीन चित्र दिये गये हैं। इनमें देखो खेत जोतने, धान को रोपने और काटने के लिए कैसी मशीनों का उपयोग किया जा रहा है। ये मशीनें छोटे खेतों को ध्यान में रखते हुये बनायी गयी हैं।
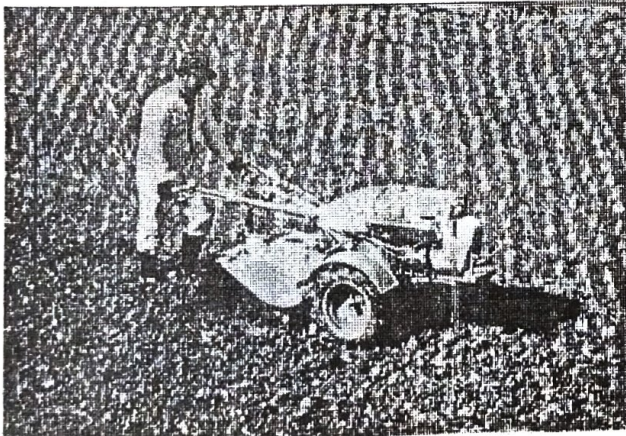
चित्र. 6 खेत जोतने की मशीन

चित्र 7. धान रोपने की मशीन

इन छोटी मशीनों को छोटे-छोटे खेतों पर कोई भी एक व्यक्ति चला सकता है। आमतौर पर खेत जोतने, बोने, रोपने और काटने में बहुत लोग लगते हैं। मगर इन चित्रों में देखो, पूरी खेती का काम एक ही आदमी मशीनों की मदद से कर रहा है। जापान में खेती का सारा काम मज़दूर लगाए बिना किसान खुद कर लेता है।

दो कारण बताओ कि जापान में ट्रेक्टर और हार्वेस्टर जैसी बड़ी मशीनें क्यों नहीं होती हैं।

सोचकर बताओ कि अपने देश के छोटे किसान जापान के किसानों की तरह छोटी मशीनों का उपयोग क्यों नहीं करते हैं।

मशीनों से खेती होने के कारण जापान में खेती में काम करने के लिये बहुत कम लोगों की ज़रूरत है। वहां के अधिकतर लोग कारखानों में काम करते हैं। बहुत कम लोग खेतों में काम करते हैं। कारखानों में ऊंची तंख्वाह मिलने के कारण अधिकतर लोग उनमें काम करते हैं। किसानों के परिवारों में भी एक आदमी को छोड़कर बाकी सब कारखानों में काम करते हैं।

चित्र 8. कटाई की मशीन
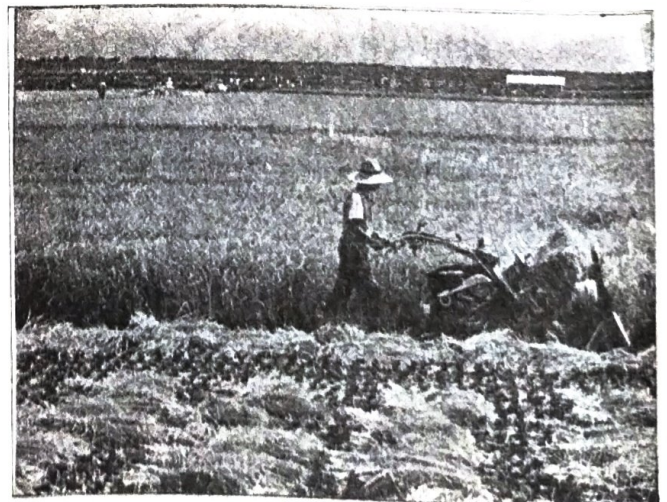
फिर भी अनाज की कमी!

जापान के खेतों में खूब अच्छी फसल होती है। फिर भी देश के सारे लोगों के लिये इनसे पर्याप्त भोजन नहीं मिल पाता है। जापान में लोग अधिक हैं, और खेतों में उपजा अनाज पूरा नहीं पड़ता। इतने सारे लोगों के भोजन के लिए अनाज, मांस, दूध, आदि विदेशों से मंगाया जाता है।

खेतों में अच्छी उपज होते हुये भी जापान में अनाज की कमी क्यों होती होगी?

जापान की खेती के बारे में चार महत्वपूर्ण बातें बताओ।

जापान में खेतों पर काम करने के लिए मज़दूरों की ज़रूरत क्यों नहीं होती है?

मछली पकड़ना

जापान के चारों तरफ समुद्र ही समुद्र हैं। इनमें मछलियां बहुतायत से होती हैं। इसलिए यहां मछली पकड़ने का अच्छा, बड़ा धन्धा है। समुद्र में नावों द्वारा आने-जाने में भी सुविधा होती है। एक किनारे की बस्ती से दूसरे किनारे की बस्ती तक लोग आसानी से पहुंच जाते हैं। बड़े जलयानों में बैठकर यहां के लोग दूर तक समुद्र में मछली पकड़ने जाते हैं। (चित्र 9) इन जलयानों में मछली पकड़ने के सभी सुविधाजनक यंत्र लगे होते हैं।

यहां मछलियों पर आधारित कई उद्योग लगे हैं। इनमें मछलियों को डिब्बों में बंद करके बेचने के लिए तैयार किया जाता है, और उनसे तेल भी निकाला जाता है। यह तेल कई बीमारियों के इलाज में काम आता है। जापान दूसरे देशों को डिब्बों में बंद मछली और मछली का तेल बेचता है।
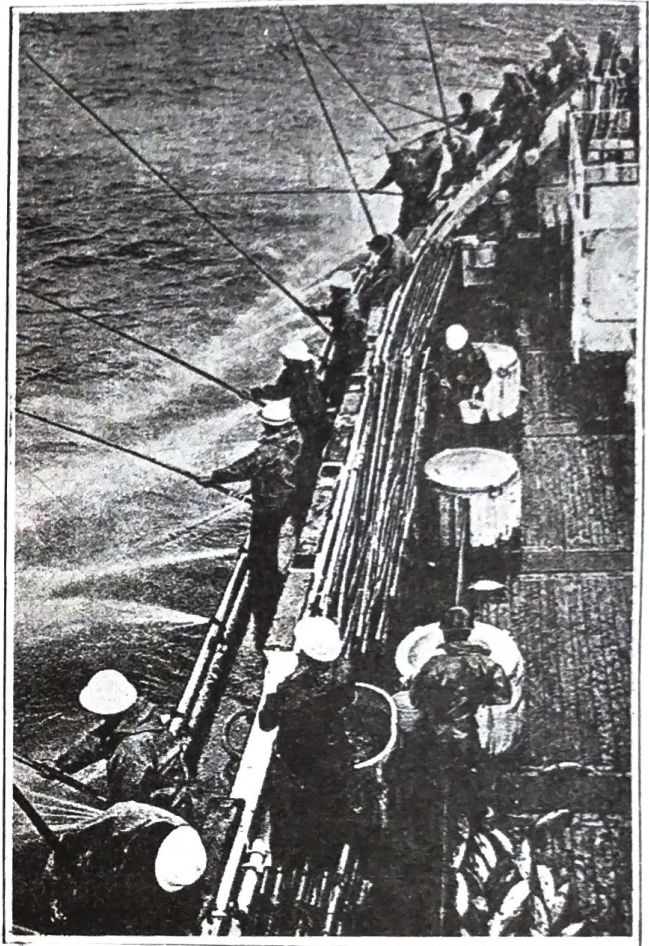
चित्र 9. इस जहाज़ में मछलियां तो पकड़ी जाती ही हैं, साथ ही उन्हें सुखाकर डिब्बों में बंद करने और उनका तेल निकालने जैसे काम भी होते हैं

जापान में उद्योग

जापान के मैदानों और पहाड़ों और समुद्री किनारों को हमने देख लिया, और वहां के जंगलों व खेतों की बात भी कर ली। अब जापान के कारखानों के बारे में कुछ जानें। जापान अपने कारखानों के लिए बहुत प्रसिद्ध है। यहां कई तरह के कारखाने हैं। मानचित्र 3 में जापान के प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों की जानकारी दी गई है। वहां कौन से उद्योग हैं यह भी दिखाया है।

टोक्यो जापान की राजधानी है। उससे लगभग जुड़ा हुआ याकोहामा नगर है। मानचित्र में देखो यहां कितने उद्योग लगे हैं।

> ***मानचित्र 2 को देखकर बताओ कि इन शहरों के आसपास कौन-कौन से उद्योग लगे हैं।***
>
> ***टोक्यो-याकोहामा -***
>
> ***कोबे-ओसाका -***
>
> ***कीटाक्यूशू -***

कच्चे माल की समस्या

जापान में तरह-तरह के उद्योग विकसित हैं। लेकिन इनके लिए अधिक कच्चा माल यहां नहीं मिलता।

जापान में कुछ खनिज, जैसे - कोयला, लोहा, तांबा, आदि अवश्य वहीं की खदानों से निकाला जाता है। पर बहुत सा कच्चा माल विदेशों से मंगाना पड़ता है। उसके बदले में तरह-तरह की बनी हुई चीज़ें जापान दूसरे देशों को भेजता है।

मानचित्र 3. जापान के उद्योग

(इस मानचित्र में होकाईदो द्वीप नहीं दिखाया गया है)

(पैमाना 1 से.मी. = 125 कि. मी.)
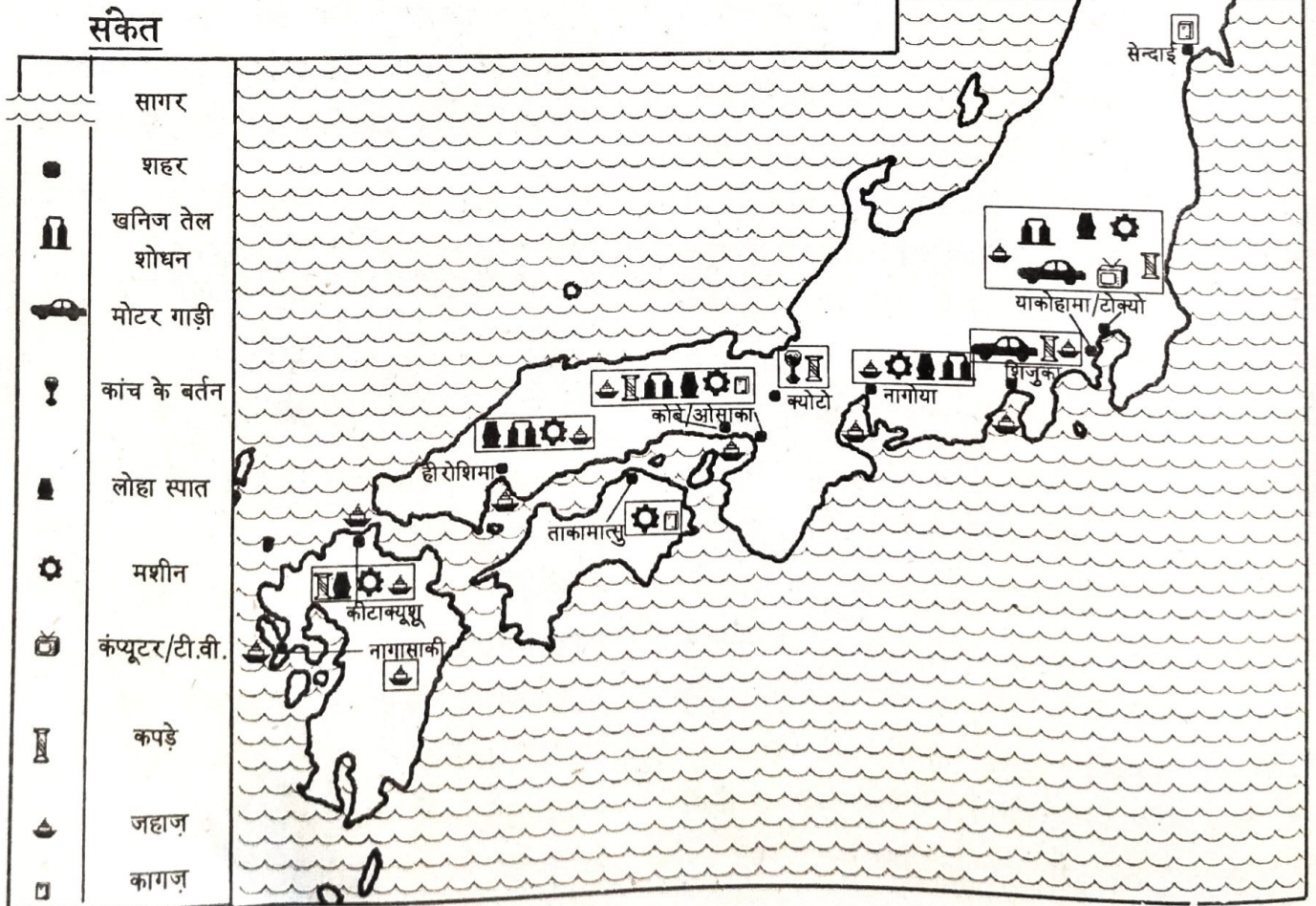
नीचे दी गई तालिका को भरो-

आयात (दूसरे देशों से खरीदा माल)	ये चीज़ें जापान किस लिये मंगाता है- ईंधन के लिए / भोजन के लिए / उद्योग के लिए
1. खनिज तेल	
2. पेट्रोल	
3. तांबा	
4. टिन	
5. खनिज लोहा	
6. कोयला	
7. कपड़ा	
8. मांस	
9. चारा	
10. रूई	
11. सोयाबीन	
12. गेहूं	
13. लकड़ी	

जापान खाने की कौन सी चीज़ें दूसरे देशों से मंगाता है? क्या ये चीज़ें जापान में नहीं होतीं?

जापान को खनिज, पेट्रोल, तांबा, कोयला, दूसरे देशों से क्यों मंगाना पड़ता है? ये खनिज किस काम आते हैं?

दूसरे देशों से मंगाये गये खनिजों से जापान के लोग मोटर गाड़ी, इस्पात, जहाज़, मशीनें, टी.वी. टेपरिकार्डर, कंप्यूटर, कपड़े, प्लास्टिक की चीज़ें आदि बनाते हैं। इन चीज़ों को जापान के लोग विदेशों में बेचते हैं।

व्यापार पर निर्भर देश

जापान में इतने सारे उद्योग तो लगे हैं, लेकिन इनके लिए ज़रूरी कच्चा माल जापान में बहुत कम मिलता है। ज़्यादातर कच्चा माल (खनिज लोहा, तांबा, कोयला, खनिज तेल, कपास आदि) बाहर दूसरे देशों से मंगवाया जाता है। जापान के

चित्र 10. मोटर गाड़ी का कारखाना
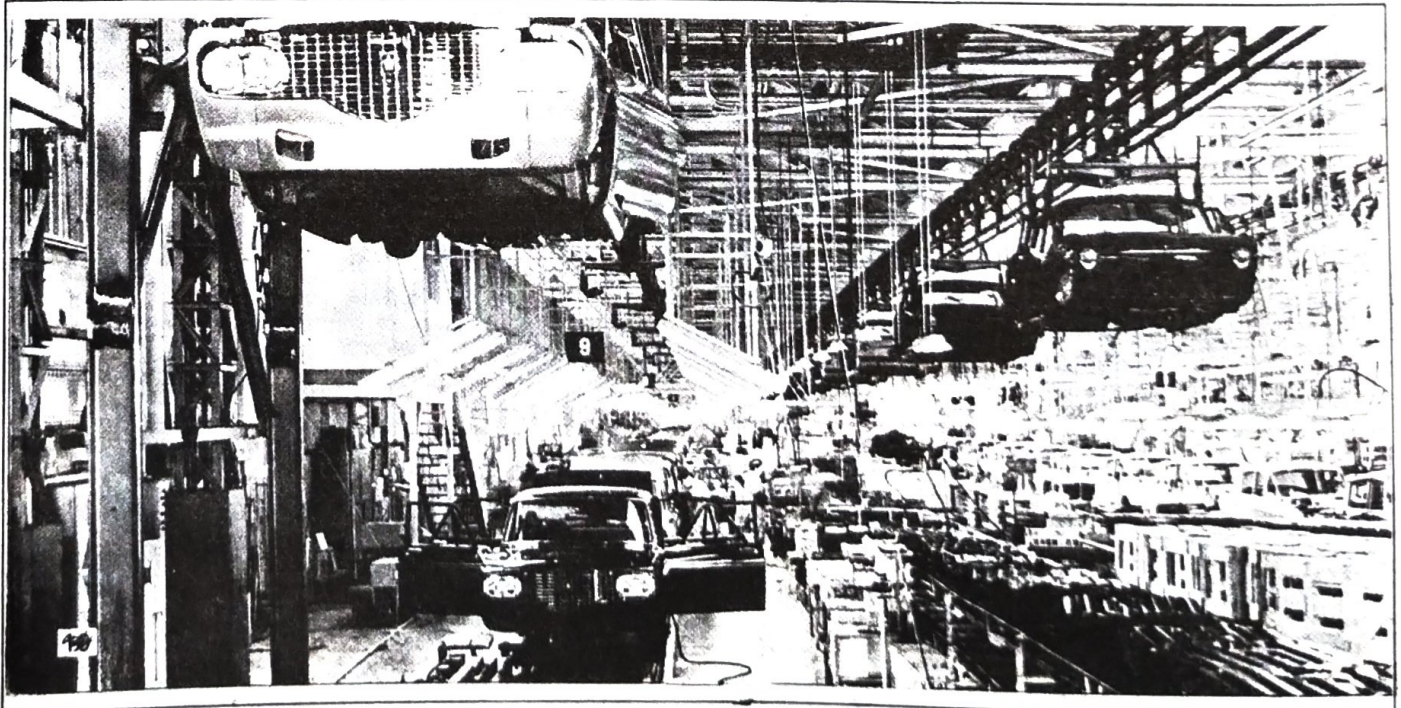
उद्योगपति पूरी दुनिया से सस्ते में कच्चा माल खरीद कर अपने कारखानों में तरह-तरह की चीज़ें बनाते हैं और वापिस दूसरे देशों में उन्हें बेचते हैं। इस प्रकार जापान के लोग दूसरे देशों की संपदा का फायदा उठा पाते हैं।

तुम्हें याद होगा कि जापान के लोगों के लिए वहां उगने वाला अनाज कम पड़ता है, और वे बाहर से अनाज मंगवाते हैं। इस अनाज के बदले में उन देशों को जापान के लोग कारखानों में बनी चीज़ें बेचते हैं। अगर जापान का विदेशों से व्यापार बन्द हो जाये तो उन्हें भोजन भी पर्याप्त नहीं मिल पायेगा।

यातायात - रेल और जहाज़

बाहर से आने वाले माल को कारखानों तक पहुंचाने और बने हुए माल को बाहर भेजने के लिए जापान में परिवहन सुविधा बहुत ज़रूरी है। वहां सड़कें और रेल मार्ग बहुत अच्छे हैं। रेल गाड़ियां तो खूब तेज़ चलती हैं।

चित्र 12. बहुत तेज़ चलने वाली रेल

जापान का तट कितना कटा-फटा है, नक्शे में देखो। इसमे कई **खाड़ियां** हैं। (चित्र 11) खाड़ी समुद्र के उस हिस्से को कहते हैं जो तीन तरफ से स्थल से घिरा होता है। भारत के तट पर भी कई खाड़ियां हैं, जैसे खम्बात की खाड़ी।

मानचित्र 1 में जापान के तट पर पांच खाड़ियां पहचानकर वहां 'ख' लिखो।

चित्र 11. शिकोकू द्वीप के दक्षिण में स्थित एक खाड़ी और बंदरगाह

जापान की खाड़ियों में अच्छे बंदरगाह हैं। अच्छे बन्दरगाह के लिए किनारे पर गहरा पानी होना चाहिए जहां जहाज़ रुक सकें। थल से घिरा होने के कारण वहां तेज़ हवा, **तूफान** और **ज्वार-भाटा** से भी बचाव हो सके। अगर तुम उद्योग के मानचित्र को देखो तो पाओगे कि जापान के अधिकतर उद्योग खाड़ियों के किनारे लगे हैं।

जापान में उद्योगों में काम करने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। गांव के लोग भी शहरों के कारखानों में ही काम करते हैं। सब लोग दूर-दूर तक यात्रा करके अपने कारखानों में पहुंचते हैं।

इस तरह हज़ारों लोग शहर में अपने रहने की जगह से कारखानों में काम करने जाते हैं, और घर लौटते हैं। इसके लिए भी मोटर गाड़ियों और रेलगाड़ियों की सुविधा बहुत ज़रूरी है।

चित्र 13. एक औद्योगिक क्षेत्र

उद्योगों के कारण समस्यायें

तुमने देखा कि जापान में बहुत ही छोटे इलाक़े में बहुत सारे कारखाने हैं। इन कारखानों के कारण आसपास की हवा और पानी में प्रदूषण फैलता है। कारखाने धुंआ छोड़ते हैं, जिसमें विषैली गैसें मिली रहती हैं। कारखानों से गंदा पानी निकलता है जो आस-पास के नदी-नालों और सागर तक को गंदा कर देता है। बहुत सारे उद्योग पास-पास होने के कारण यह समस्या और गंभीर हो गयी है।

इस तरह के प्रदूषण से मनुष्य और जानवरों को तरह-तरह की बीमारियां हो जाती हैं। कुछ वर्ष पहले मिनिमाटा नाम के शहर के लोगों को एक अजीब बीमारी होने लगी। उनको एक तरह का लकवा मारने लगा। 1969 में करीब 45 लोग इस बीमारी के कारण मरे। खोजबीन करने पर पता चला कि वहां का एक कारखाना पानी में ज़हरीली चीज़ें छोड़ रहा है। उस पानी में पलने वाली मछलियां उसे खाकर खुद ज़हरीली हो गयीं हैं। जिन लोगों ने इन मछलियों को खाया उन्हें लकवे की यह बीमारी होने लगी। इस बीमारी को आज मिनिमाटा बीमारी कहते हैं।

इसी तरह एक और कारखाने से ज़हरीले पदार्थ नदी में मिलते गये। इस नदी के पानी से धान के खेतों को सींचने पर धान भी ज़हरीला हो गया। जिन लोगों ने उस चावल को खाया उनकी हड्डियों में दर्द रहने लगा और वे धीरे-धीरे मरने लगे।

इस तरह आजकल जापान में प्रदूषण की बीमारी बढ़ रही है।

जापान के लोग

जापान में बड़े-बड़े नगर हैं जिनमें अनेक कारखाने हैं। भूमि की कमी के कारण नगर बहुत घने बसे हैं। घर भी अधिकतर छोटे-छोटे होते हैं। उनमें कुर्सी-मेज आदि सामान अधिक नहीं होता।

लोग छोटी मेज के चारों ओर बैठकर खाना खाते हैं। चटाइयों पर बिस्तर बिछाकर सोते हैं। वहां के घरों के अन्दर का दृश्य चित्र 14 में देखो।

चित्र 14. घर के अंदर लोग चटाई बिछाकर सोते हैं।

जापानी लोगों की परम्परागत पोशाक का नाम किमोनो है। अब पश्चिमी देशों के प्रभाव से जापान में औरतें फ्राक पहनने लगी हैं और आदमी कोट-पेन्ट पहनने लगे हैं। जापान की भाषा जापानी है। जापानी लोग बौद्ध धर्म और शिन्टो नाम के धर्म को मानते हैं।
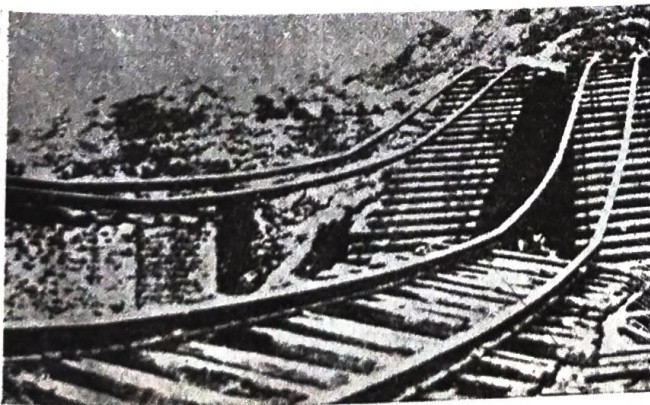
भूकंप

जापान में भूकंप बहुत आते हैं। पृथ्वी के भीतर की चट्टानें खिसकने से सतह में कंपन होता है। इसे भूकंप कहते हैं। जब भूकंप होता है तब ज़मीन तेज़ी से हिलने लगती है। मकान की दीवारें हिलने लगती हैं। पेड़ उखड़ जाते हैं। मकान, सड़क, रेलमार्ग, बिजली के खंभे, आदि टूट जाते हैं।

पहले तो जापान में लोग लकड़ी के मकान बनाते थे। लकड़ी के मकान भूकंप के धक्के से हिल उठते हैं पर जल्दी टूटते नहीं। जबकि, कांक्रीट के मकानों में आसानी से दरारें पड़ जाती हैं।

भूकंप से टूट जाने पर लकड़ी के मकानों से ज़्यादा खतरा व नुकसान नहीं रहता। उसी लकड़ी से दुबारा मकान बनाया जा सकता है। सोचो, अगर कांक्रीट के मकान बार-बार ढह जाएं तो लोगों को कितना खतरा और नुकसान होगा। अब, जापान के लोग ऐसे पक्के मकान बनाने लगे हैं जो भूकंप के धक्के से आसानी से टूटते नहीं हैं ।

चित्र 15. भूकंप के बाद

अभ्यास के प्रश्न

1. जापान की चार ऋतुएं कौन सी हैं?
   क) हर ऋतु पर दो वाक्य लिखो।
   ख) जापान की ऋतुओं की तुलना अपने यहां की ऋतुओं से करते हुए समानता व अन्तर समझाओ।
2. जापान की ऋतुएं इंडोनेशिया से बहुत अलग है, पर अपने यहां की ऋतुओं से थोड़ी समानता है। इस का क्या कारण हो सकता है?
3. तुमने पहाड़ों पर खेती के बारे में कई पाठों में पढ़ा हैं। पाहवाड़ी में, इंडोनेशिया में और जापान में भी।
   पहाड़ों पर किस तरह की खेती की जाती है? वहां खेती करने में क्या दिक्कते हैं? वहां कौन-कौन सी चीज़ें पैदा होती हैं? इन सब पर 10-15 वाक्य लिखो।
4. जापान के उद्योगों के बारे में चार महत्वपूर्ण बातें लिखो।
5. इस पाठ में कितने उपशीर्षक हैं, गिन कर बताओ।
   जापान के उत्तरी भाग में कौन सी फसलें होती हैं - इसका उत्तर किस उपशीर्षक के नीचे मिलेगा?
6. खाड़ी किसे कहते हैं और इनका क्या महत्व है - सिर्फ चार वाक्यों में लिखो।

11. एशिया के ध्रुवीय प्रदेश

इस पाठ में हम एक ऐसे प्रदेश के बारे में पढ़ेंगे जो हमारे अनुभव से बहुत अलग है। वह एक ऐसा प्रदेश है जहां कई महीने लगातार रात रहती है और कई महीने लगातार दिन। हमारे यहां जैसे वहां पर सूरज रोज सुबह उगकर शाम को डूबता नहीं है। क्या तुम ऐसी जगह के बारे में कल्पना कर सकते हो? वहां इतनी ठंड पड़ती है, इतनी ठंड पड़ती है कि चारों तरफ बर्फ ही बर्फ जमी रहती है। ज़मीन पर बर्फ, झीलों पर बर्फ, नदियों पर बर्फ और पूरा सागर का सागर ही बर्फ बना रहता है।
एक बार इस पाठ में दिए चित्रों को ध्यान से देखो और बताओ इनसे ध्रुवीय प्रदेश के बारे में क्या-क्या पता चलता है।
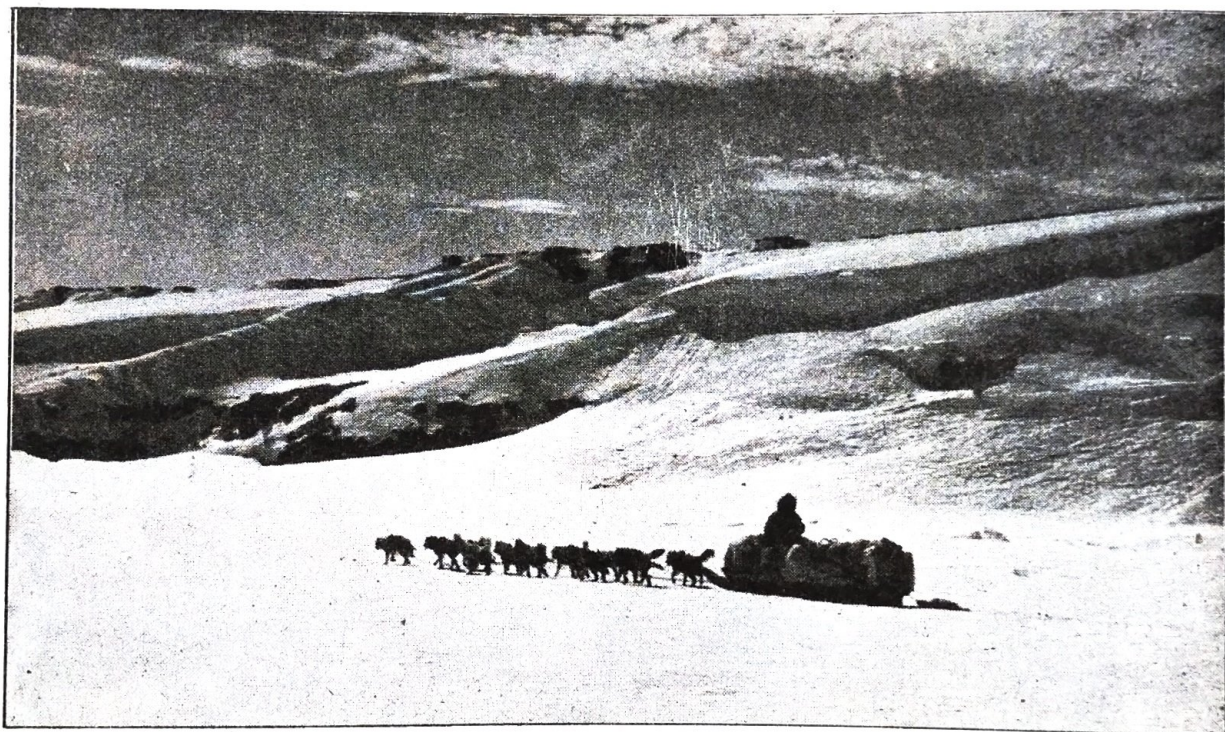
कहां है ध्रुवीय प्रदेश?

तुमने ग्लोब पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों को देखा था। ध्रुव के आसपास के इलाके को ध्रुवीय प्रदेश कहते हैं। इस पाठ में हम उत्तरी ध्रुवीय प्रदेश के बारे में पढ़ेंगे।

मानचित्र-1 को देखो। इसमें पृथ्वी पर उत्तरी ध्रुव और उसके आसपास के इलाकों को दिखाया गया है। पूरे ध्रुवीय प्रदेश को हल्के से रंगा गया है। इस इलाके की सीमा कैसे बनी है - देखो। इस सीमा को ध्रुवीय वृत्त कहते हैं। चलो हम इसी प्रदेश को और करीब से देखें। मानचित्र - 2 में ध्रुव के चारों ओर एक बड़ा सा सफेद क्षेत्र दिख रहा है। वास्तव

मानचित्र 1. पृथ्वी पर ध्रुवीय प्रदेश

में यह सफेद हिस्सा एक विशाल बर्फ का इलाका है। यह आर्कटिक महासागर का वह हिस्सा है जो साल भर बर्फ के रूप में जमा रहता है। इस मानचित्र में तुम और क्या-क्या पहचान पा रहे हो?

इस मानचित्र में स्थल या ज़मीन को कैसे दिखाया गया है? क्या तुम ध्रुवीय वृत्त (घेरे) के अन्दर पड़ने वाले ज़मीन के हिस्से को अलग पहचान पा रहे हो?

यह ध्रुवीय प्रदेश में आने वाली ज़मीन है। इसमें कितने महाद्वीपों के हिस्से हैं बताओ।

इन सभी महाद्वीपों का उत्तरी हिस्सा जो ध्रुवीय वृत्त के अन्दर आता है, जहां अधिक ठंड होती है, टुंड्रा प्रदेश कहलाता है। इस तरह टुंड्रा प्रदेश कोई अलग देश नहीं है, इसमें बहुत से देशों के हिस्से हैं। इस प्रदेश में हमारे यहां जैसे पेड़-पौधे नहीं होते हैं - केवल एक खास तरह की वनस्पति होती है जिसे "टुंड्रा वनस्पति" कहते हैं। इसी से इस प्रदेश का नाम पड़ा है।

मानचित्र 2. ध्रुवीय प्रदेश

उत्तर अमेरिका महाद्वीप
महासागर
उत्तरी ध्रुव
एशिया महाद्वीप
अटलांटिक महासागर
यूरोप महाद्वीप

मानचित्र 3. एशिया के टुंड्रा प्रदेश
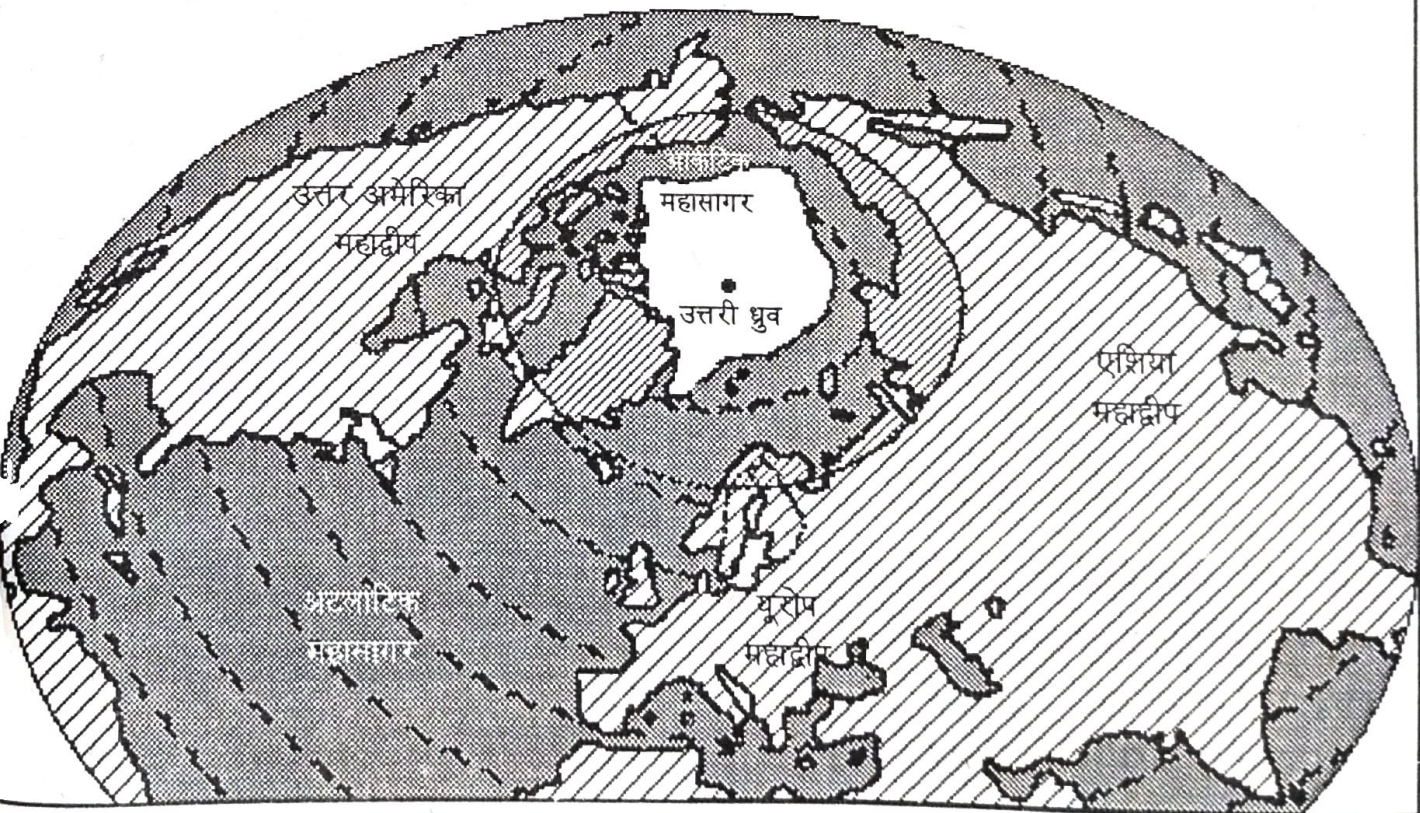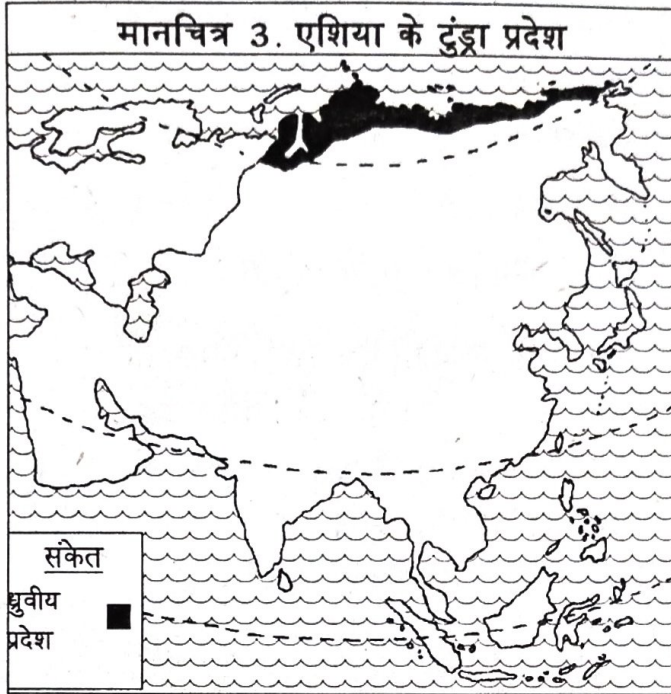
एशिया का जो हिस्सा टुंड्रा प्रदेश में शामिल है, उसे मानचित्र 3 में काले रंग से दिखाया गया है।

यह हिस्सा कौन से देश में है?

नक्शे में इंडोनेशिया, भारत और जापान भी पहचानो और देखो कि टुंड्रा प्रदेश इन सब से ज़्यादा उत्तर में है, भूमध्य रेखा से बहुत दूर, बिलकुल ध्रुव के पास।

तुम याद करके बताओ कि भूमध्य रेखा से दूर जाने पर क्या होता है?

टुंड्रा प्रदेश - गर्मी और सर्दी

टुंड्रा प्रदेश की सबसे प्रमुख बात है यहां की ठंड। यहां इतनी ठंड होती है जिसका अंदाज़ा लगाना कठिन है। यहां इतनी ठंड पड़ती है कि पानी बर्फ बना रहता है। सिर्फ तीन चार महीने यहां का मौसम कुछ गर्म रहता है और बर्फ पिघलती है।

सर्दी

सूर्य का प्रकाश बहुत कम मिलने के कारण ही टुंड्रा प्रदेश में इतनी ठंड पड़ती है। यहां साल में दो-तीन महीने सूर्य उगता ही नहीं है। अपने देश में सूर्य रोज सुबह उगता है और शाम को ढलता है। लेकिन टुंड्रा प्रदेश में ऐसा नहीं होता है। यहां नवंबर-दिसंबर और जनवरी भर में लगभग अंधेरा रहता है - सूरज उगता ही नहीं। यह टुंड्रा प्रदेश का सर्दी का मौसम है। इन महीनों में कड़ाके की ठंड पड़ती है। तुम जानते होगे कि जब खूब ठंड पड़ती है तो पानी बर्फ बन जाता है। जिस ठंड में पानी बर्फ बन जाता है उससे भी ज़्यादा ठंड टुंड्रा प्रदेश में पड़ती है। जब ऐसी ठंड पड़ती है तो नदियां, झीलें, और समुद्र तक सब जम जाते हैं। तेज़ बर्फीली हवाएं चलती हैं। रूईनुमा बर्फ के कण कई दिनों तक गिरते रहते हैं। इसे 'हिमपात' कहते हैं।

तेज ठंड, अंधेरा और बर्फ के कारण सभी वनस्पति मर जाती हैं। जानवर और पक्षी तक इस प्रदेश को छोड़कर चले जाते हैं। चारों तरफ अंधेरा, वीरान और उजाड़ प्रदेश हो जाता है।

गर्मी

फरवरी-मार्च के महीनों से टुंड्रा प्रदेश में सूरज चमकने लगता है। शुरू में सूरज दिन में एकाध घंटे चमक कर डूब जाता है। फिर धीरे-धीरे दिन लंबे होते जाते हैं - 2 घंटे, 6 घंटे, 8 घंटे, 16 घंटे, 20 घंटे और 24 घंटे! हां वहां मई-जून-जुलाई, लगभग तीन महीने सूरज डूबता ही नहीं है - 24 घंटे चमकता रहता है। तब लगातार दिन रहता है। लेकिन सूरज आकाश में ऊपर नहीं चढ़ता है। बस

क्षितिज के कुछ ऊपर चारों तरफ घूमता रहता है - न ऊपर चढ़ता न अस्त होता है। ('क्षितिज' यानी जहां धरती और आकाश मिलते हुए दिखते हैं) सूरज ऊपर नहीं चढ़ता है, इसलिए गर्मी बहुत कम पड़ती है। इस तरह कई महीनों का दिन और कई महीनों की रात ध्रुवीय प्रदेश की विशेषता है। ध्रुव पर तो छह महीने दिन और छह महीने रात रहती है।

गर्मी के तीन महीनों में भी बहुत ठंड रहती है। सर्दी के महीनों की तुलना में ज़रूर ठंड कम हो जाती है। इस हल्की गर्मी के कारण गर्मी के महीनों में कुछ बर्फ पिघल जाती है। नदियां जो सर्दी में जम जाती हैं, अब पिघलकर बहने लगती हैं - झीलें भर जाती हैं, सागर में बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े टूट-टूटकर बहने लगते हैं।

ठंड के महीनों में जो वीरान बर्फीला प्रदेश था वह गर्मी में जीवंत हो जाता है और रंगों से भर जाता है। गर्मी के आते ही अनेकों रंग-बिरंगे पौधे, लाइकेन नाम की काई, घास, छोटी झाड़ियां, बेरियां और बौने पेड़ उग आते हैं। इन पर रंग बिरंगे फूल और फल लगते हैं। इन्हें खाने के लिए कई तरह के जानवर और पक्षी आते हैं।

वनस्पति

अगले पृष्ठ पर टुंड्रा प्रदेश के दो चित्र दिए गए हैं - एक सर्दी का और एक गर्मी का। कौन सा चित्र किस मौसम का है पहचानो। दोनों चित्रों को ध्यान से देखो - क्या इनमें तुम्हें पेड़ दिख रहे हैं? क्या पूरे इलाके में पौधे घने उग रहे हैं?

अत्यधिक ठंड के कारण टुंड्रा प्रदेश में सतह के

चित्र 2 बर्फ की चट्टानों से घिरा जहाज़। बर्फ पिघलकर टूटने लगी है

नीचे की मिट्टी साल भर पत्थर सी जमी रहती है। जहां भी मिट्टी इकट्ठी हो जाती है, वहां ऊपर बताई काई व पौधे उगते हैं। नीचे की मिट्टी कठोर होने के कारण यहां पेड़ बढ़ नहीं पाते हैं। पेड़ बढ़े भी तो यहां चलने वाली तेज़ तूफानी हवाओं के कारण टूट जाते हैं। इसलिए टुंड्रा प्रदेश अधिकतर वृक्षविहीन प्रदेश है।
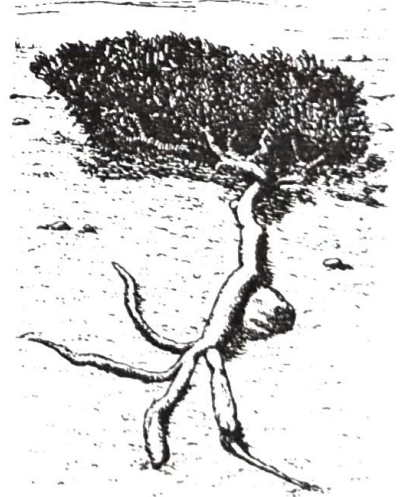
चित्र 5. टुंड्रा प्रदेश में होने वाले पेड़ों की ये हालत होती है! ये बौने पेड़ चट्टानों की दरारों में उग आते हैं पर उन्हें ज़मीन पर ऐसे रेंगना पड़ता है!
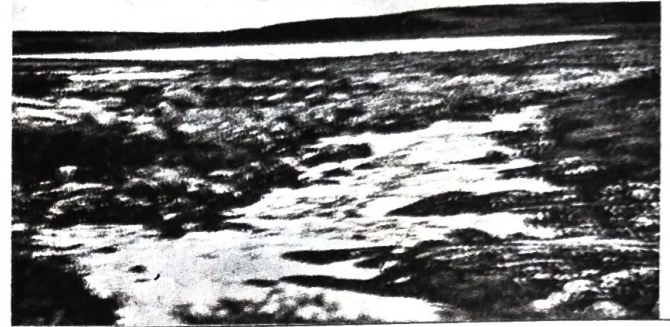
चित्र 4,5. इनमें से कौन सा चित्र गर्मी का है और कौन सा सर्दी का?

टुंड्रा प्रदेश के गर्मी के मौसम के बारे में पांच सबसे मुख्य बातें लिखो।

रिक्त स्थान भरो:

टुंड्रा प्रदेश में ------, ------ व ------ महीनों में सूरज दिखता नहीं है।

तब सब पानी ------ हो जाता है और पौधे ------- हैं।

ठंड के उन महीनों में टुंड्रा प्रदेश में उजाला कैसे मिलता होगा, सोचकर बताओ।

जानवरों पर निर्भर लोग

तुम्हें शायद लगता होगा कि ऐसी जगह लोग नहीं रह सकते हैं। आश्चर्य की बात है कि ऐसी जगह भी हम जैसे लोग रहते हैं। एशिया के इस प्रदेश के लोग याकुत, चुक्ची और सेमीयाड नाम से जाने जाते हैं। वैसे टुंड्रा प्रदेश अधिकतर खाली है - यहां रहने वाले लोगों की संख्या बहुत कम है।

ये लोग यहां कैसे रहते होंगे - क्या खाते पीते होंगे? इतने ठंडे और बर्फीले प्रदेश में खेती करना तो असंभव है। पेड़-पौधे यहां बहुत कम उगते हैं और वह भी दो तीन महीनों के लिए।

अपने यहां हम पेड़-पौधों पर ज़्यादा और जानवरों पर कम निर्भर हैं। हमारा मुख्य भोजन पौधों से आता है। हम जलाने के लिए पेड़ों से लकड़ी तोड़ लाते हैं। झोपड़ी, घर बनाने में भी लकड़ी का इस्तेमाल करते हैं। पहनने के लिए कपास का उपयोग होता है। मगर टुंड्रा प्रदेश में इसके विपरीत है। वहां के लोगों का जीवन जानवरों पर ही निर्भर है। यह कैसे आगे देखते हैं।

चुक्ची लोगों का जीवन

चलो टुंड्रा प्रदेश में रहने वाले चुक्ची लोगों के बारे में जानें। रूस के उत्तर-पूर्वी छोर परआर्कटिक महासागर के किनारे कई छोटी-छोटी बस्तियां हैं। इनमें चुक्ची लोग रहते हैं। इनका मुख्य काम है जानवरों का शिकार करना। आसपास कहीं भी खेती नहीं होती है।

गर्मी के दिनः चुक्ची लोगों को गर्मियों के दिन बहुत अच्छे लगते हैं। पूरी बस्ती सुबह-सुबह उठ जाती है। चारों ओर उजाला रहता है, धरती से बर्फ की सफेद चादर हट जाती है और रंग-बिरंगे पौधे उगते हैं। तरह-तरह की चिडिया चहचहाती हैं। घास चरने आने वाले जानवरों का शिकार आसान हो जाता है। समुद्र पर भी बर्फ पिघलती है तो समुद्र के बड़े-बड़े जानवर सैर करने निकलते हैं। ऐसे में शिकारियों को खुशी नहीं होगी क्या?

पिघले हुए समुद्र में वालरस नाम के भीमकाय जानवरों की गुर्राहट सुनाई देने लगती है। वालरस के बड़े-बड़े झुंड समुद्र में तैरते मिलते हैं। सील, व्हेल मछली आदि भी समुद्र में खूब दिखने लगती हैं।

चुक्ची लोग समुद्र के इन जानवरों का खूब शिकार करते हैं। ये जानवर उनके जीवन का आधार हैं।

चुक्ची लोग वालरस की गुर्राहट सुनने के लिए कान लगाए रहते हैं। जैसे ही किसी के कान में वह आवाज़ पड़ी कि वह चिल्ला-चिल्ला के

चित्र 6 चुक्ची बस्ती

चित्र 7 वालरसः हाथी की तरह इस के दो बड़े-बड़े दांत होते हैं, और लंबी-लंबी मूंछ होती है। एक नर वालरस का वज़न 1000 किलो से भी अधिक होता है। इतना भारी भरकम होने के बावजूद भी यह जानवर चतुराई से तैरता है। अपनी मूंछ से यह कीचड़ को छानकर पानी में रहने वाली मछलियों को खाता है। वालरस बड़े-बड़े झुंडों में साथ रहते हैं।

सब को चेता देता है। लोग अपनी बंदूकें व हारपून लेकर अपनी नावों की ओर दौड़ पड़ते हैं। पुराने समय में बंदूकों की जगह तीर-कमान से शिकार किया करते थे। उनकी नावें वालरस की खाल को हड्डी के ढ़ांचों पर मढ़ के बनाई जाती थीं और खाल की पाल से ही समुद्र में चलती थीं। इन नावों को बिदारका कहते हैं। पर अब उनके पास मोटर वाली नावें भी हैं। ये मज़बूत हैं और तेज़ चलती हैं। इनमें ज़्यादा शिकार ढो कर लाया जा सकता है और तेज़ी से शिकार का पीछा भी किया जा सकता है। बिदारका में तो दो वालरस से ज़्यादा भर के नहीं ला सकते हैं।

बंदूक से वालरस या सील मारने के बाद चुक्ची लोग शिकार पर हारपून फैकते हैं। हारपून जानवरों की लंबी हड्डियों से बना होता है। इसके एक सिरे पर हड्डी का कांटा होता है

चित्र 8 वालरस की खाल उतार रहे हैं

और दूसरे सिरे पर लंबी रस्सी बंधी होती है। यह रस्सी भी जानवरों की खाल की बनी होती है। हारपून का कांटा मरे हुए जानवरों के शरीर में अटक जाता है और रस्सी से खींच कर जानवर को नाव पर चढ़ा लिया जाता है। समुद्र में शिकार करने के लिए हारपून बहुत ज़रूरी औज़ार है। कभी-कभी समुद्र में व्हेल नाम की भीमकाय और खतरनाक मछली भी मिलती है।

चुक्ची लोग शिकार को तट पर लाकर उसकी खाल निकाल देते हैं। (चित्र 8) खालें साफ करके सुखाके पहनने, ओढ़ने, बिछाने, तंबू बनाने, नावें और ज़मीन पर चलने वाली गाड़ियां बनाने के काम आती हैं। सील का वसा जलाकर रोशनी करने के काम आता है। चुक्ची लोग कोशिश यही करते हैं कि गर्मियों में ज़्यादा से ज़्यादा शिकार करके सर्दियों के लिए मांस जमा कर लिया जाए। ठंड और बर्फ में मांस जम कर सुरक्षित बना रहता है।

सर्दी के दिन

सूरज जैसे-जैसे गायब होता है, ठंड बहुत बढ़ती जाती है। समुद्र का पानी जमने लगता है। नदियां व झीलें बर्फ बन जाती हैं। ठंड़ी, बर्फीली हवाएं बहने लगती हैं। इन हवाओं के साथ बर्फ की आंधी चलती है और ज़मीन, चट्टान, तंबू, नाव, गाड़ी सब पर बर्फ बिछने लगती है। (चित्र 9) गर्मियों में उगी झाड़ियां, काइयां - सब सफेद बर्फ में दब जाती हैं।

लोग अपने तंबुओं में सील की चर्बी जला कर उसके चारों ओर बैठे रहते हैं। बाहर निकलना भी खतरनाक हो जाता है। तेज़ बर्फीले तूफान में कोई बाहर हो तो हवा उसे लुढ़काकर ले जाती है और बर्फ में दबा देती है। कितने ही लोग ऐसे तूफान

चित्र 9 सब के ऊपर बर्फ!

में फंस कर मर जाते हैं। तूफान में बर्फ उड़ती रहती है और आगे कुछ दिखाई नहीं दे पाता। लोग रास्ता भटक कर पहाड़ियों से गिर कर भी मर जाते हैं।

ऐसे दिनों में शिकार पर निकलना भी नहीं हो पाता। बर्फीले समुद्र में वालरस भी नहीं मिलते। हां जब तूफान न हो और चांद निकला हो तब लोग सील और लोमड़ियों व भालुओं का शिकार करने निकलते हैं।

सील मछली पानी में रहती है। लेकिन पानी की ऊपरी सतह बर्फ बन जाती है। सील सांस लेने के लिए बर्फ में बने छेदों के पास आती है। तभी घात लगाकर बैठे लोग उसका शिकार कर लेते हैं। कई-कई दिनों तक शिकार नहीं भी मिलता है। तब वालरस के जमे हुए, जकड़े हुए मांस को कुल्हाड़ियों से काट कर लोग खाते रहते हैं।

बर्फीले मैदानों में चुक्ची लोग लोमड़ियों के लिए मांस का दाना डाल कर फंदा बिछाते हैं। बीच-बीच में जाकर देखते हैं कि कोई लोमड़ी फंसी कि नहीं। यहां की लोमड़ी, भालू आदि की मुलायम सफेद या लाल रोएंदार खाल व्यापार के काम आती है। सर्दियों भर चुक्ची लोग ये खालें इकट्ठी कर के रखते रहते हैं।
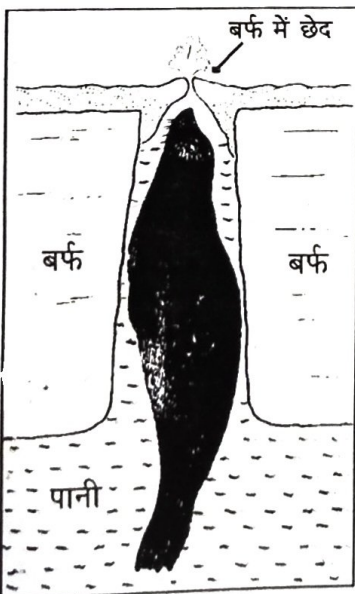
चित्र 11 सांस लेने ऊपर आई सील मछली। इसकी खाल बहुत गर्म व मुलायम होती है। सील की चर्बी का भी उपयोग किया जाता है

चित्र 10 बर्फीले तूफान में

फिर गर्मियों में बेच देते हैं। गर्मियों में मौसम ठीक रहता है और समुद्र से जहाज़ भी टुंड्रा प्रदेश तक आ सकते हैं। हवाई जहाज़ों का आना भी आसान होता है। इसलिए गर्मियों में व्यापार का काम ज़्यादा हो पाता है। खालों के बदले में चुक्ची लोग अपनी ज़रूरत की कई चीज़ें जैसे अनाज, बंदूकें, चाय, तंबाकू, चाकू, कुल्हाड़ियां आदि खरीद लेते हैं।

टुंड्रा प्रदेश के लोग किन-किन जानवरों का शिकार करते हैं?

वालरस का शिकार किस मौसम में होता है?

वालरस से चुक्ची लोगों को क्या-क्या मिलता है?

चुक्ची लोग ———— (घर /गुफा/तंबुओं) में रहते हैं।

वे ज़रूरी सामान खरीदने के लिए ——(सील/वालरस का मांस/रोंएंदार खाल) बेचते हैं।

चित्र 12 ध्रुवीय भालू: बर्फ पर रहने वाला यह भालू बिलकुल सफेद रोएंदार खाल का होता है और बहुत ही खतरनाक होता है। इसकी खाल के लिए इसका खूब शिकार किया जाता है

पशुपालन

टुंड्रा प्रदेश के कई लोगों ने रेनडियर को पालतू बना लिया है। यह हिरण जैसा सींगदार जानवर है। अधिकतर रेनडियरपालक 100-150 रेनडियर रखते हैं। रेनडियर इन लोगों के जीवन का एक प्रमुख साधन है। यह वहां की गाड़ी खींचता है, इस पर सवारी की जाती है और इसका मांस खाया जाता है। इसकी खाल से तंबू व नावें बनती हैं और इसकी हड्डियों से औज़ार भी बनते हैं।

तुम्हें अब तक स्पष्ट हो गया होगा कि इनका जीवन इनके जानवरों पर ही निर्भर है। रेनडियर, व अन्य जानवरों की रोएंदार खाल से इन लोगों के कपड़े बनते हैं। चित्र 8, 9 व 10 को देखकर तुम अंदाज़ लगा सकते हो कि टुंड्रा प्रदेश के लोगों के कपड़े कैसे होंगे। उनके कपड़े, जूते, मोजे, टोपी सब रोएंदार खाल के ही होते हैं।

रेनडियरपालक एक ही जगह बसकर नहीं रह पाते। चारे की तलाश में घूमते रहते हैं। वे गर्मी के मौसम में टुंड्रा प्रदेश में रहते हैं। उस समय वहां छोटे पौधे उग आते हैं। इन पर उनके रेनडियर चरते हैं। इसके अलावा अन्य कई जानवर यहां इस समय शिकार के लिए मिलते हैं। जाड़ा आने पर पूरे प्रदेश में वनस्पति मर जाती है, बर्फ जम जाती है और अंधेरा ही अंधेरा रहता है। जानवर भी इस प्रदेश को छोड़ जाते हैं। यहां के लोग भी अपने तंबू बांधकर, जानवरों को साथ लेकर दक्षिण के वनों की ओर चलते हैं।

टुंड्रा प्रदेश के दक्षिण के नुकीली पत्तियों के वनों में भी खूब ठंड पड़ती है, पर टुंड्रा प्रदेश से कम। यहां सूरज भी आसमान में दिखता है। उजाला रहता है। इस तरह दक्षिण के वनों में फिर भी जलाऊ लकड़ी, चारा और शिकार मिल जाता है। गर्मी के दिनों में ये लोग फिर टुंड्रा प्रदेश में लौट आते हैं। इस तरह इन लोगों का साल का बहुत सा समय एक जगह से दूसरी जगह घूमने में निकल जाता है। इसीलिए वे तंबुओं में रहते हैं।

चित्र पालतू रेनडियर

हमने देखा कि ये लोग लगातार एक जगह से दूसरी जगह चलते रहते हैं। तो अपना सामान कैसे ढोते होंगे?

इसके लिए ये लोग बर्फ पर चलने वाली एक गाड़ी इस्तेमाल
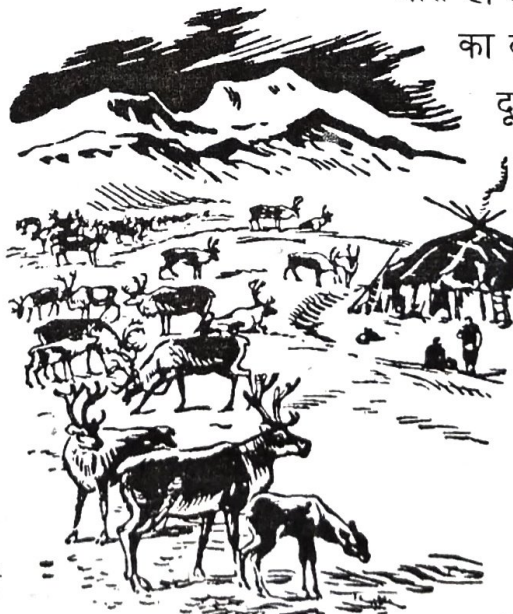
करते हैं, जिसे स्लेज कहते हैं। यह जानवरों की हड्डियों से बनी होती है। इसमें पहिए होते ही नहीं हैं क्योंकि इसे तो आमतौर पर बर्फ पर ही खींचना होता है। स्लेज बर्फ पर फिसलती हुई चलती है। इस गाड़ी को खींचने का काम करते हैं, रेनडियर या कुत्ते। यहां के लोग इन स्लेजों पर ही यात्रा करते हैं। नीचे चित्र में देखो।

टुंड्रा प्रदेश में खदान और उद्योग

पिछले 30 वर्षों में इस प्रदेश में खनिज तेल और सोने की खदानें खुली हैं। इस कारण यहां बाहर से बहुत सारे लोग आकर बसे हैं। अब यहां बड़े-बड़े शहर भी बस गए हैं। इनके साथ शिकारी व पशुपालक लोगों के जीवन में भी बहुत परिवर्तन आए हैं। अब ये लोग पक्के घरों में रहने लगे हैं ओर आने-जाने के लिए मोटर से चलने वाली स्लेज-गाड़ियों का उपयोग करते हैं।

पर इनका जीवन अभी भी शिकार और पशुपालन पर ही आधारित है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. टुंड्रा प्रदेश में दिन-रात का चक्र कैसा होता है?
2. इंडोनेशिया तथा टुंड्रा प्रदेश में तुलना करके बताओ कि दोनों जगहों पर रोज़ आकाश में सूर्य के पथ में क्या अंतर है?
3. टुंड्रा प्रदेश में कैसी वनस्पति होती है? यह प्रदेश वृक्षविहीन प्रदेश क्यों कहलाता है?
4. यहां के लोग खेती क्यों नहीं करते?
5. टुंड्रा प्रदेश के पशुपालक जाड़े में कहां चले जाते हैं, और क्यों? वे गर्मी में फिर टुंड्रा प्रदेश क्यों लौट आते हैं?
6. यहां के लोग बिना पहिए की गाड़ी क्यों बनाते हैं?
7. तुमने अब तक तीन जगहों के लोगों के बारे में पढ़ा है - इंडोनेशिया, जापान और टुंड्रा। इनमें से कहां के लोग मुख्य रूप से कारखानों पर निर्भर रहते हैं, कहां के लोग वनस्पति पर अधिक निर्भर रहते हैं और कहां के लोग जानवरों पर?
8. टुंड्रा प्रदेश में रहने वाले लोगों से मिलते-जुलते कुछ लोगों के बारे में तुमने इतिहास के पाठों में पढ़ा था। क) पुराने शिकारी मानव और टुंड्रा प्रदेश के शिकारियों में क्या-क्या समानताएं और फर्क तुम्हें दिखे। ख) पशुपालक आर्यों और टुंड्रा प्रदेश के पशुपालकों में क्या-क्या समानताएं और फर्क तुम्हें दिखे।

12 ईरान

भारत के पश्चिम में ईरान देश है। बहुत पुराने समय से ईरान और भारत के बीच लोग आते जाते रहे हैं। इस कारण दोनों देशों की संस्कृति में काफी समानताएं हैं। दोनो देशों के बीच किन-किन बातों में समानताएं होंगी कक्षा में चर्चा करो।

एशिया के मानचित्र में देखो ईरान कहां स्थित है। भारत से यदि हम ज़मीन के रास्ते ईरान जाना चाहें तो हमें कौन से अन्य देश पार करने होंगे? यदि बम्बई से जलयान में बैठकर हम ईरान जाना चाहें तो किन खाड़ियों व सागरों को पार करना होगा?

ईरान के पड़ोस में और कौन से देश हैं?

ईरान के उत्तर में कैस्पियन सागर नाम की एक बड़ी झील है। इसे भी एशिया के नक्शे में देखो।

मानचित्र 1 एशिया में ईरान की सिथति

ईरान भूमध्य रेखा से कितनी दूर है, मानचित्र 1 में देखो।

क्या यहां इंडोनेशिया जैसी साल भर गर्मी पड़ेगी?

ईरान का मानचित्र

मानचित्र 2 को ध्यान से देखोगे तो पाओगे कि ईरान देश का आकार कटोरे जैसा है। कटोरा किनारे से ऊंचा और बीच में गहरा होता है, वैसा ही है ईरान। ईरान के चारों ओर ऊंचे पर्वत और बीच में पठार है। मानचित्र में देखो और बताओ कि यह पठार भोपाल-विदिशा के पठार से कैसे अलग दिख रहा है।

ईरान देश के किनारे किनारे कौन से पर्वत हैं? किनारों से हट कर अब ईरान देश के बीच में आओ। यह इलाका कैसा है - नक्शा देखकर वर्णन करो। क्या तुम मानचित्र में रेगिस्तान पहचान सकते हो? कितनी तरह के रेगिस्तान हैं?

ईरान में समुद्र तट के इलाके कौन से हैं - पहचान कर उन पर उंगली फेरो।

यहां की खाड़ियों के भी नाम बताओ।

ईरान में कोई बड़ी नदी नहीं बहती। इस कारण नदी का कोई बड़ा मैदान ईरान में नहीं है।
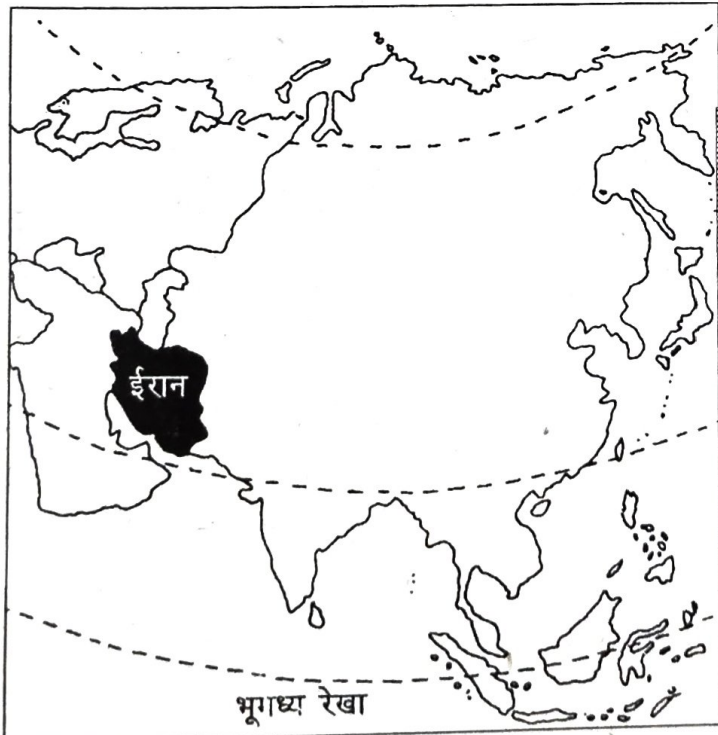
मानचित्र 1. ईरान
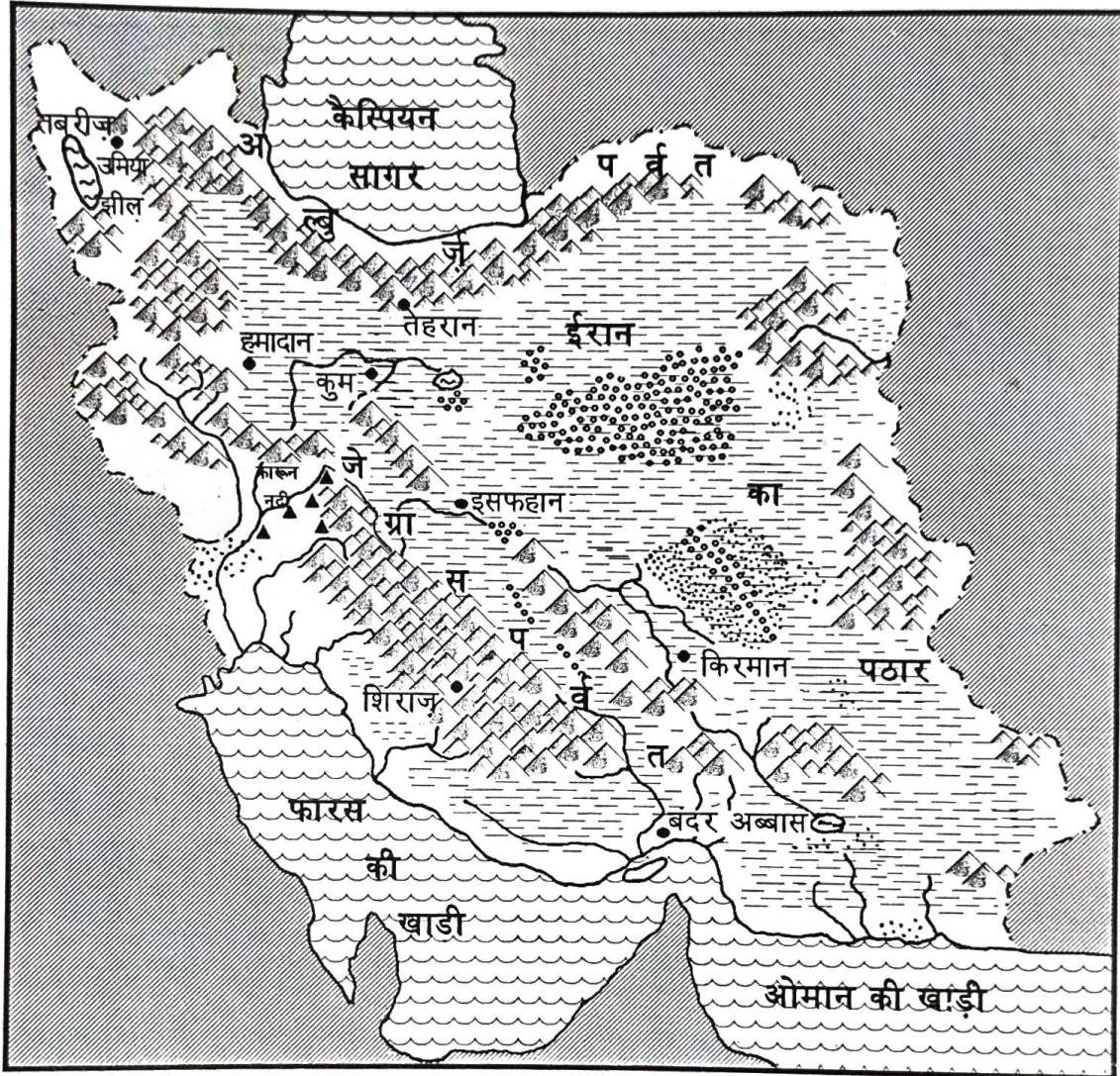
<u>संकेत</u>

ईरान की सीमा	-·-·-	नमक का रेगिस्तान	
सागर		बालू का रेगिस्तान	
अन्य देश		नदी	
पहाड़		झील	
पठार		शहर	•
		खनिज तेल का कुंआं	▲

चित्र 1. ईरान के सूखे इलाके ऐसे दिखते हैं

ईरान के पठार में लगभग पूरे साल ऐसे सूखे की स्थिति बनी रहती है। यहां तक कि दक्षिण और पूर्व में जो जागरोस पहाड़ है और दक्षिण में इन पहाड़ों के नीचे जो समुद्र तट है, वहां भी बहुत कम वर्षा होती है। ईरान के और भागों में इतना सूखा मौसम नहीं होता। पश्चिमी और उत्तरी भागों में तो अच्छी खासी वर्षा हो जाती है। इसलिए वहां नदी नाले बहते हैं। उनके किनारे उपजाऊ मिट्टी के मैदान होते हैं, जहां खेती भी की जाती है। इन इलाकों में जाड़े के मौसम में वर्षा होती है। पहाड़ों पर बर्फ गिरती है, जो पिघल कर नदियों में बहती है।

ईरान में जाड़े में खूब ठंडा मौसम रहता है। जैसा पंजाब या कश्मीर में। लेकिन गर्मी के मौसम में गर्मी भी बेहद होती है। जैसे अपने यहां गर्मी का मौसम होता है, उससे भी कुछ अधिक।

तुम जानते हो कि जब तक वर्षा नहीं होती मई, जून में कितनी गर्मी होती है। ईरान के पठार में तो वर्षा ही बहुत कम होती है, तो सोचो गर्मी कितनी ज़्यादा होती होगी?

ऐसे सूखे इलाके में क्या पेड़ उगेंगे? थोड़ी वर्षा में जंगल तो हो नहीं सकते - सिर्फ कुछ घास व झाड़ियां उग पाती हैं। चित्र 1 देखो।

अब चलो, बारी-बारी ईरान के बीच के पठार, फिर उसके पहाड़, फिर समुद्र तट को देखें - वहां के लोगों के जीवन को समझें।

पठार - ईरान के सूखे इलाके

ईरान का अधिकतर भाग पठार है। ईरान का पठार बिल्कुल सूखा इलाका है। यहां बहुत ही कम वर्षा होती है। तुम्हें पठार में कुछ रेगिस्तान भी दिखे होंगे। बहुत ही कम वर्षा के कारण नदियों में पानी भी कम बहता है। चारों ओर के पहाड़ों से बह कर आई छोटी-छोटी नदियां बीच के पठार में आकर सूख जाती हैं।

तुम जानते हो कि जब अपने यहां भी खूब गर्मी पड़ती है तो पेड़ पौधे सूख जाते हैं, नदियों, नालों में पानी कम हो जाता है। ऐसे में पानी न गिरे तो हालत और भी खराब हो जाती है।

क्या पहाड़ों पर कुछ वनस्पति है? पहाड़ों के नीचे क्या उगा दिखता है? इस चित्र से वहां के लोगों के बारे में तुम क्या जान रहे हो, 5-6 वाक्यों में लिखो।

वे कैसे घर में रहते हैं? सवारी किस जानवर की करते हैं? क्या वे हमेशा यहीं रहते रहेंगे?

यहां की सूखी और तेज़ गर्मी की जलवायु में क्या खेती हो सकती है? क्या ऐसे क्षेत्र में बहुत ज़्यादा लोग रह सकते हैं? यदि लोग हों तो उन्हें क्या भोजन मिलेगा?

ईरान के सूखे इलाकों में रहने वाले लोगों का मुख्य धंधा पशुपालन ही है। पशुपालन के सहारे कई हज़ार लोग रहते हैं। यहां कई पशुपालक जातियां हैं जिन्हें लूर, बख्तियार, बलूची, काश्काई आदि नामों से जाना जाता है। ये कबीले झाड़ियों और घासों पर अपनी भेड़-बकरियां चराते फिरते हैं।

क्या तुम सोच सकते हो कि ये लोग भेड़-बकरी की जगह गाय भैंस क्यों नहीं पालते?

ये पशुपालक कबीले पहाड़ की दोनों तरफ की तलहटियों में रहते हैं। जाड़े में पहाड़ पर तो ठंड खूब रहती है, इसलिए नीचे एक तरफ पठार पर व दूसरी तरफ समुद्र के तट पर, वे अपने जानवर चराते फिरते हैं। तब पहाड़ों पर बर्फ जमी रहती है। जाड़े में मैदान में चारा मिलता है। गर्मी आते-आते जब नीचे का चारा भी खत्म होने लगता है, ये लोग पहाड़ों पर अपने जानवरों को चराने चल पड़ते हैं। गर्मी में पहाड़ों पर बर्फ के पिघलने से कुछ हरियाली हो जाती है, नई मुलायम घास उग आती है। (चित्र2) जबकि नीचे पठार पर तो

चित्र 2. एक बूढ़ा काशकाई चरवाहा अपनी भेड़ों को ऊंचे पहाड़ों पर गर्मी में उगी मुलायम घास चरा रहा है। वह एक महीने पहले फारस की खाड़ी के तट से चला था और 200 मील लंबी यात्रा पूरी कर पहाड़ के चरागाहों पर पहुंचा है

गर्मी के मौसम में कुछ उगता ही नहीं।

बताओ घास के अलावा जानवरों को और किस चीज़ की ज़रूरत होती है?

तो ये कबीले ऐसे भागों से होकर जाते हैं जहां उन्हें और उनके पशुओं को पानी मिल सके।

जानवरों को लेकर घूमने वाले ये लोग अपना सामान लादने के लिए गधे और घोड़े भी पालते हैं। बहुत सूखे भागों में इस काम के लिए ऊंट भी पालते हैं।

बहुत सूखे भागों में ऊंट ज़्यादा काम क्यों देता है - बता सकते हो?

अपनी भेड़ों को चराते फिरते ये लोग क्या एक जगह मकान बनाकर रह सकते हैं?

तुम ध्रुवीय प्रदेश के पशुपालक लोगों के बारे में भी पढ़ चुके हो। वे लोग अपने घर रेनडियर खाल से बनाते हैं।

चित्र 3 में देखो ईरान के पशुपालक लोगों का एक कैम्प। उनके तंबू किस चीज़ के बने होंगे?

भेड़ों से इन्हें बहुत ऊन मिलती है। ऊन का कपड़ा या नमदा बनाकर उसे लकड़ी के ढांचे पर तान कर तंबू बनाए जाते हैं।

लोग कुछ दिन इन तंबुओं में रहते हैं, फिर चारे की तलाश में आगे बढ़ना होता है तो तंबू उखाड़कर, जानवरों पर लादकर दूसरी जगह चल देते हैं।

इन लोगों को बहुत सा भोजन भी अपने पशुओं से मिल जाता है, जैसे-दूध व मांस। ज़रूरत की अन्य चीज़ें तथा अनाज ये लोग दूसरे लोगों से लेते हैं। बदले में उन्हें चमड़े व ऊन की बनी चीज़ें दे देते हैं।

चित्र 3. एक पशुपालक कबीले का डेरा

नखलिस्तान

पठार के बीच के बहुत सूखे भाग में रेगिस्तान हैं - जहां सिर्फ रेत ही रेत मिलती है। जैसे अपने देश में राजस्थान में थार रेगिस्तान है। दिन में तेज़ गर्मी और आंधी चलती है, रेत उड़ती है। दूर-दूर तक न पेड़ पौधे, न पानी, न कोई रास्ता दिखता है।

ईरान में भी रेगिस्तानी इलाकों में लोग केवल वहीं रहते हैं जहां पानी के लिए कुएं या फिर सोते हैं या जहां ज़मीन के नीचे पानी मिल जाता है। ऐसी जगहों को नखलिस्तान कहा जाता है।

चट्टानों की दरारों के बीच इकट्ठा हुआ पानी अपने आप बह निकलता है, इन्हें सोते कहते हैं।

चित्र 4 में एक नखलिस्तान का दृश्य देखो। पानी के कारण यहां पेड़-पौधे दिख रहे हैं। ये खजूर के पेड़ हैं। खजूर ऐसे प्रदेशों में बहुतायत में होता है।

अधिक पानी मिलने पर नखलिस्तान में रहने वाले लोग सिंचाई कर के कुछ अनाज भी उगा लेते हैं। कई जगहों पर तो
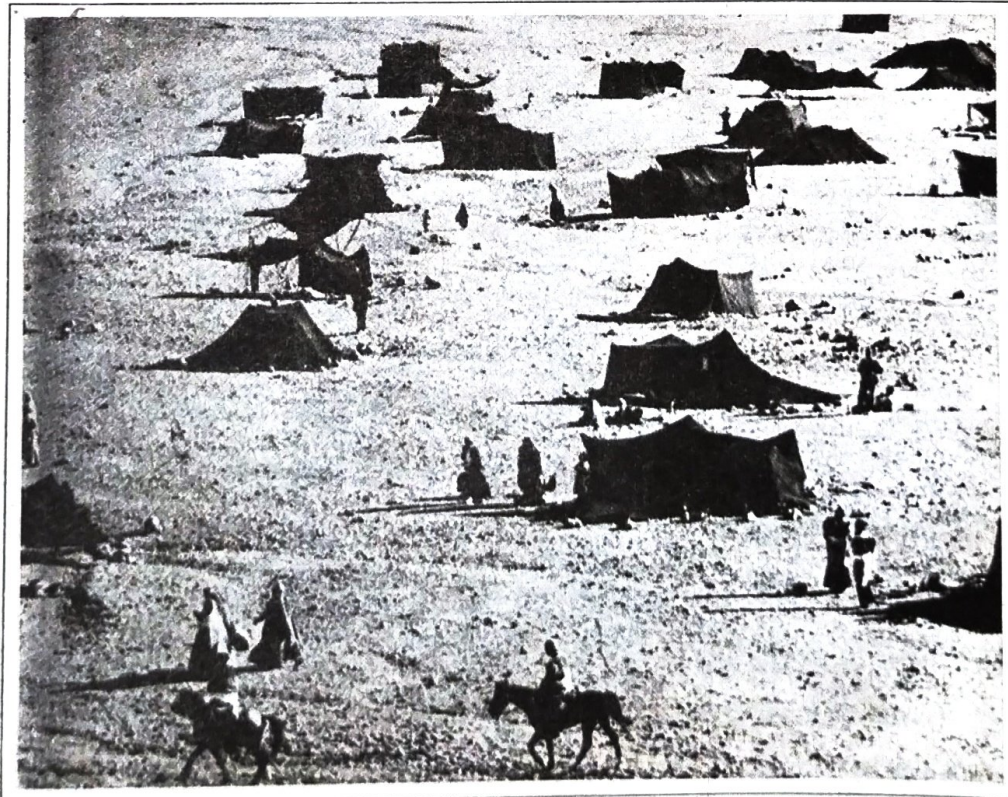
चित्र 4. नखलिस्तान

पानी के लिए ज़मीन के नीचे नालियां बना ली गई हैं। ये कई मील लम्बी होती हैं। चित्र 5 देखो। पानी के लिए इन लोगों को कितना प्रबन्ध करना होता है।
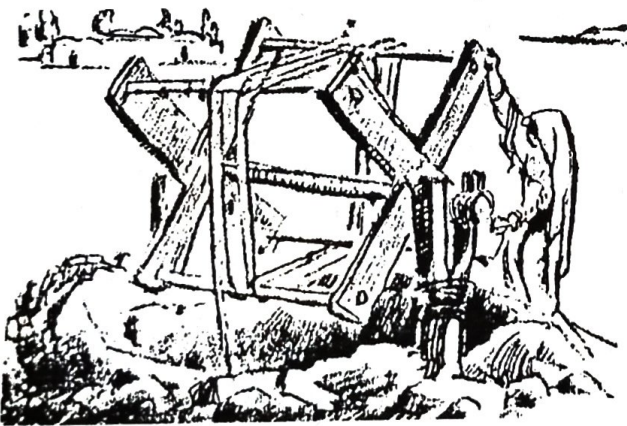
उत्तर और पश्चिम के पहाड़

बीच के पहाड़ और रेगिस्तान से निकलकर चलो ईरान के पश्चिम और उत्तर के पहाड़ों पर पहुंचें। तुम जान चुके हो कि यहां काफी वर्षा होती है। यहां पहाड़ों पर जंगल भी मिलते हैं। चित्र 7 देखो। चित्र देखकर लगता है कि यहां कुछ वर्षा होती होगी।

बहुत ऊंचे पहाड़ों पर जहां बर्फ जमी रहती है, नुकीली पत्ती के कोणधारी पेड़ भी मिलते हैं।

जहां भी पहाड़ों के बीच थोड़ी भी खेती के लिए ज़मीन मिल गई है, लोग गांव बसाकर रहने लगे हैं। (चित्र 6) तुमने जापान और इंडोनेशिया में भी देखा था कि पहाड़ों पर बहुत ज़्यादा लोग नहीं रहते - बस, कहीं-कहीं छोटी बस्तियां होती हैं। ईरान की इन पहाड़ी बस्तियों के लोग अपने खेतों पर गेहूं, कपास, तम्बाकू, जौ, चुकन्दर और तरह-तरह के फल पैदा कर लेते हैं।

इन खेती-किसानी करने वाली बस्तियों को घुमक्कड़ कबीलों के हमले का डर बना रहता है। तो ये लोग ऊंची दीवारों के घर बनाते हैं। हमले

चित्र 5. पहाड़ों से पानी लाने की व्यवस्था
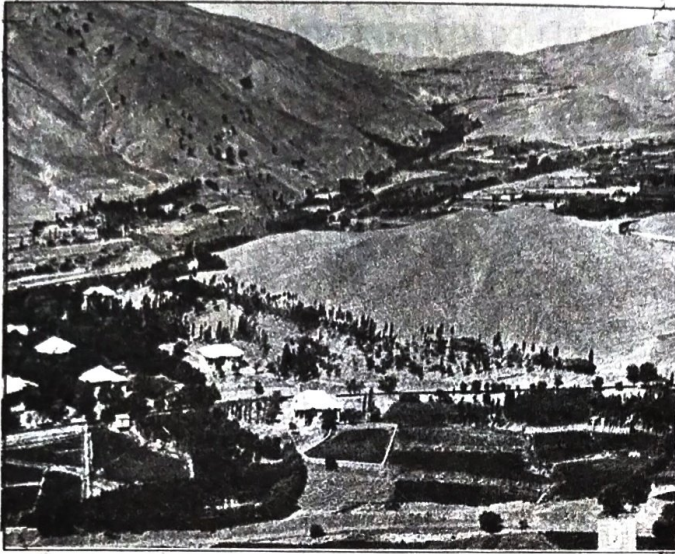
चित्र 6. सूखे पहाड़ों के तले खेत व गांव

से बचाव के लिए शहर के चारों ओर दीवार व मज़बूत दरवाज़े भी बनाते हैं। ये लोग मुख्य रूप से रोटी, मांस, फल व सब्ज़ी खाते हैं।

कैस्पियन सागर के तट का मैदान

अब चलो पहाड़ों से उतरकर ईरान के बिल्कुल उत्तर में पहुंचें। यह कैस्पियन सागर के तट का मैदानी भाग है।

मानचित्र 1 में देखो, यह किस पर्वत के नीचे का प्रदेश है?

यहां खूब वर्षा होती है। अच्छी खेती होती है। तरह-तरह की फसलें, यहां तक कि चावल भी उगाया जाता है।

इस इलाके के लोग रोटी के बजाय चावल ज़्यादा खाते हैं। यहां फल और मेवे भी खूब होते हैं। यहां का एक चित्र देखो (चित्र 7)। पहाड़ों के नीचे पेड़ और फिर हरे भरे खेत दिखते हैं।

इस चित्र में तुम वहां के लोगों का पहनावा भी देख सकते हो। औरतें ढीला पजामा और कुर्ता पहनती हैं और सिर पर कपड़ा बांधती हैं। ईरान में आदमी कमीज़ और ढीला पजामा पहनते हैं। जाड़े में लम्बा कोट भी पहनते हैं।

चित्र 7. कैस्पियन सागर के किनारे के मैदान

ईरान के नगर

ईरान जैसे सूखे क्षेत्रों में पानी का बहुत इंतज़ाम करना होता है। ईरान के नगर उन्हीं स्थानों पर बसे हैं जहां लोगों को पानी मिलता है। पर्वतों के बीच जहां पानी मिलता है, भूमिगत नालियों या सुरंगों से पानी नगरों तक लाया जाता है। परंपरागत व पुराने नगरों के बीच छोटी नहरें भी मिलती हैं।

इस तरीके से आसपास की भूमि की सिंचाई कर के खेती भी होती है। कई जगह ज़मीन के नीचे टंकियां बना कर उनमें भी पानी इकट्ठा करके रखा जाता है।

ईरान की राजधानी तेहरान है। यह शहर पहाड़ों के तले बसा है।

मानचित्र 2 देखकर बताओ कि तेहरान के पास कौन से पहाड़ हैं?

ईरान के अन्य प्रमुख नगर इस्फहान, शिराज़, अबादान, किरमानशाह आदि हैं। मानचित्र में इन नगरों को भी ढूंढो।

ईरान में आबादी भारत से बहुत कम है। पानी की प्राप्ति व भूमि के अनुरूप ही लोग बस गए हैं। जहां खेतिहर भूमि है वहां अधिक लोग बसे हैं।

पर, एक अन्य बहुमूल्य चीज़ ने ईरान को बहुत धन दिया है। वह है, खनिज तेल।

ईरान में खनिज तेल

इंडोनेशिया में खनिज तेल निकालने और उसके उपयोग की बात तुमने पढ़ी थी। ईरान में खनिज तेल पुराने समय से थोड़ा बहुत जलाने के काम आता था। उस समय खनिज तेल रिस कर धरती के ऊपर बहने लगता था। उसको लोग इकट्ठा कर के जलाते थे।

आज खनिज तेल कई तरह से काम में आने लगा है। उससे स्कूटर व गाड़ियां चलाने का पेट्रोल, डीज़ल, जलाने के लिए घासलेट मिलता है। घरों में जलाने वाली गैस भी उसी से मिलती है। मशीनों को चिकना करने का तेल प्लास्टिक, कोलतार यहां तक कि टेरिलीन कपड़े की कुछ किस्में और खाद भी खनिज तेल से बनती हैं। पिछले सौ-डेढ़ सौ सालों से खनिज तेल मशीनों, वाहनों, हवाई जहाज़ों, आदि को चलाने और कई चीज़ें बनाने के काम में बहुत आने लगा। तब से इसकी बराबर मांग बढ़ी।

खोज के बाद ईरान के पश्चिमी भागों में खनिज तेल के कई क्षेत्र मिले। इनमें तेल का भंडार भी बहुत था। मांग के कारण नलकूपों द्वारा बड़े पैमाने पर तेल निकाला जाने लगा।(चित्र 8)तेल निकालकर, पाईप-लाईनों द्वारा फारस की खाड़ी तक लाया जाता है। आमतौर पर कच्चा तेल ही विदेशों को

चित्र 8. खनिज तेल के कुएं

चित्र 9. अबादान का तेल शोधक कारखाना

खनिज तेल बेच कर धन मिलता है, या भारत ईरान व अन्य देशों से तेल खरीदता है?
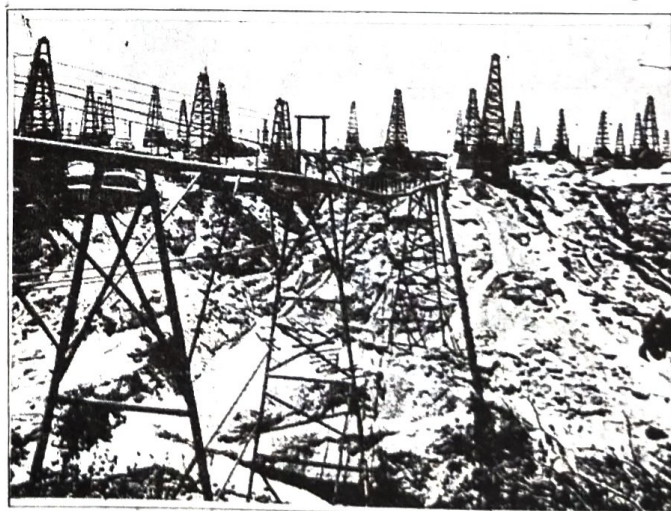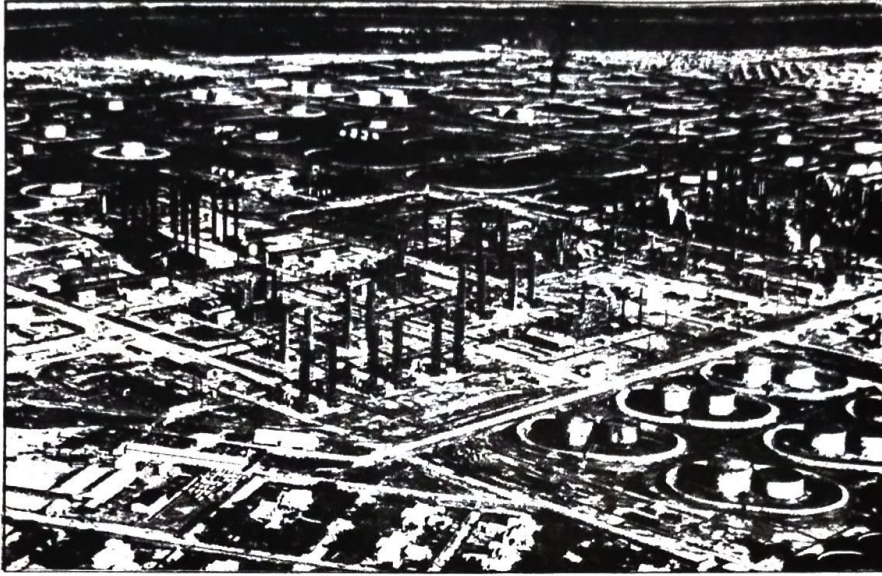
भेज दिया जाता है। कुछ तेल अबादान शहर के तेल शोधक कारखाने में साफ किया जाता है।

तेल बेचने से ईरान को बहुत धन मिला है। इस धन से ईरान के लोगों ने स्कूल, अस्पताल, सड़कें, वाहन और रोज़ के काम की अनेक चीज़ों का इंतज़ाम किया है।

क्या तुम पता लगा सकते हो कि अपने देश को खनिज तेल बेच कर धन मिलता है, या भारत ईरान व अन्य देशों से तेल खरीदता है?

ईरान के उद्योग

अब ईरान में बहुत सी चीज़ों के कारखानें भी स्थापित हो गए हैं। ईरान में अब मोटर गाड़ियां, बिजली का सामान, कपड़ा, चमड़े व ऊन की चीज़ें बनने लगी हैं।

ईरान संसार भर में गलीचों या कालीनों के लिए प्रसिद्ध है। यहां ऊन की कालीनें बनाने का बहुत पुराना धंधा है।

भेड़ों से मिलने वाली ऊन को बुन कर कालीन या गलीचे बनाए जाते हैं। ये घरों और तंबुओं में बिछाकर बैठने के काम आते हैं। ये रोएंदार होते हैं और इनमें आकर्षक रंगों में सुन्दर बेलबूटे बने होते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. ईरान की बनावट कटोरे जैसी क्यों बताई गई है?
2. कैसे इलाके को रेगिस्तान कहते हैं? ईरान के किस हिस्से में रेगिस्तान है?
3. ईरान में अधिक नदियां क्यों नहीं हैं? छोटी नदियां बीच के पठार में आकर सूख क्यों जाती हैं?
4. नखलिस्तान किसे कहते हैं? यहां लोगों को बसने के लिए क्या मिलता है?
5. ईरान के किस भाग में वन होते हैं और क्यों?
6. उत्तरी ईरान के लोग खेती क्यों करते हैं? वहां क्या पैदा होता है?
7. खनिज तेल का महत्व तीन वाक्यों में लिखो।
8. ईरानी लोग कौन से काम धंधे करते हैं - उनकी सूची बनाओ।

12. एशिया–प्राकृतिक बनावट

तुमने अपने प्रदेश के नर्मदा के मैदान, सतपुड़ा पर्वत और भोपाल विदिशा के पठार के बारे में पढ़ा। तुम शायद जानते हो कि भारत में हिमालय जैसा ऊंचा पर्वत, गंगा सिंधु नदियों का विशाल मैदान और दकन का पठार है। तुमने एशिया के कई हिस्सों के बारे में भी पढ़ा। क्या तुमने सोचा कि एशिया के और भागों की बनावट कैसी है? अपनी कक्षा में एशिया का प्राकृतिक मानचित्र टांग लो और पुस्तक के मानचित्र की सहायता से पहले थोड़ी देर अध्ययन करो। तुम देखोगे कि हिमालय के उत्तर में कई पर्वत श्रेणियां हैं।

एशिया की प्रमुख पर्वतमालाओं के नाम मानचित्र से देख कर लिखो।

एशिया के पठार

मानचित्र में देखकर दकन के पठार और ईरान के पठार में अन्तर जानो। अरब का पठार तथा यून्नान का पठार भी मानचित्र में ढूंढो। एशिया के मध्य में भी कई पठार हैं। उन्हें ढूंढ कर उनके नाम लिखो और यह भी बताओं कि कौन से पठार पर्वतों से घिरे हैं और किन के किनारे पर भोपाल-विदिशा पठार जैसा कगार है।

पामीर का पठार तो इतना ऊंचा है कि उसे दुनिया की छत कहते हैं। मानचित्र में देखो वहां से कौन सी पर्वत श्रेणियां अलग-अलग दिशाओं में फैली हैं।

एशिया के मैदान व नदियां

गंगा सिन्धु के मैदान के समान एशिया में कई लम्बे चौड़े मैदान भी हैं, उनमें लम्बी चौड़ी नदियां भी बह रही हैं।

पुस्तक में एशिया की नदियों का मानचित्र भी दिया गया है। पहले मैदानों को पहचानो फिर उनमें बहने वाली नदियों को भी बताओ।

नदियों के मानचित्र को ध्यान से देखो तो तुम पाओगे कि नदियां एशिया के भीतरी भागों से निकल कर चारों ओर के सागरों में गिर रही हैं।

क्या तुम अन्दाज़ लगा सकते हो कि ऐसा क्यों है?

एशिया के भीतरी भाग ऊंचे हैं या सागरों के निकट है?

एशिया के प्राकृतिक प्रदेश

संकेत

सागर		मैदान	
पर्वत		कगार	
पठार			

नीचे की सूची में भरो कि किस सागर में कौन सी नदी गिरती है?

महासागर	इनमें ये नदियां गिरती हैं
प्रशान्त महासागर	
हिन्द महासागर	
अरब सागर	
आर्कटिक महासागर	
फारस की खाड़ी	

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. खाली स्थान भरो।

(क) हिमालय पर्वतमाला के दक्षिण में .... मैदान हैं और उत्तर में .... पठार हैं।

(ख) साइबेरिया के मैदान के पश्चिम में .... पर्वत हैं और पूर्व में .... पर्वत हैं।

(ग) तुर्किस्तान का मैदान हिन्दुकुश पर्वत की .... दिशा में व कैस्पियन सागर की .... दिशा में है।

2. सही गलत बताओ–

(क) मंगोलिया के पठार पर कगार से चढ़कर पहुंचा जाता है।

(ख) यूनान का पठार मीकांग नदी के मैदान के उत्तर व पश्चिम में है।

(ग) उत्तरी चीन के मैदान में ओब तथा आमू नदियां बहती हैं।

(घ) थ्यानशान पर्वतमाला साइबेरिया के मैदान के दक्षिण में है।

(ङ) सीक्यांग नदी और इरावती नदी एक ही महासागर में गिरती हैं।

(च) लीना नदी और यान्सी नदी एक ही महासागर मे गिरती हैं।

एशिया की नदियां
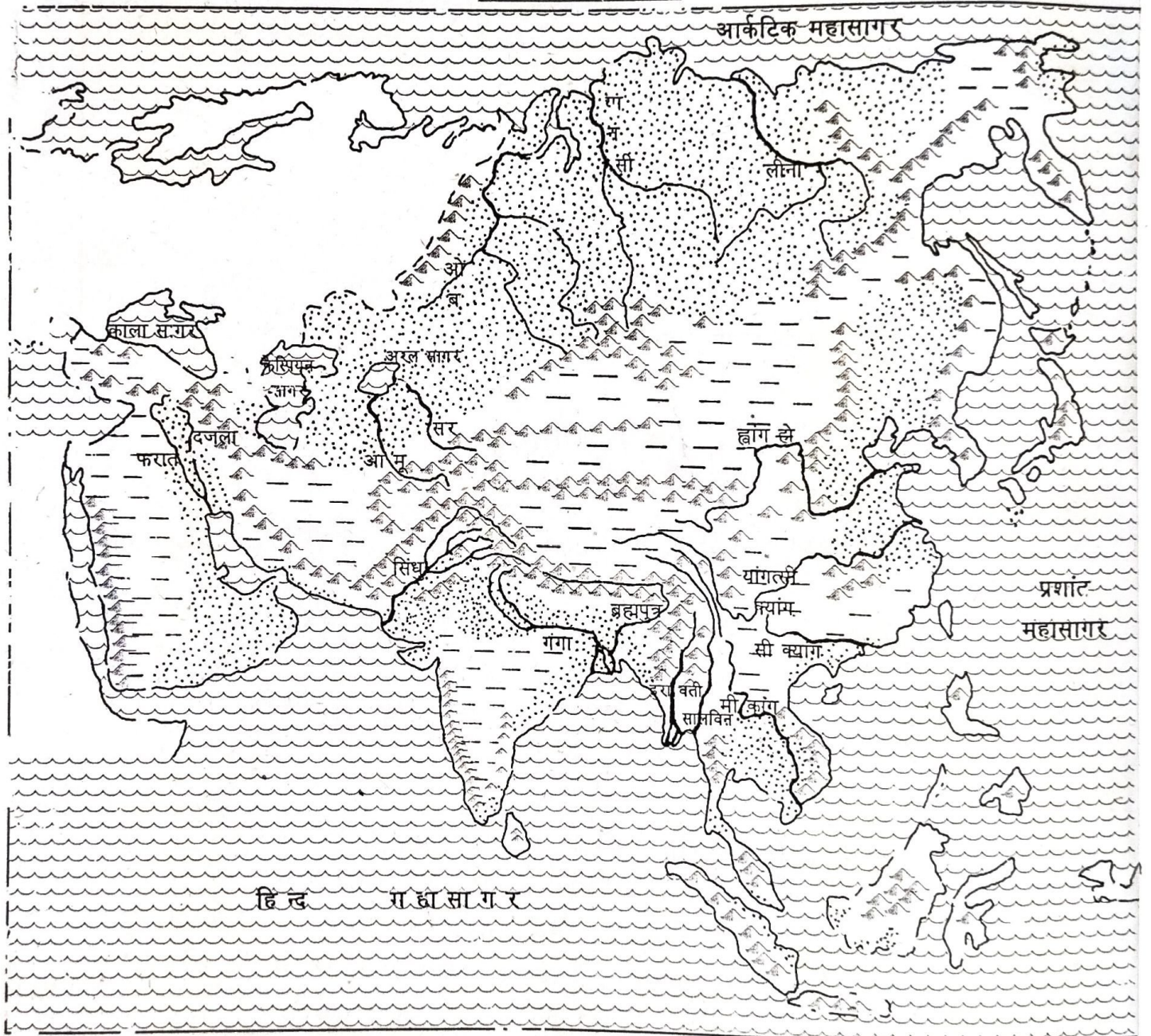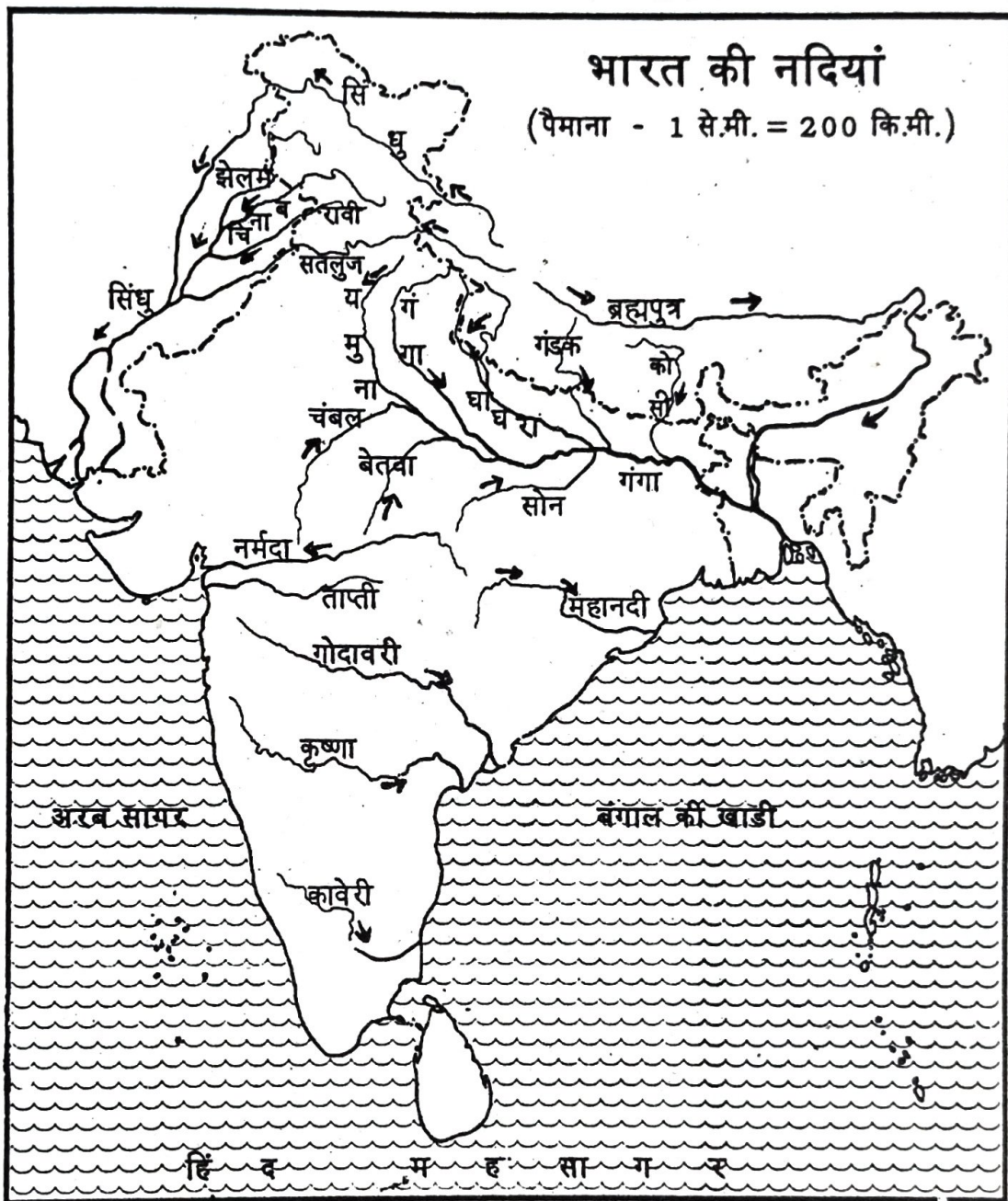
आर्कटिक महासागर
लीना
ओ
ब
काला सागर
कैस्पियन
सागर
अरल सागर
सर
दजला
फरात
आ मू
ह्वांग हो
सिंधु
यांगत्सी
क्यांग
ब्रह्मपुत्र
गंगा
सी क्यांग
इरावती
मी कांग
सालविन
प्रशांत
महासागर
हिन्द महासागर

Based upon Survey of India outline map printed 1987

भारत की नदियों का ज़िक्र तुम्हें पुस्तक में कई बार मिलेगा। क्यों न तुम इन्हें याद कर लो। अपनी कॉपी में यह मानचित्र उतार लो पर उसमें नदियों के नाम मत लिखना। अब इस मानचित्र को गौर से देखो - फिर ढंक दो। अपनी कॉपी के मानचित्र में बनी नदियों के नाम बताने की कोशिश करो। चार-पांच बार ऐसा करने पर तुम्हें नाम याद हो जाएंगे।

म. प्र. पाठ्यपुस्तक निगम
विद्या विनय विवेक